Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

maj Foundation Chen

hain. Gurukul Kangri C

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

112332

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

STOCK VERIFICATION
Central Library

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

	Passengers		Luggage		Passengers		Earning		K. meterage		
P.	Rs.	P.	Rs.	P.	Rs.	P.	Rs.	P.	Rs.	P.	

Date of submission - - - - - - - -

- - - - - - -

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

C S. R	Duty S	Buses	From	To	Earnin	Dead	Relief	Deptt.	Total	No. of Tri	M. Oil	D. Oil	Petrol	Averag

nature of D.V.E. Clerk ____________ Signature of St

P.S.U.P. (Re.) 180 Adeyia/1256-15-2-82-500 Books.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

बिहार का भूकंप

दीन्हीं कुगति कर भूडोल ने बिहार तेरी, राखी न नेक कसर तेरे हा ! दलन में ।
सारन, चम्पारन, मुंगेर, मुजफ्फरपुर हु, दरभंगा हा ! भंगा कर डारों छिनन में ।
लालन ते मात छूटीं, मातन से लाल छूटे, राव हू से रंक वने, थोड़े ही पलन में ।
बिहारी "राम" विहारी भये वन विहारी, देख दशा तिहारी, नीर आवत नयन में ।

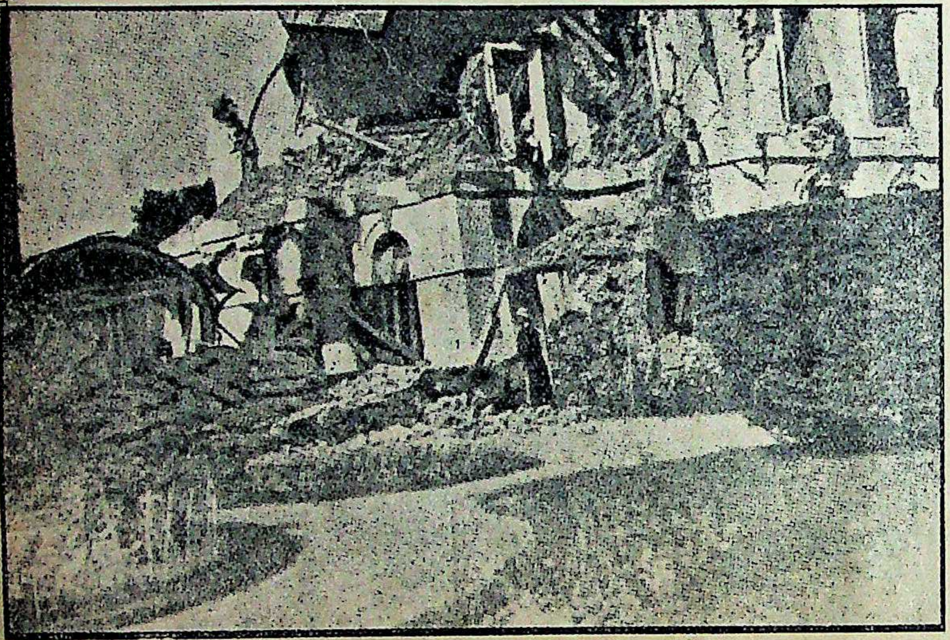

मुंगेर का सर्वनाश

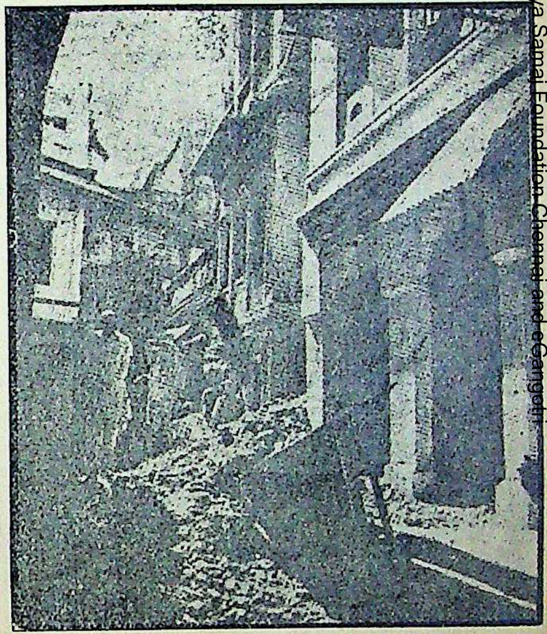

बनारस के मार्केट का दृश्य

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

112332
RF 607
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
112332

बनारस के मार्केट का दृश्य

* मातृदेवोभव *

हिन्दी-सन्देश

हिन्दी प्रचारक साहित्यिक मासिक पत्र

वर्ष २ | माघ १९९० वि० फ़रवरी १९३४ ई० | संख्या २

तेरी कविता

लेखक—प्रो० वंशीधर, विद्यालङ्कार औरंगाबाद

(१)—यह कविता औरंगाबाद के बज़्मे अदब में पढ़ी गई थी।
(२)—यह कविता उर्दू के छन्द में लिखी गई है। इसमें मात्राओं की गिनती भी उर्दू के नियमानुसार ही रक्खी गई है।

(१)

कवि तेरी कविता ऐसी हो,
फूलों सी हो काँटों सी हो।
फूलों सी मोहने वाली हो,
काँटों सी चुभने वाली हो॥

(२)

फूलों सा हो उसमें बाँकापन,
काँटों सा हो उसमें सीधापन।
फूलों सी चटकने वाली हो,
काँटों सी खटकने वाली हो॥

(३)

यदि कोई चाहेगा रस लेना,
तो होश सँभाले आएगा।
यदि वह रस देने वाली हो,
तो जान भी लेने वाली हो॥

मुंगेर का सर्वनाश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संगीत ! और !! कविता !!!

(ले॰—श्री मनमोहन आनन्द एम॰ ए॰)

१. सागर की तरह...शान्त सा–वह एक संगीत था......
........जो इस मूक अधर में सिया है,......
जो अलापते ही मुझसे बिगड़ कर खो जाएगा,......
समीर की तरह–सिमरन में झूलों में मिज़राब और
तारों में—हिलोरियाँ लेने लगेगा ...
जो फुटते ही अलियों और कलियों में—
......गुंग दर्द की तरह......बिखर जाएगा ॥

निर्झर की तरह......चंचल सा......वह एक गान था...
......जो मेरी बन्द आँखों में इठला रहा है......
जो मेरे देखते ही......प्रकाश की तरह......फूलों में,
आँखों में, आग में, हृदय में, बट जाएगा ॥......

उसमें संसार सो रहा था—
......झूमते हुए कमल–ताल की तरह......
......आवेश–भरी–पलकों की तरह......
और–उस सुरासर में, सुधा धर में......
भटके हुए पागल की तरह—
सनयन–अन्धों की तरह—
सभी खो गए थे......
सभी पगदण्डियां उस दुनिया से कट चुकी थीं......
.........झंझा के भंवर की तरह........
हां ! मैं उन डूबी हुई तरंगों के लिये इस शान्त
सागर को फूँक रही हूं... ...उन उमंग
भरे बिखरे हुए शब्दों को यकजा कर रही हूं......

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन लहरों को उठा उठा कर कँवल के अरुण अधर में भर
रही हूँ......... ।
आह ! वह "माधुर्य"–अन्धे फुलेरे की तरह–कितना
खूबसूरत और मदभरा था......॥

२. कोई-बेसुधी में......मुझे इस स्रोत सेन पर खेंच
लाया है......और खुद उन ! लहरों में छुप गया है......
मेरी दस्तक–चन्द्रकलंक की तरह......इस निर्झर में डूब गई......
और लहरें—नई किरणों की तरह—झिलमिलाने लगीं......
मैंने हर एक "झलक" निगाहों में भरली है......
......और......

एक "कलक" आहों में भी धरली है......
अब वह एक "तस्वीर" है......जो मेरे नीरस जीवन
पे खिच चुकी है......और......जो भेद-पट
खुलते शब्दों, आहों, गीतों, अश्कों द्वारा
सरस संसार में लुट जाएगी......

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति

यूरोप में युद्ध के खूनी बादल

[भिन्न भिन्न राष्ट्रों के निम्न लिखित विशेष पुरुष जनता को विविध आन्दोलनों के लिये तैयार कर रहे हैं। हिट्लर. मैकडानलॅड. मसौलिनी. स्टैलिन रूज़वेल्ट. डि वैलेरा, जवाहरलाल, पटेल. दिले (?)यर (फ्रांस)।]

श्री रूस के शासक मि. स्टैलिन ने कम्युनिस्ट पार्टी कांग्रेस में वार्षिक विवरण उपस्थित करते कहा कि पूँजीवादी राष्ट्रों के आकाश मंडल में प्रतिहिंसा-युद्ध के बादल मँडरा रहे हैं। मनचूरिया में चीन-जापान युद्ध की संभावना है। जापान अमेरिका ब्रिटेन और फ्रांस में शस्त्रास्त्र तथा जहाज़ों की तादाद बढ़ाने की कशमकश, पैसिफ़िक समुद्र (प्रशान्त सागर) में अपना प्रभाव बढ़ाने के लिये है। मिस्टर स्टैलिन ने कहा कि हम जापान के साथ अच्छे सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयत्न करेंगे।

\+ \+ \+ \+

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जापान के जल-सेना-सचिव ने जापानी पार्लमैण्ट में भाषण करते हुए कहा कि १९३५ ई० में होनेवाले जल-सेना-सम्मेलन में, जापान १९३२ ई० दिसम्बर में, लड़ाकू जहाज़ बनाने के स्वीकृत अनुपात में परिवर्तन कराने का प्रयत्न करेगा; क्योंकि अन्य कई राष्ट्रों ने अपनी जल-सेना को बढ़ा लिया है।

\+ + + + +

जर्मनी के गुप्तचर विभाग ने जर्मनी में रहने वाले आस्ट्रियनों की नामावलि तैयार की है। आस्ट्रिया में कुछ नाज़ियों के साथ दुर्व्यवहार किया गया है। सम्भवतः इस का बदला लेने के लिये यह सूची काम में लाई जायगी।

\+ + + + +

जर्मनी में नाज़ी राजक्रान्ति का प्रथम वार्षिक समारोह मनाते हुए मि० हिट्लर ने कहा कि जर्मनी संसार में शान्ति स्थापित करना चाहता है। जर्मनी संसार के सभ्य राष्ट्रों में बराबरी की हैसियत से रहना चाहता है। निःशस्त्रीकरण के समझौते में उसके साथ अन्य राष्ट्रों की भांति समानता का व्यवहार होना चाहिए। यदि दूसरा महायुद्ध शुरू हुआ तो संसार में अन्तर्राष्ट्रीय तबाही मच जायगी। जर्मनी ने पोलैण्ड के साथ सन्धि करली है।

\+ + + + +

मि० बर्गिन ने (इङ्गलैण्ड का प्रतिनिधि) पैरिस में भाषण करते हुए कहा है कि यदि फ्रांस ने संरक्षण तट-कर लगा कर, दूसरे देशों के माल को रियायतें देकर, ब्रिटिश माल को रोका तो ब्रिटेन भी उचित प्रतिकार करने में संकोच न करेगा।

\+ + + + +

अमेरिका के हाउस आफ़ रिप्रेजेंटेटिव ने बहु-सम्मति से विन्सन नेवल बिल स्वीकार किया है। इस के अनुसार १२० नए जंगी जहाज़ बनाने की स्वीकृति दी गई है। इसके इलावा हाउस आफ़ रिप्रैजैण्टेटिव ने ११८४ नए हवाई जंगी जहाज़ बनाने की आज्ञा भी दी है।

\+ + + + +

ब्रिटिश सरकार ने राष्ट्रों के निःशस्त्रीकरण के सम्बन्ध में एक आवेदन पत्र प्रकाशित किया है। इसमें इस बात पर ज़ोर दिया है कि जर्मनी को भी आत्म-रक्षा के लिये 'शौर्ट सर्विस आर्मी' की स्वीकृति मिलनी चाहिए। यदि दो सालों में निःशस्त्रीकरण कमीशन ने कोई निर्णय न किया तो हरेक राष्ट्र को जंगी हवाई जहाज़ बनाने की स्वतन्त्रता होगी। इंगलैण्ड समझता है कि यदि जर्मनी कमज़ोर रहा, तो फ्रांस बलवान हो कर उस के लिये बाधक हो सकता है। इस लिये वह अब जर्मनी को राष्ट्रसंघ तथा निःशस्त्रीकरण-सम्मेलन में सम्मिलित करने पर बल दे रहा है।

\+ + + + +

आयर्लैण्ड तथा इंगलैण्ड में आर्थिक लड़ाई दिन प्रति दिन तीव्र हो रही है। आयर्लैण्ड की सीनेट ने पंचों द्वारा इस मामले को सुलझाने का प्रस्ताव स्वीकार किया है।

\+ + + + +

फ्रांस जर्मनी से भयभीत तथा सशंक हुआ, अन्दर अन्दर अपनी शक्ति को बढ़ा रहा है।

\+ + + + +

भारत में पं० जवाहरलाल नेहरू तथा मि० पटेल स्वाधीनता प्राप्ति के लिये ब्रिटेन के साथ शान्तिमय असहयोग का युद्ध लड़ रहे हैं।

\+ + + + +

इटली के मसोलनी इन प्रतिहिंसा-युद्धों की घुड़ दौड़ में अपनी शक्ति को संगठित तथा संचित कर रहे हैं।

(राजनैतिक रोज़नामचा से)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

❀सम्मिलित शिक्षा और उसके समालोचक❀

(ले०—श्री० अमरनाथ जी विद्यालंकार लोकसेवक मंडल अमृतसर)

गत मास के 'हिन्दी संदेश' में प्रो० सत्यव्रत जी सिद्धांन्तालंकार का एक लेख बालक-बालिकाओं की सम्मिलित शिक्षा के सम्बन्ध में प्रकाशित हुआ है। इस लेख में प्रोफ़ेसर साहब ने यह दिखाने की कोशिश की है कि प्रारम्भिक और स्नातकोत्तर (Post graduate) शिक्षा में तो सम्मिलित शिक्षा-पद्धति के प्रचलित करने में कोई विशेष हानि नहीं। परन्तु बीच की किशोर अवस्था (adolescence) में अर्थात् ८-९ साल की आयु से लेकर १६-१८ वर्ष की आयु तक लड़के लड़कियों की शिक्षा पृथक ही होनी चाहिये। प्रोफेसर साहब ने अपने कथन की पुष्टि में प्रधानतः दो कारण दिये हैं।

१—यद्यपि यह कहना तो ठीक नहीं कि स्त्री और पुरुष में कोई किसी से निकृष्ट दर्जे पर है, परंतु प्रकृति ने इन दोनों के शरीर और मन की रचना में कुछ मौलिक भेद रखे हैं। इन्हीं भेदों के कारण किशोर अवस्था में लड़के और लड़कियों के शारीरिक और मानसिक विकास की प्रगति में भेद पड़ जाता है। कुछ समय तक लड़कियां बहुत शीघ्रता से उन्नति करती हैं और कुछ अवस्था के बाद लड़कों की प्रगति का वेग बहुत बढ़ जाता है। इन दृष्टियों से उनकी शिक्षा इस अवस्था में पृथक् पृथक् स्कूलों में होनी चाहिये।

२—स्त्री और पुरुष से प्रकृति किन्हीं भिन्न भिन्न प्रकार के कर्तव्यों को पूरा कराना चाहती है। कई विषयों की शिक्षा दोनों के लिये आवश्यक होने पर भी कुछ ऐसे भी विषय हैं जिनमें से कुछ का ज्ञान पुरुष के लिये ही उपयोगी है और कुछ स्त्री के लिये ही आवश्यक है। इन विषयों की शिक्षा देने के लिये उन्हें पृथक् पृथक् स्कूलों में रखना आवश्यक है। स्कूल में उनकी आवकश्यताएं और कठिनाइयां पृथक पृथक प्रकार की होती हैं। एक ही हैडमास्टर जो या तो पुरुष होगा या स्त्री—दोनों की आवश्यकताओं और कठिनाइयों को समझ कर उनका उपाय नहीं कर सकता। इसके अलावा "स्त्री और पुरुष ने भविष्य में भिन्न २ प्रकार का जीवन व्यतीत करना है, इसलिये उस जीवन के अनुसार उनकी शिक्षा और पाठ्यविषयों का चुनाव भी भिन्न भिन्न प्रकार से होना चाहिये।

इन दो कारणों के अलावा सम्मिलित शिक्षा के विरोधी एक तीसरा कारण अपने पक्ष के समर्थन में उपस्थित करते हैं। जिसका कि ज़िक्र प्रोफ़ेसर साहब ने अपने लेख में नहीं किया। वह यह कि सम्मिलित स्कूलों में चरित्र सम्बन्धी दोष बहुत बढ़ जायंगे— लड़के और लड़कियों में परस्पर कुत्सित सम्बन्ध स्थापित होजयेंगे जोकि समाज के पतन का कारण होगा। आमतौर पर सम्मिलित शिक्षा के विरोधी इसी युक्ति को बहुत ज़ोरदार शब्दों में उपस्थित किया करते हैं। वर्तमान शिक्षणालयों के, अन्य कई दृष्टियों से दूषित वातावरण से उत्पन्न होने वाले परिणामों की जिम्मावारी सम्मिलित शिक्षा के गले मढ़ दी जाती है और रोमांचकारी परिणामों का भय दिखला कर सम्मिलित शिक्षा पद्धति का विरोध किया जाता है।

इस लेख में हमने संक्षेप से इन्हीं पर विचार करना है।

प्रोफ़ेसर साहब के पहले तर्क के सम्बन्ध में हमें इतना ही कहना है कि यदि वह आधुनिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा विशेषज्ञों और मनोवैज्ञानिकों के विचारों का अध्ययन करें तो उन्हें पता लगेगा कि वस्तुतः मानसिक रचना की दृष्टि से केवल लड़के और लड़कियों में ही भेद नहीं होता किन्तु लड़कों लड़कों और लड़कियों लड़कियों में भी एक दूसरे से पर्याप्त भिन्नता रहती है। एक ही लिंग (sex) के व्यक्तियों के शारीरिक और मानसिक विकास की प्रगति एक दूसरे से नहीं मिलती। स्त्री और पुरुष में प्रकृति ने कुछ मौलिक भेद रखे हैं। यह ठीक है- परन्तु इस भेद को जितना अधिक बतलाया जाता है वह उतना नहीं है। इस भेद की खाई बहुत अधिक गहरी नहीं। बात सिर्फ़ इतनी है कि लिंगों के परस्पर भेद अधिक प्रत्यक्ष हैं और उन्हें (Generalise) सर्व सामान्य किया जा सकता है परन्तु एक ही लिंग के व्यक्तियों में जो भेद हैं वे इतने प्रत्यक्ष नहीं और उन्हें सर्व साधारण पर सामान्यतया घटाया नहीं जा सकता। आधुनिक-मनोवैज्ञानिक बतलाते हैं कि कई बालकों की शारीरिक व मानसिक शक्तियों का विकास बहुत जल्द होजाता है और कइयों का बहुत देर में। यद्यपि यह आशा की जाती है कि मनुष्य की शारीरिक आयु के साथ मानसिक शक्तियों की क्रमशः वृद्धि का बहुत गहरा ताल्लुक है परन्तु बहुत बार दोनों की वृद्धि की गति भिन्न भिन्न होती है। ऐसा बहुत बार होता है कि एक व्यक्ति की अवस्था १८-२० साल की हो चुकी हो, परन्तु मानसिक विकास के रुके रहने से मानसिक दृष्टि से वह अभी १०-१२ वर्ष के लड़के के समान हो, या अभी बाल-यअवस्था पार न कर सका हो। इसलिये मनोवैज्ञानिक सामान्य-आयु में और मानसिक आयु में भेद करते हैं। मानसिक आयु का निश्चय मानसिक विकास के अनुसार किया जाता है। क्योंकि शिक्षा का सम्बन्ध मन से है और शिक्षा का उद्देश्य प्रसुप्त चित्ति (Unconscious) को उद्भूत चित्ति (Conscious) में परिवर्तित करना है, इसलिये यह आवश्यक है कि शिक्षा का क्रम ऐसा होना चाहिये, जो व्यक्ति के मानसिक विकास की प्रगति के अनुकूल हो और उसके साथ साथ चल सके। परन्तु क्योंकि मानसिक विकास प्रत्येक व्यक्ति का भिन्न भिन्न गति से होता है और समय समय पर यह गति भी भिन्न भिन्न प्रकार से बढ़ती या घटती रहती है, इसलिये आधुनिक शिक्षा-वैज्ञानिक, हरएक शिक्षक का यह कर्तव्य समझते हैं कि वह प्रत्येक विद्यार्थी की मानसिक शक्तियों के वृद्धि-क्रम पर नज़र रखे और उसके अनुसार ही प्रत्येक विद्यार्थी के पाठ्यक्रम का निश्चय करे। आधुनिक शिक्षा विज्ञान के अनुसार भविष्य में स्कूल में विद्यार्थियों का कक्षा-विभाग सामान्य आयु और अवस्था के अनुसार नहीं किन्तु मानसिक आयु और विकास की अवस्था के अनुसार होगा और विद्यार्थियों का भिन्न भिन्न कक्षाओं का वर्गीकरण ऐसा होगा जिसमें एक प्रकार के मानसिक 'स्टैंडर्ड' के विद्यार्थी एक कक्षा में रहेंगे। शिक्षक प्रत्येक विद्यार्थी की मानसिक प्रगति का निरीक्षण करेगा और विद्यार्थी की एक कक्षा से दूसरी कक्षा में उन्नति (Promotion) वर्तमान प्रकार की निर्जीव परीक्षाओं द्वारा नहीं किन्तु भिन्न भिन्न प्रकार की मानसिक परीक्षाओं (Mental tests) के आधार पर होगा।

यदि कक्षाओं का विभाग उपर्युक्त प्रकार से होना हो, तो यह प्रश्न ही नहीं रहता कि लड़कियों के मानसिक विकास की प्रगति किस आयु में लड़कों से भिन्न रहती है, और कब इससे उलट होती है। एक ही मानसिक आयु के लड़के और लड़कियाँ एक ही कक्षा में साथ साथ पढ़ेंगे, हाँ,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसा अवश्य होगा कि कुछ लड़के और लड़कियों को यदि एक कक्षा से दूसरी कक्षा तक जाने में एक साल लगे भी, तो कुछ को इससे ज्यादा और कुछ को इससे कम। बड़े पैमाने पर इस वैज्ञानिक वर्गीकरण के बाद इस दृष्टि से लड़के लड़कियां के पृथक् वर्गीकरण की ज़रूरत ही नहीं रहती।

प्रश्न होगा कि जब तक हमारे देश में मौजूदा शिक्षा पद्धति है, और मौजूदा स्कूल उपर्युक्त प्रकार से विद्यार्थी की मानसिक प्रगति पर कोई ध्यान नहीं देते तब तक क्या किया जाय ? यह प्रश्न जुदा है-असली असूल फिर भी बना रहता है। अपवाद हर एक चीज़ और अवस्था के होते हैं, और उनके आधार पर कोई सिद्धान्त निश्चित नहीं किये जा सकते। हमें तो आदर्श पर आने के लिये हमेशा कदम उठाने के लिये तय्यार रहना चाहिए।

प्रोफ़ेसर जी का दूसरा तर्क यह है कि स्त्री ने पुरुष के भविष्य जीवन में भिन्न भिन्न प्रकार के कर्तव्यों को पूरा करना है, इस लिए उनकी शिक्षा में भी भेद होना चाहिए। इस बात से कौन इनकार कर सकता है कि प्रत्येक व्यक्ति की शिक्षा इस बात को दृष्टि में रख कर ही होनी चाहिए कि भविष्य जीवन में उसने समाज में कौन सा स्थान लेना है या किन कर्तव्यों का पालन करना है। एक कारीगर और कला-कार की शिक्षा और पाठ विधि एक वकील या सम्पादक की शिक्षा और पाठविधि से अवश्य भिन्न होनी चाहिए। एक डाक्टर और एक इंजिनियर को हम सब विषयों की शिक्षा एक साथ नहीं दे सकते-परन्तु यदि कोई यह कहे कि क्योंकि एक डाक्टर ने भविष्यजीवन में बीमारों की सेवा करनी है, और इसके लिये उस में किन्हीं सौम्यगुणों का होना आवश्यक है, और इंजिनियर को इसकी वैसी आवश्यकता नहीं, इस लिये शुरू से ही उनकी शिक्षा पृथक-पृथक होनी चाहिए, तो इसे आप किस हद तक स्वीकार करेंगे। जिस हद तक विशेष विषयों की पढ़ाई के लिये पृथक पृथक प्रबन्ध की आवश्यकता है, उनका पृथक प्रबन्ध अब भी किया जाता है, और किया जाना चाहिए। उनके कारण दूसरे हैं। परन्तु सामान्य विषयों की पढ़ाई के लिये इस दृष्टि से पृथक् पृथक् प्रबन्ध करने की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती।

मैं इस बात को मानने के लिये तैय्यार नहीं कि "स्त्री पुरुष को भविष्य में भिन्न भिन्न प्रकार का जीवन व्यतीत करना है।" इसके बिलकुल विपरीत उन्हें तो गृहस्थ में, मिलकर एक ही प्रकार के जीवन संग्राम में से गुज़रना है, और एक दूसरे के सुख-दुख में हिस्सेदार बनना है। स्त्री और पुरुषों की दो जुदा जुदा दुनिया है ये विचार उस ज़माने के हैं जब पुरुष शिक्षित होते थे और स्त्रियां मूर्ख। परन्तु शिक्षा दीक्षा के पश्चात् दोनों अलहदा अलहदा दुनिया में नहीं रह सकते—बल्कि उनके विचार और दृष्टिकोण में बहुत समता आजायगी।

वर्तमान युग में गृहस्थ सम्बन्धी आदर्शों में बहुत परिवर्तन आरहा है। सुखी गृहस्थ में स्त्री पुरुष में परस्पर समान-उत्तरदायित्व, सामान्य उद्देश्य और परस्पराश्रय का भाव होगा। उनके विचार दृष्टि-कोण और रुचियां परस्पर मिली हुई होंगी। उनमें सख्यभाव, मिलकर काम करने का उत्साह एक दूसरे की कठिनाइयों को समझने तथा एक दूसरे की कमियों को बर्दाश्त करने की शक्ति होगी। परन्तु यह सब कुछ बगैर पूर्व-शिक्षा (Early Training) और पूर्व अभ्यास के नहीं हो सकता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर लेते हैं, परन्तु अपनी स्त्री की ज़रा सी त्रुटि को बर्दाश्त नहीं कर सकते। यह अलहदा शिक्षा का परिणाम है। सम्मिलित स्कूल में शुरू से ही लड़के और लड़कियां एक दूसरे को समझने के अभ्यस्त हो जाते हैं। दो पृथक् स्कूलों के रूप में उनकी दो पृथक् दुनिया नहीं बन जातीं परन्तु सामान्य स्कूल में वह भविष्य जीवन में एक मनुष्य समाज में मिले हुए रहने का अभ्यास करते हैं। स्कूल से निकलने के बाद वे दो पृथक स्कूलों से आये हुए बिलकुल अपरिचित भिन्न प्रकार के स्वभाव वाले विभिन्न आदर्शों और नीति सम्बन्धी भिन्न भिन्न विचारों को लेकर नहीं आते, बल्कि स्कूल में उनके सहवास से उनके भविष्य जीवन का बुनियादी पत्थर रखा जा सकता है।

वर्तमान समाज की बहुत सी गिरावट का कारण यही है कि हमने स्त्री पुरुष को दो जुदी दुनिया में बाँट रखा है। हमारे गवाँरूपन ने हमारी बाज़ारू मोरेलिटी, हमारी निर्लज्जता पूर्ण भाषा और भावों की बहुत ज्यादा ज़ुम्मावारी इसी पर है। बाज़ार में एक युवा लड़की और सभ्य महिला निकलती है और हमारी गंवारू हंसी और मज़ाक से नहीं बच सकती– कारण यही है कि हमारे समाज को इस बात का अभ्यास नहीं कि स्त्रियों की उपस्थिति में किस तरह रहा जाता है। वह भद्र महिला एक अजनबी की तरह किसी रहस्यमयी दुनिया से हमारे बीच में आजाती है और हमारी आखें सहसा उधर उठ जाती हैं, और हमारा हृदय पापमय भावनाओं से पूर्ण होजाता है। वर्तमान पुरुष समाज, स्त्री के सम्बन्ध में एक ही विचार रखता है और वह है 'सेक्स' या लिंग का। उसे यह पता ही नहीं कि स्त्री के साथ और भी किसी क्षेत्र में मिलने का कोई उद्देश्य हो सकता है। सम्मिलित स्कूल में विद्यार्थी सीखता है कि स्त्री और पुरुष की दुनिया भिन्न नहीं और उनके लिये और भी बहुत से क्षेत्र हैं जहां वे परस्पर मिलते हैं। सम्मिलित स्कूल में लड़कियों की उपस्थिति में लड़कों का गंवारन भाषा का प्रयोग बन्द हो जाता है क्योंकि वे समझते हैं कि ऐसी भाषा का प्रयोग करके वे किस प्रकार अपने एक सहपाठी साथी का अपमान कर रहे हैं। उनकी भाषा; उनकी बातचीत का ढंग, व्यवहार और आचरण (Manners) परिमार्जित होजाते हैं और वे शिष्टाचार सीखते हैं। दूसरी तरफ़ लड़कियों का दृष्टिकोण विशाल होता है। उनका मन संयत– और वे संकुचित भावुकता पर विजय प्राप्त करना सीखतीं हैं और अपने आपको अधिक स्वतन्त्र वायुमंडल में पाती हैं। जिससे उनके स्वाभाविक विकास में सहायता मिलती है।

इस समय पुरुष और स्त्री के स्वभाव और प्रकृति (Temperament) में जो भारी भेद दिखाई देता है, जो गृहस्थ में कई प्रकार के कष्टों और कई प्रकार की समस्याओं का कारण होता है और जो भेद वर्तमान समाज रचना के कारण यहां तक बढ़ गया है कि कहा जाता है कि स्त्री और पुरुष दो भिन्न भिन्न जगत के प्राणी हैं। सम्मिलित स्कूल ही उस भेद को मिटा कर एक (Homogeneous) समाज की रचना कर सकता है। स्त्री और पुरुष की प्रकृति के जिस भेद पर इतना ज़ोर दिया जाता है वह बहुत हद तक स्वाभाविक नहीं। जिस अंश में वह स्वाभाविक है वह सम्मिलित स्कूल में भी आसानी से दूर नहीं हो सकता और जो हमारे वर्तमान समाज की रचना के कारण अस्वाभाविक रूप से उत्पन्न होगया है उसका दूर होना श्रेयस्कर है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा जाता है कि सम्मिलित स्कूल में लड़के स्त्रैण स्त्री प्रकृति के हो जाते हैं और लड़कियों की सौम्य प्रकृति नष्ट हो जाती है, यह ठीक नहीं। यदि तो स्त्रैण प्रकृति से सभ्यता, सौम्यता दयालुता और नम्रता आदि गुणों का अभिप्राय है तब ये गुण लड़कों के लिये भी उतने ही आवश्यक हैं जितने लड़कियों के लिये और इन अर्थों में लड़कों का 'स्त्रैण प्रकृति होजाना ही वाञ्छित है। यदि इसका अर्थ है भीरुता, डरपोकपन, दूसरों पर हमेशा निर्भर रहना और निर्बलता तो इनका लड़कियों में से भी दूर होना आवश्यक है और लड़कियों के पृथक् रखने से ये दुर्गुण उनमें अधिक मात्रा में बढ़ जायेंगे। इसी प्रकार पुरुष-प्रकृति के जो गुण—वीरता, दृढ़ता आदि कहे जाते हैं, इनकी स्त्रियों को भी उतनी ही आवश्यकता है जितनी पुरुषों को। इसके विपरीत पुरुष-स्वभाव में यदि झगड़ालूपन, असहनशीलता, क्रूरता आदि दोष हैं वे लड़कियों के साथ सहवास में आने से हटने ही चाहिये। यदि सच-मुच पुरुष और स्त्री प्रकृति में ये मौलिक भेद हैं तो पृथक् पृथक् रखने से तो वे अपनी अपनी चरमसीमा तक पहुंच जायंगे और इन दोनों प्रकार की प्रकृतियों में कभी कोई समन्वय (adjustment) न हो सकेगा। इस लिये यदि इस दृष्टि से भी देखा जाय तो सम्मिलित शिक्षा ही ज़्यादा उत्तम है।

(क्रमशः)

शाहिद झूठा प्रेम पियार

(जालधंर नगर)

(१)

उसने मुझ सो पीत लगाई
मन मंदिर में जोत जगाई
रीत प्रीत की एक चलाई
टूटा अब वह प्रेम का तार—शाहिद०

(२)

प्रियतम छूटा, सुख सब छूटा
भाग इस विहँव का फूटा
उजड़ गया यह बाग का बूटा
—दुःखी जीवन है वेसार, शाहिद झूठा

(३)

झूठी है यह प्रेम कहानी
उसने मेरी एक न मानी
छोड़ गया निर्मोही जानी
मुझ सौं कौन अभागी नार—शाहिद

(४)

बादल गरजे नैन में नीर
बिजली चमके उठती पीर
कौन बँधाये मुझको धीर
नैया डूबे न सूझे पार—शाहिद

(५)

उजड़ी बसती दिल बरबाद
खुश है दुनिया में नाशाद
मन में केवल उनकी याद
उस बिन जीना है बेकार—
शाहिद झूठा प्रेम पियार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐतिहासिक कहानी

सती का तेज !

किसी जाति के रस्म-रिवाज का परिवर्तन करना कितना कठिन काम है, अंगरेजों को इसका अनुमान उस समय हुआ, जब उन्होंने जबलपुर में सती की रस्म को रोकने के लिये हुक्म जारी किये।

उन दिनों जबलपुर जिले के इन्चार्ज आसिस्टेण्ट कहलाया करते थे, जिन-दिनों का हम जिक्र कर रहे हैं। सर विलियम सुलेमन इस पद पर सुशोभित थे। आप अत्यन्त दयालु और मिलनसार अंगरेज थे। जिला जबलपुर में सुलेमनआबाद गांव आज भी आपकी दयालुता की यादगार बना हुआ है। आपने भारत से वापिस जाने के बाद अपने शासनकाल की घटनाओं की एक पुस्तक लिखी, जिसमें एक हिन्दू-विधवा के सती होने के हालात विशेष रूप से वर्णन किये।

निम्न पंक्तियां उनकी पुस्तक के उक्त भाग से अनूदित की गई हैं। आशा है पाठकों का इससे मनोरंजन होगा।

१८२८ की बात

सर विलियम सुलेमन लिखते हैं—

"सन् १८२८ ई० के मार्च मास में मैंने जिला जबलपुर का चार्ज लिया। सबसे पहला काम जो मैंने चार्ज लेते ही किया—एक नोटिस इस आशय का जारी करना था, कि कोई हिन्दू विधवा सती न हो। इसके अलावा मैंने यह हुक्म भी जारी किया कि जो लोग किसी विधवा के सती होने में सहायता देंगे, उन्हें सख्त सजा दी जायगी और सती के लिये दो-चार लकड़ियां लाकर देने वाला भी अपराधी समझा जायगा।

सती होने की इजाज़त

"२४ नवम्बर १८२९ ई० को एक ऊंचे ब्राह्मण घराने के कुछ वयोवृद्ध आदमी मेरे पास आये और प्रार्थना की कि—

नर्बदा नदी के किनारे उम्मेदसिंह उपाध्याय का देहान्त होगया है। उनकी बूढ़ी पत्नी आपसे सती होने की इजाज़त मांगती है।"

"मैंने उन लोगों को धमकाया और कहा कि कम से कम मेरे शासनकाल में इस प्रकार की इजा-... को सती होने में सहयोग दिया, या यदि बुढ़िया सती होगई तो तुम अपनी ख़ैर न समझो।

"वे निराश होकर चले गये। मैंने पुलिस की एक गारद भी वहां भिजवा दी, ताकि बुढ़िया को सती न होने दें।

बुढ़िया का सत्याग्रह

"वह दिन और रात अच्छी तरह व्यतीत हो गई। बुढ़िया पानी के बीच में एक चट्टान पर सत्याग्रह किये बैठी रही। दिन की चलचलाती धूप और रात का कड़कड़ाता जाड़ा उसने एक बारीक कपड़ा ओढ़े हुये निकाल दिया। उसके रिश्तेदार एक के बाद एक उसके पास जाकर उसे समझाते—मगर फल कुछ न होता। बुढ़िया हठ की पक्की और सती होने पर तुली बैठी थी।

दर्शकों की भीड़

"जब इस घटना की खबर आसपास के गावों में पहुंची, तो लोगों की अपार भीड़ सती को देखने लिये आने लगी और नर्बदा के किनारे देखते २ अच्छा मेला लग गया। मङ्गलवार को उपाध्याय मरे और बुध को उसके दाह की तैय्यारी की गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी और सबके दिल में विश्वास था कि बुढ़िया और उसके रिश्तेदारों की ज़िद से तंग आकर मैं इसको सती होने की इजाजत दे दूंगा। मगर उनका विचार ग़लत था, शाम होगई और मैंने अपने फैसले पर नजरसानी तक करने की आवश्यकता अनुभव न की। दर्शक और मृत उपाध्याय के रिश्तेदार अंधेरा होने तक वहां ठहरे रहे—लेकिन जब मैंने उन्हें बताया कि यहां सती-वती कुछ न होगी, तो वे निराश होकर लौट गये। जब सती की तरह लोगों ने मेरा फैसला भी अटल देखा तो कुछ आदमी बंगले पर आये और इजाज़त लेने के लिये ज़िद करने लगे। उधर कुछ रिश्तेदार सती को समझाने लगे मगर न वह मानी और न मैं।

"एक विचित्र रस्म हिन्दुओं में और है कि जब तक विधवा सती न हो जाय वे खाना-वाना कुछ न खाते और भूखे-प्यासे रस्म के अदा होने की प्रतीक्षा करते रहते हैं। मङ्गल एक, बुध दो, तीसरा दिन वृहस्पतिवार आ गया। सब भूख प्यास से घबराये हुये थे। बुढ़िया को संदेह हुआ कि बाल-बच्चों के रोने-पीटने से और भूखा रहने से कहीं उसकी दृढ़ता न टूट जाय। अतएव उसने अपने माथे पर लाल रंग की पट्टी बांध ली और चूड़ियां आदि तोड़ डालीं। ऐसा करने से वह धर्म-शास्त्र के अनुसार प्रेत हो गई थी और उसे घर में रहने का कोई अधिकार न रहा था।

बुढ़िया प्रेत के रूप में

"बुढ़िया का विचार था कि अब उसके रिश्तेदार उसे तंग न करेंगे और मैं उसे सती होने की आज्ञा दे दूँगा—मगर, यह उसका स्वप्न था। न उसके रिश्तेदारों ने उसे तंग करना छोड़ा और न मैंने उसे सती होने की इजाजत दी।

"बुढ़िया की असाधारण ज़िद को देख कर मैं घबरा गया था। मेरा ख़याल था कि बुढ़िया अब न बचेगी और भूखों मर जायगी। इस हालत में उसके परिवार की बदनामी होगी। इसके अतिरिक्त मुझे यह भी भय था कि भूखे प्यासे रहने के कारण एक-दो आदमी और अवश्य मर जायंगे और फिर यदि शेष चाहेंगे तो मुझ पर कानूनी कार्यवाही कर सकेंगे, क्योंकि मैंने जो हुक्म लागू किया था वह कम्पनी की इजाज़त के बिना किया था। इसलिये मैं कानूनी पकड़ में आ सकता था। रात भर यह सब विचार मुझे तंग करते रहे। अगली सुबह मैं घोड़े पर सवार होकर वहां पहुंचा, जहां बुढ़िया सत्याग्रह किये बैठी थी। उसके एक हाथ में नारियल था और सामने पीतल की थाली में कुछ फूल रखे थे। उससे बातचीत करने पर मुझे ज्ञात हुआ कि अपनी ज़िद से बाज न आयगी। फिर भी कोशिश करना मेरा कर्तव्य था। मैंने उसे लालच दिया, डराया-धमकाया मगर, उस पर कुछ भी असर न हुआ।

मुर्दा बुढ़िया

"आखिर यह कह कर भी मुझे कायल कर दिया कि उसकी आत्मा शरीर से पृथक हो चुकी है जलने में बिलकुल दुख न होगा। प्रमाण मांगने पर उसने कहा कि मेरी नब्ज़ देख लो, बिलकुल बन्द है; मेरे संकेत पर मेरे आदमियों ने जब उसकी नब्ज़ देखी, तो वस्तुतः बन्द पाई। फलतः बुढ़िया के वारिसों से यह शर्त लिखवा कर कि भविष्य में उनके परिवार में कोई भी सती न होगी और वे सती की रस्म को रोकने में मेरी सहायता करेंगे मैंने बुढ़िया को सती होने की इजाजत दे दी।

सती होने की इजाजत मिलने के बाद

"यह सुनकर बुढ़िया बहुत प्रसन्न हुई और मुझे आशीश देने लगी। तीन बजे तक वह नहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धोकर निवृत्त हुई, फिर अपने बड़े लड़के और पोते के कन्धों पर हाथ रख कर चिता की ओर बढ़ी। दर्शकों की भारी भीड़ थी, जो चिता के चारों ओर घेरा बांधे खड़ी थी। पुलिस का यथेष्ट प्रबन्ध था और एक ओर अपने घोड़े पर सवार, मैं उस दर्द-नाक दृश्य की प्रतीक्षा कर रहा था। चिता के पास पहुंच कर उसने अपने पुत्र-पौत्रों के कन्धों का सहारा छोड़ दिया और आकाश की ओर मुँह करके बोली—

"प्राणनाथ! इन लोगों ने न जाने क्यों इतने दिन मुझे आपसे दूर रखा। खैर, अब मैं आपके चरणों में आती हूं, मुझे स्थान दीजिये।

"मैंने चिता के आस पास सिपाही खड़े कर दिये थे, ताकि किसी व्यक्ति को निकट न जाने दें। मेरा विचार था कि सेक पहुंचने पर बुढ़िया स्वतः चिता पर से कूद पड़ेगी। मगर, यह विचार गलत था। बुढ़िया निश्चिन्त रूप से चिता पर अचल बैठी रही। पहले तो शंख और घड़ियाल बजते रहे। मेरा ख्याल था कि सती के रोने-चिल्लाने की आवाज़ को दबाने के लिये ऐसा किया जाता है। परन्तु जब चिता को अग्नि दिखाई गई, त गुलगपाड़ा पूर्णतः बन्द हो गया।"

"हिन्दुओं का विचार है कि चिता पर बैठने के बाद सती को प्रत्येक व्यक्ति का भविष्य दिखाई देने लगता है, अतः घड़ियाल और शंख इसलिये बजाये जाते हैं, कि यदि सती इस सम्बन्ध में किसी को बतलाये तो वह सुन न सके, क्योंकि सम्भव है कि भविष्यवाणी अशुभ हो।"

साध!

(१)

देखो प्रणयी निर्भमता तज,
इस जीवन का तपना।
भूल न जाना कभी हृदय से,
इसे समझ कर सपना॥

(२)

छोड़ तुम्हें कुछ नहीं हमारा,
इस जगती में अपना।
काम हमारा यही रह गया,
केवल तुझ को जपना॥

(३)

रत हो कर तेरे चरणों में,
तुझ को ही नित ध्याऊँ।
गागाकर के गान तुम्हारे,
जीवन सफल बनाऊँ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पचास रसीले ग्राम-गीत।

(लेखकः—श्री देवेन्द्र सत्यार्थी)

> हिन्दी सन्देश के अनेक पाठक श्री देवन्द्र सत्यार्थी की रसिकता तथा संग्रह-शील बुद्धि पर मुग्ध हैं। हमारे कई पाठकों ने इन रसीले ग्राम-गीतों की सरसता को अत्यन्त सराहा है। हम श्री. देवन्द्र सत्यार्थी जी को पंजाबी साहित्य का मार्मिक खोजी समझते हैं। आशा है कि पंजाबी ग्राम साहित्य के अन्य प्रेमी भाई अपने २ स्थानीय गीतों का संग्रह कर सत्यार्थी जी का हाथ बटावेंगे। (सम्पादक)

गीतों का तो पंजाब घर ही है। यहां के बच्चे-बूढ़े-युवक सभी गीत गाते हैं। घरों में, चौपालों, त्रिंजनों में, खेतों में, वनों में, रास्तों में—सर्वत्र गीतों का साम्राज्य है।

क्या कभी आपने पंजाबी ग्रामों की तीर्थ यात्रा की है? यदि नहीं तो हमारे साथ आइये। देखते नहीं हो क्या? पग-पग पर गीतों की गंगा बह रही है। कितने प्राणमय हैं यहां के गीत। यह क्या? हम गीत प्रवाह में बहे जा रहे हैं।

अजी छोड़ो अब इस संकोच को। जी भरकर गीतों का रसास्वादन कीजिये। कहां पायोगे यहां के गीतों का सा विद्युत-स्पर्श? 'सत्यम् शिवम् सुंदरम्' की ऐसी सुहावनी दुनिया और कहां है?

(१) मेरा यार मिसरी दा कूजा;
मिट्ठी-मिट्ठी गल्लू करदा।

'मेरा प्रीतम मिसरी का कूज़ा है। कितनी मीठी-मीठी बातें करता है।'

(२) मेरा यार चन्नण दा बूटा,
मुशक नाऊ मैं रज्जगी।

'मेरा प्रीतम चन्दन का- वृक्ष है। मैं उसकी सुगंध से ही संतुष्ट हो गई हूं।

(३) मेरा यार सरू दा बूटा
वेहड़ेविच्च ला सारखिया।

'मेरा प्रीतम सरु-वृक्ष है। मैंने उसे अपने आंगन में लगा रक्खा है।'

(४) पिंडा मेरा मखमल दा,
मेरे यार दी सुनहरी छाती।

'मेरा शरीर मख़मल का सा है और मेरे प्रीतम की छाती सुनहरी है।'

(५) सुरमा केहड़ियां अक्खां विच्च पामाँ;
अक्खां विच्च यार बसदा।

'मैं सुरमा किन आंखों में डालूं? मेरे आंखों में तो प्रीतम है।

(६) टुट्टी यारी दा कि लाज बनाइये?
रस्सी हेत्रे संढ लाइये।

'रस्सी टूट जाय तो उसे जोड़ लगाया जा सकता है, पर इस टूटे हुये प्रेम का क्या इलाज करे?'

(७) लग्ग न किसे नूँ जावे,
गुड़ नालों इश्क मिठ्ठा।

'ईश्वर करे किसी को इश्क़ न लग जावे। यह इश्क़ गुड़ से कहीं मीठा है।'

(८) यारी तोड़ के खुंडाँ ते बेह गया,
हुण की तूँ रब्ब बन गयां?

'प्रेम से मुंह मोड़कर तू परे लकड़ी के ठूंठों पर जा बैठा है। अब क्या तू परमात्मा बन गया है?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(९) सुफ़्ने आनगे तेरे,
मरूके उठ जेंगी।

'कल को तू चली जायगी। फिर केवल तेरे स्वप्न ही आया करेंगे।

(१०) मेरा लै चल्ल चरखा ओथे,
वे जित्थे तेरे हल वगदे।

'मेरा चरखा उसी स्थान पर ले चल, जहाँ तेरे हल चलते हैं। (अर्थात् अपने खेत में ही)।'

किसान-रमणी पल भर के लिये भी प्रीतम से परे नहीं रहना चाहती।

(११) जिन्द वहूटी जम लाड़ा,
व्याह के लैजूँगा।

'ज़िन्दगी वधू है और जम वर; वह उसे व्याह कर ले जायेगा।'

(१२) रब्ब मिलदा गरीब होवे,
दुनियाँ मान कर दी।

'परमात्मा तो ग़रीब बनने से मिलता है, पर दुनियाँ है कि मान कर रही है।'

(१३) फेर मुड़ नी बजारीं औणा,
खालै शामो नाशपातियाँ।

'हे शामो! इस बाज़ार में फिर किस ने लौट कर आना है? अब जितनी चाहे, नाशपातियाँ खाले।'

समय का सदुपयोग करने का कितना ज़ोरदार आदेश है।

(१४) तेरी चुक न मसीत लजाणी,
राहियाँ ने रैण कट्टनी।

'बटोहियों ने तो केवल रात काट कर ही चले जाना है। वे तेरी मस्जिद को तो उठा ले जाने से रहे।'

ग्रामों में मस्जिद सराय के रूप में भी प्रयोग की जाती है।

(१५) कि करदे वैद बिचारे,
टुट्टियाँ नवज़ाँ तों?

'नाड़ी बन्द हो जाने के पश्चात् भला बिचारे वैद्य लोग भी क्या कर सकते हैं?'

(१६) जेहड़े कैहैंदे सी मराँगे नाल तेरे,
छड्ड के मदान भज्जगे।

'जो कहा करते थे—हम तुम्हारे लिये जान दे देंगे,—आज हमारा साथ छोड़ कर भाग गये!'

(१७) इश्क़ दरिया वगदा,
किते डुब्ब न मरी अनजाणाँ!

'इश्क़ का दरिया चलरहा है।
हे अनजान! देखना कहीं इस में डूब न मरना।'

(१८) चक्कना होवे ताँ हथ लाइये,
इश्क़ जनाज़े नूँ।

'इश्क़ क्या है, जनाज़ा (शव) है। यदि इसे उठाना हो तभी हाथ लगाना चाहिये।'

(१९) लाई नी देख लै लाके,
बड़े दुःख यारी दे।

'नहीं किया तो कर के देख ले, प्रेम बहुत कठिन है।'

(२०) कल्ली होवे न बनाँ बिच लकड़ी,
कल्ला न होवे पुत्त जट्ट दा।

'ईश्वर करे न बनों में लकड़ी अकेली हो, न किसान का पुत्र अकेला हो।'

(२१) तेरे सज्जरी पैड़ दा रेता,
चक-चक लावाँ हिक नू।

'जहां से तू अभी-अभी गया है। वहां की धूलि उठा-उठा कर मैं अपनी छाती पर लगा रही हूं।'

(२२) जे हैं मेरी चाल वेखनी,
मेरी जुत्ती नूं लुआ दे घुंगरु।

'यदि तुम ने मेरी चाल देखनी है तो मेरी जूती को घुंगरु लगवा दो।'

पति महाशय संगीत-प्रेमी होंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

112332

(२३) जुत्ती लैदूँ घुंगरुयां वाली,

भावें मेरी जिंद बिकजे।

पति कहता है—'मैं तुम्हे घुंगरुयों वाली जूती ले दूँगा। इस के लिये मेरा जीवन भी क्यों न बिक जाय।'

(२४) टुट्टजें रेल गड्डिये!

मेरे यार नूँ पिच्छे छड्ड आई।

'हे रेल-गाड़ी! ईश्वर करे तू टूट जाय, क्योंकि तू मेरे प्रीतम को छोड़ आई है।'

कितना ज़बरदस्त शाप है।

(२५) काले रंग दी बिके पनसेरी,

गोरा रंग बिके रत्तियें।

'काला रंग पनसेरियों के हिसाब से और गोरा रंग रत्तियों के हिसाब से बिक रहा है।'

अर्थात्—काला रंग गोरे रंग से कहीं सस्ता है।

पनसेरी=पाँचसेर।

(२६) गोरा रंग गड्डियाँ बिच्च आया,

कालियां नूँ खबर करो।

'गोरा रंग गाड़ियों में आया है। काले नर नारियों को पता दे दो।'

(२७) लोगड़ी दा फुल्ल बन के,

तेरी गुत्त दे पिच्छे लग्ग जामाँ!

पति कहता है—'ऐसा जी चाहता है कि मैं लोगड़ी का फूल बन कर तुम्हारी वेणी से लिपट जाऊँ।'

(२८) लक शेर दा मिरग दे अाने,

गरदन कूंज दी बनी।

कोई पति अपनी पत्नी के सौंदर्य का बखान कर रहा है—

'उस की कमर शेर की सी है, आँखों की पुतलियाँ हिरन की सी, और गरदन कूंज की सी है।'

(२९) दिन चढ़दे दी लाली ...

रूप कुमारी दा।

'कुंवारी युवती का रंग-रूप सूर्योदय का सा होता है।'

(३०) सानूँ मित्रां बाक हनेरा,

चंद भावें लख्ख चढ़दे।

'चाँद ख्वाह लाख-वार चढ़े, मुझे अपने प्रीतम के बिना अन्धकार ही अन्धकार प्रतित होता है।'

(३१) यारां नाल बहारां,

दुनियां लख्ख बसदी।

'दुनियाँ में लाखों प्राणी बसते हैं, अपने प्रीतम के साथ ही बहार मनाती हूं।'

(३२) मेरा चरखा बोलियां पावे,

कत्तनी कबित्त लावे।

'मेरा चरखा गीत गा रहा है और मेरी कत्तनी कवितायें सुना रही है।'

(३३) जोड़ी मिलगी फरक न काई,

जुग-जुग जीगीं बावला!

कोई कन्या अपने पिता से कह रही है—'मुझे अपनी इच्छानुकूल पति मिल गया है—ज़रा भी फ़रक नहीं रहा। हे पिता! ईश्वर तुम्हें चिरायु करें।'

(३४) की नागाँ न सौणाँ,

बज्जियाँ बीनाँ तों।

'बीनें बजने पर क्या कभी सांप सो सकते हैं?'

(३५) मूहरे लगजा संधूरी पग्ग वालिया!

सप्प वंगूँ आमां मेहल दी।

पत्नी कह रही है—हे संधूरी पगड़ी वाले प्रीतम! तुम आगे-आगे चलो। पीछे-पीछे मैं सांप की भांति लचकती हुई आऊँगी।'

(३६) रोही दे कबूतर गोले,

ताड़ी मारे उड्ड जानगे।

'ये जंगली कबूतर हैं, जो ताड़ी मारने से झट उड़ जायेंगे।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(३७) सप्प दी तोर न तुरियें,
जोगी कील लैनेंगे ।

'सांप की गति से मत चल सँपेरे पकड़ लेंगे।'

(३८) अक्खीं देख के सबर न आवे,
पानी होमें घुट्ट भरलां।

पत्नी कह रही है—'तुम्हें इन आँखों से देख कर जी नहीं भरता। यदि तुम पानी होते तो मैं घूंट भर लेती।'

(३९) गोरे रंग तो बदल गया काला,
कि गम खा गया मित्रां !

'तुम्हारा गोरा-गोरा रंग काला पड़ गया है। प्रीतम ! कौनसा ग़म है जो तुम्हें बेचैन किये हुये है?'

(४०) तंद तेरियां गमां दे पामां,
चरखी मैं जिन्द दी कत्तां।

'जीवन रूपी चरखे पर, मैं तुम्हारे ग़म का सूत कात रही हूं।'

(४१) मैं खंड दा पलेथन लामां,
मित्रां दे फुलके नूं।

'अपने प्रीतम की चपातियों को मैं खाँड का पलेथन लगा रही हूं।'

(४२) यार ने गले नाल लाई,
रब्ब दा दीदार हो गया।

'प्रीतम ने मेरा आलिंगन किया और मुझे परमेश्वर का दर्शन हो गया।'

सच है, पतिव्रता पत्नी की दृष्टि में पति ही परमेश्वर होता है।

(४३) किते बोल वे नमाणीयां कागां ?
कोलां कूक दियां !

'कोयलें कू-कू कर रही हैं। हे नमाने काग ! कभी तू भी बोल।'

कोयलों की कू-कू काग की कायें-कायें से कहीं मधुमय होती है। फिर ग्रामीण रमणी काग की कायें कायें की भूखी क्यों है ? बेचारी का प्रीतम परदेश में है। हिन्दू घरों में काग की कायें-कायें प्रायः अतिथि- आगमन की सूचक मानी जाती है। परदेस से प्रीतम के आगमन की कल्पना भला काग की कायें-कायें के बिना कैसे हो सकती है ?

(४४) ल्यादे मित्रां दियां खबरां,
उड्डजा जानवरा !

'हे पक्षी ! जा, उड़जा और मेरे प्रीतम की ख़बर ला दे।'

(४५) जट्ट रोही दी किक्कर दा जातू,
व्याह के लै गया तूत दी छटी।

'जंगल की कीकर की लकड़ी के लठ्ठ जैसा किसान युवक, शहतूत की छटी जैसी(नाजुक)कन्या को व्याह कर ले गया।'

(४६) पैर कूचके झांजरां पाइयां,
देखीं रब्बा ! चक्कन लवीं।

'अपने पैरों को मांज सँवार कर मैंने झांजरों से सजाया है।

हे परमात्मा ! देखना कहीं मुझे उठा न लेना (मृत्यु का ग्रास न बना देना)।

(४७) जोड़ी आई हँसाँ दी,
कित रब्ब न बछोड़ा पादे।

'पति-पत्नी की जोड़ी हंस-हंसनी की सी है। कहीं परमात्मा उन्हें एक-दूसरे से पृथक् न करदे !'

(४८) दुनियां हाथ्थ बन्ह दी,
मींह पादे भगवाना !

'दुनियाँ हाथ बाँध रही है। हे भगवान ! वर्षा करो।'

(४९) चिट्टे दंदां दे बननगे कोले,
हड्डियां दी राख बनजू।

'एक दिन इन सफ़ेद-सफ़ेद दांतों के कोयले बन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक समाजिक कहानी

प्रेम या प्रेमी

(लेखक—श्री० नांगिया)

एक बार नहीं, मैं ने कई बार पत्र पढ़ा। मेरी समझ में न आया कि पत्र कहां से आया है, क्योंकि न तो उस पर डाक-घर की मुहर थी और न ही लिखने वाले का नाम ! भला मैं कैसे जानता कि पत्र लिखने वाला अमुक है। पर हां, पत्र था प्रेम-रस से भरपूर-स्नेह से सना हुआ-जैसे कि एक प्रेयसी अपने प्रेमी को लिख रही हो। पत्र का मज़मून यह था—

४ बजे प्रातः,
प्रेम-विलास।

प्यारे !

आह ! ज़माना कैसा है ! मैं भूल गया; आह ! प्रेम क्या चीज़ है ! जिस का घर पता नहीं; और न ही यह मालूम है, कि वह स्वार्थी है, या परमार्थी; ज़ालिम या रहम-दिल; दुर्जन या सज्जन-उस के प्रति ऐसे भाव ! मालूम हो गया, यह प्रेम ही है जिस की बदौलत रातों का सोना, खुशी के कामों में हिस्सा लेना, सब कुछ जाता रहा; और सिवा रंज, ग़म और रोने के कुछ न मिला। पता लगा, यह प्रेम ही है, जो मुझे इस प्रकार रुला रहा है। यह प्रेम ही है, जिस के पैने तीरों से छलनी हुआ मैं पागलों की तरह शान्ति का पुजारी बन गया हूं। आह ! नाम भी कैसा प्यारा है ! ऐ मेरे शान्ति ! नहीं नहीं, भूल हुई; प्यारे शान्ति ! तेरे नाम से साफ़ ज़ाहिर है, कि तू शान्ति-ठंडक-देने वाला है। परन्तु मैं इस को उलटा देख रहा हूं। तुम कहोगे कैसे ? इस का उत्तर, ऐ मेरे प्यारे ! मेरे जीवन के सहारे ! सुन, ज़रा ध्यान से सुन-मेरा एक बड़ा भाई था, जो मुझे बहुत प्यारा था। और प्यारे ! सचमुच वह तुम्हारी ही शकल का था। पहिले दिन जब मैंने तुम्हें देखा, तो तुम से चिमट जाने को तैयार हो गया था; लेकिन—हां एक डर भी था—उस का नाम राम था, और अब वह है भी राम की गोद में। वह मुझे भूल चुका है; पर मेरे दिल में

जायेंगे और हड्डियों की राख बन जायेगी।'

(५०) बोलियां दी पुल बन्ह दियां,
मेथों जग जित्तिया न जावे।

'गीतों का तो पुल बांध दूं, पर मैं जगत् को नहीं जीत सकता।'

इस गीत को (Good night song) अन्तिम गीत समझना चाहिये। गीतों की कुश्ती लड़ते-लड़ते अन्त में ग्रामीण नर-नारी इस गीत को मधुर स्वर से गाया करते हैं।

काव्य और संगीत के तो मानो ये गीत अवतार हैं। कितना सुविस्तृत है इन का क्षेत्र। इन फूलों की एक-एक पँखड़ी पर मौलिकता का रंग है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसकी याद वैसी है—और यही कारण है, कि मैं तुम्हें चाहता हूं। प्यारे! यदि तुम मेरी बूढ़ी माँ के पास चले चलो, तो वह भी तुम्हें राम समझ कर अपनी गोद में बिठा लेगी। यह है, मेरे प्रेम का परिचय, राज़। अब स्वयं ही जान जाओ, कि मैं तुम से कैसा प्रेम करना चाहता हूं। मैं कौन हूं? इसे जानने की अभी ज़रूरत नहीं। हां! इतना ज़रूर बता दूं, कि मैं एक अच्छे घराने से हूं; मेरे बाबा बड़े अमीर थे। मेरे पिता मुरादाबाद में काम करते थे। जब मेरे पिता को पैनशन मिली, उस वक़्त मेरी आयु एक साल की थी; और मेरा भाई पांच साल का—इस के बारह साल बाद मेरा भाई परमात्मा की गोद में चला गया; और इसी सदमे से आठवें दिन बाद मेरे पिता भी चल बसे। उसके मरने के चौथे दिन, जब मैं और मेरी माँ अभी रोने धोने में लगे हुए थे, अभी आंखों से आंसू बहने बंद न हुए थे, कि चोरों ने हमारे ही घर को आ लूटा; और जो पूंजी थी, ले उड़े—यहां तक कि हम पैसे पैसे के मुहताज़ हो गए। काश! मुसीबत कभी अकेली नहीं आती—यहां तक ही नहीं, चोरों ने मेरी माँ को बुरी तरह ज़ख़्मी भी किया! अब सिवा मेरे और कौन था जो उस की ख़बर गीरी करता—मैं अभी तेरह साल का बालक।

हमारे पड़ोस में एक सज्जन रहते थे। मैं उन का नाम तो भूल गया, पर शकल से अब भी पहचानता हूँ। आह! मैं क्या लिख रहा था और कहां चला गया—मैं ने तो अपनी राम-कहानी छेड़ दी। प्यारे, मुझे माफ़ करना।

"नाम ख़त में क्या लिखूं, तहरीर से पहचान लेना।
जान-निसारों में तुम्हारे हूं, वफ़ादारों में हूं!"

ख़त का मज़मून पढ़ कर दिल में कुतूहल औत्सुक्य, और अनुकम्पा के मिश्रित भावों से गुदगुदी सी होने लगी। किस तरह का पत्र है? मैं किस को जवाब दूं? कहां दूं? क्या लिखूं?

यह मैं सोच ही रहा था, कि किसी ने मेरा नाम ले कर पुकारा। मैंने जो खिड़की से झांका, तो एक कोई सत्रह अठारह साल का सुडौल युवक, चूड़ी-दार पायजामा, पटियाले-शाही पगड़ी, और रेशमी अचकन पहिने नज़र पड़ा। मेरी कोई जान पहचान मालूम न पड़ती थी। ख़ैर, मैं नीचे गया। उसने मेरे मकान का पता पूछ कर इतना कहा, कि 'आप से आज रात को मिलूँगा।' मैंने बहुत चाहा कि मेरे पास कुछ देर वह ठहरे, पर न मालूम वह क्यों इतनी जल्दी में था।

(२)

ख़ैर; ज्यों त्यों कर के रात आई। मैं भी बहुत बेचैन हो रहा था। आख़िर, यह है कौन? मैंने बैठक का दरवाज़ा आज खुला रखा; ज़रा सी खटके के होने पर बाहर उठ कर देखता। पर जब रात ग्यारह बज गए, मैं निराश हो कर सो गया। पर नींद कहां? ध्यान तो लगा था, आने वाले की तरफ़।

दूसरे दिन दफ़्तर पहुंचने पर एक और लिफ़ाफ़ा मिला, जिस में लिखा था "अफ़सोस" मैं अपना वायदा पूरा न कर सका; इस में मेरा कोई दोष नहीं; मैंने हर चन्द कोशिश की, पर आपका मकान न ढूंढ सका—क्यों कि रात अन्धेरी थी; कोई मनुष्य नज़र न आता था; न मालूम तुम ने उजाड़ में क्यों मकान ले लिया। अच्छा अब मैंने तुम्हारा घर पा लिया; आज रात को मुलाक़ात होगी।"

(३)

मैं चिन्ताओं के समुद्र में मगन था; तरह तरह की लहरें आतीं, और मुझे अपने आंचल में आ ढांपतीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कभी उमंग की; कभी रहस्य की, कभी डर की। समय के साथ मेरी चञ्चलता और उद्विग्नता भी बढ़ती ही गईं।

धीरे धीरे शाम हुई; अन्धेरे ने उजाले को भगा दिया। आई–भयानक, नीरव, परन्तु रहस्य मय।

मेरे दरवाज़े पर खटखटाहट सी हुई। देखता क्या हूं, वही शकल, वही पोशाक मेरे सामने खड़ी, हाथ जोड़े कह रही है,

"क्यों जी! मैं वक़्त पर आगया हूं न!"

"जी हां! बड़ी कृपा की।"

"अच्छा; अब मेरे दोनों पत्र फाड़ दीजिए।"

"कारण?"

"अब उसकी क्या ज़रूरत है? मैं ख़ुद जो आ गया।"

"नहीं, ऐसा नहीं हो सकता।"

"क्या आप मुझे पहचानते हैं?"

"नहीं मैं आप से पूछना ही चाहता था आप का नाम।"

"मुझे 'प्रेम' कहते हैं।"

"नाम तो बड़ा प्यारा है।"

"हां, तुम्हें तो प्यारा लगना ही हुआ।"

"यह क्यों?"

"अपने दिल से पूछो।"

"पूछ लिया; मुझे तो कारण नहीं सूझता।"

"अच्छा; झूट बोलना भी जानते हो। क्या तुम्हारी चिर–सङ्गिनी का नाम प्रेम नहीं है?"

"हां, उस का भी यही नाम है। पर तुम्हें कैसे मालूम हो गया? मैं ने तो तुम से पहिली भेंट की है।"

"पर मैं तुम्हें चिर-काल से जानता हूं।"

"तुमने मुझे कहां, कैसे देखा?"

अभी नहीं बताऊंगा; तुम्हें .... लग जाएगा।"

"नहीं, तुम्हें अभी बताना होगा।" यह कहते कहते मैंने प्रेम के गले में बाहें डाल दीं। न मालूम क्यों मेरा दिल उस की तरफ़ खिंचता जाता था। उस की मस्त आंखें, पतले पतले होंट, नाजुक कलाइयां–मानों अप्सरा के रूप में, निर्माता से भूल हुई, जो लड़का बना दिया। "प्रेम तुम मुझे इतने प्यारे क्यों लगते हो?"

"क्या सच कह रहे हो?"

"हां मैं सच कह रहा हूं; तुम मुझे बहुत प्यारे लगते हो।"

"क्या तुम इस प्रेम को भूलोगे तो नहीं?"

"नहीं।"

"क्या प्रेम के प्रति इस प्रेम में कुछ वासना तो नहीं?"

"कैसी वासना? छिः! तुम मुझे इतना गिरा हुआ समझते हो हां, यदि तुम लड़की होती, तब यह बात तुम्हारे मुंह से सजती थी।"

"और यदि अब मैं लड़की होऊं?"

"यह कैसे हो सकता है? कभी बैल ने भी दूध दिया।"

"हो सकता है; लो देखो।" इतना कहते ही उसने पगड़ी उतार दी। मैं हैरानी से उस के लम्बे लम्बे बालों की ओर देखता ही रह गया! यह क्या? पुरुष के रूप में एक सुन्दर नव युवती! उस ने फिर जल्दी से वैसे ही पगड़ी सिर पर रख ली; और जाने को तैयार हो गई। मैंने चाहा कि वह रुक जाए, पर उसने एक न मानी। और अन्धेरी रात में अकेली चलदी। मैंने दो तीन बार "प्रेम! प्रेम!" पुकारा; पर प्रेम–रहस्य-मयी या रहस्य–मय प्रेम, निविड़ अन्धकार में, नीरव निशा में, निर्जन दिशा में लुप्त हो गया या चला गया था!

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दरवाज़े पर दस्तक दी। मैंने लेटे लेटे ही जवाब दिया, "आज मैं सैर को न चलूंगा; मेरी तबीयत ठीक नहीं है।" यह समझ कर कि इस समय और कौन जगा सकता है। पर आवाज़ आई, "ज़रा दरवाज़ा तो खोलो।" मैंने उठ कर दरवाज़ा खोल दिया। लैम्प जलाया। क्या देखता हूं? स्लीपिंग सूट में वही रात वाला रहस्य मय नौजवान, माथे पर रूमाल बांधे, नफ़ीस धुस्सा ओढ़े मेरे सामने खड़ा मुस्करा रहा था। मुझे शक गुज़रा, यदि यह स्त्री होती तो इस पोशाक में इतने अंधेरे क्यों आती, रात इसने मुझे धोखा देना चाहा। नकली बाल लगा लिए होंगे। ठीक है, तभी ज्यादा देर न रुका; कहीं राज़ न खुल जाए? यह विचार मेरे मन में आ ही रहे थे, कि उस ने मौन भंग किया।

"देखा मेरे प्रेम का सबूत।"

"पर पहिले मुझे यह बताओ, कि तुम हो कौन? कहीं मुझे उल्लू बनाने का यार-दोस्तों ने यह तरीक़ा तो नहीं सोचा?"

"नहीं यह कोई चाल नहीं; पर मैं तुम्हें अपना भाई बनाने आई हूं।"

"आए हो, या आई हो? मुझे तो यह भी शक है?"

"नहीं, मैं आई हूं। लोक-लज्जा के कारण मुझे इस वेष में तुम्हारे पास आना पड़ा है। बोलो क्या तुम मुझे अपनी बहिन स्वीकार कर सकोगे?"

मेरे दिल में हलचल सी मच रही थी। हृदय-मन्दिर में देवासुर संग्राम छिड़ा हुआ था। एक ओर थी काम-वासना, दूसरी ओर था कर्त्तव्य; एक ओर था पाप, दूसरी ओर था पुण्य। खूब तुमुल युद्ध हुआ। काम-वासना ने कहा—जिस को न कहीं देखा, न भाला; न रिश्ता न नाता; यूं ही बहिन कह देने से मेरा क्या बिगड़ जाएगा? कर्त्तव्य ने कहा—छिः? तुम कितने नीच हो, कितने अधम! एक निस्सहाय अबला के प्रति यह भाव! उसने मुझे चुप देख फिर कहा—"क्यों बहिन बनाने में कुछ आपत्ति नज़र आती है, भाई?"

मैंने झिझकते झिझकते उसे अपनी ओर खींचा—उस ने समझा भाई बनना स्वीकार कर लिया है। मैं ने धीरे धीरे उस के सिर पर हाथ फेरते हुऐ पूछा, "प्रेम! अच्छा, अब तो बताओ, तुम ने मुझे पहिले कहाँ देखा था?" 'अच्छा, यह पूछना चाहते हो?" यह कहते कहते उस के मुंह पर लालिमा दौड़ गई। मैंने प्यार से उस की पगड़ी उतार कर एक कोने में रख दी; और सस्नेह उस की ओर एक टक देखने लगा। मेरी आंखों में एक लालसा थी, तृष्णा से भरपूर। मुझ से न रहा गया। मैंने पूछा, "क्या मेरी बात का जवाब न दोगी?'

दूंगी, और अभी दूंगी।"

जब उसने मेरी बगल में बैठ जाने में ज़रा भी हिच-किचाहट न की, मेरी हिम्मत बढ़ गई, मेरे अभिप्राय को समझ, वह शेरनी की तरह मेरे ऊपर झपट पड़ी। और कमर से एक चमकती हुई कटार निकाल मुझे मारना ही चाहती थी कि मैं उस के पैरों में गिर पड़ा। और बच्चों की तरह अपने कसूर की माफ़ी मांगने लगा। वह कड़क कर बोली "आओ पापी! नीच!! नराधम!!! मैं तेरे लिए ऐसे उच्च भाव मन में रखती थी। तुझे महात्माओं से भी बढ़ कर जानती थी। अपने पति के मर जाने के बाद अपना कोई भी दुःख बांटने और सुनने वाला न समझ कर तुम्हें अपना भाई बनाना चाहती थी; पर आह! निर्दयी!! दुरात्मन्!!! तेरे मन में यह पाप था, मुझे मालूम न था।" बस इतना कह कर वह ... हुई। मैं किङ्कर्त्तव्य विमूढ़ था; शरम के मारे सिर झुकाए वहां जमीन में गडा रह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया। जब चेत हुआ, तो मेरी आंखों से अविरल अश्रुधारा बह रही थी !! यह पश्चात्ताप के आंसू थे!!!

(७)

दूसरे दिन एक पत्र मिला; उस में लिखा था—"भाई ! मेरा क़सूर माफ़ करो। मैं ने रात तुम्हें भले बुरे शब्द कह कर तुम्हारा दिल दुखाया है। यदि मैं तुम्हें प्यार से समझाती, तो तुम राह पर आ सकते थे।

तुम ने बार-बार मुझ से यह सवाल पूछा था कि मैंने तुम्हें कहां और कब देखा है ? लो सुनो-वास्तव में मेरा नाम है प्रेमी। क्या अब कुछ याद में आया ? यदि नहीं तो और बताए देती हूं। जब तुम दिल्ली में पहिली बार अपनी प्रेम को लाए थे, उस समय मेरा घर तुम्हारे पास ही था। जब चोरों ने मेरे पिता के मरने के चौथे ही दिन डाका डाला था, और मेरी वृद्धा मां को बुरी तरह ज़ख्मी कर गए थे, उस समय तुम ही ने मेरी रक्षा की थी। उस समय मेरी आयु तेरह साल की होगी। आप शायद भूल गये हों, पर मेरी आंखों के सामने वह दृश्य ऐसा मालूम पड़ रहा है, जैसे कल की बात हो। एक दिन, जब ज़ख्म धोने के लिए मैं पानी गरम कर रही थी तो आँच न जलती थी; धुआँ इतना था कि जी घबराता था। इस कारण आप खीज कर उठ खड़े हुए थे, पर जब मुझे चूल्हे के पास धूएं के कारण आंसू पूंछते देखा, तो कितनी दया आई थी; और कहा था, "प्रेमी ! तुम कितना कष्ट उठा रही हो; हटो मैं आँच जलाए देता हूं।" यह शब्द अब भी मेरे कानों में गूंज रहे हैं। इस के बाद आप दिल्ली से चले आए। यूंही नहीं; मुझ से मेरी माता से मिलकर। याद है मैंने क्या शब्द अन्तिम बार कहे थे ? "देखना भूल न जाना!" पर तुम तो प्रेम में ऐसे लीन हुए, कि प्रेमी मर गई है, या जीती, इस की सुध ही न ली।

इस के बाद मेरी यहां शादी हो गई। पति के मर जाने के बाद, मैंने किस प्रकार दिन बिताए, यह बता कर तुम्हारा दिल न दुखाऊंगी।

दैव-वश एक दिन मैंने तुम्हें समाज के जलसे पर देख लिया। तुम ने भी मुझे अच्छी तरह देखा। मैं समझी कि तुम भी मुझे पहचान गए होंगे। परन्तु कुछ दिन बीतने के बाद मुझ से न रहा गया; और मैंने पुरुष के वेष में तुम से मिलना चाहा; और प्रेम नाम बता कर मिली भी। पर जब तुम मुझे न पहचान सके, तो मैंने आज़माना भी चाहा; जिस में मुझे खेद से लिखना पड़ता है, तुम फ़ेल हुए। इस में भी मैं क़सूर वार हूं, क्यों कि स्त्री का, ख़ासकर विधवा का यह धर्म नहीं, कि इस प्रकार पर-पुरुष से, अकेले में जाकर मिले, और वह भी पुरुष के वेष में; यानी अपने सब घर वालों—सास, ससुर, देवर, ननद जिस के पास मैं रहती हूं—उन की आंखों में धूल डाल कर यूं रातों को निकल भागी। यह मुझे दण्ड मिला है; मैं उसी कटार से जिस से तुम्हें मारना चाहती थी, अपने को हमेशा की नींद सुला देना चाहती हूं, ताकि मेरी आत्मा अपने इष्ट-देव पति से जा मिले; और मैं भी उसी के चरणों में जा लीन हूं। सो भाई ! अब मेरे लिए तुम न रोना; मुझे तलाश करने का प्रयत्न भी न करना। प्रेमी को भूल जाना; प्रेम से प्रेम करना बस यही मेरी अन्तिम इच्छा है।

मैं खुशी से लिख रही हूं, कि मेरी माँ कई साल पहिले ही मर चुकी है।

तुम्हारी प्रेमी

\+ \+ \+ \+

मैं पत्र पढ़ता जाता था; और गरम गरम आंसू मेरी आंखों से टप-टप गिर रहे थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महिला-संसार

विदुषी महिला का उद्‌गार

प्रयाग की श्रीमती रूपराना 'श्यामा' बी०ए० ने 'सनातनधर्म' के बसन्ताङ्क में 'बसन्त तो आता ही रहेगा' शीर्षक लेख में कुछ सुन्दर उद्‌गार प्रगट किये हैं :—

"जितने भी सुधारक पुरुष या स्त्रियां हैं, सभी सास, ननद और दुरानी जेठानी के अत्याचारों और दुर्व्यवहारों की दुहाई देते हैं, मानो केवल नव-बिवाहित दुलहनें, ही स्त्रियां हैं, उनके अतिरिक्त सास, ननद और जेठानी आदि कोई अन्य जंगली जानवर हैं। जिन्हें गुर्राने में और हिंसा करने में ही आनन्द मिलता है; परन्तु आज की दुलहिन कल सास हो जायगी और कल की दुलहिन आज सास है, यह कोई स्मरण नहीं करता। आखिर सास और ननद भी तो स्त्रियाँ ही हैं न?"

उनके कथनानुसार, "वास्तव में यह सम्पूर्ण दोष अशिक्षा और कुशिक्षा का है। स्त्रियां पहले ही से अशिक्षा के रोग में जकड़ी हुई थीं, अब उन्हें दूसरा भी रोग लग गया कुशिक्षा का।"

अन्तमें बड़ी मार्मिकता के साथ वह कहती हैं :—

"अभी दो-चार दिन में बसंत आ रहा है। कितनी बहनें बसंती रंग में रंग कर सरसों की तरह फूली फिरेंगी। न जाने कितनी जगह माता सरस्वती की पूजा होगी। कोयल की कूक और आम की मँजरी पर न जाने कितनी बहनों को कविता करने की धुन सवार होगी। न जाने कितना अबीर बसंत की भेंट कर दिया जायगा। हमारे इस निर्धन देश ने अपनी दीनता में भी अतिथियों का स्वागत ही किया है। सब स्वागत की तैयारियां कर रहे हैं। पर जब बसंत पूछेगा सावित्री और सीता को, गार्गी और मैत्रेयी को, पद्मिनी और लक्ष्मीबाई को, मीरा और सहजो को, उस समय क्या कहोगी? सेफ़्टीपिन साड़ी में लगाए, विलायती चाल का फ्राक पहने और टेढ़ी मांग निकाले अंग्रेज़ी में वैलकम करते देख कर क्या बेचारा बसंत रो नहीं पड़ेगा? जितना तुम आगे बढ़ने की सोच रही हो उतना ही पीछे हटती जाती हो। देखो बसंत प्रति वर्ष आता है, किन्तु निराश होकर चला जाता है। इस बार निराश न होने देना। अतिथि है। साल भर बाद आया है। बड़ी आशा से आया है। उसको यह कह कर न लौटाना कि "बसंत तो आता ही रहेगा।"

पं० जवाहरलाल का महिलाओं को सन्देश

"हमारा राष्ट्र कैसे उठ सकता है, यदि राष्ट्र का अर्द्धाङ्ग हमारी स्त्रियां पीछे रह जायँ और अशिक्षित तथा अबोध बनी रहें, तो हमारे बच्चे कैसे दृढ़, आत्मविश्वासी और योग्य नागरिक पैदा हो सकते हैं, यदि उनकी मातायें स्वयं ही आत्मविश्वास और योग्य नहीं हैं?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अतीत इतिहास

"हमारे इतिहास में अनेकों बुद्धिमती नारियों के उज्ज्वल चरित्र हैं। उनमें सैकड़ों सती और वीर नारियां मिलेंगी, जो मृत्यु का आलिंगन करने से कभी नहीं डरीं। उनके उदाहरण हमारे अमूल्य कोष में सुरक्षित हैं और उनके द्वारा हमारे हृदय उमंग से परिपूर्ण हो जाते हैं। परन्तु फिर भी हम जानते हैं, कि

स्त्रियों की दशा

भारत में तथा अन्यत्र दुःखी हो रही हैं। हमारी सभ्यता, हमारे रीति रिवाज, हमारे क़ानून, सब कुछ पुरुषों ने ही बनाये हैं। उन्होंने सदा इस बात की विशेष चिन्ता की है कि अपने को तो ऊंची श्रेणी में रखें और स्त्रियों के प्रति उनका व्यवहार एक गुड़िया या खिलौने की तरह रहे, जिसका उपयोग उनके स्वास्थ्य और मनोरंजन के लिए होता रहे।

इस निरन्तर दबाव के कारण नारी अपनी उन्नति और योग्यता की वृद्धि शक्तिभर नहीं कर सकी है; और तब फिर पुरुष ही पिछड़ी दशा की दुहाई देकर नारी को दोषी ठहराते हैं!

सबसे पहला सवाल

पश्चिम के कुछ देशों में नारी ने कुछ सीमा तक स्वतन्त्रता प्राप्त कर लेने में क्रमशः सफलता पाई है; किन्तु भारत वर्ष में हम अब भी पीछे हैं, यद्यपि उन्नति की पुकार यहां भी पहुंच चुकी है। हमें बहुत सी सामाजिक बुराइयों से लड़ना है, हमें बहुत से प्राचीन रीति-रिवाज तोड़ने हैं, जो हमें ज़न्जीर की तरह जकड़े हुए हैं और नीचे गिरा रहे हैं। और सब से पहले भारत की स्त्रियों को पुरुषों को लड़ कर जीतना है उस साम्राज्यवाद को जो हमारे जीवन का ख़ून चूसे जा रहा है और हमारी प्रत्येक उन्नति में बाधक है।

स्त्री-पुरुष, फूल और पौदे की भांति, केवल स्वतंत्रता की धूप और निर्मल वायु में ही पनप सकते हैं; विदेशी शासन की सघन छाया और ज़हरीले वातावरण में वे मुरझा जाते हैं और उनकी बाढ़ रुक जाती है। इस लिये हम सब के सामने पहला सवाल तो यही है कि हम भारत को कैसे स्वतंत्र करें और भारतीय जनता के अनेक कष्ट कैसे दूर करें। किन्तु, भारतीय-नारियों का एक अतिरिक्त कर्तव्य भी है, और वह है पुरुष के बनाये हुये रीति-रिवाज और क़ानून की अराजकता से मुक्ति प्राप्त करना।

भय और आपत्ति का सामना

विस्तृत जगत के लिये आप (विद्यार्थिनियाँ) क्या आदर्श अपने साथ ले जायेंगी और कौनसी आन्तरिक प्रेरणा आपके कार्यों की पथप्रदर्शक होगी? आप में से बहुतेरी, मेरा अनुमान है, गृहस्थी की पुरानी लकीर और दैनिक झंझटों में फंस जायेंगी और आदर्श अथवा अन्य ज़िम्मेदारी की कल्पना भी शायद ही कभी करें। बहुतेरी केवल रोटी का सवाल हल करने का विचार रखेंगी। ये दोनों बातें निस्सन्देह आवश्यक हैं, किन्तु यदि महिला विद्यापीठ की शिक्षा की इतिश्री यहीं पर हो जाती है और अपनी स्नातिकाओं को केवल यही सिखला सका है, तो कहना पड़ेगा कि महिला विद्यापीठ अपनी उद्देश्य-पूर्ति में असफल रहा। विद्यापीठ को सच्चा विद्यापीठ बनाने के लिये यह आवश्यक है कि उसकी स्नातिकायें सत्य, न्याय और स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए कटिबद्ध बहादुर सैनिक बन कर संसार से निर्भय होकर लड़ सकें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे आशा है कि आप लोगों में से कुछ अवश्य ऐसी होंगी, जो कुहरे से धुन्धली और अस्वास्थ्य-कर घाटियों पर नीचे रहने की अपेक्षा भय और आपत्ति का सामना करते हुए ऊंचे पहाड़ों पर चढ़ना पसन्द करेंगी।

शिक्षा-प्रणाली

यह प्रायः कहा जाता है, और मेरा विश्वास है कि महिलाविद्यापीठ भी इस बात पर ज़ोर देता है, कि स्त्रियों की शिक्षा-प्रणाली पुरुषों की शिक्षा-प्रणाली से कुछ भिन्न होनी चाहिए। गृहस्थी के कर्त्तव्यों और विवाह रूपी प्रचलित पेशे के लिये उन्हें योग्य बनाना चाहिये। स्त्री-शिक्षा के इस संकुचित और एकाङ्गी दृष्टिकोण से मैं सहमत नहीं हो सकता।

मेरा दृढ़ विश्वास है कि स्त्रियों को मानवी कार्य-क्षेत्र के प्रत्येक अंग की उत्तम शिक्षा मिलनी चाहिये और उन्हें इस योग्य बनाना चाहिए कि वे सभी पेशों और क्षेत्रों में सफलता पूर्वक कार्य कर सकें।

आत्म-निर्भरता

सच बात तो यह है कि स्त्रियों को तब तक स्वतंत्रता प्राप्त नहीं हो सकती, जब तक कि विवाह को एक पेशा और स्त्रियों की आर्थिक रक्षा का एक मुख्य साधन समझा जाता है।

राजनीति से भी अधिक आर्थिक प्रश्नों पर स्वतंत्रता निर्भर है। यदि स्त्री को आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त नहीं है, और अगर वह स्वयं कमाई नहीं करती, तो उसे अपने पति पर या अन्य व्यक्ति पर आश्रित रहना ही पड़ेगा—और, सही बात यह है कि, पर आश्रित कभी स्वतंत्र नहीं है।

पुरुष और स्त्री का सम्बन्ध पूर्ण सहकारिता के भावों के साथ होना चाहिए, जिस में कोई एक दूसरे पर निर्भर न रहे।

क्या करेंगे?

विद्यापीठ की विदुषी तथा अन्य देवियों! जब आप निकलेंगी तो क्या करेंगी? क्या आप पुरानी लकीर पर चल कर सब बातें वैसी ही स्वीकार कर लेंगी, जैसी वे हैं, चाहे वे कितनी ही बुरी हों? उचित और न्यायानुकूल बातों का अनुमोदन केवल सहानुभूति के भले किन्तु निरर्थक शब्दों से कर के ही क्या आप को संतोष हो जायगा और क्या आप इस से अधिक कुछ न करेंगी? आपको जो बुराइयां घेरे हुए हैं, उनकी घृणा के साथ अवहेलना करते हुए क्या आप अपनी शिक्षा की वास्तविकता और अपनी योग्यता का यथार्थ परिचय न देंगी? परदा असभ्य युग का एक बुरा स्मृति चिह्न है, जो हमारी कितनी ही बहिनों के मन और शरीर को क़ैद किये हुए है; क्या आप उसे टुकड़े-टुकड़े फाड़ कर भस्म न कर देंगी? अस्पृश्यता और जाति-भेद, जो मनुष्यत्व को गिरा कर एक श्रेणी को दूसरी श्रेणी को लूटने में सहायक बनाते हैं—क्या आप उन से लड़कर उन्हें नष्ट न कर देंगी और इस प्रकार इस देश में समानता की वृद्धि में सहायक न बनेंगी? हमारे विवाह के क़ानून और पुराने असामयिक रीति-रिवाज, जो हमारी उन्नति में बाधक हैं, और विशेषतः नारी-जाति को कुचले हुए हैं—क्या आप उनसे लोहा लेकर आधुनिक परिस्थितियों के अनुकूल उन्हें न बना देंगी? क्या आप अपनी लगन और दृढ़ निश्चय के साथ इस बात के लिये लड़ाई न लड़ेंगी कि हमारी देवियां खुली हवा के खेलों द्वारा शारीरिक उन्नति करें, और बुद्धिमानों के साथ रह सकें, जिससे सुदृढ़, स्वस्थ और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोचो !

(ले०—श्री० स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी आचार्य उपदेशक विद्यालय लाहौर)

अॅज कॅल भारत विच जेहड़ीयां गँला छेती नाल करन वालिया हन ओहना विचों इक लिपि दी गल भी है। बोली तां अपणे २ प्रांत के इलाके दी अड़ो अड रही है ते रहूगी, एस कर के मैं इसनूं सोच विचार ते परे ही रखणा चाहुंदा हां, पर लिपि अजेही गल नहीं है, लिपि बोली नालों सदा ही व्यापक हुंदी है, एह गल सब मनदे हन, पर पंजाब विच एह गल उलट हो रही है पंजाब विच बोली व्यापक ते लिपि व्याप्य हो रही है, दूजे देशां विच लिपि व्यापक तो बोली व्याप्य हुंदी है। एसनूं समझौन लई मैं अपनी गल ही लिखदा हां।

मैं १९१४ विच मोरिशस गया। स्वर्गीय डाक्टर चिरंजीव भारद्वाज जी दे घर उते इक दिन मैं अख़बार पढ़न लगा मैं कोई पंच मिंट देखदा रिहा पर मैंनूं इक शब्द भी समझ विच न आया। समझ विच न औंणा कर के मैंने ओस अख़बार नूं रख दित्ता। डाक्टर जी एह देख रहे सन, ओहनां ने मैंनूं पुच्छिया अख़बार रख क्यों दित्ता। मैं ने उन्हांनूं इहो उत्तर दित्ता कि मेरी समझ विच ही नहीं आया कि की लिखिया होया है। उन्हीं ने फ़ेर किहा किते फरांसीसी पृष्ठ न नहीं पढ़ दे क्योंकि मोरिशस विच कुछ अख़बार अजेहे सन जिन्हां दा कुछ हिस्सा फ़रांसी सी ते कुछ हिस्सा अंग्रेजी हुंदा सी, मैं कहण लगा अखर तां अंग्रेज़ी ही हन उन्हांने फेर आहहो अखया तुसी दूजा पृष्ट पढ़ो।

इस तों मेरा मतलब एह दसण दा है यूरोप विच बोली अपो अपणी बोलदे हन् फ़रांसीसी फ़्रेंच

सुन्दर नारियों तथा सुखी बच्चों से हिन्दुस्तान आबाद हो जाय ? सब से पहले, राष्ट्रीय और सामाजिक स्वतन्त्रता का युद्ध जो मुल्क के सामने आता है, क्या उस में आप बहादुरी के साथ भाग न लेंगी ?

स्त्रियों का जवाब

मैंने ये बहुत से प्रश्न आप से किये हैं, किन्तु इन के जवाब वे सहस्रों वीर लड़कियां और स्त्रियां दे चुकी हैं, जिन्होंने गत चार वर्षों से हमारी स्वतन्त्रता की लड़ाई में प्रमुख भाग लिया है। सार्वजनिक कार्य से अनभ्यस्त होते हुए भी घर की छाया छोड़ कर, भारतीय स्वतन्त्रता के युद्ध में भाइयों के साथ कन्धा मिला कर लड़ते हुए हमारी वीर बहिनों को देखकर किस ने दांतों तले अंगुली नहीं दबाई है ? उन्होंने बहुतेरे व्यक्तियों को, जो अपने को पुरुष कहते हैं, लज्जित किया है और संसार के सामने यह घोषित कर दिया है कि भारत की नारियां अपनी लम्बी अचेतनावस्था से जाग उठी हैं और वे अपने अधिकारों की अवहेलना न होने देंगी।

दीप-शिखा जलती रक्खो

भारत की नारियों ने उत्तर दे दिया है। इस लिये महिलाविद्यापीठ की लड़कियो और नवयुवतियो ! मैं आप का अभिनन्दन करता हूं और मैं आप के ऊपर यह भार सौंपता हूं कि आप स्वतन्त्रता की दीपशिखा सदैव ज़ोरों से जलाती रहें, ताकि उसकी चमक हमारी इस प्राचीन और अत्यन्त प्यारी मातृ-भूमि के चारों ओर फैल जाय।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोली, जर्मन जर्मन बोली ते अंग्रेज़ अंग्रेज़ी बोली बोलदे हन एसे तरह डच, रूस सबदा एही हाल है पर लिपि सबदी इको ही है अर्थात सारे यूरोप विच लिपि इको ही है तो बोलियां अपो अपणीयां हन।

हुण पंजाब नूं लै लवो, पंजाब बिच बोली पंजाबी है मालवा, माझा, पोठोहार मुलतान सब पंजाबी ही बोलदे हन पर लिखण दे अखर (लिपि) अडो अडी हन। मुसलमान पंजाबी फारसी अखरां विच ते सिख गुरुमुखी अखरां नाल और आर्य पंजाबी नूं नागरी अखरां विच लिखदे हन। जे एह सोच के देखण तां इन्हांनूं इदां करना घाटे दा सौदा है। पंजाब भारत दा इक सूबा है भारत दे सूबियां विचों, बिहार, संयुक्त प्रांत, मध्य भारत तां नागरी लिपि ते हिन्दी वाले सूबे हन मद्रास विच तामल, तेलगू, कनाडी ते मल्यालम चार बोलियां ते चार ही लिपियां हन पर ओ नागरी अखरां विच लिखण दा यत्न करदे हन। बंबई सूबे विच मरहटी, गुजराती, सिन्धी तिन बोलियां हन पर मरहटी दी लिपि नागरी है गुजराती दी लिपि गुजराती है पर ओ गुजराती दे थां नागरी लिपि नूं अपणे बल जोर लगादे हन। बङ्गाल विच बङ्गाली बोली ते बंगाली लिपि है वहां भी नागरी लिपि दा चरचा है पर ओने जोर नाल नहीं है।

हुण सोचण वाली गल एह है जद दूजे प्रांत नागरी लिपि नूं अपणौन दी गल कर रहे हन तां की पंजाबी एसनूं सोचण दा कम भी न करन लगे ओन्हां प्रांता विच भी मुसलमान हन पर ओ सारे नागरी लिपि, बंगाली तामलादि लिपियां जाणदे हन पर पंजाब दे मुसलमाना नूं पता नहीं की होया है। एक फारसी अखरां दा अडेंगा लाई जादें हन दूजे सिख हन जेहड़े पंजाब विच पंजाबी दे समझे तो जांदे पखपाती हन ए पंजाबी नूं गुरुमुखी अखरां विच लिखदे हन। एन्हांनूं एह सोचणा चाहोदा है। की एह संभव है जो गुरुमुखी अखर दूजे सूबे अपणा लैणगे एह गल किसे दीभी समझ नहीं औंदी जो दूजे सूबे गुरुमुखी लिपि अपणौन! फेर सिख ही सारे सूबियां नाल रलन वास्ते पंजाबीनूं नागरी लिपि विच क्यों न लिखन। जिदां मरहटे मरहटी बोली नूं नागरी विच लिखदे हन ओदां ही पंजाब विच पंजाबी बोली ते नागरी लिपि ही होवे ते सिख एस गल नूं मन्न लैण तां पंजाब बिच पंजाबी बोलण वाले ते नागरी अखरां वाले घट तों घट ४० फी सदी तां हो ही जानगे ओस बेले भूले भाईयां नूं भी समझौणा सुखाला हो जाऊगा। जिदां बंगाल दे मुसलमान बंगाली लिपि नाल सब कम करदे हन एसे तरह पंजाब दे मुसलमान जद पंजाबी बोली बोलदे हन तां नागरी लिपि भी क्यों न लिखण। हुण फारसी अखरां दी की लोड़ है।

एस वेले मैं सभना अगे वेनती करदा हां जो सब मिल के इक लिपि बणौन दी गलनूं सोचो ते यूरोप वांकर सारे भारत दी इक लिपि बणौन दा यत्न करो। जेहड़ी लिपि सारे भारत दी हो सकदी है ओह नागरी लिपि ही है. एस लिपि नूं अपणा के पुन्न दे भागी बनो ते एकता दे धागे नूं मजबूत करो। मैंफेर कहूंगा इस इक लिपि दी गल नूं सोचो, सोचो, सोचो।

———

हिन्दी सन्देश के परीक्षा नम्बर से फायदा उठाइए।

मैनेजर हिन्दी सन्देश।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हेम की भेंट।

(प्रिये रतन !)

अमेरिका से एक मासिक पत्र 'फ़िज़िकल कलचर' नामका निकलता है। उसके सम्पादक हैं डाक्टर बरनार मैकफ़ेडन। स्वास्थ्य संसार का प्रत्येक पढ़ा लिखा व्यक्ति इस महापुरुष से परिचित है। मानव शरीर के आरोग्य के हेतु जो जो अन्वेषण और सफल प्रयोग इन्होंने ढूंढ निकाले हैं उनसे आज सारा संसार उनका ऋणी है। उस मासिक में स्त्रियों के लिये विशेष स्थान रहता है। हेमचन्द्र भी उनके ग्राहक हैं। वे इस मासिक पत्र के अन्य अधिकांश ग्राहकों की भांति अपनी लायब्रेरी या टेबल की शोभा बढ़ाने के लिये या केवल मनोरंजन के ही लिये नहीं मंगाते वरन् उसके विशुद्ध आदेशों को अपने जीवन में ढ़ालने का भरपूर प्रयत्न करते हैं। शरीर की सुन्दर गठन देखते ही हेमचन्द्र की तबियत फ़ड़क उठती है। प्रकृति ने भी उनको इन पवित्र सेवाओं का बदला कई गुना दिया है। कालेज भर में हेमचन्द्र अपने शारीरिक बल, सौंदर्य्य और उत्तम स्वभाव का कोई जोड़ नहीं रखते।

गरमी की छुट्टियों में हेमचंद्र अपने घर आये हुए हैं। इस वर्ष की छुट्टियों में यही नवीनता है कि वे अब अपनी जीवन-सहचरी मुग्धा बालिका के प्रणय सम्पर्क में आये हैं। नव यौवन के ये रस भरे दिन किस नव-विवाहित दम्पती के हृदय को आन्दोलित नहीं करते ? हेमचन्द्र ने अपनी छोटी बहन रामप्यारी के लिये एक साड़ी खरीदी, कुछ फल मोल लिये और अपनी पत्नी के लिये भी बड़े चाव से एक भेंट तयार कर एक सफ़ेद रुमाल में बांध ली थी।

चन्द्रमा की शीतल और स्वच्छ चांदनी छिटकी है। हेमबाबू एक बड़े पलंग पर, जिस पर दुग्ध फेनसी उज्वल चादर बिछी है, बैठे हैं। धीरे २ रतन ने कमरे में प्रवेश किया। हेम बाबू ने वह रुमाल अपने ट्रंक से निकाला और हंसते हंसते रतन को दिया। रतन ने उसे लज्जावश उठाकर एक तरफ़ रख दिया।

यदि वह उसे एक बार भी उलट पलट कर देख लेती या प्रसन्नता पूर्वक एक दृष्टि भी हेम की ओर डाल देती तो हेम को बड़ा संतोष होता। अपनी उमंगों के परिणाम को देख कर वह बड़े विचार में पड़ा। क्या इसी लिये रह रह कर इसी बात पर चिंतन किया गया था। मेरे अगाध प्रेम के द्वारा भेंट की गई वस्तु का यह आदर ? धोखा हो गया। नवयुवक अपने मन को बार बार धिक्कारने लगा। रतन-उसके मुंह के भाव को देख कर कुछ समझ न सकी। वह नीची आंखें कर अपने पांव की अंगुलियों को देखने लगी। न जाने कितनी रातें इस असहयोग आन्दोलन में बीत गई।

कौन कह सकता है कि एक नवप्रणयिनी के हृदय में अपने प्रणयी के लिये कितना प्यार है ? मौन के सुदृढ़ कपाटों में प्रेम की यह अज्ञात निधि छिपी रहती है। पर इसका प्रस्फुटन कभी न कभी तो मुख मंडल पर दृष्टि गोचर हो ही जाता है और प्रेम भरी चितवन को कोई रमणी निरन्तर दीर्घ काल तक छिपा नहीं सकती।

रतन छिपे २ आती और हेम की टेबल पर पड़ी पुस्तकों को बड़े यत्न से सजा जाती। मासिक पत्रों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के चित्रों को देखने के लिये, उनके पन्ने टटोलती। एक मासिक में उसने देखा कि कई स्त्रियें कूद रही हैं, एक चित्र में सैकड़ों युवतियाँ व्यायाम कर रहीं हैं ! एक में एक स्त्री कोई पचास फ़ीट ऊंचे से पानी में कूद रही है। उनका सरल हास्य देखकर वह चकित हो गई। वह विचारने लगी कि क्या संसार में ऐसी भी स्त्रियें हैं, जो इतनी स्वतंत्र हैं, जो इस प्रकार व्यायाम कर शरीर को सुन्दर बनाती हैं ? क्या स्त्रियें भी व्यायाम कर सकती हैं ? ऐसी कई विचार धाराएं उत्पन्न होने लगीं और वह उन्हीं में मग्न थी कि हेम के कमरे में चुपचाप आने की आहट वह सुन न सकी। हेम ने पीछे से आकर उसकी दोनों आँखें मींच दीं और पूछा कि नाम बताओ, किसने तुम्हारी आँखें मूँदीं ?

छुट्टी बीत गई। हेम भी अपने माता पिता से विदा हुआ। रतन घूँघट में मुँह छिपाये किवाड़ की ओट में खड़ी थी। वियोगी ने क्लांत व अधीर रतन की ओर प्रेमव्यथा भरी दृष्टि डाली और बग्घी में बैठ कर रवाना हुआ। कितने ही प्रेमाश्रु बाहर निकलने के लिये उत्सुक थे, पर लज्जा ने उन्हें पास-पोर्ट नहीं दिया।

रतन ने एक दिन सहसा वह रुमाल वाला बस्ता देखा। उसे खोला तो उस में एक पुस्तक थी और हेम के खुले शरीर के कई फोटो भी थे। व्यायाम के पश्चात् उस नर-शार्दूल के पठ्ठों का जो भयंकर विकास होता था ये उसी के चित्र थे। सब एक से एक बढ़ कर मनोहर थे। उसमें एक गुलाबी कागज़ पर सुन्दर अक्षरों में लिखा हुआ एक पत्र था। ऊपर लिखा था-प्रियेरतन-पढ़ते ही उसका हृदय उछल पड़ा। वह पढ़ने लगीः—

प्रियेरतन !

मैं तुम्हें यह पुस्तक भेंट करता हूं। मेरी भेंट बहुत कीमत की है पर मेरी प्राणाधिके ! तू इसे अवश्य स्वीकार करेगी। मैं चाहता हूं और मैं हृदय से चाहता हूं कि तू नारी स्वास्थ्य की एक सुडौल प्रतिमा बने और मैं तेरे सौन्दर्य्य पर गर्व करूं।

किसी वस्तु की अनुपस्थिति में ही उस का योग्य आदर होता है ? रतन ने इस पत्र को बार २ चूमा। उस पुस्तक को वह कई बार आद्योपान्त पढ़ गई। हेम के फोटो और पत्र अब रतन के लिए सब कुछ थे।

जहां चाह है वहां राह है। यह रतन जानती थी। उसने भी निश्चय कर लिया कि यदि अब की बार वे आये तो उन्हें आश्चर्य्य में डाल दूंगी। मैं उनकी प्रसन्नता के लिये सब कुछ निछावर कर सकती हूं। मैं उनकी अभिलाषाओं से परे काम कर के बता दूंगी।

आज से रतन ने स्नानागार में प्रवेश किया। एक मोटे खद्दर के रुमाल से अपनी देह को खूब रगड़ २ कर नहाने लगी। एक तो सहज सुकुमार अंग फिर इस प्रकार का नूतन स्नान प्रथम अभ्यासी को और विशेष कर एक भारतीय युवती को अटपटा मालूम पड़ने लगा। पर वह अपने शरीर में नहीं थी वह हेम को चकित करने के लिये और ही कहीं घूम रही थी। एक दिन उसकी सास ने उसका वह अनोखा स्नान देख घूर कर बोली तेरे ये लच्छन अच्छे नहीं हैं। यह नहाना किसे कहते हैं, औरत की जात और ऐसा काम ?

दाडिम के दानों की तरह चमकते हूए स्वच्छ दांतो की सुन्दरता शीशे में देख कर रतन एक दिन मन ही मन प्रसन्न हो रही थी कि उसकी ननद राम-प्यारी ने उसे खूब टरकाया। बड़ी छबीली है और तू यहाँ किसे रिझाने चली है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भोजन को यदि चबाए, तो सहज देर लगती है, और बिना खूब चबाये भोजन पच नहीं सकता। अतः बेचारी रतन को सासू की नित्य झिड़कियें सहनी पड़तीं कि—'क्या गले में डाट लगा है, दो घंटे खाते २ बीत जाते हैं। न जाने कैसी कुलक्षण बहू से काम पड़ा है।'

पर धन्य है नारी स्वभाव की लगन को। वह सब कुछ सहन कर लेती थी केवल हेम के उस पत्र के लिये।

"मैं तो अब भाभी के पास कभी न सोऊंगी तू चाहे जो कर। उसे तो न जाने क्या हो गया है" रामप्यारी ने कहा।

"क्यों क्या हुआ जो न सोवेगी"

"क्या क्या हुआ। आज रात को मेरी नींद खुली तो क्या देखती हूं कि "भाभी लम्बी लम्बी सांसें लेकर फुंकार रही थी उस के बाल बिखरे हुये थे और वह अपने हाथ पांव इधर उधर फेंक रही थी। मेरी तो घिग्घी बंध गई और रात भर डर के मारे कांपती रही।"

"ऐं क्या जानें भगवान क्या मुसीबत आने वाली है। मैं तो पहले ही कह चुकी थी और लोग भी कहते हैं कि यह घर अच्छा नहीं। इस में जरूर भूत है। पर सुनता कौन है।"

रामप्यारी ने उस दिन से रतन के पास सोना छोड़ दिया। मां बेटी रतन को साशंक दृष्टि से देखने लगीं। स्त्रियों के और आजकल कुछ उन के समान स्वभाव वाले मनुष्यों के भी पेट में कोई बात नहीं टिकती। आस पास सब तक, दूर दूर यह चर्चा फैल गई। अड़ोसी-पड़ोसी भी सब सावधान रहते थे और भूलकर भी अपने बच्चों को रतन के घर फटकने न देते थे। जिन बालिकाओं को रतन रोज़ प्रेम पूर्वक पढ़ाती थी, उन्हें मिठाई देती थी, वे अब नज़र न आते थे। रतन मित्र विहीन हो गई।

(क्रमशः)

आत्म संबोधन !

(श्रीमती भागदेवी जी रावलपिण्डी शहर)

तर्ज़ (दर्ददिल)

छोड़ कर दुनिया के झगड़े दो घड़ी,
याद कर जगदीश प्यारा दो घड़ी।
दो घड़ी गर नाम तूने ले लिया,
हो गई तेरी सफल जीवन घड़ी।
रात दिन खोया है यूँही वक्त को,
कौड़ी बदले तोड दी मोती-लड़ी।
अब भी बाकी वक्त है कुछ सोच लो,
हाथ आ जाएगी, खोई, वह लड़ी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माया के चमत्कार।

वैज्ञानिक चमत्कार।

(ले०—श्रीयुत ज्ञानी)

रेडियो।

पश्चिम में आये दिन नवीन खोजें व नई ईजादें होती है। पिछले दो-चार बरसों से रेडियो की धूम है। अमरीका में तो लाखों मनुष्यों के घरों पर रेडियो लगा है। इससे घर बैठे उन्हें दुनिया भर के मशहूर गवैयों के गाने तथा लेक्चरारों के लेक्चर सुनने मिलते हैं। भारतवर्ष में भी चन्द पढ़े-लिखे लोगों ने रेडियो सैट मोल लिये हैं। बम्बई, कलकत्ता और मद्रास आदि शहरों में गवर्नमैंन्ट व कार्पोरेशन की ओर से सर्वसाधारण नगर-निवासियों के लिये रेडियो का प्रबन्ध किया जाता है। रेडियो द्वारा रुचिकर संगीत तथा उपयोगी व्याख्यानादि कराए जाते हैं। विद्यार्थियों के लिये शिक्षा सम्बन्धी वार्तालाप का भी प्रबन्ध होता है।

अभी किन्हीं जर्मन-वैज्ञानिकों ने रेडियो में एक अद्भुत उन्नति की है। अर्थत् जहां रेडियो द्वारा बोलने वाले व्यक्ति की आवाज़ स्पष्ट रीत्या सुनाई देती है, वैसे ही इस नवीन अन्वेषण के बाद रेडियो-वक्ता की आकृति भी स्पष्ट दिखाई देती है।

इसी सम्बन्ध में एक अमरीकन ने एक क़दम और आगे बढ़ाया है। उसने एक ऐसी मशीन ईजाद की है जिसके द्वारा रेडियो सैट न केवल बोलेगा अपितु उसके साथ एक ऐसी क़लम लगी रहेगी जिससे बोलने वाले का सारा भाषण अक्षरशः काग़ज़ पर काली स्याही से लिखा जायेगा। इस प्रकार इंजनीयर का विचार है कि शनैः २ इस अन्वेषण से "रेडियो-समाचार पत्र" निकलने लगेंगे और वर्तमान समाचार पत्र एक ऐतिहासिक वस्तु बन जाएंगे।

चीख़ने वाली थैली।

इंग्लैण्ड के एक मिकैनिक ने ऐसी थैली बनाई है जिसे यदि कोई छीने तो उसके अन्दर से एक चीख़ उठती है जो आपद् ग्रस्त मनुष्य के रोने से मिलती है। उसका लाभ यह है कि विलायत में अथवा भारत में जहां प्रायः दिन दहाड़े डाक के हरकारों अथवा बैंक-चपरासियों को लूट लिया जाता है वहां यदि उनके हाथ में यह चीख़ने वाली थैली रही और उसमें कितना भी धन रहा तो किसी प्रकार का भय नहीं। क्योंकि डाकू या दुश्मन के खींचते ही वह चीख़ने लगेगी और आस-पास जाने वाले व्यक्ति शीघ्र ही डाकू को पकड़ लेंगे। बैंक-आफ़-इंग्लैण्ड ने, सुना है, एक हज़ार ऐसी चीख़ने वाली थैलियों का आडर दिया है। इस थैली का वज़न लगभग ३ पौंड या डेढ़ सेर है।

बोलने वाली घड़ी।

पेरिस में एक कारीगर ने ऐसी घड़ी बनाई है। जिससे यदि आप टैलीफ़ोन पर ठीक समय पूछें तो फ़ौरन जवाब देती है। इसने अपनी ज़िन्दगी के पहिले साल में २५०००) पाउण्ड कमाये हैं। इसके औसतन रेट जवाब ११००० प्रति दिन के हिसाब से है। पूछने वालों को प्रति वार थोड़ी फ़ीस देनी पड़ती है।

बिजली के धक्के का इलाज।

पाठकों ने पढ़ा या सुना होगा कि कई व्यक्ति बिजली की तार को छूने से मूर्छित हो जाते हैं और मर भी जाते हैं। हाप्किन्स यूनीवर्सिटी के एक विद्युत-विशेषज्ञ ने एक ऐसी विद्युत धारा का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पता लगाया है जो मनुष्य को ख़तरे से बचा सकती है। उसका कहना यह है जैसे "विषस्य विषमौषधम्" माना जाता है। वैसे ही बिजली के एक धक्के को दूसरे अधिक बलवान् धक्के से निष्क्रिय किया जा सकता है। उक्त यूनीवर्सिटी में अनेक पशुओं पर ऐसे परीक्षण किये गये हैं और उन सब में विद्युत विशेषज्ञ को सफलता मिली है।

३७२ मील प्रति घन्टा।

इटली के सिग्नर मसुलनी की यह अभिलाषा थी कि वायु-गति में भी उसका देश सर्व प्रथम रहे। उस दिन एक इटेलियन कैप्टन पीट्रो स्कैपिनैल्ली, जो मैची कैस्टैली हवाई जहाज़ में उड़ा, जिसकी २४०० हार्स पावर है, एक घण्टे में ३७२ मील की रफ़्तार तक पहुंचा। ऐम, ब्लैरियट जो कि एक हवाई जहाज़ों के कारखाने का मालिक है उसने इटैलियन उड़ाकू को इस रफ़्तार के लिये एक लाख फ्रांक इनाम में दिये। कहते हैं, यह संसार का सब से तेज़ उड़ाकू है।

रेलवे दुर्घटनाओं से बचाव।

बुडापेस्ट के समीप दो युवक चमारों ने एक ऐसी यांत्रिक योजना की है जिसके द्वारा रेलवे दुर्घटनायें रोकी जा सकती हैं। इन युवकों की शिक्षा बहुत मामूली है, परन्तु इन्होंने वर्षों मिहनत करके, लगभग १६०० रु० व्यय द्वारा एक छोटी माडल रेलवे बनाई है, जिसमें दो गाड़ियां आमने-सामने से फुल-स्पीड में आती हुई ४० सेन्टीमीटर अथवा असली रेलवे के ४ मील के अन्तर पर स्वयमेव रुक जाती हैं। इनके रुकते ही ग़ल्त सिग्नल के लैम्प अत्यधिक चमकने लगते हैं और नज़दीक के स्टेशन पर भी ख़तरे की घण्टी बजती है। इस प्रकार शीघ्र ही उचित इन्तिज़ाम किया जा सकता है।

अन्य यांत्रिक योजना की रजिस्ट्री हो गई और एक अमरीकन रेलवे कम्पनी से ठेके की बातचीत हो रही है।

नक़ली रुई।

पाठकों ने नक़ली रेशम तो सुना था परन्तु अब जापान की केन्शोकु कम्पनी ने नक़ली रुई का आविष्कार किया है। यह जंगली घास-फूस व वृक्षों के पत्तों से तैयार की जाती है। देखने में सुन्दर और छूने में मुलायम है। कहते हैं पहनने में भी मज़बूत साबित होती है। इसकी क़ीमत असली रुई से एक चौथाई ही पड़ेगी।

घंटों की घणघणाहट का इतिहास

(ले०—खोजी)

घंटों का ऐतिहासिक ब्यौरा

प्रत्येक धर्म में घंटों को विशेष स्थान तथा महत्त्व प्राप्त है। मिस्र में लोग घंटों की घणघण और झन झन की गूंज में ईश्वर की उपासना करते हैं। हरेक यहूदी पुजारी का चोला छोटी छोटी घंटियों की झन झनाहट से गुंजायमान रहता है। जब वह धर्म-प्रार्थना-मंदिर में जाता है तो मार्ग में घंटियों की आवाज सुनकर लोग उसके पीछे पीछे प्रार्थना के लिये चलते हैं। यहूदियों की भांति रोमन लोग भी घंटा बजाकर दूसरों को ईश प्रार्थना के लिये बुलाते हैं। ईसाई चर्च में भी ईस्वी सन् की पहली चार सदियों से घंटा बजाने की प्रथा जारी था। नोला गांव के विषप पादरी पोलोनियस द्वारा जारी की गई प्रथा का फ्रांस ने ५५० ई० सन् में अनुकरण किया। इंगलैण्ड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने सातवीं सदी में चर्च में घंटों की स्थापना की। इस के बाद दिन प्रति दिन ईसाई धर्म में घंटा बजाने की प्रथा बढ़ती गई। लोग घंटा और ईसाई धर्म को एक समझने लगे।

आजकल घंटे की आवाज़ भक्तिभाव को हृदय में पैदा करती है। परन्तु सन् १४५३ ई० में जब तुर्कों ने कौन्सैन्टीनोपल को जीता उस समय उन लोगों ने खुशी में घंटा नहीं बजाए क्योंकि घंटा नाद सुनकर जनता के हृदय में विद्रोह तथा युद्ध के भाव संचारित होने की संभावना थी। १२८२ ई० में घंटा-नाद, रणदुंदभि के समान समझा जाता था। घंटे की आवाज सुनते ही लोग समझते थे कि कहीं मारामरी शुरू हो गई है।

२४ अगस्त १५२२ ई० में जर्मनी के आदनाइज पादरी ने घंटे पर टंकोर दी। आवाज़ के गूंजने के साथ ही बारथो लोमा में मारामारी शुरू होगई।

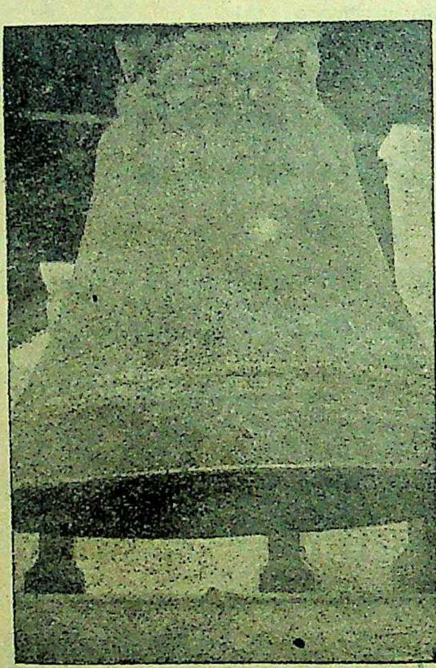

बरमा का सबसे बड़ा घंटा

रशियन लोगों को घंटा बजाने का बहुत शौक है। सन् १७३३ ई० में मास्को में १९८ टन बोझवाला घंटा था। इस को संसार में सब से भारी घंटा होने का श्रेय दिया गया। मास्को में एक और घंटा १२८ टन का है। पेकिन (चीन) के घंटे का बोझ ५३½ टन है। सैण्ट पाल (इंगलैण्ड) के गिरजा घर का घंटा १७½ टन के तोल का है।

बर्मी लोगों को छोटे छोटे घंटे तथा घंटियों के रखने का विशेष शौक है। बर्मी लोग अपने देव मन्दिर (पैगोडा) में छोटी छोटी घंटियां लटकाते हैं। हवा के झोंके से जब सब एक साथ बजती हैं, तो उस समय उन लोगों की भावना के अनुसार स्वर्गीय पितरों को आनन्द प्राप्त होता है।

हिन्दू लोग मन्दिर में प्रवेश करके घंटा बजाकर पूजा करते हैं। परन्तु बर्मी लोग पहले प्रार्थना करते हैं फिर घंटा बजाते हैं। बर्मी लोग चावल अक्षत आदि की भांति इष्ट-देवों पर घंटे भी भेंट में चढ़ाते हैं। बर्मी लोगों के पास बड़े बड़े घंटे भी हैं। मिनगुन स्थान के भारी घंटे का तोल ८० टन है। रंगून में एक २२ टन का घंटा है।

१८५३ ई० में जब दूसरे बर्मी युद्ध में अंग्रेज विजयी हुए तो उन्होंने विजय के चिह्नरूप में रंगून के २२ टन के घंटे को इँगलैंड लेजाने का निश्चय किया। उन्होंने जैसे-तैसे कर के इस घंटे को जहाज़ पर तो रखा; परन्तु बर्मी निवासियों की भावना के अनुसार, स्वर्गस्थ पितरों के अभिशाप से वह जहाज़ ही समुद्र में डूब गया और घंटा भी समुद्र तल में पैठ गया। कई वर्षों तक यह घंटा समुद्र में पड़ा रहा। बर्मियों ने प्रबल आन्दोलन के बाद सरकार से अपने पूज्य घंटे को समुद्र में से निकालने की इजाज़त मांगी। आज्ञा मिलने पर बड़ी कोशिश से यह घंटा बाहर निकाला गया। और उसे अब मंदिर में पूज्य देव को समर्पित किया गया है।

\+ + + + +

भारतवर्ष में भी घण्टों का शौक चरम सीमा तक पहुंच चुका है। तीर्थों में, धर्म-मन्दिरों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिद्वार तथा कनखल की गलियों में प्रातःकाल तथा सांयकाल घण्टों का नाद विशेष गूंज को ध्वनित करता है। हिन्दुस्तान में घण्टों के साथ नगाड़ों का विशेष सहचार है। उदयपुरके इकलिंगजी का मन्दिर राजपूतों के इतिहास में विशेष महत्व रखता है। इकलिंग जी का मन्दिर पहाड़ी की घाटियों से घिरा हुआ है। मन्दिर की छत के नीचे हजारों आदमी आसरा ले सकते हैं। मन्दिर में जो घण्टा लटका हुआ है उसे अकेला आदमी हिला तक नहीं सकता। कम से कम १० आदमी उसे हिलाने वाले चाहिये।

हिन्दुस्थान में घोड़ों हाथियों तथा बैलों के गलों में घंटे बांधने का विशेष रिवाज है। प्राचीन समय में युद्धरथों में घंटे बांधे जाते थे। महा भारत में इस घण्टा-नाद का सहारा लेकर ही श्रीकृष्ण ने द्रोण का वध कराया था।

भारत वर्ष में जब कोई वृद्ध पुरुष अपनी आयु भुगत कर मरता है तब उसकी अरथी के आगे घण्टे बजाए जाते हैं। आजकल मंदिरों तथा धर्म मन्दिरों के घण्टों का, स्कूलों तथा पाठशालाओं के घण्टों ने स्थान ले लिया है।

पुस्तक परिचय

शक्ति रहस्य—ले० श्रीयुत यशपाल जी सिद्धान्तालंकार। इस पुस्तक में इस बातका विवेचन किया गया है कि शक्ति प्राप्त करने के लिये हमें किस प्रकार का भोजन करना चाहिए। आज-कल मांस भोजन को शक्ति पैदा करने वाला भोजन कहा जाता है। खास कर अंग्रेजी पढ़े लिखे लोग, युरोपियन विचारों से प्रभावित होकर मांस भोजन की ओर अधिक प्रवृत्त हो रहे हैं। विद्वान् लेखक ने युरोपियन विद्वान् डाक्टरों तथा अनुभवी स्वास्थ विज्ञान पंडितों के ग्रन्थों से इस आशय के उद्धरण संगृहीत किये हैं जिन से यह सिद्ध होता है कि मांस भोजन स्वास्थ्य तथा मानसिक और आत्मिक विकास के लिये हानिकर है। निरामिष भोजन का प्रचार करने वालों के लिये यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। पुस्तक की कीमत ॥)

धर्म का आदिस्रोत—ले० पं० गंगाप्रसाद जी एम. ए. चीफ जज रियासत टेहरी गढ़वाल।

मूल पुस्तक अंग्रेजी भाषा में Fountain Head of Religion नाम से लिखी गई थी श्रीपं० हरिशंकरजी शर्मा आर्यमित्र-सम्पादकने अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद किया है। इस समय यह पुस्तक धर्म जिज्ञासुओं में विशेष नाम पा चुकी है।

आजकल के साम्प्रदायिक अशान्ति तथा वैमनस्य के वातावरण में ऐसी पुस्तकों का विशेष महत्व है। पुस्तक की भाषा सरल तथा विषय प्रतिपादन शैली स्पष्ट तथा विशद है। पुस्तक का मूल्य १)।

वीर अभिमन्यु, श्रवण कुमार, बाल शिवाजी।

सरस्वती आश्रम राजपाल एण्ड संज ने बाल साहित्य माला नाम की ग्रन्थ माला जारी की है। यह तीनों पुस्तकें इस ग्रन्थमाला की विशेष पुस्तकें हैं। वीर अभिमन्यु के लेखक श्री पं० लोकनाथ जी हैं। बाल शिवा जी के लेखक श्री सत्यकाम जी विद्यालंकार सम्पादक नवयुग हैं। श्रवण कुमार की लेखिका श्रीमती जानकी देवी जी हैं।

तीनों पुस्तकों में सरल भाषा में तीन वीर बालकों के चरित्रों का वर्णन किया गया है। कागज़ बढ़िया तथा टाइप मोटा है। छपाई भी बढ़िया है। प्रत्येक पुस्तक का मूल्य ।) है। इन सब पुस्तकों के प्रकाशक राजपाल एण्ड संस लाहौर हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-परीक्षा-मन्दिर

वीर-सतसई

ले० भीमसेन विद्यालंकार

वीर-सतसई के लेखक श्रीयुत वियोगी हरि का पहला नाम हरिप्रसाद द्विवेदी था। १९५३ वि० चैत शुक्ला को आपका जन्म बुन्देलखण्ड में हुआ था। इनका पालन-पोषण भी ओरछा रियासत की रानी ने किया। आपने इनके साथ तीर्थ यात्रा की। रानी की मृत्यु के बाद आप इलाहाबाद आ गये और हिन्दी साहित्य सम्मेलन में कार्य करने लगे। आपने आजन्म अविवाहित रहने का संकल्प किया। सम्मेलन पत्रिका का सम्पादन किया। साहित्यिक सेवाओं के पुरस्कार रूप में वीर सतसई के लियें आपको मंगलाप्रसाद-पारितोषिक मिला।

इस समय तक हिन्दी-साहित्य में तथा वैष्णव सम्प्रदाय में शृंगारी भावनाओं की प्रधानता थी। आपने वैष्णव होते हुए भी प्रचलित रूढ़ियों की उपेक्षा करके कृष्ण-चरित्र को वीर-रस की भावनाओं से संचारित किया। दूसरे शब्दों में आपने शृंगारी कृष्ण को वीर योगीश्वर कृष्ण के रूप में वर्णित किया। देश जाति की सामयिक आवश्यकताओं को दृष्टि में रखकर वीरों के चरित्रों की वीर भावनाओं से अनुप्राणित करने का यत्न किया गया है।

काव्य की शब्द-रचना सरल हैं। परन्तु व्रजभाषा होने से पंजाबी विद्यार्थियों के लिये कठिन है। उनकी कठिनता को दूर करने के लिये शतक क्रम से शब्दार्थ लिखे जाते हैं।

प्रथम शतक

केहरी=शेर।

छिगुनी=कनिष्ठि का छोटी अँगुली।

उरझि=फँस गया।

पटुकाकौ छोर=दुपट्ट का किनारा।

नाह=नायक।

उछाह=उत्साह, उमाह।

पेड़=पैर।

मेंड़=सीमा।

हरिल=पक्षी विशेष।

ठाम=शिविर या सेना का डेरा।

बचनतंत=बचन का डोर या धागा।

कूल=किनारा।

तथागत=तत्त्वदर्शी बौद्ध।

विगस्यौ=विकसित, प्रगट या खिला हुआ।

सत्यसन्ध=प्रतिज्ञावाला।

याहि=इसे।

नौल=उत्तम।

खाँडे= तलवार।

चून=आटा।

बागो=बाना या वेश।

पैज=प्रतिज्ञा।

छिति=संसार में या पृथिवी पर।

भभरि=हड़बड़ से।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घालत=गिराता है।

मंसब=मूल्य।

खगी=उड़नेवाली।

अन्हान=स्नान।

अकोर=आलिङ्गन।

उदोतु=प्रकाश।

ठौरु=भूमि।

लुन्यो=काटो।

दूसरा शतक

मौलि=सिर।

प्रसेदु=पसीना।

कलित=रखा हुआ।

बानिक=वेष।

बंकलंक=कुटिल लंकापुरी।

भान=सूर्य।

जोन्ह=चन्द्रिका, ज्योत्स्ना।

अलबेला=सुन्दर।

अंगराय=अंगड़ाकर।

दपटि=झपट कर।

देखियतु=दिखाई देते हैं।

गयन्दिनी=हथिनी।

अतनुतन=कामदेव।

बरिबंड=तूफान।

हुलसि=प्रसन्न होकर।

दुवन दीह=दुष्टों की देह।

कंज=कमल।

पानिप=पानी, तेज, मोती।

अवदात=शुद्ध निर्मल।

छता=छत्रसाल।

इठलाहट=खेलकूद, बचपन।

दुहागिन=दो पतियोंवाली।

असिदुतिया=तलवार।

गुहतु=गुथ गयी है।

लाडिलो=पुत्र।

रसपूर=रस माधुर्य को।

भरजीवा=मार्मिक रसिक।

उछंग= गोदी।

अधावैही=तृप्त ही नहीं होगा।

सरनाम=सार्थक नाम।

नखत=नक्षत्र।

अनी=सेना।

मारूराग=युद्धगीत।

तीसरा शतक

कर्षतु=चलाते हो।

द्रुत=जल्दी।

पौरि=ड्योढ़ी।

वसुयाम=आठों पहर।

खीस किये=नष्ट किये।

तेरी ही सौं=तुम्हारे समान प्रतिज्ञा करता हूँ।

अरुण=लाल।

कच=बाल, केश।

समसरिकासों कीजिये=किससे बराबरी करूं।

बज्जवैजति=तलवार को वज्र से अधिक बलवान बनानेवाला।

ठेलि=ढकेलकर।

कुरीछबाय=बनाकर।

अँचैहौं अंगुरिनु=अंगुली से भर २ कर खाली कर दूं।

मघवा=इन्द्र।

भूघर शृंग=पहाड़ का शृंग।

विसिखहारु=तीरों का हार।

बगिया=बाग।

धौरहर=किला।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चोपसों=चाव से ।

बरजे हूं=रोकता हूं ।

रविरथांग=सूर्य चन्द्र ।

जूझन=युद्ध में मर मिटना ।

दीह=दीर्घ ।

घरीक=एक घड़ी में ।

कत=कैसे ।

मसर की पांसुरिनु=मच्छर की पसलियों से ।

चौथा शतक

मारूति लामीलूम=लम्बी पूँछ वाले हनुमान ।

तममुख राकस पुंज=काले मुख वाले ! राक्षस ।

वृत्रशत्रुपविपात=इन्द्र की मुट्ठी का प्रहार ।

संगर=युद्ध ।

कृसानु=आग ।

सिरैहौं नैन=आखों को ठंडा करूंगा ।

सभरीस=पृथ्वी राज ।

पैजराखवार=प्रतिज्ञारखने वाले ।

सौंग=तलवार जैसा शस्त्र ।

किमि पैंहौं=कैसे पाओगे ।

सभोय=रक्षा के लिये ।

श्रीखंड=चंदन ।

पविदेह=वज्रदेह ।

दाप=अभिमान ।

हेरति=देखना ।

सुठि=सुन्दर ।

हरम=जनानखानों की देवियां ।

ऐंडदार=एँठने वाला ।

भुबँगिनो=सर्पिणी ।

मुरशीद=गुरू ।

बखतबलन्द=अपने समय की शेर ।

पांचवाँ शतक

त्रिदशईस=देवों के स्वामी ।

अठौर=असहाय ।

ठसक=अभिमान ।

उद्रेक=प्रवाह ।

महल रखैल=रखी हुई औरत ।

कुल कानि=कुल की क्रान्ति ।

मांद=गुफा ।

दुरग दुवार=दुर्गद्वार ।

छर छदन=छल कपट ।

बादिही=व्यर्थ ही ।

तुपक=तेज

कै=या तो, या ।

खरोट=छिलजाना खुरँन्द ।

बखतर=कवच ।

झँबा झँबैयत=माला लह लहारही है ।

धौसानु की धुकार=शस्त्रों की झन झनाहट ।

पौंदे=लेटे हुए ।

अभिसार=प्रेमी प्रेमिकाओं के संदेश ।

झीने=सुन्दर ।

ठकुरसुहातो=ख़शामद ।

रदनख=दाँत ।

लवा=बटेर

सिलहखाने=शस्त्रागार ।

छटा शतक

निरवारि=शुष्क ।

लटकि=झुके हुए ।

उसीर कुटीर=खसखस की टट्टी ।

घनसार=चन्दन ।

प्रमदा=स्त्री ।

रण सरि परिवा=युद्ध नदी को पार करना ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असं=ऐसे ।

नठ=नष्ट ।

दीप संजोवत=दीया जलाना ।

धलाघली=मारकाट ।

बट पार=लुटेरे ।

काफिया=अनुप्रास ।

धनसार=काफ़ूर ।

असिव=अपवित्र ।

निपट=व्यर्थ ।

सातवां शतक

अनललौं=आग जैसे ।

थहरात=कांप जाते हैं ।

दीह अररात=देखकर आश्चर्य करते हैं।

व्योमवान सररात } आकाश में बाण सरसर करते हैं ।

लावनिात=लावण्यता सुन्दरता ।

मतवारे=साम्प्रदायिक लोग ।

जल्प=बकवास ।

चौगान=क्रीड़ा क्षेत्र ।

पोखरि मेंडुकी=तालाब या जोहड़ की मेंडकी ।

टेक टेक=प्रतिज्ञा ।

पैंज=उक्ति ।

पानिप=तेज ।

मेचक=निस्तेज ।

परसि=छूकर ।

वेदसिद्धि निधि इन्द्र= १९८४ वि० ।

———

रत्न, भूषणोपयोगी श्रुतलेख
उदारता

(ले०—श्री० दयाशंकर जी भट्ट)

अङ्क—१५

प्रश्न१:—अधोलिखित पंक्तियों को उद्धृत करो:—

संसार में अभिशापों से बचने के लिए हृदय की उदारता एक महान साधन है। अपने दृष्टि कोण से संसार को देखना दूसरों के साथ अन्याय करना है। जिसे हम अपना शत्रु समझते हैं, यदि विचार पूर्वक देखाजाये तो अपनी ही छोटी-मोटी भूलों से हमने ही उसे अपना शत्रु बनाया है—इस में कोई संदेह न रहे।

हृदय को अनेक अशान्तियों से बचाने के लिये आवश्यक है कि हम दूसरों के प्रति वैसा ही व्यवहार करें जैसा कि हम उनसे अपने लिये चाहते हैं। किसी को बुरा भला कहने से पूर्व उस की परिस्थितियों पर विचार करलेना भी संसार के अनेक झगड़ों से बचाता है। क्योंकि मनुष्य पर सामाजिक, राजनैतिक और वैयक्तिक परिस्थितियों का प्रभाव पड़े बिना नहीं रह सकता। हमें सोचना यह है कि जिसे हम दोषी ठहरा रहे हैं यदि उस परिस्थिति में स्वयं होते तो क्या करते ?

संसार विचार वैचित्र्य पर टिका है, उसे अपने समान न पाकर कुढ़ते रहना अपने ही जीवन का नाश करना है। हमें अपने आप को संसार के लिए उपयोगी बनाना है, इस लिए अपने विचारों को परोपकार के साँचे में ढालना मानव जीवन को सार्थक बनाना है। "मैं जो हूं वही रहूंगा और संसार मुझ जैसा क्यों नहीं बनता" ऐसे विचारों का हृदय में बना रहना पागलपन के सिवाय और क्या हो सकता है ?

प्रश्न २:— उपर्युक्त लेख ध्यान पूर्वक पढ़ कर सिद्ध करो कि "मनुष्य परिस्थितियों का दास है"। उत्तर १०० पंक्तियों से न्यून न हो अङ्क—७०

प्रश्न ३:— दृष्टि कोण, परिस्थिति, विचार-वैचित्र्य पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखो। अङ्क—१५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्य हरिश्चंद्र

(ले०—स्फुट समालोचक)

इस नाटक के लेखक भारतेन्दु हरिश्चन्द्रजी वर्तमान हिन्दी-साहित्य के पिता माने जाते हैं। खड़ी बोली में गद्य-पद्य की काव्य-रचना में स्वाभाविकता, सरसता और व्यावहारिकता लाने में भारतेन्दु अग्रगामी थे। भारतेन्दु ने लगभग १०८ नाटक लिखे हैं। यह नाटक हरिश्चन्द्र-नाटकावलि के रूप में गुटकाकार प्रकाशित हो चुके हैं। इस नाटकावलि में से कई नाटक संस्कृत के नाटकों के अनुवाद-रूप हैं। कई मौलिक हैं। वर्तमान नाटक संस्कृत के रामचन्द्र कविकृत चण्ड-कौशिक नाटक का छायारूप प्रतीत होता है। छायारूप होने पर भी स्थान-स्थान पर भारतेन्दुजी की प्रतिभा तथा मौलिकता झलक रही है। नाटक का अन्तिम भरत-वाक्य उनकी मौलिकता का द्योतक है। इसमें "अपधर्म छूटै, स्वत्व निज भारत गहै, कर दुःख बहै" वाक्य से भारत की वर्तमान अवस्था तथा जनता की राजकर कम करने की माँग को चित्रित किया गया है। गंगा के वर्णन को पढ़िये। आजकल की काशी का लिखित चित्र आँखों के सामने आ जाता है। वर्तमान भारत के लिये इस नाटक का सन्देश—

"चन्द टरै सूरज टरै, टरै जगत् व्यौहार।
पै दृढ़ हरिचन्द का टरै न सत्य विचार॥"

पद्य-द्वारा घोषित किया गया है। दृढ़ निश्चय और सत्यधर्म से विमुख होकर ही, भारतवासी दुःख तथा यातना झेल रहे हैं। नाटक के नायक हरिश्चन्द्र की भाँति दृढ़-प्रतिज्ञ तथा कर्तव्य-परायण होने से विश्वामित्र तथा इन्द्र-जैसे ईर्ष्यालु शत्रुओं को भी हार माननी पड़ती है।

हिन्दी-रत्न-परीक्षा में निर्दिष्ट सत्यहरिश्चन्द्र-नाटक पर कई विस्तृत टीका-टिप्पणियाँ लिखी जा चुकी हैं। इसलिए शब्दार्थ तथा पद्यार्थ न लिखकर, सामान्य विवेचना की गई है। इस नाटक में एक विशेषता यह भी है कि नाटक के कवि हरिश्चन्द्र ने अपने जीवन में राजा हरिश्चन्द्र की भाँति, स्वीकार की हुई टेक को, सत्य प्रमाणित करने के लिये अपने आपको जोखिम में डालने में संकोच नहीं किया। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को अपने बुजुर्गों से काफ़ी सम्पत्ति मिली थी। परन्तु इन्होंने अपनी आन क़ायम रखने के लिये, कही बात पर डटे रहने के लिये सब-कुछ कुर्बान कर दिया। इसलिये इस नाटक के नायक हरिश्चन्द्र का चरित्र-वर्णन तल्लीनता तथा तन्मयता के साथ किया गया है। नाटक के पात्रों में हरिश्चन्द्र का जीवन दिव्य-त्याग का ज्वलन्त उदाहरण है। शैव्या महारानी का चरित्र स्वर्गीय देवियों के चरित्र को लज्जित करनेवाला है। कुल की आन-शान के लिये पति-पुत्र को छोड़ने में संकोच नहीं किया। इसी प्रकार राजा हरिश्चन्द्र ने भी वचन का पालन करने के लिये स्त्री-पुत्र तथा राज्य का परित्याग किया। धर्म को दारा-पुत्र-कलत्र से श्रेष्ठ तथा उत्तम समझनेवाले महात्मा ही सत्यवादी पदवी को धारण कर सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी व्याकरण

(ले०—साहित्यिक वैयाकरण)

हिन्दी-रत्न-परीक्षा देनेवालों को हिन्दी-व्याकरण के विशेष नियमों को कण्ठाग्र करते हुए, शुद्ध लेख तथा छोटे-छोटे वाक्य लिखने का अभ्यास करना चाहिए। अध्यापकों तथा गृह-शिक्षकों (ट्यूटर्स) को चाहिए कि विद्यार्थियों द्वारा लम्बे-लम्बे वाक्यों को लिखाकर, छोटे छोटे वाक्यों में बदलवाएँ।

छोटे वाक्यों-द्वारा व्याकरण के नियम सरलता और स्पष्टता के साथ समझाये जा सकते है। व्याकरण-सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त करने के लिए विद्यार्थियों को निम्नलिखित प्रश्नों को सरल करने का अभ्यास करना चाहिए—

(१) वाक्य किसे कहते हैं ?

(२) वाक्य कितने प्रकार के होते हैं ?

(३) वाक्य के मुख्य-मुख्य भाग कौनसे होते हैं ?

(४) हिन्दी-भाषा में कितने वचन तथा कितने लिंग होते हैं ?

(५) आकारान्त और अकारान्त शब्दों के स्त्री-लिंग बनाने के कौन-से विशेष नियम हैं ?

(६) सोदाहरण कारकों के नाम लिखो !

(७) क्या हिन्दी-भाषा में समासों का प्रयोग किया जाता है ? हिन्दी के कुछेक समस्त-पदों का प्रयोग करो।

(८) शब्द कितने प्रकार के होते हैं। शब्दों के उदाहरण-सहित भेद लिखो।

(९) लेख-शैली को शुद्ध तथा प्रभावोत्पादक बनाने के लिए विद्यार्थियों को निम्नलिखित विराम-चिह्नों का सोदाहरण अभ्यास करना चाहिए।

पद, वाक्यांश वा वाक्य बोलते समय बीच-बीच में कुछ देर के लिए ठहरना पड़ता है, इस ठहराव को विराम कहते हैं। जब हम पद, वाक्यांश व वाक्य लिखते हैं, तो विराम की जगहों पर कुछ चिह्न लगाते हैं, उन्हें विराम-चिह्न कहते हैं। विराम-चिह्नों के बिना लगाये हमारे कहे हुए वाक्यों के अर्थ समझने में सुविधा नहीं होती। वाक्य-रचना के अभ्यास के साथ ही विराम-चिह्नों के लगाने का अभ्यास करना चाहिए। आजकल साधारणतया हिन्दी में नीचे लिखे विराम-चिह्नों का प्रयोग करते हैं—

अल्प-विराम या कौमा	(,)
अर्द्ध-विराम या सेमीकोलन	(;)
पूर्ण-विराम या पाई	(।)
प्रश्न-सूचक	?
विस्मयादि बोधक	!
उद्धरण	"......"
कोलन और डश	:—
सम्बोधन	, !
विभाजन	(-)

अल्प-विराम

वाक्य पढ़ते समय जिस स्थान पर थोड़ी देर ठहरना पड़े, वहाँ अल्प-विराम लगाते हैं; जैसे—

१—चतुर कारीगर, मोती, पुखराज, नीलम, हीरा, मूँगा आदि की जाँच करते है।

२—इसलिए प्राण जायँ तो हर्ज़ नहीं; क्योंकि आत्मा अमर है।

३—[illegible] है, मैं पास हो जाऊँगा।

४—मैं क़लमदान को देखूँगा, जो घर रखा है...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्द्ध-विराम

अल्प-विराम से जहाँ कुछ अधिक ठहरते हैं और जहाँ पर दो वाक्यों के अर्थों में पास-पास का सम्बन्ध होता है, उनको पृथक् करने के लिए अर्द्ध-विराम लगाते हैं; जैसे—

"हम अपने शरीर को किस तरह रखें; हम अपने मन को किस तरह रखें; हम अपने कारोबार का किस तरह प्रबन्ध करें; हम अपने बाल-बच्चों का किस तरह पालन करें; ये सब बातें जानना ज़रूरी है।

पूर्ण-विराम

जहाँ पर वाक्य पूरा हो जाता है, वहाँ पूर्ण-विराम लगाते हैं; जैसे—

एक और दिल्लगी सुनिए। आपके एक-मात्र हैं मास्टर उमाप्रसाद। वे संयुक्त-प्रदेश के लखनऊ नगर में मास्टर थे। आगरे को अपनी तबदीली चाहते थे।

एक पूर्ण वाक्य के बीच में अल्प-विराम, अर्द्ध-विराम आदि चिह्न भी यथावसर आया करते हैं—

इसी तरह इस दुनिया की जुदी-जुदी ऋतुओं का जुदा-जुदा असर तो होता ही है, और जुदे-जुदे आदमियों का जुदा-जुदा स्वभाव तो रहेगा ही; ये सब हमारे लिये अभी बदलने के नहीं।

———

शिशु की वीरोक्ति

वह शकुन्तला लाड़िलो कबतें मांगतु रोय।
खड्ग खिलौना खेलिबे, अबहिं लाय दै मोय॥
गोघातक वा बाघ का, जननि खैंचिहौं मूँछ।
तीखन डाढ़ै तोरिहौं, अरु उखारिहौं पूँछ॥
दैतो भैया! नेक तूं, मेलो तील कमान।
चंद भूमि गिला ऊंगा, मालि अचूक निछान॥
ऊं ऊं मैं तो लेऊंगो, और तील कमान।
मालूंगो म्लगलाज मैं, धालि अचूक निछान॥
मति दै चकली तूं हमैं, मति दै गैंद अजान।
अम तो ओई लैयंगे, लखन लाम धनुबान॥
गहि पटुका बलराम को, रह्यौ मचालि नँदलाल।
दाऊ मोय मंगाय दै, छोती तल बगाल॥
भावतु भैया! मोय, नहिं फीको चंदन माल।
दै लगाय तूं बस, वही नीको टीको लाल॥
सीय हरतु लखि स्वप्न में, उते कान्ह अकुलाय।
धनु मेरो दाऊ! कितै, दै तो नेक उठाय॥ (वीरसतसई)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिशु-संसार

स्त्री अध्यापिकाएँ प्रसन्न हो कर लड़कियों को पढ़ावें।

(ले०—श्री पं० आत्मानन्द विद्यालंकार)

अध्यापिकाओं को विदित हो कि उनकी छात्राएँ उनसे बहुत प्रभावित होती हैं। इस बुरे समय में भी, जब कि कोई किसी का नहीं बनना चाहता, छात्राएँ अपनी अध्यापिकाओं से कम से कम, छोटी आयु में तो, बड़े विनय से बर्तती हैं। अपनी अध्यापिकाओं के एक-एक इशारे की खूब समझती हैं। उन के प्रसन्न चेहरे को देखकर ये नई-नई जाति कि बच्चियाँ कलियों की तरह खिल उठती हैं। अपनी अध्यापिकाओं के मुख पर क्रोध देखकर इन के मुख पर भय की छाया आजाती है। अपनी अध्यापिका को चिन्ता में देखकर इनका मुख मुर्झा जाता है। देशका दौर्भाग्य है कि काफ़ी संख्यामें विधवा स्त्रियें भी पढ़ाती हैं। जाति ने इन की रक्षा का यह बड़ा पवित्र और उत्तम साधन निकाला है पर दुःखसे कहना पड़ता है कि इन बेचारियों पर अनेक और मुसीबतें भी आई रहती हैं। पहले तो इन के जीवनमें आशा, और हर्षके न होने से उत्साह नहीं पैदा होता। इसका परिणाम यह होता है कि ये उत्साह को बढ़ाने वाली बातें अपनी शिष्याओं के सामने नहीं करती। उनपर भी यह संस्कार पड़ता है कि जीवन, दुःखमय, कष्टमय, शोकमय, चिन्तामय है। इस लिये अध्यापिकाओं को चाहिये कि ज़रा अपने हृदय को वश में कर इन बच्चों के सामने मुखपर मुस्कराहट रखें। ये लड़कियाँ भी वैसा ही करेंगी। वे ज़रा खेलें। ये लड़कियाँ भी खेलेंगी। वे शिष्ट उपहास की कहानियाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनाया करें। ये भी सुनेंगी सुनाएँगी और हंसेगी। अपनी सहेलियों की जगह-जगह नई खेलें और हंसी की कहानियाँ बनाएँगी। साथ यह भी आशा रखेंगी कि देखें अब कैनसी नई कहानी सुनाई देती है। यों बच्चों के जीवन से ही सच्ची घटनाएँ वहुत ही मिल जाती है। इन की सूझ अजीव होती हैं। बड़ी भाली होती हैं बड़ी प्यारी होती हैं अपने आप सुनने वालों को कहानी याद हो जाती हैं। ये बातें विस्मय और हंसी की बड़ी सुन्दर सामग्री हो जाती हैं, जो इसे जुटाए वह प्रसन्नमुख हो जाता है। जिन के लिये जुटाए वे भी सुन-सुन खिला-खिला उठते हैं। इस लिये अध्यापिकाओं को चाहिये कि इस असूल को याद रखें और जैसे हो अपने को प्रसन्नमुख रखें। अपने मुखपर क्रोध, शोक, चिन्ताभय, दुःखकष्ट, घृणा आदि के भाव न आने दें। यदि वे इन भावों को त्याग कर हर्ष उत्साह आदि का भाव रखेंगी तो हमारी उठ रही बाला-जाति पर बड़ा उपकार करेंगी।

आप आप करने में गाड़ी चलदी।

सुनते हैं एक बार लखनऊ के स्टेशन पर दो चार लखनवी सज्जन रेल पर चढ़ने के लिये पहुंचे। लखनऊ जैसे शहर मे कुलीन नागरिकों में शिष्टाचार जरूरत से ज़्यादा होता है। जब गाड़ी चलने के लिये प्लेटफार्म पर पहुंची, तो वे आपस में एक दूसरे से कहने लगे "आप चढ़िये" आप चढ़िए। दूसरा तीसरा भी इसी प्रकार कहता रहा। भला शिष्टाचार को वे कैसे छोड़ते लखनवी ठहरे। इतने में गाड़ी चलदी और वे आप आप करते ही रह गये।

बचनन में नहीं मधुरता, नैनन में न सनेह
तहाँ न कबहूं जाइये, कंचन बरषे मेह॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

एक बार एक टोपधारी सज्जन किसी अपरिचित सज्जन के घर गये।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन टोपधारी महाशय के दिल में यह इच्छा उत्पन्न हुई थी कि आज बिना खर्च किए किसी दूसरे के घर भोजन करना चाहिये। गृहपति के पूछने पर "क्योंजी पानी पीजियेगा" आगन्तुक महाशय कह उठे। 'अजी जब भोजन करूंगा पानी साथ ही पीलूंगा॥

पहेली

एक भैंस ४ सेर दूध देती है। एक गाय आधसेर दूध देती है एक बकरी एक पाव बताओ कितनी गौ भैंस और बकरी लेवें कि पशु भी बीस हों और दूध भी बीस सेर हो।

प्रकृति का सौन्दर्य

सत्ता तुम्हारी भगवन् जग में समा रही है।
तेरी दया सुगन्धि हर .गुल से आ रही है॥
रवि चन्द्र और तारे तूने बनाए सारे।
इन सब में ज्योति तेरी इक जगमगा रही है॥
विस्तृत वसुन्धरा पर सागर बहाये तूने।
तह जिन की मोतियों से अब चमचमा रही है॥
दिन रात प्रात सन्ध्या मध्याह्न भी बनाया।
यह ऋतु पलट-पलट कर करतब दिखा रही है॥
सुन्दर सुगन्धि वाले पुष्पों में रङ्ग तेरा।
यह ध्यान फूल पत्ती हरदम दिला रही है॥
हे ब्रह्म विश्व कर्ता वर्णन हो तेरा कैसे।
जल-थल में तेरी महिमा हे ईश ! छा रही है॥
भक्ति तुम्हारी भगवान् क्यों कर हमें मिलेगी।
माया तुम्हारी स्वामी; हमको भुला रही है॥
"देवी चरण" शरण है तुझ से यही विनय है।
हो दूर यह अविद्या हम को भुला रही है॥

(देवीचरण)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(तरुण गोष्ठी)

रामलाल—श्यामलाल जी आओ, देवनाथ जी, सोमनाथ जी, विद्या-सहाय जी चलो आज घूमने चलें! बी. ए. का परिणाम तो निकल आया है ईश्वर की कृपा से हम सब पास हो गये हैं, चलो आज बड़ा अच्छा दिन है नहर की तरफ़ ज़रा घूम आवें।

सब—ठीक है ठीक है।

श्यामलाल—चलो! सिर पर पहाड़ पड़ा हुआ था। कल उतरा! यह परीक्षा भी बड़ी बला है मनों बोझ सिर पर से उतर गया।

देवनाथ—रोज परीक्षा के ही सुपने आते थे। कभी यह सुपना आता था मैं फैल हो गया, कभी यह आता था मैं पहला निकल आया; कभी कुछ कभी कुछ।

विद्यासहाय—सब सच कहते हैं। एक तो चिन्ता का बोझ दूसरा यह सुपने सोते खूब आते थे दिन में यों थकते रहें रात को ये सुपने खाएँ। कैसी बुरी हालत है।

सोमनाथ—बात तो सारी समझ में आ जावें। ये सब बातें प्रगट भी अंग्रेजी में करो। यह बड़ा पचड़ा है।

विद्यासहाय—यह तो सारे हिन्दुस्तान में ऐसा ही है। हां जो गुलाम लोग अपनी ज़बान में हम सब की तरह बारीक से बारीक सूक्ष्म से सूक्ष्म बुद्धि की बातें करते हैं तो क्या अपनी पढ़ाई की बातें अपनी ज़बान में नहीं साख सकते।

रामलाल—पारिभाषिक शब्द कहाँ से लावें?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

विद्यासहाय—अंग्रेजी में भी तो (Greek, Latin) दूसरी भाषाओं से बना

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये जाते हैं हम भी संस्कृत से बना लेंगे। संस्कृत, वेद, दर्शन, उन पर भाष्य टीका, इतना बड़ा धातुकोष, वैद्यक, ज्योतिष आदि हज़ारों ग्रन्थ हैं मनुष्य के विचार तो वही हैं उन्हें भिन्न भिन्न रीति से प्रकट करते हैं। संस्कृत से बनाना क्या मुशकिल है। भिन्न भिन्न प्रान्तों में बड़े २ विद्वान् लोग हैं। रवीन्द्रनाथ, ब्रजेन्द्रनाथ सील, भगवान्दास, गङ्गानाथ झा, प्रफुल्लचन्द्रराय, जगदीशचन्द्र वसु, रमण, आदि सज्जन जितने चाहो पारिभाषिक शब्द छः महीनों में बना सकते हैं।

श्यामलाल—गुरुकुल कांगड़ी, हिन्दू विश्वविद्यालय का एफ. ए. क्लास, उस्मानियां युनिवर्सिटी हैदराबाद इन सब स्थानों पर अपनी भाषा में सब विषय पढ़ाये जाते हैं। क्या ही अच्छा है। इन्होंने अंग्रेजी के भूत की, खास करके गुरुकुल ने २०, २५ साल बीतगये इस बात की परवाह नहीं की। अपनी भाषा में दर्शन, विज्ञान सब विषय पढ़ाए जाते हैं।

श्यामलाल—मित्र छोटी सी जगह !

विद्यासहाय—छोटी सी है तो क्या हुआ ! वहां मेरा एक भाई दसवीं तक पढ़ा है, मुझसे अच्छी हिन्दी, संस्कृत जानता है वह संसार की घटनाओं को मुझ से अधिक जानता है।

देवनाथ—सारा दिन यही काम हुआ।

विद्यासहाय—तो अच्छा ही है। यह समय ही विद्या का है। तो बात हमारी यह थी कि अपनी जबान में पढ़ें क्यों न ? यह पंजाब युनिवर्सिटी बड़ी अजीब है। यहां पंजाब में यूँ तो कौम, कौमी नारे बड़े लगते हैं पर कौमी तालीम की किसी को परवा नहीं।

श्यामलाल—यह तो मौजी प्रान्त है। यहां तो अकड़ और फैशन का राज्य है। फैशन अकड़ बढ़ाती है और अकड़ फैशन बढ़ाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवनाथ—हमारे प्रोफेसर साहवान् भी तो इसी शिक्षा में पले हैं।

विद्यासहाय—पर सज्जन तो हैं।

रामलाल—यह तो माता पिता की हिन्दू सभ्यता की शिक्षा है। उसका प्रभाव कैसे मिटे।

श्यामलाल—इस विदेशी भाषा के माध्यम ने ऐसी अकल करदी है। किताबों में से नकल करने को, उद्धरण देने को ही दिल चाहता है अपनी, कल्पना अदा करने लगें तो शून्य दीखता है, या सिरदर्द हो जाता है। प्रस्ताव लिखें तो ५,६, पृष्ठ में ख़तम हो जाता है जैसे रेगिस्तान में नाला। रास्ते में ही सूख जाय। कविता बनती ही नहीं।

विद्यासहाय-मित्र यह बड़ा घाटा है। इतना बड़ा खर्च भी किया और कोई भाषा पूरी तरह न आयी।

देवनाथ-यहां एक घाटा है यहां घाटों के बाजार लगे हुए हैं। परदेसी भाषा में पढ़ते, पहले तो आधा यों ही भूल जाता है। दूसरे को समझाएँ तो कुछ याद ही नहीं आता। किताब जैसी अंग्रेजी नहीं बनती, इस वास्ते किताब घोटनी पड़ती है, नई बात सूझती नहीं, नये सवाल करने को आदमी झिझकता है, व्यवहार में अंग्रेजी भाषा का क्या काम, भाई बहनों को वे भाव पहुँचते ही हैं। हमारा दिमाग़ अलग चलता है घरवालों का अलग दिमाग अलग घाटा गया, जो फ़ेल हो जावें तो और भी बरबादी और फिर हाल यह कि पुस्तकें भी नहीं लिख सकते। नौकरी का तो पूछो ही नहीं, जो पांच पांच सात सात बरस के नौकर हैं, उन्हें बाहर कर रहे हैं।

सारे-बड़ी ख़राब पढ़ाई है। इस में जितनी जल्दी सुधार हो उतना ही अच्छा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी :—

हिन्दी रत्न के लिए

ताई

(श्री० रामलाल अग्रवाल)

इस कहानी में चतुर लेखक ने बड़ी उत्तमता यह दिखाया है कि कोई वस्तु कितनी ही सुन्दर क्यों न हो, जब तक मनुष्य उसे पराई समझता है तब तक उसे प्रेम नहीं करता। परन्तु निकम्मी से निकम्मी वस्तु को भी यदि अपनी समझता है, तो उसे प्रेम करता है। पराई अच्छी से अच्छी वस्तु भी नष्ट हो जाये तो वह दुःखी नहीं होता। परन्तु अपनी तुच्छ वस्तु के नष्ट होने पर भी दुःखी हो उठता है।

साथ ही यह भी दिखाया गया है कि स्त्री का हृदय माता बनने के लिए कितना लालायित रहता है। बिना पुत्र के उसे सारा ऐश्वर्य व्यर्थ जान पड़ता है। पुत्र पाने के लिए वह भले बुरे का विवेक छोड़ कर किस प्रकार टोने टोटके और इसी प्रकार के अन्य कार्य करने को तत्पर रहती है।

कहानी का संक्षिप्त कथानक।

बाबू रामजीदास एक सम्पन्न व्यक्ति थे; परन्तु सब सुख होते हुए भी निःसन्तान थे। उन की धर्म पत्नी रामेश्वरी को यह बात बहुत दुःखी करती थी। रामजीदास विचारवान् व्यक्ति थे। अतः भतीजे मनोहर पर अधिक से अधिक प्रेम करके वे अपने सन्तान न होने के दुःख को भुलाए रखते थे। परन्तु भतीजे पर उनका इतना अधिक प्रेम रामेश्वरी को न सुहाता था। वह समझती थी कि भतीजे पर इतना प्रेम रखने के कारण ही पतिदेव सन्तान प्राप्ति की चेष्टा नहीं करते। इस कारण भतीजे के लिए हृदय में प्रेम होते हुए भी वह प्रकट न होने देती थी।

उस ने अनेक बार जादू, टोना, मन्त्र आदि उपायों के लिए पतिदेव को उत्तेजित किया परन्तु उसे सफलता न मिली। उधर पतिदेव ने पर्याप्त चेष्टा की कि रामेश्वरी मनोहर से पुत्र की भांति प्रेम करने लगे। परन्तु उन्हें भी इस कार्य में सफलता न मिली।

जो काम मनुष्य की लाख चेष्टाओं से भी सिद्ध नहीं होता वह विधाता की एक ही घटना से सिद्ध हो जाया करता है।

एक दिन अकस्मात् पतंग पकड़ने के लिए मनोहर का पैर फिसल गया। गिरते समय बड़े करुण शब्दों में उसने ताई को पुकारा। यदि ताई रामेश्वरी चाहती तो उसे पकड़ सकती थी परन्तु उसने ईर्ष्या के वशीभूत हो कर कुछ विलम्ब कर दिया। मनोहर छत से गिर पड़ा और साथ ही ममतामयी रामेश्वरी भी अपने को ही इसका कारण समझती हुई चीख मार कर छज्जे पर गिर पड़ी।

रामेश्वरी एक सप्ताह तक बुखार में बेहोश रही। प्रलाप की दशा में भी उसे मनोहर ही याद आता था। इधर मनोहर भी धीरे धीरे अच्छा हो गया। जब रामेश्वरी का ज्वर कम हुआ तो उस ने एक दम मनोहर को देखने की इच्छा प्रगट की।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस के पास लाया गया। उसने उसे हृदय से लगाया और आंसू बहा कर पिछली सारी मलिनता धो डाली।

स्वस्थ होने पर मनोहर ही उस का पुत्र और प्राणाधार था। मनोहर की बहिन चुन्नी उस की प्यारी बेटी थी।

रोम की सैर।

श्री स्वामी सत्यदेव जी परिव्राजक के भ्रमण वृत्तान्त के आधार पर

(श्री० रामलाल अग्रवाल)

रोम इटली की राजधानी है। यह टाइबर नदी के किनारे पर बसा हुआ अत्यन्त प्रसिद्ध और ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत महत्वशाली नगर है। वीर युवक गैरी बालडी ने अदम्य उत्साह से इसे आस्ट्रिया और फ्रांस के फंदे से मुक्त किया था। अब भी रोम नगर में एक टीले के ऊपर इस वीर की घोड़े पर सवार मूर्त्ति विराजमान है !!

रोम में सेन्टपीटर नामक संसार का सब से बड़ा गिरजा है। यह बहुत ऊंचा, विस्तृत और विशाल है। इस का दरवाजा पीतल का है, जिस पर सुन्दर चित्रकारी की हुई है। समाधि के उपर ४०० फ़ीट ऊंचा गुम्बद है जिस की बनावट देख कर आश्चर्य होता है। कहा जाता है कि यह कारीगरी माईकेल एंजिलो की है। इसी गिरजे में मेडोना का कीर्त्ति स्तम्भ है। इसे भी माईकेल एंजिलो ने बनाया है। दाहिनी ओर जगत् विख्यात सेन्टपीटर की बड़ी मूर्त्ति है। रोमन कैथोलिक इस मूर्त्ति को बड़ी श्रद्धा से देखते हैं !!

इसी गिरजे के पास सब से बड़ा राजमहल 'वेटिकन' है। यह पोप का निवास स्थान है। रोमन कैथोलिक लोग पोप को अपना रूहानी गुरु मानते हैं !!

रोम साम्राज्य का एक बड़ा प्रसिद्ध स्थान कोलोसियम है। अब इस के खंडरात पड़े हैं। इन्हें देखने के लिए सभ्य देशों के हज़ारों दर्शक यहां आते हैं। यह भवन रोम के बादशाह टीटस जेरूसलम् ने खेल तमाशों के लिए बनाया था !!

नगर में बिजली की गाड़ी का प्रबन्ध है। मकानों पर प्रायः एक मादा भेड़िये का चित्र बना रहता है। जिसके नीचे दो बालक दूध पीते हुए दिखाए गये हैं। कहा जाता है कि यही दोनों बालक रोम नगर के जन्म दाता हैं। बचपन से ही एक अत्याचारी सम्बन्धी ने इन्हें टाइबर नदी में फेंक दिया था। परन्तु परमात्मा की दया से ये नदी के बाहर आ पड़े और अकस्मात् एक मादा भेड़िया ने आकर अपने दूध से इन की रक्षा की। बस इसी लिए यह मूर्त्ति रोमन लोगों को बहुत प्यारी है !!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुर्गावती ।

(श्री० रामलाल अग्रवाल कृष्णागली लाहौर ।

प्रतापशाली अकबर के शासन काल में गढ़ मंडल के शासन पर जो महारानी विराजमान थीं उन्हीं का नाम पुण्यश्लोका दुर्गावती है ।

इन के पिता का नाम चन्दनराय था, जो कि कन्नौज के राजा थे । पिता ने इनका विबाह किसी अन्य राजकुमार से करना चाहा था परन्तु इन्हों ने बीरता पर मुग्ध होकर दलपति शाह को आत्म समर्पण किया । पिता को यह बात स्वीकार न थी और दलपति शाह ने अपने बाहुबल से दुर्गावती को प्राप्त करना चाहा । फलतः दोनों में घोर युद्ध हुआ दलपती शाह की विजय हुई और दुर्गावती से यथा विधि विबाह होगया ।

यथा समय दुर्गावती के गर्भ से बीर नारायण का जन्म हुआ । परन्तु तीन बर्ष की अवस्था में ही उस बालक को पितृ-सुख से वंचित होना पड़ा । पति की मृत्यु से दुर्गावती को अत्यन्त शोक हुआ । परन्तु पुत्रस्नेह और कुटुम्बियों के धीरज बंधाने वाले बचनों से उसने जैसे तैसे राज काज करना आरम्भ किया । उसने एक चतुर शासक की भान्ति प्रजा को सुखी रखने के लिये अनेक उपाय किये और मुसलमानों की वक्र दृष्टि से अपने छोटे से राज्य को बचाए रखने के लिये सेना का सुधार किया ।

लोगों के बहकाने और अपनी साम्राज्य लिप्सा के कारण अकबर की दृष्टि उस राज्य पर पड़ी । आसफखां को गढ़मंडल पर चढ़ाई करने की आज्ञा हुई । दुर्गावती के स्वतंत्रता प्रेमी ८००० बीर घुड़सवार अपनी जन्मभूमि की स्वाधीनता बचाने के लिये युद्धक्षेत्र में उतरे और रण चंडी की भान्ति स्वयं दुर्गावती ने सेना का संचालन किया । दुष्ट आसफखां की सेना लड़ाई से भाग खड़ी हुई और स्वयं आसफखां ने भाग कर बड़ी कठिनता से अपने प्राण बचाए ।

अकबर इस हार से बड़ा लज्जित हुआ और उसने डेढ़ वर्ष पश्चात एक बड़ी भारी सेना के साथ फिर आसफखां को गढ़मंडल पर धावा करने के लिये भेजा । परन्तु इसबार भी उसे मुंह की खानी पड़ी । और वह कुछ बची खुची सेना के साथ भाग निकला । इस हार से आसफखां को इतनी लज्जा हुई कि वह मुंह दिखाने लायक न रहा क्योंकि उसी ने अकबर को लड़ाई के लिये उकसाया था ।

बस, इस दुष्ट ने लड़ कर विजय पाने की आशा छोड़ दी और धीरे २ गढ़मंडल में विश्वास घात और फूट का बीज बोना आरम्भ किया । राज्य में फूट पड़ जाने के कारण दुर्गावती को विजय पाने की आशा न रही । तथापि उसने संग्राम से मुंह न मोड़ा ।

अब तीसरी वार महाभयानक युद्ध हुआ । आसफखां के साथ अपार सेना थी और दुर्गावती की सेना में फूट पड़ चुकी थी । इस लिये विजय-लक्ष्मी आसफखां के साथ रही । दुर्गावती का एक मात्र १४ बरस का बालक वीर नारायण भी इस युद्ध में काम आया ।रानी ने भी विजय की आशा न देख और शत्रुओं द्वारा पकड़े जाना अपमान जनक समझ, अपनी ही तलवार से अपना सिर मातृभूमि को भेंट चढ़ा दिया । सेना ने शत्रुओं से बच कर एक सुरक्षित स्थान पर बीर नारायण के साथ उनकी अन्तिम क्रिया की ।

धन्य है भारत भूमि जहां की कोमलाङ्गी वीराँ माताएँ ऐसे २ रण कौतुक रच गईं । इनके स्मरण मात्र से रोमाञ्च हो उठता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जुगनू की चमक।

सिक्खों की अन्तिम लड़ाई के बाद खालसा दल की शक्ति क्षीण हो गई थी। महाराजा रणजीत सिंह स्वर्ग वासी हो चुके थे। अंग्रेजों ने रानी चन्द्रकुँवरी को चुनार के किले में नज़रबन्द कर दिया और कुंवर दिलीपसिंह इंग्लैण्ड भेज दिये गये।

स्वतन्त्रता प्रिय रानी को चुनार का किला अधिक देर बन्द न रख सका। वह एक रात चुपचाप किले से बाहर निकल गईं और बनारस होती हुई अयोध्या पहुंची। वहां नैपाल के राजकुमार राजा जंग बहादुर डेरा डाले पड़े थे। रानी के एक राज-भक्त सेवक ने जो अब नैपाल का सिपाही था राणा से रानी का परिचय कराया।

नैपाल पहुंचने पर मन्त्री मंडल में इस विषय पर विवाद हुआ कि अंग्रेजों के शत्रु को राज्य में आश्रय दिया जाये या नहीं ? परन्तु अन्त में नैपाल ने बड़ी उदारता का परिचय दिया। पांच हजार सैनिकों ने महारानी का स्वागत किया और पचीस हज़ार रुपये से रानी के लिये एक भवन बनवा दिया गया। १०००० हजार रुपया मासिक व्यय के लिए नियत किया गया। इस घटना को भारत सरकार ने भी बुरा न समझा। इस प्रकार महारानी ने शेष जीवन शान्ति पूर्वक व्यतीत किया। इस प्रकार की घटनाएं लुप्त प्राय भारतीय इतिहास की अन्धेरी रात में जुगनूं की चमक की तरह कभी २ प्रकट हुआ करती हैं।

वर्तमान नैपाल।

भारत वर्ष के उत्तर में नैपाल राज्य स्थित है। यह सब दृष्टियों से स्वतन्त्र राज्य है। इस की राजधानी 'काठमण्डू' है जो कि समुद्र तट से ४०९० फीट की ऊंचाई पर स्थित है। यहां तीन नदियां बहती हैं। राजधानी से दो मील की दूरी पर इनका संगम स्थान है। यह शंखमूल नाम से प्रसिद्ध है। बस्ती बहुत घनी है और इसी लिए राजधानी का रकबा बढ़ता चला जा रहा है। यहां सिंह-दरबार या गवर्नमेंन्ट हाउस और सम्राट् का महल नारायण हिट्टी दरबार है। सामने अजायब घर या चिड़ियाखाना है। नगर में पुस्तकालय, स्कूल, कालेज, पाठशाला हस्पताल आदि की शानदार इमारतें हैं। सैनिकों की कवायद के लिए टुंडीखेल नामक सुविस्तृत मैदान है। राजधानी के बीचोंबीच घण्टाघर है। वाग्मती नदी के किनारे अंग्रेजों और भारतीयों के लिए अतिथि शालाएं बनी हैं। पशुपति नाथ का मन्दिर बहुत प्रसिद्ध है। काशी की भांति वहां भी असंख्य मन्दिर हैं। नैपालवासी यात्रियों के सुख दुःख का बहुत ध्यान रखते हैं। साधारण से साधारण यात्री को भी तनिक कष्ट नहीं होने पाता। शिवरात्रि के समय भारतवर्ष के असंख्य यात्री भगवान् पशुपति के दर्शन को नैपाल जाते हैं।

राजधानी में मारवाड़ी, पंजाबी, बिहारी और मुसलमान आदि अनेक व्यापारी हैं। गत शताब्दी से नैपाल बहुत उन्नति कर रहा है। वहां के सेना विभाग और शिक्षा विभाग की दिनों दिन उन्नति हो रही है। अनेक नैपाली विद्यार्थी कानून, विज्ञान, आयुर्वेद आदि की शिक्षा पाने भारत आते हैं। राज्य में सारी पाठशालाएं निशुल्क हैं। वहां भूमिकर और मादक वस्तु-कर के अतिरिक्त और कोई कर नहीं है।

अब वहां भी अच्छी सड़कें बन गई हैं स्थान २ पर नल लग गए हैं। बिजली घर बन गया है और कारखानें खूब चल रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नैपाल की प्रचलित भाषा और लिपी की लिखावट बहुत कुछ देव नागरी जैसी है। वहां का चांदी का सिक्का-ब्रिटिश भारत के छः आने के बराबर होता है। यहां का सिक्का भी चलता है।

राजपूतों का बदला !

(श्रीमती कुमारी शकुन्तला पौंवेरा)

मुगल सम्राट् औरंगजेब की बेगम गुलनार एक मोल ली हुई बांदी थी। जोधपुर की महारानी महामाया ने एक बार इसे मोल ली हुई बांदी बेगम कहा था। इस बात से रुष्ट होकर गुलनार प्रतिहिंसा की आग में जलने लगी। उसने त्रिया चरित्र करके औरंगजेब के द्वारा चालबाज़ियों से महाराजा जसवन्तसिंह और उनके बड़े लड़के को मरवा डाला। इसके पश्चात् महारानी और उसके छोटे से पुत्र को दुर्दशा पूर्वक मरवाने के लिए पकड़वा मंगवाना चाहा और इसके लिए औरंगजेब ने जी तोड़ परिश्रम किया। परन्तु जसवन्तसिंह के वीर सेनापति दुर्गादास ने जी जान से महारानी की रक्षा की।

औरंगज़ेब के सेनापति दिलेरखां ने पांच हजार मुगल सिपाहियों को साथ ले कर दुर्गादास और रानी को घेर लिया। उस समय केवल ढाई सौ राजपूत दुर्गादास के साथ थे। उसने बड़ी चतुराई से एक स्वामि-भक्त सेवक कासिम के साथ कुंवर को सुरक्षित स्थान पर पहुंचा दिया और आप ढाई सौ राजपूतों को लेकर ही वीरता पूर्वक मुगलों की सेना पर टूट पड़ा। उधर वीर क्षत्राणियों ने जौहर कर के अपने आपको अग्नि के सिपुर्द कर दिया। वीर दुर्गादास की तलवार के आगे मुगलों की एक न चली और विजयपताका दुर्गादास के हाथ रही।

औरंगजेब ने इस हार से लज्जित होकर और गुलनार की फटकार से भड़क कर बड़ी भारी सेना लेकर मारवाड़ को घेर लिया। घमासान युद्ध हुआ विजय लक्ष्मी इस बार भी दुर्गादास के ही हाथ रही। यहां तक कि इस लड़ाई की जड़ बेगम गुलनार भी कैद कर ली गई। उदार महाराणा ने उस का न्याय महमाया को ही सौंप दिया, परन्तु यह भी बता दिया कि सब से कठोर दण्ड शत्रु को वश में कर के छोड़ देना है। महारानी ने इस आदेश को स्वीकार किया और बड़ी उदारता पूर्वक उस जान की प्यासी गुलनार को, धोखा देकर महाराजा जसवन्तसिंह और उनके पुत्र को मरवाने वाली गुलनार को, और इस लड़ाई की जड़ गुलनार को अपनी मुठ्ठी में पाकर भी क्षमा कर दिया। बस यही वीर राजपूतों का बदला था।

हिन्दी सन्देश में विज्ञापन छापना, पंजाब की हिन्दी प्रेमी जनता तक पहुंचने का अचूक उपाय है। विशेषतः हिन्दी पुस्तक विक्रेताओं को इस अवसर से लाभ उठाना चाहिए।

मैनेजर

हिन्दी सन्देश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाभारत और पूर्व भारत ।

[ले०—समालोचक]

कोई विरला भारतीय होगा जिसने कौरव पाण्डवों के युद्ध की कथा न सुनी हो । कौरव पाण्डवों की युद्ध कथा ही, महाभारत कहलाती है। भारतवर्ष के इतिहास में महाभारत का युद्ध विशेष महत्व रखता है। यह युद्ध इस बात की शिक्षा देता है कि भाइयों की लड़ाई में पराजित और विजेता दोनों नष्ट हो जाते हैं।

इस कथा के पूर्वभाग को आधार मान कर इस नाटक की रचना की गई हैं। लेखक महोदयों ने इसे मौलिक नाटक का नाम दिया है । हमारी सम्मति में लेखक महोदयों का यह लिखना दुःसाहस है। नाटक का कथानक तथा पात्रों का निर्वाचन महाभारत तथा संस्कृत के महाभारत कथा सम्बधी नाटकों से लिया हुआ है । राजशेखर कवि का बालभारत नाटक तथा भास के नाटकों में महाभारत की कथा को नाटक का रूप दिया जा चुका है। हाँ, भाषा की दृष्टि से कह सकते हैं, कि खड़ी बोली और ब्रज भाषा की कविता का संमिश्रण नई बात है। परन्तु इसकी उपयोगिता में संदेह है।

पूर्व भारत का कथानक पाण्डवों के अज्ञात बास के समाप्त होने के बाद, उत्तरा अभिमन्यु के विवाह के साथ समाप्त होता है। नाटक के अन्तिम वाक्य में युधिष्ठिर विराट का समागम तथा अभिमन्यु उत्तरा के विवाह को घटनाको सुखान्त घटना के रूप में चित्रित किया गया है; और इस नाटक को सुखान्त नाटक का रूप देने का यत्न किया गया है।

युधिष्ठिर और विराट चिरकालतक शान्ति पूर्वक नहीं वैठ सके। नाहीं उत्तरा और अभिमन्यु गृहस्थ का आनन्द उपभोग कर सके। सबको शीघ्र ही समरांगण में कूदना पड़ा। फिर भी इस नाटक को यदि सुखान्त नाटक और दुःखान्त नाटक की दृष्टि से निर्दिष्ट करना हो तो सुखान्त नाटक ही कह सकते हैं। नाटक के प्रारम्भिक मंगल गीत का और अन्त के मंगल गीत का सामाञ्जस्य या मेल नहीं है। नाटकों की रचना भरताचार्य के अनुसार गोपुच्छा कार होनी चाहिए। प्रारम्भ में धृतराष्ट्र की विजय कामना तथा यशोगान किया गया है और अन्त में युधिष्टिर और विराट को कीर्ति गाई गइ है। हमारी सम्मति में नाटक की दृष्टि से पूर्व भारत नाटक, दोषपूर्ण तथा अधूरा है।

पूर्वभारत की कथा के मुख्य पात्रों में वेदव्यास द्रोण, कर्ण, अर्जुन, द्रोपदी, विदुर, भीष्म, कुन्तो, तथा श्री कृष्ण कीचक, विराट्; शकुनि, और दुर्योधन विशेष पुरुष हैं।

वेदव्यास ।

इन्हें कृष्ण द्वैपायन भी कहते हैं। इनकी माता का नाम सत्यवती था। महाभारत के घटना-चक्र में समय समय पर वेदव्यास जी उस समय के प्रभाव शाली राजपुरुषों को शिक्षा देते थे। संकट में पड़े हुओं को सहायता देते थे। धृतराष्ट्र जिस समय पुत्र मोह में फंस कर दुर्योधन के कहने से पाण्डवों को नुकसान पहुंचाने लगा था उस समय इन्होंने ही धृतराष्ट्र को उपदेश देकर सन्मार्ग पर लाने की कोशिश की।

जब पाण्डव बनवास कर रहे थे तब इन्हीं की प्रेरणा से अर्जुन को शस्त्रास्त्र की विद्या सीखने के लिये भेजा गया था। विदुर भी इनकी भांति शान्ति प्रिय थे। वह भी समय समय पर कौरवों तथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाण्डवों में शान्ति स्थापित करने का यत्न करते थे विदुर की सलाह ही से पाण्डव लाख-घर में से सुरक्षित बचकर निकल सके थे। महाभारत में वेद व्यास और विदुर दोनों शान्ति के देवता के रूप में चित्रित किये गये हैं।

अनेक दोषों के होने पर भी उपरिलिखित व्यक्ति एक २ विशेष गुणों के प्रतिबिम्ब थे।

(१) युधिष्ठिर धर्मभीरु और सत्यवादी। भीम कर्मवीर तथा स्पष्ट वक्ता। अर्जुन चतुर तथा वीर कर्ण दानी वीर। कीचक कामी लम्पट वीर। विराट अमात्यतन्त्र तथा उदार। भीष्म दृढ़प्रतिज्ञ। कुन्ती दूरदर्शिनी तथा आत्माभिमानिनी। द्रौपदी आत्माभिमानिनी क्षत्रियाणी। (कामातुर जयद्रथ को फटकार देने का साहस द्रौपदी ही कर सकती थी।) शकुनि छली तथा ईर्ष्या दुर्योधन अदूरदर्शी महत्वाकांक्षी वीर। श्री कृष्ण निरभिमानी निष्काम धर्म रक्षक। धृतराष्ट्र पुत्रमोही निर्बल हृदय। द्रोण वीर ब्राह्मण और शिष्य प्रिय थे।

संक्षिप्त रूप से उपरिलिखित व्यक्तियों का परिचय इन विशेषणों द्वारा निर्दिष्ट किया जा सकता है नाटक के कथानक की घटनाएँ इन विशेषणों की व्याख्या है।

स्वर सुधारने का व्यायाम।

खंडवाके श्री. डॉ. रविप्रतापसिंह श्रीनेत, साहित्य-भूषण लिखते हैं कि अच्छे स्वर के लिये श्वास प्रणाली के समुचित व्यायाम की आवश्यकता है।

(१) इस व्यायाम में, मुँह बंद करके नासिका से बिना दबाव के धीरे धीरे वायु भीतर खींचो। लगभग ४—५ सेकण्ड तक वायु भीतर ही रोके रहो, फिर उसी तरह धीरे धीरे वायु बाहर छोड़ते रहो। इस प्रकार श्वास प्रश्वास की क्रिया करते रहो। यह आरंभ में ५—१० मिनिट तक ही करना चाहिये, बाद धीरे धीरे समय बढ़ाते जाना चाहिये।

(२) रात्रिको सोने के (अटेन्शन) खड़े होकर एक गहरी श्वास लेनी चाहिये। फिर श्वास को रोक कर कंधों की सीध में दोनों हाथों को जितना हो सके फैलाना चाहिये और हाथों को उसी स्थिति में आगे पीछे लाना चाहिये। आठ दस बार कर लेने पर, गला तथा मुँह खूब फाड़ कर श्वास रोके हुए खड़े रहना चाहिये। फिर धीरे धीरे श्वास छोड़ते जाना चाहिये। इसके बाद थोड़ी देर तक हाथ पैर ढीले करके खड़े रहना चाहिये। (कर्मवीर)

'हिन्दी-सन्देश' के १० ग्राहक बनानेवाले सज्जन को, 'लालाजी की आत्मकथा' की एक प्रति भेंट की जायगी।

व्यवस्थापक, 'हिन्दी-सन्देश', लाहौर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इलाहाबाद का प्रसिद्ध साप्ताहिक 'अभ्युदय' लिखता है—

पुस्तक (वीर मराठे) का विषय नाम ही से प्रकट है पुस्तक सुन्दर भाषा में लिखी गई है पढ़ने में उपन्यास का सा मज़ा आता है कहीं कहीं तो पढ़ते पढ़ते हृदय मराठों की वीरता देख बल्लियों उछल पड़ता है और कहीं राघोबा ऐसों का हाल पढ़ क्रोध और दुःख के मारे आंखों से आंसू निकल पड़ते हैं। हम चाहते हैं कि प्रत्येक हिन्दू एक बार पुस्तक पढ़े और अपने पूर्वजों से शिक्षा ले।

राष्ट्रधर्म—ले० प्रो० सत्यदेव जी विद्यालंकार। इस पुस्तक को राष्ट्रधर्म की बाइबल कह सकते हैं। पुस्तक की भाषा ओजस्विनी तथा विषय प्रतिपादन शैली मनोरञ्जक और प्रभावोत्पादक है। मूल्य ।।)

दुःखी गढ़देश—गढ़वाल की स्थिति का जीता-जागता चित्र। लेखक 'गढ़वाली हृदय'। मूल्य ।।)

पुनर्जन्म—पुनर्जन्म को सिद्ध करनेवाली औपन्यासिक कथाओं तथा कहानियों का संग्रह। मूल्य १।।)

इस के इलावा हिन्दी संसार की धार्मिक, राजनैतिक, साहित्यिक पुस्तकें भी इस पुस्तक भंडार से मिल सकती हैं। अखिल भारतीय सम्मेलन तथा पंजाब युनिवर्सिटी की परीक्षाओं की पाठविधि की नियत पुस्तकें भी मिल सकती हैं।

नवयुग-ग्रन्थमाला पुस्तक भंडार

हिन्दी सन्देश, लाहौर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय विचार

लाहौर की हिन्दी गोष्ठी ।

श्री डाक्टर लक्ष्मण स्वरूप जी के संचालकत्व में, लाहौर में हिन्दी गोष्ठी स्थापित की गई है। समय समय पर, इस गोष्ठी के प्रबन्ध में, हिन्दी साहित्य सम्बन्धी निबन्ध पढ़े जाते हैं। पिछले महीने श्री प्रो० सूर्यकान्त जी (डो.ए. वी कालेज) ने मलिक महम्मद जायसी की पद्मावत पर निबन्ध लिखा था। इस मास श्री उदय शंकर जी भट्ट ने वर्तमान हिन्दी कविता पर निबन्ध पढ़ा है। दोनों विद्वानों ने खोज तथा प्रतिभाशाली लेखन शैली से अपने विषयों का प्रतिपादन किया। गोष्ठी के संयोजकों का कहना है कि बार बार यत्न करने पर भी, हिन्दी भाषी जनता पर्याप्त संख्या में उपस्थित नहीं होती। लाहौर के हिन्दी पढ़ने वाले विद्यार्थियों तथा साहित्यिक मनोवृत्तिवाले श्रीमानों को इस गोष्ठी में सम्मिलित होने का विशेष रूप से यत्न करना चाहिए।

राष्ट्र की आर्थिक तथा व्यावसायिक स्थिति ।

इस समय संसार की राजनैतिक और धार्मिक समस्याएँ आर्थिक समस्याओं का रूप धारण कर रही हैं। १९३३ ई० का वर्ष भारत वर्ष की आर्थिक तथा व्यावसायिक दृष्टि से महत्व का साल है। बम्बई के व्यापारियों ने लंका शायर के कपड़े के व्यापारियों के साथ समझौता करके जनता के हितों की उपेक्षा कर अपने स्वार्थों की रक्षा की है। जनवरी मास में हिन्दुस्तान के व्यापारियों ने जापान के प्रतिनिधियों के साथ भी समझौता किया है।

ब्रिटिश साम्राज्य के सभासद होने के कारण लंकाशायर के व्यापारियों के साथ, बाहर से आने वाले माल पर कर लगाने के सम्बन्ध में रियायत की गई है। जापान-हिन्दुस्थानी, समझौते के अनुसार जापानी माल पर ५० फीसदी कर लगेगा। जापान को वर्ष भर में हिन्दुस्तान से कपास की १० लाख गांठें खरीदनी पड़ेंगी। इस के बदले में जापान से ३२½ करोड़ गज़ कपड़ा भारत में आ सकेगा। यदि जापान भारत से १५ लाख गाँठें कपास की खरीदेगा तो भारत में जापान का ४० करोड़ गज़ कपड़ा आ सकेगा। इसी प्रकार इस वर्ष चाय लोहे आदि व्यवसायों की उन्नति के लिये संरक्षण कर लगाया गया है। परन्तु इन में विशेष उन्नति नहीं हुई।

भारत में खाण्ड के कारखानों ने विशेष उन्नति की है। क्योंकि विदेशों से आने वाली खांड पर एक हण्ड्रेडवेट पर ९८१ रुपये का कर लगाया गया है। इसलिये भारत में यह व्यवसाय दिन दिन उन्नति कर रहा है।

यह सब कुछ होने पर भी भारत में व्यावसायिक तथा आर्थिक असन्तोष दिन प्रति दिन बढ़ रहा है। इसका मुख्य कारण यह है कि भारत सरकार आर्थिक अशान्ति के मूल कारण, विनिमय दर १८ पैं० को बदलने के लिये तैयार नहीं है। इस दर के कारण भारत के किसानों तथा साधारण जनता को भारी आर्थिक नुकसान हो रहा है। भारत की एसम्बली ने आर्थिक स्थिति तथा व्यावसायिक स्थिति को सुधारने के लिये कई नियम स्वीकार किये हैं। परन्तु यह सब उपाय बाह्य कारणों को दूर करने के हैं। असली उपाय यही है कि रुपये की विनिमय दर १६ पैं० की जाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवनागरी लिपि में अँगरेज़ी-भाषा।

रोमन अक्षरों में संस्कृत भाषा लिखने की प्रथा संसार के विद्वानों में प्रचलित है। रोमन लिपि के प्रचारकों ने रोमन लिपि को विश्वव्यापी बनाने के लिये उसमें संस्कृत भाषा तथा अन्य भाषाओं को लिपिबद्ध करने के लिए आवश्यक चिह्न नियत किये हुऐ हैं।

इन चिह्नों को इस सीमा तक पूर्ण बनाया गया है कि भारत के अनेक विद्वान भी रोमन लिपि के समर्थक बन गये हैं। पंजाब युनिवर्सिटी की जाँच कमेटी ने भी रोमन लिपि को अपनाने की सिफ़ारिश की है? यदि रोमनलिपि जैसी अधूरी लिपि में विश्व भर की भाषाएं लिखी जा सकती हैं तो क्या देव नागरी लिपि जैसी वैज्ञानिक और पूर्ण-भाषा में अंग्रेज़ी आदि भाषाएं नहीं लिखी जा सकतीं?

इस समय हिन्दी मासिक पत्रों तथा हिन्दी ग्रन्थ लेखकों में अंग्रेज़ी के उद्धरण रोमनलिपि में देने की प्रथा प्रचलित है। हमारी सम्मति में, देव-नागरी लिपि का प्रचार करने के लिये अंग्रेज़ी के उद्धरण रोमनलिपि में न देकर देवनागरी लिपि में ही देने चाहिए। जो लोग अंग्रेज़ी भाषा जानते हैं और हिन्दी लिपि भी जानते हैं उनके सामने तो कोई दिक्कत नहीं होगी। हाँ, जो केवल हिन्दी जानते हैं, उनके लिए आजकल की भाँति उस अंग्रेजी उद्धरण का भाषानुवाद साथ दिया ही जायगा। हमने आगामी अङ्क से हिन्दी सन्देश में इस परिवर्तन को जारी करने का निश्चय किया है। हिन्दी साहित्य के प्रेमियों तथा हिन्दी समाचार पत्रों के सम्पादकों का हम इधर ध्यान खींचना चाहते हैं। और इन्हें इस विषय में अपने विचार प्रकट करने का निवेदन करते हैं। अखिल भारतीय

सभा के संचालकों को भी इस विषय पर विशेष रूप से विचार करना चाहिए। इस से देवनागरी लिपि के प्रचार में पर्याप्त सफलता होगी।

डी॰ ए. वी. कालेज मैनेजिंग कमेटी और हिन्दी भाषा।

पिछले दिनों लाहौर के हिन्दी प्रेमियों का एक डैपुटेशन (प्रतिनिधि मंडल) डी. ए. वी. कालेज मैनेजिंग कमेटी के प्रधान के पास उपस्थित हुआ था। अपने शिक्षणालयों में प्रथम श्रेणी से हिन्दी लिपि के पढ़ाने का प्रबन्ध करने, तथा साथ ही उनसे निवेदन किया गया था कि वह डी. ए. वी. कालेज मैनेजिङ्ग कमेटी की कार्यवाही तथा कार्यालय का कार्य विवरण हिन्दी में किया करें। उस समय कमेटी के प्रधान श्री मुकुन्दलाल जी पुरी ने इस विषय में विशेष ध्यान देने की आशा दिलाई थी। सम्भवतः स्कूलों के हैड मास्टरों के पास (सर्कुलर) विज्ञप्तियां भी भेजी गई हों, परन्तु जहाँ तक हमें मालूम है कमेटी की कार्यवाही हिन्दी में ही हो, इसके लिए कोई यत्न नहीं किया गया। इन दिनों डी. ए. वी. कालेज की मैनेजिङ्ग कमेटी का नया निर्वाचन हुआ है। जहां तक हमें मालूम है, डी. ए. वी. कालेज कमेटी के पूर्व स्वीकृत प्रस्तावों के अनुसार कमेटी के कार्यालय का सारा कारोबार हिन्दी में होना चाहिए। परन्तु अभी तक इस प्रस्ताव को अमली रूप नहीं दिया गया। हम डी. ए. वी. कालेज कमेटी के नए सदस्यों का इधर ध्यान खींचना आवश्यक समझते हैं। और उनसे कहना चाहते हैं कि वह शीघ्र से शीघ्र कमेटी के कार्यालय का कारोबार हिन्दी में कराने का आन्दोलन करें। इसके लिए यदि कोई नया लेखक रखना पड़े तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साम्प्रदायिक निर्णय का इतिहास।

इंगलिस्तान के प्रधान अमात्य मि० रैमज़े मैक्डानल के (कम्युनल एवार्ड) साम्प्रदायिक निर्णय के कारण भारत के सार्वजनिक जीवन में इस बात की चर्चा हो रही है कि इस साम्प्रदायिक मनोवृत्ति का मूल कारण कौन है। आम तौर से यह कहा जाता है कि कांग्रेसी नेताओं ने लखनऊ के कांग्रेस-लीग-पैक्ट में इस सिद्धान्त को स्वीकार कर राष्ट्रीय जीवन में साम्प्रदायिकता का बीज बोया है। क्योंकि लखनऊ के साम्प्रदायिक निर्णय को मान कर ही मांटेग्यु चैम्सफोर्ड स्कीम के अनुसार शासन सुधार जारी किये गये थे।

परन्तु यदि हम भारत में ब्रिटिश शासन के विकास के इतिहास का अवलोकन करें तो पता लगता है कि साम्प्रदायिकता की प्रवृत्ति १८९३ ई० से है। कांग्रेस के आन्दोलन के कारण प्रान्तीय और भारतीय कौन्सिल में भारतीयों के प्रतिनिधि नियत करने का सिद्धान्त स्वीकार किया गया था; और इंडिया कौंसिल एक्ट स्वीकार किया गया था। उस समय भारत के वायसराय ने भारत सचिव के पास निम्नलिखित खरीता भेजा था।

"Representation should be provided for certain classes and interests among which Mohamedans were named." "विशेष श्रेणियों तथा हितों को (जिनमें मुसलमानों का विशेष निर्देश किया गया था) प्रतिनिधि भेजने का प्रबन्ध होना चाहिए। १९०६ ई० तक म्युनिसपिल कमेटी, लोकलबोर्ड आदि संस्थाएँ प्रतिनिधि चुनती थीं। प्रान्तीय कौन्सिलें भारतीय कौन्सिल के लिये प्रतिनिधि चुनती थीं। फिर सरकार इन्हें नामज़द करती थी। इसके अतिरिक्त सरकार अन्य व्यक्तियों को भी मनोनीत करती थी। १९०६ ई० से जनता ने सीधे प्रतिनिधि भेजने का आन्दोलन शुरु किया। उस समय मि० आग़ाख़ान ने मुसलमानों का डैपुटेशन वायसराय के पास ले जाकर मुसलमानों के लिए पृथक् निर्वाचन की माँग पेश की। भारत सरकार ने भी इसका समर्थन किया और भारत-सचिव लार्ड मौर्ले के पास इस आशय का खरीता भी भेजा। परन्तु लार्ड मौर्ले लिबरल विचारों के थे, इसलिये वह इस सिद्धान्त को न मानते थे। परन्तु लन्दन में मि० अमीरअली आदि मुसलमानों के आन्दोलन के कारण वह भी इस बात पर सहमत हो गये। मि० गोखले भी उन दिनों वहीं थे। उन्होंने भी इसका विरोध नहीं किया। इस आन्दोलन से मुसलमानों को पृथक् निर्वाचन तथा सामान्य निर्वाचन में हिस्सा लेने का अधिकार मिला। बम्बई-प्रान्तीय कौन्सिल में भारतीय कौन्सिल के लिये एक मुसलमान प्रतिनिधि मुसलमानों की ओर से चुना गया। दूसरा प्रतिनिधि सामान्य मंडल से निर्वाचित होना था। इसके लिये मिस्टर गोखले उम्मीदवार थे। मुसलमानों ने उनके मुकाबले में एक मुसलमान को खड़ा किया। मि० गोखले बड़ी कोशिश से एक दो सम्मतियों के फ़र्क से निर्वाचित हो सके। १९१५ ई० तक मुसलिम लीग का अधिवेशन कांग्रेस से अलग होता था। परन्तु १९१५ई० में बम्बई में दोनों के अधिवेशन हुए। लोकमान्य तिलक ने मांडले से वापिस आकर मुसलिम लीग तथा कांग्रेस को मिलाने का यत्न किया।

इस विवरण से पता लगता है कि भारतीय सरकार तथा मि० आग़ाख़ान तथा उनके साथी मुसलमान साम्प्रदायिक मनोवृत्ति के प्रारम्भ करनेवाले हैं। कांग्रेस को या राष्ट्रवादियों को इसका ज़िम्मेवार ठहराना ठीक नहीं है। इस साम्प्रदायिक मनोवृत्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथा साम्प्रदायिक निर्णय को बदलने के लिये, राष्ट्रवादियों को पारस्परिक समालोचना करना छोड़ कर संगठित यत्न करना चाहिए, और साधारण जनता को शिक्षित करना चाहिए।

बिहार और नैपाल में प्रकृति कोप।

बिहार प्रान्त में प्रकृति कोप के कारण भयंकर त्रास कारी जन नाश हुआ है। भयंकर भूकम्पों ने बसे बसाए शहरों तथा गावों को तबाह कर दिया है। बिहार का बसा हुआ उद्यान देखते देखते बरबाद होगया है। बिहार निवासियों के साथ इस दैवी कष्ट में सहानुभूति प्रकट करना, हरेक मनुष्य का कर्तव्य है। बिहार के भूकम्प पीड़ितों की सहायता के लिये, श्रीयुत राजेन्द्रप्रसादजी के नेतृत्व में केन्द्रीय सहायक समिति कायम की गई है। इस समय तक इसके पास ५ लाख रुपया आचुका है। भारतके वायसराय ने भी बिहार पीड़ितों के लिये अपील की है। सरकार तथा जनता मिलकर भूकम्प पीड़ितों की सहायता कर रहे हैं। इंगलिस्तान के सम्राट् पचम जार्ज तथा जर्मनी के राष्ट्रपति हिन्डन बर्ग और यूरोप के अन्य देशों ने भी नैपाल और बिहार के पीड़ित भाइयों के साथ सहानुभूति प्रकट की है। ऐसे प्रलयकारी कष्ट मनुष्य जाति में संकीर्ण भेद भावों को दूर कर मनुष्यता के भाव पैदा करते हैं। हरेक व्यक्ति को चाहिए कि वह अपनी २ शक्ति अनुसार बिहार के पीड़ित भाइयों की सहायता के लिये कुछ न कुछ अवश्य भेंट करे, और अपने हृदय में मनुष्यता की भावनाओं को जागृत करे।

पंजाब प्रान्तीय हिन्दी-सम्मेलन का कार्यक्रम।

पंजाब प्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन की कार्यकारिणी ने आगामी वर्ष के लिये निम्नलिखित विशेष कार्य-क्रम निश्चित किया है। पजाब प्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के २०० नए सभासद बनाए जायँ। सभासद बनने के लिये वार्षिक शुल्क २) देना चाहिए। (२) स्कूलों में भूगोल इतिहास तथा सामान्य ज्ञान की शिक्षा देने वाले अध्यापकों को हिन्दी सीखने के लिये प्रेरित करना तथा हिन्दी जानने वाले अध्यापकों को ही भूगोल इतिहास तथा सामान्य ज्ञान की शिक्षा देने का कार्य सौंपना। इस परिवर्तन से स्वयं विद्यार्थी १०वीं के इम्तिहानों में भूगोल इतिहास के उत्तर पत्र हिन्दी में लिखेंगे। (३) डाकखाने में हिन्दी का प्रचार करने के लिये शहर शहर तथा गाँव गाँव में पत्रों पर हिन्दी में पते लिखने का आन्दोलन जारी करना। हम आशा करते हैं कि प्रत्येक हिन्दी-प्रेमी अपना थोड़ा-बहुत समय इन बातों के लिये अवश्य देगा।

देवनागरी प्रचारक श्री हरमुकुन्द शास्त्री।

जम्मू के प्रसिद्ध हिन्दी-प्रेमी श्रीयुत हरमुकुन्द शास्त्रीजी पुराने साहित्य-प्रेमी हैं। आपने अभी देवनागरी वर्णमाला के २०००० चार्ट बिना मूल्य वितीर्ण करने के लिये छपाए हैं। जो भाई इन चार्टों की सहायता से अपने २ शहरों तथा गावों में देवनागरी लिपि का प्रचार करना चाहते हैं। वह पंजाब-प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, लाजपतराय भवन लहौर के पते पर, पत्र लिखकर मँगा सकते हैं। डाक-व्यय के लिये कम से कम ।) के टिकट साथ भेजने चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी परीक्षार्थियों को

शुभ समाचार

पंजाब यूनिवर्सिटी की रत्न भूषण व प्रभाकर परीक्षा देने वाले नोट करलें।

यदि आप घर बैठे इन परीक्षाओं में पास होना चाहते हैं **तो** हिन्दी-परीक्षाओं के मुख्य केन्द्र लाहौर से श्री भीमसेनजी विद्यालंकार भूतपूर्व सम्पादक दैनिक अर्जुन तथा पञ्जाब केसरी के सम्पादकत्व में प्रकाशित होने वाले **सचित्र साहित्यिक मासिक पत्र**

"हिन्दी-सन्देश"

के तीनों हिन्दी-परीक्षा-नम्बरों को पढ़िये।

वार्षिक मूल्य ३) रु०।

फ़र्वरी, मार्च, अप्रैल में क्रमशः

हिन्दी-रत्न, हिन्दी-भूषण, हिन्दी-प्रभाकर

नाम के विशेषाङ्क प्रकाशित हो रहे हैं।

हिन्दी सन्देश विद्यार्थियों का घरेलू अध्यापक तथा अध्यापकों का साथी है। हरेक विशेशांक का मूल्य ।=)

हिन्दी सन्देश के हरेक अङ्क में मनोरञ्जक कहानियाँ, भड़कीली कविताओं तथा शिशु-संसार और महिला संसार के साथ-साथ **हिन्दी-रत्न, हिन्दी-भूषण, तथा हिन्दी-प्रभाकर** परीक्षाओं के सम्बन्ध में विशेष लेख छपते हैं।

मैनेजर—हिन्दी सन्देश, १७ मोहनलाल रोड, लाहौर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपके स्वास्थ्य और प्रसन्नता का रहस्य

खद्दर क्रेप
(जहाज मार्का)

पहनने में ही छिपा है; क्योंकि यह देश हितैषियों के सुन्दर ब्लोजों, मनमोहक अँगियों, सुशोभित निक्करों और मनोवांछित फराकों के लिए रोजाना हजारों गजों में बिकता है और वह सब केवल असली जहाज मार्का खद्दर क्रेप खरीदने के लिए सिफ़ारिश करते हैं।

बाबा प्रद्युम्नसिंह एण्ड संज़, अमृतसर

ब्रांचें: लाहौर, बम्बई, कलकत्ता, देहली, कोयटा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

नवयुग प्रिण्टिङ्ग प्रेस, मोहनलाल रोड, लाहौर में भीमसेन वर्मा प्रिण्टर पब्लिशर द्वारा छप कर
... मोहनलाल रोड लाहौर से प्रकाशित। सम्पादक भीमसेन विद्यालङ्कार

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मातृदेवोभव

हिन्दी-सन्देश

हिन्दी प्रचारक साहित्यिक मासिक पत्र

वर्ष २ | पौष १९९० वि० जनवरी १९३४ ई० | संख्या १

हँसने वालो !

(लेखक—श्री० वंशीधर जी विद्यालङ्कार)

१

मैं डाली हूं दो पत्तों की,
लाई हूं बस फूल एक ही।
गन्ध न इस में, रँग न इस में,
कोई अच्छा ढँग न इसमें॥

२

बन्द कली ही जो यह रहता,
तो कोई कुछ बात न कहता।
खिलना था इस लिए खिला है,
कहने ही को फूल बना है॥

३

हँसने वालो! हँस लो मुझ पर,
मैं ख़ुद हँसती अपने ऊपर।
जो तुम थोड़ा सा हँस लोगे,
जीवन मेरा सफल करोगे॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साम्राज्यवाद का नया रूप

(श्री० प्रो० सत्यकेतु जी विद्यालंकार (मंगलाप्रसाद पारितोषिक सम्मानित))

पुराने जमाने में जब किसी राजा को अपने साम्राज्य का विस्तार करना होता था, तो वह बड़ी सी फौज साथ में लेकर दूसरे देशों पर हमला करता था। लड़ाई होती थी, खून की नदियां बह जाती थीं और बहुत से शहर और गाँव जला कर राख कर दिये जाते थे ! जनता को लूट कर बहुत सा धन इकट्ठा किया जाता था। इसमें से कुछ सिपाहियों को इनाम के तौर पर बाँट दिया जाता था, और शेष अपने राज्य में भेज दिया जाता था। सिकन्दर, चन्द्रगुप्त, सीज़र, महमूद गज़नवी, नैपोलियन आदि बड़े बड़े विजेताओं ने जो विशाल साम्राज्य बनाये, वे सब प्रायः इसी ढंग के थे। सैनिक बल से बहुत से देशों को जीत कर उन्हें अपने आधीन कर लिया गया था और उन पर सेना के ज़ोर से ही शासन किया गया था।

पर अब साम्राज्यवाद का रूप बदल गया है। उन्नीसवीं सदी के पिछले सालों में एक नये किस्म का साम्राज्यवाद शुरू हुआ है। जिसका रूप मुख्यतया आर्थिक है। उन्नीसवीं सदी में युरोप में कल कारखानों की बहुत उन्नति हुई। बहुत से नये आविष्कार हुवे, जिन से वस्तुओं की पैदावार बहुत बढ़ गई। जो काम पहले हाथ से महीनों में होता था, वह अब मशीन की सहायता से दिनों में क्या घण्टों में होने लगा। उदाहरण के लिये पिन बनाने के काम को लीजिए। पहले जब हाथ से पिन बनाते थे, तो एक आदमी एक दिन में दस बीस से अधिक पिन नहीं बना सकता था। पर मशीन के कारण आजकल के कारखानों में एक दिन में ७० लाख पिन बड़ी सुगमता से तैयार हो जाते हैं, और इनके निर्माण में तीन आदमियों से ज़्यादा की ज़रूरत नहीं पड़ती। अब तो ऐसे भी कारखाने खुल गए हैं, जिनमें एक कारीगर एक दिन में १½ करोड़ पिन बना लेता है। इसी तरह छापेखाने के काम पर नज़र डालिये। पहले लोग या तो कलम से पुस्तकों की नकल करते थे और या लकड़ी के तख्ते पर अक्षर खोद कर उससे छपाई करते थे। इन तरीकों से एक आदमी दिन भर में दस बारह पृष्ठ से अधिक तैयार नहीं कर सकता था। पर मशीनों के आविष्कार से ऐसे छापेखाने खुल गए हैं, जो एक मिनट में ५०० से अधिक प्रतियां छाप देते हैं। आजकल के छापेखाने में अक्षर ढालने से लेकर पुस्तक छापने और उसकी जिल्द तैयार करने तक का सारा काम मशीनों से होता है। उसमें मनुष्य के श्रम की आवश्यकता बहुत कम हो गई है। यही हाल कपड़े का है। जहां पुराने ज़माने में दिन भर चरखा चला कर मनुष्य मुश्किल से हजार डेढ़ हज़ार गज़ सूत कात सकता था, वहां अब मशीन की सहायता से लाखों गज़ सूत प्रतिदिन तैयार होने लगा है। यदि दुनिया के सारे स्त्री पुरुषों को पुराने ढंग के चरखे से सूत कातने के लिये बिठा दिया जाए, तो वे जितना सूत कातेंगे, उससे कहीं अधिक सूत आज कल के कारखानों में दिन भर में कत जाता है। कल-कारखानों के कारण वस्तुओं की उत्पत्ति बहुत अधिक बढ़ गई है। कल कारखानों के आविष्कार से पहले सन १७८२ ईस्वी में इङ्गलैंड से केवल २० करोड़ रुपये का माल बाहर जाता था। पर कल कारखानों के कारण थोड़े से ही सालों में (३० सालों में) उसके बाहर जाने वाले माल की तादाद २० करोड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से ९० करोड़ हो गई। कपड़े की पैदावार तो इङ्गलैंड में पहले की अपेक्षा ६०० गुणा बढ़ गई है। जिस जिस देश में कल कारखानों की उन्नति हुई है, उन सब में पैदावार इसी ढंग से बढ़ी है। यह सब माल अपने देश में तो खप नहीं सकता। इसे बाहर विदेशों में बेचना पड़ता है। पर जब बहुत से देश अपनी ज़रूरत से ज़्यादा माल पैदा करने लगे, तो विदेशों में माल का बेचना सुगम नहीं रह गया। यूरोपियन राज्यों को यह फ़िकर पड़ी, कि एशिया, अफ्रीका आदि के विविध देशों में जो कि उन्नति की दौड़ में कुछ पीछे रह गए थे, अपने अपने प्रभाव-क्षेत्र बना लिये जावें, जहां कि अपने माल को निश्चित रूप से बेचा जा सके। इसी प्रवृत्ति से एक नए प्रकार के साम्राज्यवाद का विकास हुआ, जिसका स्वरूप मुख्यतया आर्थिक है।

इसके अतिरिक्त उन्नीसवीं सदी में यूरोप की आबादी बड़ी तेज़ी के साथ बढ़ रही थी। सन् १८०० में इङ्गलैंड की आबादी एक करोड़ साठ लाख थी। एक सदी बाद १९०० में वह बढ़ कर चार करोड़ दस लाख हो गई। इसी प्रकार एक शताब्दि में जर्मनी की आबादी दो करोड़ दस लाख से पांच करोड़ साठ लाख, आस्ट्रिया हंगरी की दो करोड़ तीस लाख से, चार करोड़ पचास लाख, इटली की एक करोड़ अस्सी लाख से तीन करोड़ बीस लाख और रूस की तीन करोड़ नब्बे लाख से ग्यारह करोड़ दस लाख हो गई। इस काल में सम्पूर्ण यूरोप की आबादी अठारह करोड़ से बढ़ कर चालीस करोड़ हो गई। इस बढ़ती हुई आबादी पर ध्यान देने की आवश्यकता है। पहले यूरोप में आबादी कम होने से वहां जो अनाज तथा अन्य खाद्य सामग्री पैदा होती थी, वह वहां के लिये पर्याप्त थी। पर इतनी तेज़ी से बढ़ती हुई यूरोपियन आबादी यूरोप में उत्पन्न भोजन सामग्री पर अपना गुज़ारा नहीं चला सकती थी। इस दशा में यूरोपियन लोगों के सामने दो ही मार्ग थे, पहला यह कि बहुत से लोग दूसरे देशों में जाकर बस जावें। एशिया, अफ्रीका आदि में बहुत से प्रदेश इस समय खाली पड़े थे, उन में अपने उपनिवेश बसाने का अभी पूरा मौका था। दूसरा उपाय यह था कि यूरोपियन राज्य विशेषतया कल कारखानों की उन्नति में लग जावें और उनसे माल पैदा कर उसे दूसरे देशों में बेचें। उसकी बिक्री से जो धन मिले, उससे भोजन सामग्री अन्य देशों से क्रय (खरीदें) करें। यूरोपियन देशों ने इन दोनों उपायों का अवलम्बन किया। उपनिवेशों पर बहुत ध्यान दिया गया। लाखों की संख्या में यूरोपियन लोग अमेरिका, अफ्रीका और आस्ट्रेलिया आदि में जाकर बसने लगे। साथ ही, कल कारखानों से माल की उत्पत्ति बहुत बड़े पैमाने पर शुरू की गई। इस तैयार माल के बदले में यूरोपियन राष्ट्र अन्य देशों से अनाज तथा अन्य कच्चा माल खरीदने लगे। यह प्रवृत्ति साम्राज्यवाद के विकास में बहुत सहायक हुई। उपनिवेशों की कदर बढ़ने से वे तो साम्राज्य के महत्वपूर्ण अंग बने ही, साथ ही अपने तैयार माल को खपाने में भी उनसे अच्छी सहायता मिली।

राष्ट्रीयता का उदय भी इस आर्थिक साम्राज्यवाद के विकास में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। राष्ट्रीयता के भावों से प्रेरित होकर यूरुप के विविध राज्य संसार में अपनी शक्ति का विस्तार करने के लिये आतुर रहते हैं। निस्सन्देह, राष्ट्रीयता बहुत अच्छी चीज़ है। प्रत्येक ऐसे जन-समाज को, जो भाषा, सभ्यता, संस्कृति आदि की दृष्टि से एक हो, अपनी विशेषताओं को सामूहिक रूप से विकसित करने तथा उसके लिये अपना पृथक् संगठन बनाने का पूर्ण अधिकार है। इस हद तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रीयता किसी को नुकसान नहीं पहुँचा सकती। पर व्यक्तिवाद की अन्य सब प्रवृत्तियों की तरह राष्ट्रीयता की भी एक हानि है। राष्ट्र इस बात को भूल जाते हैं कि पृथिवी पर उनके अतिरिक्त अन्य लोगों ने भी जीना है और सम्पूर्ण संसार का निर्माण उन्हीं के लिये नहीं किया गया है। राष्ट्रीयता के आवेश में राज्य अन्य देशों के हितों और अधिकारों का ध्यान नहीं रखते। वे समझते हैं, कि संसार में हमें अपना राज्य-विस्तार करने, अपना राजनीतिक, धार्मिक तथा आर्थिक उत्कर्ष स्थापित करने का अमर्यादित अधिकार है। इस प्रवृत्ति का परिणाम साम्राज्यवाद होता है। उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध में यूरोप के सब प्रमुख राज्य राष्ट्रीयता रूपी देवता की उपासना में लीन थे। वे अपने देश के उत्कर्ष के लिये संसारभर में जहाँ कहीं भी अवसर प्राप्त हो, वहाँ दूसरे देशों को अपने आधीन करने तथा उनसे अपना हित साधन करने के लिये प्रयत्नशील थे।

कल कारखानों की उन्नति, आबादी की वृद्धि, पूंजीवाद और राष्ट्रीयता की प्रकृति ने साम्राज्यवाद का स्वरूप बिलकुल बदल दिया है। अब अपना साम्राज्य विस्तृत करने के लिये यह आवश्यक नहीं रह गया है कि सेना द्वारा दूसरे देशों को राजनीतिक दृष्टि से अपने आधीन किया जाय। आजकल के साम्राज्य विस्तार के लिये तोपों, बन्दूक आदि की बहुत महत्ता नहीं रही है। इस समय साम्राज्यवाद का प्रधान अभिप्राय यही है कि अपने माल को दूसरे देश में खपाने, अपनी पूंजी को विदेशों में लगाने तथा अपने नागरिकों को अन्य देशों में काम दिलाने का पक्का प्रबन्ध कर लिया जाय।

आर्त्त प्रलाप !

जीवन के उस प्रथम पहर में;
पहिले तुमको था देखा,
ज्ञात नहीं था तात मुझे हा !
विश्व नियन्ता का लेखा ॥

मरु स्थली में किसने देखा,
गंगा का प्रवाह प्यारा।
वेगवती अति क्षीण दीनकी,
बहती नयनों से धारा ॥

× × × ×

नाथ ! न जाने किस क्षण होगा ?
मुझ दुखिया के दुख का अन्त;
प्राण ! प्राण को पा न सकेगा।
दुख का होगा कभी न अंत ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

विद्यावती "सुधा"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पंजाबी संगीत में शृङ्गार रस"

"माहिया"

(ले०—श्री० मनमोहन आनन्द एम० ए०)

(२)

इन्तज़ार उस से पुकार कर कहा जारहा है...कणकां दी राही होई सी-उग्ग पईयां कणकां आन्दा मेरा माही "पक्कु पईयां गन्दलां ......"जग्ग पइयां बत्तियां टेशन उत्तरेया माही होसी......,'

"कभी का ज़िक्र है...उफ़ कितने ही दिन होगए कि लोगों ने गेहूं बोना आरम्भ किया ..विचार हुआ अब "वसन्त" आने वाली है उसके साथ ही पिया भी आएँगे ...गेहूँ फूटेंगे, सरसों फूलेंगी तब वसन्त आएगी... दिन दुगने होकर ढलते रहे, रातें चौगुनी होकर बीतती रहीं,...और...अब-जो इस कदर इन्तज़ार के बाद, इतनी कठिन तपस्या के बाद... गेहूँ भी उग चुके, सरसों भी पक चुकी...अब जो वसन्त ऋतु अपने पूरे जोबन में इठला रही है, विरह की आग को गर्म फूकों से सुलगा रही है, देखना! पिया गाड़ी से उतरे होंगे। शाम हो चुकी है-लोगों ने दियों के नैन उडीक कर अपने प्यारों की तलाश शुरू कर दी है......"

इन्तज़ार के से चंचल भाव का analysis इससे स्पष्ट और स्वाभाविक शब्दों में शायद ही किसी कवि ने किया हो। आशा और निराशा में डोलते २ घड़ियां गिनना, दिन गिनना, फ़सलों के फूलने फलने और पकने से ऋतुएं गिनना शायद ही किसी और विरहन के हिस्सा में आया हो"........

"प्रयाण" पिया आये होंगे। लेकिन अभी जी भर ही न चुका था, दिल के बलवले निकल ही न चुके थे कि फिर जाने लगे, सरसों फूलने पर आए और गेहूँ के "बाल" निकलने पर जाना पड़ा। चन्द ही दिन के क़याम के बाद फिर वही "विरह" की याद आ धमकी। किसी भयानक विचार ने नायिका को आ दबोचा और वह पुकार उठी; "कणकां दे डुस्स निकले—टुरया माईया नी मेरे अत्थरु फुट्ट निकले" हृदय को दबाने से भी उसकी नाड़ दबी न रह सकी, पिया के "प्रयाण" पर रोना तो न चाहती थी परन्तु विवश थी। इतना टोकने पर भी जी न माना-और आंसू फूट २ कर निकलने लगे। लबों पर लोक-लाज की मुहर साबित न रह सकी हृदय-सिन्धु से आंखों का बान्ध टूट पड़ा.......

"विरह" से असह्य भाव के लिये यह कितनी सार्थक भूमिका है, कितने स्वाभाविक और सत्यता पूर्ण भावों का संचार किया गया है। किसी की चित्तवृत्ति कितने थोड़े से और सरल शब्दों में पूरा २ चित्रण किया गया है...........

यही नहीं अपनी विवशता प्रगटाने के लिये फिर कह रही है—

पैसे ने खोड़ लवां—
जे वस्स हँवे अपना गड्डी ढ़दा मोड़ लवां"

"पैसे" का शब्द पुकार २ कर इस प्रमाण का कारण उसी गँवारन के शब्दों में यूं कह रहा है—

'जिक बुहूने आदमी गए मुहब्बतां तोड़'?

पर-बस की बात है, अपना बस हो तो ...

इस टप्पे का स्वादन करने के लिये "माहिया" के दूसरे संगीत के दो बन्द पेश हैं-देखिये माहिया के जात ही पर बजिद होने का कितना बढ़िया प्रत्युपाय है।—कहा है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जे टुर चल्यों नौकरी माईया मैंनु वी लें चल नाल वे
तूं करसें नौकरी माईया मैं कढसां रुमाल वे,"—

पिया परदेश में हैं, देर से न पाती और न पता पाया है इस "चुप" का कारण ढूँढ़ते हुए तरह २ के बहम उठने लगे क्या जाने भूल ही गए हैं या दिल में कोई और गाँठ पड़ गई है। शायद सचमुच ही आंखें बदल गई हों,.........

कहने लगी—"भट्ठी उतों भुगाए दाने
मैं तेरी नौकर वां तेरे दिलां दियां रब्ब जाने"

कितनी निष्काम भक्ति है, 'उनके' दिल का पता लगाए बिना हा नौकरी स्वीकार कर ली है।

फिर "तसव्वर" में स्वयम् ही अपनी शंकाओं और भ्रम का उत्तर देते हुए प्रीतम की ओर से कहा गया है—"पानी लाल समुन्दरां दा—
यारी (प्रीति) दो दिन दी मैं नहीं सारी उमरां दा"

जाने किस प्रकार दिल पर पत्थर रखकर इस भयानक विचार को मन में स्थान दिया गया है।...

पुरुष के हृदय की चंचलता तो विख्यात ही है, परन्तु पिया के विमुख होने की जो पुकार इन निराशामय शब्दों से टपकती है, वह कहीं और नहीं... "शेक्सपियर" ने Sigh no more aure, आदि से अपनी नायिकाओं की ढारस बंधाई होगी, परंतु पिया के अस्थिर प्रेम को स्वयम् प्रणयिनी के मुह से कभी कम ही सुना होगा...विचार आया "वह" विमुख हो गए होंगे क्योंकि पुरुष प्रेम में अस्थिर तो हैं ही। उनका दो दिन ही का होता है नित्य का नहीं.........

क्रमशः सन्देह विश्वास में बदलने लगता है, पिया पर किसी सुन्दरी का जादू चल जाने की सोच कर कटीले शब्दों में कहती है—

"बागे विच पक्खियां ने—
सांडे वल्ल कण्ड माहिया केढी "तत्ती" वल्ल अक्खियां"

कितना डाह है, कितना क्रोध है। और ईर्षा भाव का कितना स्वाभाविक चित्रण है कि पल भर के लिए भूल जाती है कि पिया परदेस में हैं। मनन की दृष्टि में जैसे पिया सामने पीठ मोड़ कर खड़े हैं और किसी के चिन्तन में उसकी सुनते तक नहीं। आंखें फेर लेने के साथ २ ही आंखें फेर लेने का कारण भी दिया है...यह कारण कैसे निगाहों में खटकता है वह शब्द "तत्ती" से टपकता है।

नायिका-भेद पिया के मुँह मोड़ लेने पर एक और नायिका कह रही है—

"साडियां अक्खियां तेरे वल्ल माहिया—
तेरियां केढी जा...वे".........

यदि वह किसी दिलचली और अधीर का कथन है तो यह किसी नम्र स्वभाव की प्रेमिका के शब्द हैं.........

विरह-वर्णन "गल चोला लीरां दा—
इक वारी पा फेरा तक हाल फ़क़ीरां दा"

उपमान् और उपमेय की अजब एकता कर दी है। विरहन फ़क़ीर बन बैठी। उसकी झिलमिलाती चोली फ़क़ीरों का चीथड़ों-का-सिआ हुआ चोला हो गया, विरह की दीवानगी में वह मस्तानावार रहती है किसी जोगन की तरह उसी चोली में अनगिनत बन्द लगाकर बेशुमार टुकड़े सीकर दीवानावार फिरती है, हाल इस क़दर बेहाल है कि देखने से सम्बन्ध रखता है...कृशता इतनी है कि अपनी ही चोली एक ढीला ढाला चोला हो गई है।

तलाशे-यार पिया की खोज में निकलती है परन्तु उनका पता ही नहीं चलता, ...कहा है,—

"गल चोला शाहिए दा—
गलियां गलियां ने पता लगदा नहीं माहिए दा"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'कवित-रस' एक ही जगह रस, हूक, ध्वनि और भाव की उच्चता के लिये निम्न लिखित पद उदाहरण-स्वरूप हैः—

'कोठ्ठे उत्ते चन्न माहिया—

मैं तेरियां लक्ख मन्नियां, इक मेरी वी मन्न माहिया

चान्द को देखकर, चान्दनी को चुप चाप अपने सौन्दर्य में लिपटा हुआ पाकर, और अपने आप को इस यौवन भरी रात में अकेली जान कर विरहन पागल हो रही है, अपनी निष्काम प्रीतम-भक्ति का प्रीतम के हज़ारों आदेश मानने का मोल माँग रही है। सारी वहशत सारी दीवानगी के एक प्रार्थना में डूब २ कर उभर रही है, केवल एक बात में बही जारही है। और वह एक बात क्या है, वह एक प्रार्थना क्या है सो सब की Imagination कल्पना के लिए छोड़ दी गई है। जो केवल ध्वनि ही नहीं परन्तु मूक और गुङ्ग की चुप की, दबी आहों की प्रति ध्वनि भी है,...इस प्रार्थना की स्वीकृति लाख सेवा का केवल फल स्वरुप है।

चान्द अपने पूरे जोबन में है। छत पर चढ़े २ सजनी के हृदय से हूक उठती है और वह कूकने लगती है..... "इक मेरी वी मन्न माहिया"।

यह सजनी के अपने शब्द हैं, वह अपनी दशा स्पष्ट रुप से शब्दों के अभाव के कारण या मानलो लोक लाज के कारण प्रगट न कर सकी, फिर भी इस एक बन्द में चन्द्रकिरण से काम-बाण का गहरा और मूक घाव दीखता है। हृदयसागर की इठलाती तरंगें उसकी बाह्य शान्ति में अब भी करवट लेती प्रतीत हो रही हैं कामिनी सेज की अगन पर अशान्त पड़ी है। चन्द को देखकर चित्त चकोर अंगार चाटता हुआ चटखारे लेता है—

"इक मेरी वी मन्न माहिया"

——

बाँसुरी लीला

(ले०—श्री शान्तिस्वरूप 'वर्म्मा' मेरठ)

'सूर' ने सितार कर 'देव' ने पखावज ली,
'मीरा' खड़ताले, झाँझ 'नरसी' हिलाई है;
मँजीरे 'बिहारी' मिरदंग 'पद्माकर' ने,
ढोलकी गले में 'हरीचन्द' के सुहाई है;
सारंगी बजाते 'मतिराम' 'रसखान' संग,
'ललित किशोरी' पगनूपुर बँधाई है;
भक्त कवियों ने जोड़ स्वर्ग में समाज भारी,
गाया दे दे तारी 'श्याम बाँसुरी बजाई' है॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय ग्राम-साहित्य

(ग्राम-गीत और सिद्ध-कवियों की कविता)

(लेखक—श्री देवेन्द्र सत्यार्थी)

(श्री सत्यार्थी जी ने भारतीय ग्रामों का भ्रमण करके इन गीतों का संग्रह किया है। वह इन्हें साहित्य सेवियों के लिये पुस्तकाकार प्रकाशित करा रहे हैं—सम्पादक).

गोस्वामी तुलसीदास जी ने सीता के मुख से कहलवाया है—

जिय बिनु देह नदी बिनु बारी।
तैसेहि नाथ पुरुष बिनु नारी॥

एक ग्राम-गीत में भी इस भाव का चित्रण मिलता है—

बिन पातनु की पीपरी,
औ, बिनु सींगँनु की गाय;
कन्थ बिनु कामिनी, रे! कै छैला!
द्वै कौड़ी कीना, ने—
बीती होइ सो जाने॥

(ब्रज भाषा)

'पति के बिना कामिनी उस पीपल वृक्ष की सी है, जिस पर एक भी पत्ता न हो या उस गाय की सी है, जिस के सर पर सींग न हों।

जिस के साथ बीती है, वही जानता है, पति के बिना कामिनी दो कौड़ी की भी नहीं है।

* * *

किसी हिन्दी कवि की सूक्ति है—

तीन पैंड जाके रुखौ त्रिभुवन में न समाहिं।
धनि राधे! राखति तिन्हैं कोयन-कोयन माहिं॥

'हे राधा! तू धन्य है जो उस वामन-रूप-धारी विष्णु को, जिसके तीन पैंड तीन लोक में भी नहीं समाते, अपनी आँख के एक कोने में ही छुपाये बैठी है।'

एक ग्राम-गीत की नायिका का प्रीतम भी उसकी आँखों में बसता है—

सुरमा केहड़ियाँ अक्खाँ विच पावाँ?
अक्खाँ विच यार बसदा।

(पंजाबी)

'मैं सुरमा किन आँखों में डालूँ? मेरी आँखों में तो मेरा प्रीतम बसता है।,

ग्रामीण रमणी ने अपने प्रीतम के लिये आँखों का एक-आध कोना ही नहीं, बल्कि आँखों का सम्पूर्ण प्रदेश ही पेश कर रखा है; यहाँ तक कि अब सुरमा डालने के लिये भी खाली जगह नहीं है।

रहीम को भी यही आदर्श पसन्द है—

जिन नैननि प्रीतम बसे, तिन अत्र कहा समाय?
भरी सराय रहीम! लखि, आपु पथिक फिरि जाय॥

* * *

बिहारी का एक दोहा है—

बाल, काहि लाली भई, लोयन कोयन माहिं?
लाल! तिहारे दृगन की परी दृगन में छाहिं॥

"नायकः—'तुमारे आँख के कोनों में यह लाली कैसे है?'

नायिकाः—'हे लाल! मेरी आँखों में तुम्हारी आँखों की लाली का ही प्रतिबिम्ब पड़ा है (अर्थात् तुम्हारी आँखों ने ही मेरी आँखों को लाल कर दिया है)।'

आँखों के विषय में एक ग्राम-गीत है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नैण ललारी नैण कुसुम्बा नैंण नैणाँनू रंगदे ।
नैण नैणाँ दी करन मजूरी मेहनत मूल न मँगदे ॥

(पंजाबी)

'आँखें ही रंगरेज़ है, आँखें ही लाल रंग का कुसुम्बा फूल है और आँखें ही आँखों को रँगती हैं।

आँखें आँखों की मज़दूरी करती, पर इस का पुरस्कार बिलकुल नहीं माँगतीं ।,

* * *

ज़ौक़ साहब फ़रमाते हैं—

जिसे कहते हैं बहरे इश्क़ उस के दो किनारे हैं;
अज़ल नाम इस किनारे का अबद नाम उस किनारे का ॥

एक ग्राम-गीत के नायक ने भी अपने प्रेम को कभी न टूटने वाला क्रम बतलाया है—

लूण भरयो दूण।
तेरी मेरी माया सुया;
जनम जनम भर हूण ॥

(गढ़वाली)

'निमक से भरा हुआ बरतन।

प्यारी ! तेरा-मेरा प्रेम जन्म-जन्मान्तर तक रहेगा।

* * *

शेकस्पीयर की एक उक्ति है—

Coal black is better than anothr have
In that it scorns to bear another have.
(Shakespeare—Titus Andronicus)

'कोयले का सा काला रंग अन्य रंगो से कहीं अच्छा है' क्योंकि उसे कोई दूसरा रंग स्वीकार करने से घृणा है।'

काले रंग के इसी गुण पर मुग्ध हो कर कवि शिरोमणि सूरदास जी भी काली कमली रखा करते थे—

'सूरदास की कारी कमरिया चढ़े न दूजो रंग।'

एक ग्राम-गीत की नायिका भी काले रंग पर मुग्ध है, पर बेचारी के पितामहः को उस का यह शौक बिलकुल पसन्द नहीं। इसका उसके पास ज़बरदस्त जवाब है— भले घरों की बहू-बेटियों का काले-पीले रंग के वस्त्रों से क्या काम ? उन्हें सरलता से दिन काटने चाहिये ? काली सलवार के लिये तरस-तरस कर वह कह उठी है—

सुथ्थने ! सूफ दिये !
तेनूँ बाबे मरे तों पामाँ।

(पंजाबी)

'हे सूफ की सलवार ! मैं तुझे पितामह की मृत्यु के पश्चात पहनूँगी।'

सूफ काले चमकदार वस्त्र का नाम है,

एक व्यङ्गमय तड़प है जो इस गीत के एक-एक शब्द में भरी हुई है। न जाने लगातार कितने दिन तक तरस कर ग्रामीण कन्या यह कटु वाक्य कहने के लिये विवश हुई है।

* * *

कबीर साहब का कथन है—

कबिरा हँसना छोड़कर रोने से कर प्रीत।
रोने से ही पाहरा प्रेम प्यारा मीत ॥

एक ग्राम-गीत में लैला को रोते हुये और आँसुयों से अपने आशक़ मजनूँ के पैर धोते हुये दिखाया गया है—

मजलुन न रकड़े खैर, राओलई गनीमुरमा।
लैला बले मोरे दिलए, फ़कीर देज खैर वरता वरल् माँ।
लैला वले मोरे जद .खुदाया, दिने कई तमाँ कऊमाँ।
आखिर दा बि लैला खैर वर तराऊलो।
मोरे वर पसे आवाज़ डी लुरे वलेक्षाई ईसारा।
लैल बले मोरे न डूँदे, लारवरदा खैमाँ।
और दादे जलुन, दहर कवमाँ।

(पश्तो)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मजनूँ लैला के दरवाज़े पर आया और बोला—'भिक्षा दो नहीं तो मैं मरता हूँ।'

लैला ने कहा—माँ! हमारे द्वार पर कोई फ़क़ीर आया है; मैं उस की झोली में भिक्षा डालने जाती हूँ।

माँ बोली—'बेटी! तू आराम से बैठ; भिक्षा मैं डाल आती हूँ।'

लैला ने कहा—'नहीं माँ! मैं ईश्वर से नेकी की इच्छुक हूँ। भिक्षा डालने मैं स्वयं जाऊँगी।'

आख़िर लैला भिक्षा ले कर गई। पीछे से माँ ने आवाज़ दी—बेटी! इतनी देर कहां लगाई?

लैला बोली—माँ! मजनूँ आया है। मैं उसे रास्ता दिखाती रही थी और पग-पग पर उस के पैर अपने आँसुयों से धो रही थी।"

जिसे पाने के लिये हम रोते हैं, उसे पाकर हमारी आँखें ख़ुश्क नहीं रह सकतीं। लैला को मजनूँ से मिल कर असीम आनन्द हुआ। वह इतना रोई कि पग-पग पर पर प्रेमी के पैर धो सकी।

ग़ालिब साहब का ख़याल है कि रोने से प्रेम-प्राणी इश्क़ के ऋण से उऋण हो जाते हैं—

रोने से और इश्क़ में बेबाक़ हो गये।
धोये गये हम ऐसे कि बस पाक हो गये॥

* * *

मुग़ल-सम्राट औरंगज़ेब की सुपुत्री ज़ेबुन्निसा फ़ारसी की एक स्वनामधन्य कवियत्री हुई हैं। एक स्थान पर उन्हों ने कहा है—

दर कूचाय खाट में जद।
आँकस किज़ कूचाये यार बर गश्त॥
सद शुक्र कि दर्द मन्दे इश्कम।
गर अज़ादिल मन करार बरगश्त॥
बिन शीनम् ब सबर रा कुनमयार।
ता यार मरा शवद ख़रीदार॥

'जो कोई भी यार की गली से गुज़रा इश्क़ के कूचा में उसे काँटे खाने पड़े। सौ शुकर है कि मैं इश्क़ की दर्दमन्द हूं, अगरचे मेरे दिल से अब करार जाता रहा है।

मैं धैर्य किये बैठी हूं ताकि मेरा यार मेरा ख़रीदार हो जाय'

एक ग्राम-गीत की नायिका ने भी प्रेम-पथ के काँटों का—जो प्रेमी के मिलने पर फूल बन जाते हैं—इस प्रकार बखान किया है—

हत्थीं सूलाँ मेरे पैरीं सूलाँ
मेरे गल सूलाँ दे तग्गे।
सूल परांदी सूल सरांदी
मेरे सूलाँ सजे खब्बे॥
सूल शराब ते सूल प्याला
मेरे नश्तर बाँगूँ चुब्भे।
ऐनियाँ सूलाँ फुल्ल बन जावन
जे साईं आ गल लग्गे॥

(पंजाबी)

'मेरे हाथों और पैरों में काँटे लगे हैं और मेरे गले में काँटों के हार पड़े हैं।

सिर के केश बाँधने की डोरी काँटों की है, सिराहना काँटों का है और दायें बायें काँटे ही काँटे हैं।

काँटों की शराब है, काँटों का प्याला है जो नश्तरों की भाँति चुभते हैं।

यदि मेरा प्रीतम मेरे गले आ लगे तो ये सब काँटे फूल बन जायें।'

ज़ेबुन्निसा को यदि इस गीत की रचयिता कवियित्री के दर्शन होते तो वह कितने प्रेम से उसके गले मिलती। कहती—'बहन! हम दोनों एक ही बाग़ की कलियाँ हैं।'

* * *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामाजिक-गल्पः—

सौदागर परोहित और कामी साहूकार

(गढ़वाल की सच्ची घटना के आधार पर)

(ले०—श्री पुरुषोत्तम पोखारियाल "पाठक" कोइटा)

(२)

अब तो बाल विवाह का घोर विरोध ही नहीं प्रत्युत इसको मटियामेट करने के लिये सरकारी कानून भी पास हो गया है। मैंने अपनी सन्तान की रग रग और नस नस में बाल विवाह के विरोधी उपदेश भरे हुये हैं। यदि आपने उनमें से किसी को भी अनीति की राह में चलाने का प्रयत्न किया तो प्राणनाथ! याद रखिये परिणाम बुरा होगा। मैं बहिन गंगा देवी को भी सलाह देती हूं कि वह अभी से इन धन-लिप्सा के पुरोहितों के बहकावे में न आवे। इन्हें तो अपने दामों से काम रहता है। पड़ोस में देख लीजिये। इन्दिरा का विवाह एक बूढ़े बाबा के साथ कर दम्भिकानन्द पुरोहित ने अपनी कथित खंतड़ी आग में डाल तो दी न। अपने बच्चों के पुरोहित हम स्वयं हैं न कि वह लोग। मैंने रातों भूखी, भीगे वस्त्रों में समय बिताया किन्तु कभी भी बच्चों के कोमल हृदय में ऐसी बातें न आने दीं। इसलिये मेरे बच्चे स्वस्थ पुष्ट हैं। यह बातें सुन कर गंगा और गंगा के दास विचारानन्द दोनों सुशीला पर टूट पड़े और कहने लगे तू अपने इस उपदेश को अपनी इस गुदड़ी में बांध। कभी भूखी रात काटने में सहायता देगा। हम अपने बच्चों के विवाह अवश्य करेंगे। इतनी बातें हो ही रहीं थी कि पुरोहित जी का सन्देश आ गया। करुणा का सम्बन्ध मंगलू साहूकार के साथ होगया। अवस्था में चाहे वृद्ध हैं किन्तु शरीर में अधिक बलवान दीखते हैं। २०००) रुपया

देश के उन नर-नारियों से किसी प्रकार की अनुनय-विनय करने को हमारा जी नहीं चाहता, जो विदेशी-साहित्य पर बुरी तरह लट्टू हो रहे हैं, या जो गिने-चुने व्यक्तियों की रचनायों तक ही भारतीय साहित्य की इति श्री समझते हैं। ग्रामीण भारत को उन्हों ने कभी स्वप्न में भी नहीं देखा और भारतीय ग्राम-साहित्य की उन्हें कुछ टोह ही नहीं। ग्राम वासियों को वे निरे गँवार समझते हैं। शहरों के तामसिक और राजसिक वातावरण ने उन्हें कहीं का नहीं छोड़ा। हमारी पुकार उन व्यक्तियों से है जो सात्विक साहित्य के पारखी हैं जो खरे भारतीय साहित्य की गंगा में न्हाना चाहते हैं, वे भारतीय ग्राम-साहित्य के पुनरुद्धार में हमारा हाथ बटायें। 'भारतीय ग्राम-साहित्य' नाम से हम एक सचित्र पुस्तक बहुत शीघ्र प्रकाशित करने जा रहे हैं, जिस में भारत की लग-भग ३० भाषायों के गीत, कहानियां, पहेलियां तथा लोकोक्तियां इत्यादि दी जायेंगी। पत्र-व्यवहार के लिये हमारा पता—

देवेन्द्र सत्यार्थी प ोड़ पटियाला

या

120/2 अपर सरकुलर रोड

कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुद्रा मिलेगी। भोजन का प्रबन्ध रखिये। सन्ध्या को हम ५० आदमी बरात के साथ आ रहे हैं। सुशीला को पास बुला कर सब बात समझाई। अरुणा का विवाह कर उसी धन से अरविन्द के लिये बहू लावेंगे। यह सुन कर सुशीला–वेदना-निराशा को थाम मौन रह गई।

सन्ध्या का समय था एक वृद्ध पुरुष घोड़े पर सवार सेहरा बांधे हुये बरातियों के दल बल सहित आ विराजे। सुशीला, अरुणा गंगा सहित पानी की गागरें सिर पर रख पनघट से लौट रही थीं कि किसी ने कहा "यह बह है और वह बधू"। एक वृद्ध दादा पौत्री की सी जोड़ी क्या ही अच्छी सजेगी। यह हंसी थी! या मृत्यु सहचरी का अटल सन्देश! इसे सुशीला और अरुणा का कृत्य स्वयं बतला सकेगा। २०००) रु० में सौदा हो गया। विचारानन्द जी आज अपने सौदे की खुशी में मस्त थे। बरातियों का सम्मान बड़े सज धज से होने लगा। इधर सुशीला के दुःख की थाह न रही। उसकी समस्त आशाओं पर तुषार पड़ गया। उससे न रहा गया। इशारा करके बरातियों में से एक को अपने पास बुलाया। उसे वह जानती भी थी; उससे पूछा "गेन्दू"! तुझे सौगन्ध है, अगर तैने झूठ कही तो! बता यह मंगलू साहूकार कौन है? इसकी क्या अवस्था है? गिन्दू अवस्था का तो मुझे ज्ञान नहीं दीदी? परन्तु मुझे इतना मालूम है कि यह मंगल सेठ वही है जो तुम्हारा विवाह अपने स्वर्गीय पुत्र शंकर के साथ करना चाहते थे। सुशीला यह सुन कर अवाक् रह गई। मानो उसे सांप काटगया हो। उसे बोलने की शक्ति न रही उसने गेन्दू को हाथ के इशारे से जाने को कहा। गेन्दू चला गया। सुशीला दांतों तले अंगली दबा कर सोचने लगी कि हे भगवन्! जिस पुरुष के लड़के के साथ मेरे विवाह की योजना की जा रही थी वह पुरुष अपनी अवस्था में कितना वृद्ध होगा। जब कि मेरी अवस्था ३० वर्ष है तो इस वृद्ध दूल्हे के पुत्र शंकर की अवस्था यदि आज जीवित होता तो लगभग ४० की होती। जिसके बेटे की अवस्था आज ४० वर्ष हो सकती है उसकी अपनी अवस्था ६० वर्ष की क्यों न होगी? हो सकती है। ६० ही नहीं प्रत्युत इससे भी अधिक हो सकती है? फिर एक १० वर्षीय सुकुमारी के साथ एक मरणोन्मुख वृद्ध का विवाह! हाय राम! मैं यह क्या सुन रही हूं। मैं यह न होने दूंगी। सुशीला अरुणा के दुःख को सोच कर पगली सी हो गई। अपने बदन को नोचने लगी और वस्त्र फाड़ने लगी। सुशीला बेहोश हो पछाड़ खाकर धड़ाम से धरती पर गिर गई। गिरने का शब्द सुनते ही उसकी प्यारी पुत्री अरुणा उस कमरे में आई और देखती है कि उसकी माँ बेहोश पड़ी है। वह उसे सजग करने के अनेक प्रयत्न करती परन्तु उसकी कुछ पेश न चली। जब कुछ न बन पड़ा तो वह रोने लगी। बहिन का रोना सुनकर अरविन्द सरोज और धृति सब वहां आ उपस्थित हुए। बहिन अरुणा को रोते और मां को मूर्छित को देख वे सब भी रोने लगे। सुशीला बेसुध अरुणा! अरुणा! पुकारने लगी। अरुणा उसके पास आई। सुशीला अरुणा को छाती से लगा कर फिर मूर्छित हो गई। अरविन्द, सरोज और धृति सब बिलखने लगे। कुछ काल के पश्चात् एक लम्बे साँस के साथ सुशीला की मूर्छा भंग हुई। अरुणा भी रोने लगी। माँ बात क्या है कुछ बताओ भी तो! अरुणा ने कहा माँ तुम्हें क्या होगया! तुमने सब वस्त्र फाड़ डाले हैं तुम्हें बार बार मूर्छा क्यों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ रही है। अरबिन्द ने पूछा।

माँ ने कहा बेटा अरबिन्द ! इस समय तुम मुझसे इस प्रश्न को न पूछो ! तुम्हें मेरे दुख का कारण स्वयं ज्ञात हो जायगा। जाओ अब तुम सो जाओ। मैं अच्छी हूं। सरोज और धृति तीनों भाई बहिन सो जाओ। सुबह को तुम्हारी बहिन अरुणा का विवाह है। तुम सबको मिठाई खाने को मिलेगी। तीनों बालक अपने सहज स्वभाव से सोने चले गये। हृदय के आवेश को दबाकर सुशीला ने अरुणा से कहा बेटी अरुणा कल तुम सुहागिन कहलाओगी जाओ सो जावो।

अरुणाः-माँ उस दिन जब बहिन इन्दिरा का विवाह था तब उसकी मां नहीं रोई थी। तुम क्यों रो रही हो। सुशीला इसका कुछ उत्तर न दे सकी। अब न रोऊंगी बेटी! कह कर अरुणा को सुला दिया और स्वयं एक पत्र लिखने बैठ गई। उसने यह दृढ़ संकल्प कर लिया कि प्रभात वेला में इस पापाचरण को देखने से पूर्व मैं आत्महत्या कर लूंगी। पत्र समाप्त होना था कि निशा सुन्दरी अपने आराध्य देव निशापति के प्रति एक बिकट हास्य निक्षेप कर उस अनन्त के अन्तस्तल में विलीन हो गई। मानो वह भी अपनी अनुचरी श्री सुशीला देवी के दुःख को पहिचानने बैठी थी और इसी लिये पुरुष जाति के प्रति घृणा प्रकट करती हुई वह अपने आराध्य देव से जुदा हो गई।

प्रभात होते ही सुशीला ने अरुणा को जगाया बड़े लाड और प्यार से उसने खाना खिलाया और वस्त्र भूषणों से सुसज्जित कर अरुणा को यज्ञ मण्डप को रवाना किया। ज्योंही मण्डप में दम्पती के भौरे पड़ने थे कि एक [illegible] देखा की माता सुशीला की ग्रन्थी समीप के एक वृक्ष के साथ पड़ गई !! ..सुशीला ने रात्रि का लिखा हुआ वह पत्र दांतों तले दबाकर एक वृक्ष की टहनी पर रस्सी के सहारे लटक कर आत्म हत्या कर ली !

अत्याचार की हद्द हो गई। इधर मंगल साहूकार १० वर्षीय बालिका अरुणा का पाणिग्रहण कर अपने भोगपुर ग्राम को शेष भोग भोगने चले गये। इधर श्रीमान विचारानन्द जी की सांप छछून्दर की गति हो गई। मंगलू साहूकार से प्राप्त २०००) रु० सुशीला देवी की विभूति को राख में शेष करने के लिये काम आये। किन्तु विचारानन्द की रक्षा फिर भी न हो सकी। उसका चालान हो गया। उसे न्यायालय से १२ साल का कठिन कारावास मिला और सीधे बरेली जेल भेज दिये गये। गंगा को यह संवाद सुनकर बहुत दुःख हुआ। सुशीला के दर्द भरे उपदेश उसके सन्मुख नृत्य करने लगे। उसे ऐसा भान होने लगा मानो सुशीला इस घटना का कारण गंगा को ही बतलाकर उसे भी उसी न्यायाधीश के सुपुर्द किया चाहती है जिसके न्यायालय से विचारानन्द को १२ साल की कड़ी सजा मिली है। परन्तु यह तो उसका भ्रम मात्र था। वह धर्म और सदाचार की देवी सुशीला अब कहां से आती, वह तो अब इस लोक में नहीं रही।

४-बारह साल समाप्त हो गये आज बरेली सेन्ट्रल जेल से श्रीयुत विचारानन्द जी मुक्ति पायेंगे इस हेतु चपला नाम की वेश्या ने अपनी एक दासी सेन्ट्रल जेल के फाटक के पास भेज दी। जेल के दारोगा साहब से चपला की बहुत दिन से जान पहिचान थी। दारोगा साहब ने उसे विचारानन्द कैदी के छोड़ने का ठीक समय बता दिया था। दासी को उन्हें पहिचानने में कोई कठिनाई नहीं हुई। विचारानन्द को आते देख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस वृद्धा दासी ने कहा भाई! तुम इस स्थान से अपरिचित मालूम होते हो। कहां जाओगे? विचारानन्द ने कहा मैं बरेली में १२ साल से रहता आया हूं किन्तु फिर भी इस समय मुझे कुछ सूझता नहीं कि कहां और किस स्थान को जाऊँगा। बुढ़िया जी! आप कौन हो? बुढ़िया ने कहा मैं कौन हूं, इसके पूछने की इस समय आवश्यकता नहीं। मेरा काम यही है कि मैं भूले भटकों को रास्ता बतला दूं। तुमने कहां जाना निश्चय किया है यह बतादो तो मैं तुम्हारा कार्य कर दूं। विचारानन्द ने कहा मैंने हरिद्वार होते हुये जाना है। स्टेशन का मार्ग बतलाइये। टिकट खरीदना चाहता हूं। लेकिन न मालूम कौन से प्लेटफार्म पर हरिद्वार का टिकट मिल सकेगा। यदि तुम्हें कष्ट न हो तो हरिद्वार का टिकट खरीद दीजिये! वृद्धा-मेरे साथ चलो। विचारानन्द मंत्र मुग्ध की भांति वृद्धा के साथ होलिया। सदर दरवाजे से होकर बुढ़िया सीढ़ियों पर चढ़ने लगी तीन चार सीढ़ी चढ़ने पर विचारानन्द बोला कहां ले जाती हो? मां! कुछ बतलाओ भी! बुढ़िया ने कहा बेटा मैं तुम्हें सीधा हरिद्वार के पवित्र स्थान पर लिये जा रही हूं। तुम चले आओ। विचारानन्द असमञ्जस में पड़ कर कहने लगा नहीं! मैं तुम्हारे साथ नहीं आ सकता। बुढ़िया-(तेवरिया बदल कर) बहुत बक-बक, झक-झक करोगे तो चोरी का इल्ज़ाम लगाकर पकड़ा दूंगी। भयातुर विचारानन्द बुढ़िया के साथ हो लिया। कमरे के अन्दर प्रवेश करते ही वहां के दृश्य को देख कर, चपला के उस आनन्द वैभव और साज सजावट को देख कर विचारानन्द थर थर काँपने लगा। इस रहस्य को देखकर विचारानन्द का हृदय डाँवांडोल हो रहा था कि सहसा एक सुन्दर सुडौल सुसज्जित, चित्त को चकित तथा मुग्ध करने वाली रमणी ने आकर प्रवेश करते ही पिता जी प्रणाम! कह कर कुशल पूछी। विचारानन्द सहम गये! सुन्दरी तू कौन है! पूछने लगी। पिता जी मैं आपकी अरुणा बनाम चपला सुन्दरी हूं। विचारानन्द के शरीर में बिजली दौड़ गई। वह निस्तब्ध हो गया। उसे अरुणा के विवाह का दृश्य स्मरण हो आया। सुशीला के पुनीत उपदेश उसके हृदय में उथल पुथल मचाने लगे। बेटी के वेश को देखकर उसका सिर लज्जा के कारण नीचे झुक गया। वह भागना चाहता था किन्तु कोई रास्ता न मिला। वह पागल की नाईं बड़ बड़ा कर कहने लगा सुशीला प्रिये! तुम स्वर्ग में हँस रही हो तुम आदर्श देवी थीं। किन्तु हा शोक! मैंने तुम्हें नहीं पहिचाना। देवी मुझे क्षमा करो! मेरी बाँह पकड़ो। मैं तुम्हारे पास आना चाहता हूं। एक लम्बी चीत्कार के साथ विचारानन्द खिड़की से कूद पड़ा। ऊंची अट्टालिका में गिर जाने के कारण विचारानन्द भूमि पर मूर्छित गिर पड़े। पोलिस घटनास्थल पर पहुंचा। चपला तथा चपला के घर में उपस्थित होने वाले लोगों को पुलिस गिरफ़्तार करके ले गई। दृश्य भयानक था। विचारानन्द के सिर से पैर तक लहू बह रहा था। विकराल लाश को देखकर लोग बड़े भयभीत हो रहे थे। जिन लोगों ने विचारानन्द को उठा कर गाड़ी में रखा वे स्वयं भी रक्त से लतपत हो गये। इतनी ऊंची अट्टालिका से गिरकर भी अभागा विचारानन्द बच गया! न्यायालय में एक ओर पण्डित विचारानन्द की लाश सिसक रही है तो एक ओर श्रीमती अरुणा देवी बनाम चपला वैश्या खड़ी है हाथों में हथकड़ियां लगी हैं। जज ने चपला से पूछा तुम पर इस मर-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आसन्न मनुष्य की हत्या का दोष लगाया गया है। तुम्हें अपनी सफ़ाई देनी है तो दो?

चपला ने कहा न्यायाधीश! मेरी राम कहानी बहुत लम्बी है। यदि उसे सुनाने के लिये आप आज्ञा दें तो मैं सुनाऊं। जो भी दण्ड मेरे लिये निर्धारित किया जायगा मैं उसे भोगने के लिये तैय्यार हूं। न्यायाधीश ने चपला को राम कहानी सुनाने की आज्ञा दी। चपला ने अपनी माता सुशीला की मृत्यु और अपना विवाह एक बूढ़े पति के साथ होने तक की सभी कथा कह सुनाई। सुनने वालों के रोंगटे खड़े हो गये। अपना पापमय जीवन स्मरण कर अरुणा का भी हृदय भर आया और वह फूट २ कर रोने लगी। दर्शक निस्तब्ध होगये।

अरुणा माता की मृत्यु के पश्चात् मैं सदैव उसकी याद में रोया करती। दरिया, पहाड़ और जंगल जहां भी मैं कार्य करने जाती अचानक माँ का स्मरण आ जाता था। मैं रोने लगती। मेरी ऐसी दशा देख कर मेरे पति बड़े दुःख में पड़ गये। इसे भूत लग गया कह कर उन्होंने टोने के मन्त्रों से मेरा दुःख दूर करना चाहा। परन्तु उनकी चेष्टा फलीभूत न हो सकी। अन्ततः मेरे पति देव (मंगल साहूकार) भी काल कवलित हो गये। बस लम्पट पुरुषों के घर विजया आ गई। भूत भुतङ्गड़ हटाने वालों के पंजे में मैं पहिले फंस गई थी। उन्होंने मेरा सर्वनाश कर दिया। मुझे गर्भ हो गया। एक के बाद दूसरा इसी प्रकार मुझ हत्यारी ने अपने हाथों से तीन गर्भपात किये। अब तक मैं पति के ही गृह में रही। आखिर भेद खुल जाने पर मैं घर से बाहर कर दी गई। मैंने सिरमौर का रास्ता लिया! परन्तु वहां किसके पास जाती? मैं हताश होकर बैठ गई। इतने में मेरे पास दो मनुष्य आए बातचीत से ऐसा मालूम हुआ कि वह मेरी ही ढूंढ़ में थे। ठीक तो नहीं कह सकती परन्तु मुझे ऐसा विदित हुआ कि वे दो महापापी पुरोहित के वेश में चाण्डाल भोगानन्द और गल्पानन्द थे। ये दोनों १० वर्ष की आयु में मेरा विवाह एक ६० वर्ष के बूढ़े पति के साथ करने में समर्थ हुए थे। इन्होंने मेरे पिता की ओर से एक बनावटी पत्र मुझे दिखाया। मुझ डूबती को तिनके का सहारा मिल गया। मैं इनकी बातों में आ गई। मुझे क्या मालूम था कि पुरोहित का बाना धारण कर यह मुझे भयानक सर्वनाश की ओर ले जायेंगे। एक दिन और एक रात हम तीनों आदमी गाड़ी का सफर करते रहे। दूसरी रात्रि को मैं एक अनजान व्यक्ति के हाथ में सौंपी गई और वे दोनों आंखों से ओझल हो गये। फल स्वरूप आज मेरी यह दशा है। न्यायाधीश दुविधा में पड़ गये। उन्होंने चपला की बेड़ी खोल दी। विचारानन्द को अन्तस्ताप और पश्चात्ताप की दावानल में जलने दिया।

हिन्दी सन्देश के विशेषाङ्क

१९३४ के फरवरी, मार्च, अप्रैल, में हिन्दी रत्न-भूषण-प्रभाकर नाम के विशेषाङ्क प्रकाशित होंगे। १९३४ जनवरी तक ग्राहक बनने वालों को यह विशेषाङ्क मुफ़्त मिलेंगे।

मैनेजर—हिन्दी सन्देश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वामी श्रद्धानन्द का उत्कट हिन्दी प्रेम

(ले०—श्री सत्यदेव जी विद्यालंकार दिल्ली)

देश की चहुँमुखी जागृति के लिये आवश्यक, आर्यसमाज के प्रगतिशील एवं व्यापक कार्यक्रम का प्रतिबिम्ब स्वामी श्रद्धानन्द जी का आदर्श जीवन था। आर्यसमाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द ने न केवल अपने व्यवहार से किन्तु आदेश तथा उपदेश से भी आर्यसमाज के लिये हिन्दी के प्रचार को वैदिक-धर्म के प्रचार के समान ही आवश्यक ठहराया है। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने (जो संन्यास आश्रम में प्रवेश करने से पहिले 'मुन्शीराम' और 'महात्मा' के नाम से प्रसिद्ध थे) ऐश्वर्य सम्पन्न होने की अवस्था में ही फलती फूलती हुई वकालत को ठुकरा कर और संसार की समस्त सुख-समृद्धि तथा भोग-विलास से मुंह मोड़ कर अपने को सर्वतोभावेन ऋषि दयानन्द के चरणों में कुछ ऐसा न्योछावर किया था कि ऋषि ने जिस मिशन की पूर्ति के लिये आर्यसमाज की स्थापना की थी, उसकी पूर्ति में ही उन्होंने अपने जीवन को एक निष्ठा के साथ लगा दिया था। इसी लिये स्वामी श्रद्धानन्द जी हिन्दी की सेवा से विमुख नहीं रह सकते थे।

स्वामी श्रद्धानन्द जी के सार्वजनिक जीवन का श्रीगणेश 'उर्दू' के साथ हुआ था। किन्तु उसका साथ अधिक दिन तक नहीं निभ सका। अपना सुप्रसिद्ध समाचार-पत्र 'सद्धर्म-प्रचारक' जिसका आर्यसमाज के प्रचार 'संगठन' उन्नति तथा प्रगति में बहुत बड़ा हाथ है, आपने 'उर्दू' में शुरू किया था। उन दिनों में आपने प्राय: सभी ट्रैक्ट और ग्रन्थ 'उर्दू' में ही लिखे थे। उर्दू के आप सिद्धहस्त लेखक और माने हुये विद्वान् थे। उर्दू में सब प्रकार से पारंगत एवं सफल होने पर भी आपके हृदय में हिन्दी के लिये लगन लगी हुई थी और आपने पत्र की उर्दू भाषा में ही हिन्दी का ऐसा सम्मिश्रण करना शुरू कर दिया था कि उससे हिन्दी और उर्दू दोनों ही के विद्वान् असन्तुष्ट एवं रुष्ट थे। किन्तु उस उर्दू लिपि में लिखी जाने वाली हिन्दी से भी हिन्दी प्रचार में निश्चय ही विशेष सहायता प्राप्त हुई थी। स्वामी श्रद्धानन्द जी की हिन्दी-सेवा का उपक्रम यहां से ही हुआ समझना चाहिये।

सम्वत् १९५५ के 'प्रचारक' की एक संख्या में एक जगह आपने लिखा था—"दृढ़ प्रयत्न करना चाहिये कि आर्य-प्रतिनिधि-सभा पंजाब का दफ़्तर और आर्यसमाजों का सब पत्र-व्यवहार आर्यभाषा में होजावे। क्या उर्दू का स्थान आर्यभाषा को लेते मैं देख सकूंगा।?" इस टिप्पणी के लिखने के ग्यारह वर्ष बाद फिर आपने 'प्रचारक' में ऊपर की पंक्तियों की ओर संकेत करते हुये लिखा था—"क्या यह टिप्पणी लिखते हुये मुझको स्वप्न भी आसकता था कि मैं अपने आंखों से ही न केवल प्रतिनिधि-सभा के कार्यालय का सब काम तथा पत्र-व्यवहार ही आर्यभाषा में होता देखूंगा; प्रत्युत 'सद्धर्मप्रचारक' को आर्यभाषा में परिवर्तित देखने के अतिरिक्त देवनागरी लिपि के प्रचार के लिये सारे देश में आन्दोलन भी होता देखूंगा। यह लिखने की आवश्यकता नहीं कि आर्यसमाजी हिन्दी के लिये 'आर्यभाषा' शब्द का प्रयोग करते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। इसके दो अभिप्राय हैं। एक तो यह कि आर्यों की भाषा अर्थात् श्रेष्ठ भाषा। पहिले अर्थ से यह स्पष्ट है कि आर्यसमाज ने इसको अपने लोगों की भाषा के रूप में अपनाया है और दूसरे अर्थ से यह प्रगट है कि इसको श्रेष्ठ माना है। आर्यों की इस अपनी भाषा को वस्तुतः आर्यों की भाषा बनाने का अधिकांश श्रेय स्वामी श्रद्धानन्द जी को ही है। वैसे तो आर्यसमाज का सब संगठन और आर्यसमाज की प्रायः सभी संस्थाओं का ढांचा स्वामी जी का ही तय्यार किया हुआ है। उस संगठन और संस्थाओं के इन ढांचों में प्राण-प्रतिष्ठा भी अकेले स्वामी जी ने ही की थी। 'सत्यार्थप्रकाश' तथा अन्य ग्रन्थों में प्रतिपादित आर्यसिद्धान्तों को आर्यों के दैनिक जीवन का हिस्सा बनाने का अधिकांश श्रेय भी स्वामी जी को ही है। इसी लिये आर्यसमाज में, आर्यसमाज की प्रतिनिधि-सरीखी संस्थाओं में और आर्यपुरुषों में हिन्दी के प्रचार का भी अधिकांश श्रेय स्वामी जी को ही है। उर्दू की रंगभूमि पंजाब में हिन्दी की पताकाफहराने वाले सबसे पहिले व्यक्ति स्वामी जी थे।

इस सम्बन्ध में किये गये आपके व्यापक कार्यों में दो की ओर स्पष्ट संकेत करना आवश्यक है। वैसे तो १८९७ ई० में ही आप गले में झोली डाल गुरुकुल की स्थापना के स्वप्न के पीछे पागल होकर घर से निकल पड़े थे। किन्तु गुरुकुल की स्थापना २ मार्च सन् १९०२ को हुई थी। उस समय आप की गुरुकुल आयोजना को इसलिये भी असम्भव बतलाकर उसका मज़ाक किया जाता था कि हिन्दी को माध्यम बनाकर ऊंची से ऊंची शिक्षा देने की कल्पना को सत्य मानना शिक्षा-विशारदों के लिये भी संभव नहीं था। इंगलैंड के इस समय के प्रधान-मन्त्री मि० रैमज़े मैकडानेल्ड ने गुरुकुल के सम्बन्ध में यह बिलकुल ही ठीक कहा है कि वर्तमान सरकारी-शिक्षा-प्रणाली के सम्बन्ध में १८३५ ई० में लार्ड मैकाले ने जो सुप्रसिद्ध लेख लिखा था, उससे होने वाले भारतव्यापी असन्तोष को मूर्तरूप देने के लिये गुरुकुल के सिवाय कोई और परिश्रम अभीतक नहीं किया गया है। इसी भाव को दूसरे शब्दों में इस प्रकार कहा जासकता है कि लार्ड मैकाले ने भारत-वासियों को दोगले अंगरेज़ बनाने के लिये अंगरेज़ी शिक्षा पद्धति का भारत में श्रीगणेश किया था और स्वामी जी ने उसके विरुद्ध भारतवासियों को पूर्ण भारतवासी बनाने के लिये गुरुकुल-शिक्षा-प्रणाली के रूप में भारतीय-शिक्षा-पद्धति का भारत में सूत्रपात किया था। इस भारतीय-शिक्षा-पद्धति की पहिली अनिवार्य शर्त यही थी कि शिक्षा का माध्यम भारत वासियों की अपनी मातृ-भाषा हिन्दी ही हो। ऊंची से ऊंची शिक्षा का माध्यम हिन्दी को बना कर गुरुकुलने एक अद्भुत और सफल परीक्षण कर दिखाया है। इस प्रकार स्वामी श्रद्धानन्द जी ने हिन्दी की जो सेवा की है वह इतनी ठोस महान् और स्पष्ट है कि उसके लिये कुछ अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं। इतिहास, दर्शन, विज्ञान, भौतिकी, अर्थशास्त्र, कृषि, गणित इत्यादि के गूढ़ से गूढ़ विषयों पर प्रामाणिक, मौलिक और स्वतन्त्र ग्रन्थ प्रकाशित करने तथा इन सब विषयों के पारिभाषिक शब्दों के लिये हिन्दी शब्द निर्मित करने का जो कार्य गुरुकुल द्वारा किया गया है वह अब तक भी कोई दूसरी संस्था नहीं कर पाई है। गुरुकुल को इस बात का यथार्थ गौरव और सच्चा अभिमान है कि उसके दस स्नातकों के पीछे आठ स्नातक हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और छः ऐसे हैं जिन्होंने हिन्दी में अच्छे प्रामाणिक ग्रन्थ भी लिखे हैं। हिन्दी के वक्ता, लेखक और सम्पादक और विद्वान् पैदा करने में गुरुकुल का अपना 'रिकार्ड' है जिसका मुकाबला कोई दूसरी संस्था नहीं कर सकती। इस प्रकार हिन्दी के विद्वान्, लेखक, सम्पादक, बक्ता और सेवक पैदा करने का जो श्रेय स्वामी जी को प्राप्त है, वह और किसने प्राप्त किया है?

'सद्धर्म प्रचारक' को एकाएक उर्दू से हिन्दी में कर देना भी गुरुकुल की स्थापना के समान ही दूसरा बड़ा कार्य है। इससे स्वामी जी के उत्कट हिन्दी-प्रेम का अद्‌भुत परिचय मिलता है। उर्दू भाषा में निकलने पर भी 'प्रचारक' में हिन्दी का यथेष्ट समावेश था। उसके मुखपृष्ठ पर उसका नाम हिन्दी में रहता था और वेदमन्त्र तथा अन्य ऐसे अनेक मन्त्र-वाक्य हिन्दी अक्षरों में लिखे जाते थे। लिपि उर्दू होने पर भी भाषा हिन्दी ही होती थी। इस सम्बन्ध में 'प्रचारक' को उर्दू से हिन्दी में करते हुये स्वामी जी ने स्वयं ही लिखा था—"उर्दू का प्रचारक भी निरर्थक न था। अठारह वर्ष हुये पंजाब में आर्यभाषा के बोलने का भी बहुत कम प्रचार था। फिर आर्यभाषा के लिखने वालों का तो अभाव सा था। संस्कृत के साधारण से साधारण शब्द को भी समझना अच्छे अच्छे आर्यसमाजियों तथा सनातनियों के लिये भी कठिन था। देवनागरी अक्षरों को पहिचानने वाले भी मुश्किल से मिलते थे। 'प्रचारक' ने सहस्रों पुरुषों को इस योग्य बनाया कि वे वेदादि सत्य-शास्त्रों के अभिप्राय को समझ सकें। न केवल यही किन्तु 'प्रचारक' के उस मिश्रित भाषा के बेढंगे लेखों,—जिन्हें उर्दू तथा हिन्दी के रसिक दोनों ही द्वेष-दृष्टि से देखते थे—ने अपने लिये खास स्थान बना लिया। 'प्रचारक' की इसी कोशिश का नतीजा है कि आज डेढ़ हजार से अधिक ऐसे पाठक हो गये हैं जो आर्यभाषा को देवनागरी अक्षरों में पढ़ तथा कुछ समझ भी सकते हैं। अठारह वर्षों तक निरन्तर उर्दू में अपने पत्र का संचालन करने के बाद आर्थिक, सामाजिक एवं सार्वजनिक आदि सभी दृष्टियों से उसके सम्पूर्ण यशस्वी होते हुये भी, केवल हिन्दी-प्रचार की लगन अथवा धुन के लिये उसको हिन्दी में नया जन्म देना और नयी आशा के साथ उसका संचालन करना कोई साधारण घटना नहीं थी। हिन्दी का चोला पहिनने के बाद 'प्रचारक' ने सैंकड़ों व्यक्तियों में हिन्दी पढ़ने की रुचि पैदा की थी। उसका ही यह परिणाम है कि पुराने आर्यसमाजियों में आज भी कितने ही ऐसे हैं जो हिन्दी पढ़ सकते हैं किन्तु लिख नहीं सकते; क्योंकि हिन्दी के 'प्रचारक' द्वारा उन्होंने केवल पढ़ना सीखा था लिखना नहीं। 'प्रचारक' को हिन्दी में शुरू करने बाद स्वामी जी ने हिन्दी में कितनी ही पुस्तकें तथा पुस्तिकायें लिखीं और इस प्रकार अपने हिन्दी प्रेम को मूर्तरूप दिया।

आपकी इस ठोस हिन्दी-सेवा पर मुग्ध होकर भागलपुर में सम्बत् १९७० में होने वाले हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के चतुर्थ वार्षिक अधिवेशन का आपको सभापति बनाया गया था। उस समय आपकी इन दोनों सेवाओं का विशेष रूप में उल्लेख किया गया था। हिन्दी जगत् में सबसे अधिक गौरवास्पद, इस आसन से दिये गये भाषण में आपने ही सर्व प्रथम हिन्दी के लिये 'मातृभाषा' शब्द का प्रयोग किया था। 'अभ्युदय' ने आपके भाषण की आलोचना करते हुये इसका विशेष रूप में उल्लेख किया था। मातृभाषा-हिन्दी को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही शिक्षा का माध्यम बनाने के लिये आपने जो युक्ति इस भाषण में दी थी; वह यह थी कि हमारी सभ्यता के तीन प्रधान चिह्न हैं—अहिंसा, मातृशक्ति का सत्कार और ब्राह्मणत्व। ये तीनों गुण परकीय भाषा द्वारा परिस्फुट नहीं हो सकते। इसलिये यदि हम परकीय भाषा को अपनावेंगे, तो हम भ्रष्ट होंगे, एक राष्ट्र का निर्माण नहीं कर सकेंगे। इन शब्दों से यह स्पष्ट है कि स्वामी जी हिन्दी के राष्ट्रीय महत्व को बहुत भली प्रकार समझते थे और उन्होंने इस दृष्टि से भी हिन्दी को अपनाया था। फ़ौजी-शासन द्वारा पंजाब के आहत हो जाने के बाद अमृतसर शहर में जिसका अंग प्रत्यंग छिन्न भिन्न हुआ था, कांग्रेस का उस वर्ष होना सभी नेताओं को बिलकुल असम्भव प्रतीत हो रहा था। उस निराशापूर्ण अधिवेशन को इतना सफल बनाना आपके ही अटूट धैर्य, महान् परिश्रम, दृढ़ देशभक्ति तथा सत्य-संकल्प का परिणाम था। सन् १९१८ ई० में कांग्रेस के उस अधिवेशन में जब कि कांग्रेस में हिन्दी को कोई पूछता भी नहीं था, आपने स्वागताध्यक्ष की हैसियत से अपना भाषण 'हिन्दी' में ही पढ़ा था। इस प्रकार 'हिन्दी' को राष्ट्रीय-महासभा के ऊँचे आसन पर सर्वप्रथम प्रतिष्ठित करने का श्रेय भी आपको ही है।

अब मद्रास-प्रान्त में हिन्दी भाषा का यथेष्ट प्रचार बहुत ही व्यवस्थित और संगठित रूप में हो रहा है जिसका अधिकांश श्रेय महात्मा गान्धी को है। स्वामी जी की विशाल दृष्टि भी उधर बहुत पहिले ही पड़ चुकी थी। प्रो० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार और श्री देवेश्वर जी विद्यालंकार आदि को आपने सन् १९१९ में मद्रास-प्रान्त में सार्वदेशिक सभा की ओर से भेजा था और उनसे पहिला काम आपने हिन्दी-भाषा के प्रचार का ही करवाया था। १९१९ ई० में 'श्रद्धा' में इस सम्बन्ध में आपने लिखा था। प्रो० सत्यव्रत जी ने मद्रास पहुंच कर हिन्दी का प्रचार शुरू किया है। हिन्दी-प्रचार वैदिक-धर्म को सर्वसाधारण में फैलानेका पहिला साधन है। इसलिये धर्म-प्रचार के साथ मैं इस पर भी अधिक बल दे रहा हूं।"

हिन्दी को अपनाने के बाद स्वामी जी ने अपना सब पत्र व्यवहार हिन्दी में ही करना शुरू कर दिया था। उसके बाद कोई बिरला ही पत्र कभी उर्दू में लिखा होगा। अंगरेज़ी में सिर्फ उनको ही पत्र लिखते थे जिनके साथ अंगरेजी में लिखे बिना कार्य नहीं चलता था। दक्षिण-अफ्रीका के सत्याग्रह में गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने अपना घी, दूध, दही, छोड़कर और मेहनत मजूरी करके १,५००) रु० की जो सहायता भेजी थी, उसके लिये आभार मानते हुये महात्मा गांधी ने फोनिक्स नैटाल से २१ अक्तूबर १९१४ को एक बहुत ही भावपूर्ण पत्र स्वामी जी को लिखा था। वह पत्र अंगरेज़ी में लिखा गया था। उसका उत्तर हिन्दी में लिखते हुये स्वामी जी ने महात्मा जी को लिखा था—"जो व्यक्ति हिन्दी को देश की भाषा बनाना चाहता है उसको कोई अधिकार नहीं कि वह दूसरी भाषा में पत्र-व्यवहार करे।" उसके बाद दोनों महापुरुषों में जो पत्र-व्यवहार हुआ, वह सब हिन्दी में ही हुआ। इस प्रकार स्वामी जी ने कितनों ही को हिन्दी में पत्र-व्यवहार करने के लिये प्रेरित किया था।

हिन्दी के अनन्य पुजारी स्वामी श्रद्धानन्द जी की हिन्दी की पूजा को अभिव्यक्त करने के लिये एक लेख में इससे अधिक और क्या लिखा जासकता है? हिन्दी के प्रति उनके उत्कट प्रेम और गहरी निष्ठा को दिखाने के लिये इतनी ही साक्षियाँ पर्याप्त होनी चाहियें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कच और देवयानी

(एक सुंदर संलाप)

(ले०—स्ना० शंकरदेव विद्यालंकार तथा स्ना० नरेन्द्रदेव विद्यालंकार)

कच—देवयानी, मुझे विदाई दो। तुम्हारे पितृदेव के चरणों में बैठ कर बहुत दिनों तक अध्ययन किया है। आज मेरी ज्ञानोपासना समाप्त होती है। कृपा करके आज्ञा दो कि मैं जिस देवलोक से यहाँ आया हूँ, पुनः वहीं पर जा सकूँ।

देवयानी—तुम्हारी इच्छा पूर्ण हुई! देवताओं की चिरवाँच्छित संजीवनी विद्या तुमको प्राप्त हुई है। परन्तु विचार करो कि तुम इससे अधिक तो कुछ नहीं चाहते?

कच—कुछ नहीं!!

देवयानी—कुछ भी नहीं! अपने हृदय से पूछो! असफलता के भय से कोई आकांक्षा मानस में छुपी तो नहीं रह गई?

कच—मेरी आशाओं का सूर्य पूर्णरूप से प्रकाशित हो गया, और उसके प्रखर प्रकाश में छोटे छोटे तारक छुप गए। संजीवनी विद्या मैंने प्राप्त कर ली है।

देवयानी—तब तो वस्तुतः इस जगत् में तुम्हीं एक पूर्णतया सुखी और संतोषी हो। हाँ, अब मुझे ज्ञात हो रहा है कि इस परदेश में तुमने कितने कष्ट उठाकर दिन बिताए हैं। कहो, हमारे द्वारा प्रस्तुत किए गए आतिथ्य सत्कार में कोई कमी तो नहीं रही?

कच—देवयानी, यह सब तुम क्यों कह रही हो? हँसते हुए मुखड़े से मुझे विदाई दो!!

देवयानी—हँसते मुख से? यह कोई तुम्हारा स्वर्ग नहीं है, कि हास्य यहाँ पर इतना सस्ता हो।

कच—देवयानी, मेरा अपराध?

देवयानी—वर्षों तक जिन उपवनों ने तुमको छाया प्रदान की, मधुर संगीत सुनाया, उसे छोड़ जाना तुम्हारे लिए इतना सरल है? क्या तुम नहीं जानते हो कि यहाँ का शीतल समीर साँय साँय करता हुआ रो रहा है तथा यहां के शुष्क पत्ते मृत्युगत आशा के प्रेत के समान जहाँ तहाँ उड़ रहे हैं। और तुम, केवल तुम ही हमें छोड़ कर जाने को उद्यत हो गये हो, हँस रहे हो। केवल तुम्हारे ही होठों पर हास्य झलक रहा है।

कच—इस उपवन का स्नेह कभी भी मेरे हृदय से पृथक् नहीं होगा। यह उपवन तो मेरी दूसरी माता के समान है। क्योंकि यहीं पर मैंने नव-जीवन प्राप्त किया है।

देवयानी—जब तुम हरे हरे मैदानों में गाएँ चराने को जाते थे तो उस समय यही वटवृक्ष अपनी शाखाएँ फैलाकर तुम्हारे थके माँदे शरीर को विश्राम देता था।

कच—वटराज! तुम्हें मेरे प्रणाम हैं। जब तुम्हारी शीतल छाया में अन्य छात्र आकर विश्राम लें, और जब तुम्हारे पत्तों की मीठी खड़खड़ाहट के साथ अपना स्वर मिला कर वे विद्यार्थी अपना पाठ स्मरण करें, तब कभी कभी मुझे भी याद कर लेना!!

देवयानी—प्रिय सरिता वेणुमती को न भूलना!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिसका शीघ्रगामी प्रवाह एक प्रेमपूर्ण संगीत है।

कच—अपने निर्वासन काल की सहचरी का सदा स्मरण किया करूँगा। वेणुवती तो सरल हृदय की ग्राम्य-बालिका सी है। जो सर्वदा दूसरों के सुख के लिए परिश्रम करती है, और साथ ही साथ मधुर स्वर-गान भी गाती है।

देवयानी—पर हे मित्र, क्या मुझे तुम्हें याद कराना पड़ेगा कि तुम्हारी एक दूसरी भी संगिनी थी जिसकी निरंतर चिन्ता, तुम्हारा कष्ट कम करके देशत्याग का दुःख भुला देती थी।

कच—उसकी स्मृति तो मेरे जीवन का एक अंग बन गई है।

देवयानी—मुझे अभी तक याद है कि जिस दिन नन्हे से तुम यहाँ आए थे, तब वाटिका के उस निकुंज में खड़े हो कर हँस रहे थे।

कच—तुम श्वेत परिधान धारण करके प्रातःकाल की उषा के समान पुष्प संचय कर रही थीं। मैंने कहा था कि तुम सहायता करने का गौरव मुझे प्रदान करो।

देवयानी—मैंने चकित होकर पूछा था-तुम कौन हो? नम्रता पूर्वक तुमने कहा था-'इन्द्रदेव की राजसभा के आचार्य बृहस्पति का पुत्र हूं और संजीवनी विद्या-सीखने के लिये तुम्हारे पितृदेव के समीप आया हूँ।

कच—मुझे शंका थी कि देवताओं के प्रतिद्वन्दी, दानवों के आचार्य कदाचित मुझे अपना शिष्य स्वीकार न करें॥

देवयानी—परन्तु जब मैंने तुम्हारे पक्ष का समर्थन किया, तब वे अपनी पुत्री का विरोध न कर सके। क्योंकि उसके प्रति उनका अतिशय प्रेम है।

कच—दानवों ने मुझे तीन बार मार दिया। परन्तु तुम्हारे ही आग्रह के वश होकर तुम्हारे पिता जी ने मुझे प्राणदान दिया। मेरी कृतज्ञता का तो कभी अन्त नहीं होगा।

देवयानी—क्या कहा? कृतज्ञता? भूल जाओ कच, भूल जाओ, मुझे बुरा नहीं लगेगा। मुझे इसका दुःख न होगा। क्या तुम्हें केवल उपकारों का स्मरण? नाश हो उन उपकारों का। दिन भर के स्वाध्याय के उपरान्त यदि तुम्हारे हृदय में किसी अनुपम आनन्द की उमँग आई हो तो उसे याद करो। उस उपकार और कृतज्ञता को भूल जाओ। क्या तुम्हें केवल उपकारों की ही स्मृति है? न स्नेह? न सौन्दर्य? न

कच—देवयानी! देवयानी!!

देवयानी—हाँ मैं जानती हूं कि स्नेह से तुम्हारा हृदय तरल हो गया है। मेरा त्याग न करो। तुम कहीं मत जाओ। यहीं पर रहो। कीर्ति में क्या सुख है? हे प्रिय दर्शन, अब तुम नहीं जा सकते॥

कच—नहीं देवयानी, नहीं!!

देवयानी—क्यों नहीं? असत्य न कहो! स्नेह के पास दैवी अन्तर्दृष्टि होती है। जिस प्रकार सागर अपनी तरंगों द्वारा अपने भावों को प्रदर्शित करता है, उसी प्रकार तुम्हारी दृष्टि में स्नेह दिखाई दे रहा है। मेरे वचन सुनकर तुम्हारा अंग अंग उल्लसित हो उठता है। क्या मैं यह नहीं जानती? मैं तुमको जानती हूं और इसी कारण आजीवन तुम मेरे बन्दी हो। तुम्हारे देवों का देव इन्द्र भी इस बंधन को तोड़ने में असमर्थ है।

कच—अपने स्नेही जनों से वियुक्त होकर यह समस्त साधना क्या मैंने इसी लिये की थी देवयानी?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवयानी—क्या केवल विद्या ही अमूल्य है ? क्या स्नेह का कुछ भी मूल्य नहीं ? इस क्षण को मत चूको । कच ? साहस के साथ स्वीकार करो कि एक स्त्री का हृदय तुम्हारी विद्या और कीर्ति के लिये की गई तपस्या का अधिकारी है ।

कच—मैंने देवताओं को बचन दिया था कि संजीवनीविद्या प्राप्त करके मैं वापिस आजाऊंगा ॥

देवयानी—मैं पूछना चाहती हूं कि क्या तुम्हारी दृष्टि ग्रन्थों के सिवाय अन्य किसी वस्तु पर नहीं गई थी ? क्या तुमने अध्ययन छोड़ कर मेरी पूजा नहीं की थी ? मुझे पुष्प अर्पित नहीं किए ? फुलवारी सींचने में क्या तुमने मेरा साहाय्य नहीं किया है ? क्या यह सब कुछ स्वर्ग में से जाते हुए षड्यन्त्र का एक भाग तो नहीं था कि मेरे पितृदेव को फँसाने के लिये यह जाल फैलाया गया था और आज सफलता प्राप्त कर कृतज्ञता के शब्दों को फैंकते हुए यहां से चले जारहे हो, जिस प्रकार मंदिर पर बैठे हुये भिक्षुक को कोई एक टुकड़ा फेंक जाता है ।

कच—तुम्हारे प्रति मेरा स्नेह सच्चा था या झूठा इसकी चर्चा करने का यह स्थान नहीं है । मेरा जीवनकर्तव्य मुझे बुला रहा है । यद्यपि मेरा हृदय अग्नि की भाँति प्रज्वलित हो रहा है । तथापि मुझे स्वर्ग में जाना ही पड़ेगा, जो कि वह मेरे लिये स्वर्ग नहीं है ! अपने सुख की चिन्ता करने से पूर्व देवताओं को मुझे "कुछ" अर्पित करना है और वह "कुछ" मैंने बड़े परिश्रम से प्राप्त किया है । देवयानी, मुझे क्षमा करो ! !

देवयानी—क्षमा ! ! तुम अपने कर्तव्य-पथ पर जा रहे हो; तुमको कीर्ति की पड़ी है । पर मेरे लिये अब क्या ? स्मृति मेरे लिये कंटकों की शय्या बन जायगी । गुप्त लज्जा मेरे जीवन निर्झर को सुका देगी । तुम एक यात्री की तरह यहां आए ! गर्मी की घड़ियां मेरे उद्यान की छाया तुमने बिताई, और समय आने पर पुष्पों का चयन करके एक माला बनाई और अब जाते समय उस माला को तोड़ कर, उसके पुष्पों को धूल में फैंकते जा रहे हो । धिक्कार हो इस अभागिनी विद्या को । वह तुमको अवश्य ही भाररूप होगी । वह भार अन्यों की सहायता से भी हलका नहीं हो सकेगा । जिस प्रकार अनेक तारकों के प्रकाशित होने पर भी अंधकार मयी रात्रि का अंधकार दूर नहीं होता ठीक उसी प्रकार स्नेह हीन होने के कारण तुमको भी वह विद्या अप्राप्य ही रहेगी !!! *

* कवि सार्वभौम रवि बाबू की कृति का भाषान्तर !!

हिन्दी संदेश में विज्ञापन छपाना, पंजाब की हिन्दी प्रेमी जनता तक पहुँचने का अचूक उपाय है । विशेषतः हिन्दी पुस्तक विक्रेताओं को इस अवसर से लाभ उठाना चाहिए ।

मैनेजर

हिन्दी सन्देश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महिला संसार

सधवा-विधवा ?

(ले०—श्री वंशीधर जालान-अमृतसर)

आप सधवा-विधवा पढ़कर विस्मित होंगे, और सोचते होंगे कि यह कौनसी बला है। विधवा का शब्द तो कई बार सुना होगा परन्तु सधवा-विधवा कैसी ? विधवा तो विधवा हुई ही, परन्तु सधवा-विधवा कैसी और क्यों ? आप हैरान न होवें परन्तु दुःखित होवें। क्योंकि यह एक नई आपत्ति हिन्दु जाति पर आई है। यह कुछ समय से हिन्दू जाति को हानि पहुंचा रही है। परन्तु हिन्दू जाति ने इस आपत्ति से बच कर निकलने का कोई उपाय नहीं सोचा। इसी से यह भयंकर आपत्ति अपनी शक्ति को बढ़ाती रही। अब तो यह हिन्दू जाति की एक प्रथा सी ही बन गई है।

क्या आप ने कभी सोचा यह कौनसी आपत्ति है ? नहीं। तभी तो यह आज हम को इस प्रकार कष्ट पहुँचा रही है। यदि आप ने छिन भर भी इस पर विचार किया होता तो यह आपत्ति इस प्रकार हमें कष्ट न पहुंचाती और नाहीं इस में इतनी शक्ति पैदा होती कि आज यह इस प्रकार हिन्दू जाति में अपना घर बना सकती।

यदि आप ने इस विषय पर विचार नहीं किया तो अब करलो। ओह ! कितनी भयंकर आपत्ति है ! इसके याद आते ही, रोमांच होने लगता है। कितना पाप है, अत्याचार है, कृतघ्नता है और हृदय विहीनता है। पहली धर्मपत्नी को त्याग कर दूसरा विवाह कर लेना। क्या उस समय जो प्रतिज्ञायें अग्नि के समाने की जाती हैं ? झूठी की जाती हैं या उनको समय पर भूल जाते हैं। नहीं ! नहीं ! इसमें दोष पुरोहितों का अधिक है जो कि तोते की तरह श्लोकों को रट जाते हैं। परन्तु वर और बधू को मालूम नहीं पड़ता कि हमने क्या प्रतिज्ञा की और क्या नहीं।

यदि पहिली स्त्री को अपने घर में ही अपनी पत्नी के रूप में रखे और फिर दूसरा विवाह कराये तो भी मेरे विचार में सभ्यता उसको इस प्रकार नीच कार्य करने की आज्ञा न देगी। क्योंकि इससे पहिली स्त्री को दुःख होगा। मान भी लो यदि वह किसी कारण से विवश होकर या कामेच्छा से प्रभावित होकर कर भी लेता है तो पहली पत्नी को पति-वियोग तो नहीं सहना पड़ता। परन्तु आज कल तो पहली स्त्री को घर से निकाल ही देते हैं। निकालने के पश्चात् उन पर कई प्रकार के, सभ्यता से गिरे हुए झूठे कलंक भी लगाये जाते हैं। कोई कहेगा महाराज खूबसूरत न थी, कोई कहेगा सन्तान न होती थी चाहे स्वयं सन्तानोत्पति के योग्य न हो। अपनी पत्नी को निकालते समय यह विचार नहीं करते कि यदि यही बर्ताव उनकी बहिनों या बेटियों से हो तो फिर वह क्या करेंगे ?

स्त्री के लिये पति-वियोग कैसा भयङ्कर दण्ड है। कोई समय था जब राजपूतों की स्त्रियां इन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्दों को सुनने से पहिले अपने प्राण देना अच्छा समझती थीं। यदि दैवयोग से पति का देहान्त होजाये तो वह पति-वियोग एक दैवी आपत्ति होती है और स्त्री को बाध्य होकर सहनी पड़ती है। परन्तु आजकल यह पति-वियोग भी निराला है। एक ओर तो पति एक दूसरी नव-विवाहिता पत्नी से रंग रेलियाँ मनाता हो और दूसरी ओर पहिली धर्मपत्नी पति-वियोग की प्रचण्ड ज्वालाओं में जल रही हो। यह तो ठीक उसी प्रकार से है जिस प्रकार कि एक सात रोज के भूखे को बांध कर उसके आगे स्वादु २ भोजनों के थाल परोस कर रखना है, जिससे कि वह उन्हें देख २ कर ललचाए और हृदय में दुःख माने और तड़प २ कर मर जाए। इसी प्रकार पति जीवित हो और पत्नी को सधवा होते हुए भी विधवा बनकर रहना पड़े यह कितना अत्याचार तथा निष्ठुरता है।

पहिले ही हिन्दु जाति को लाखों बाल विधवाओं तथा विधवाओं की आहें निगल रही हैं। क्या अब इन सधवा विधवाओं की आहें जो कि बाल विधवाओं की आहों से भयङ्कर हैं:—हिन्दु जाति को नष्ट प्रायः न कर देंगी।

एक ही अबला की आह ने सारे राजपूताने को नष्ट कर दिया था तो क्या इन लाखों अबलाओं की आहें भारत को भस्मसात् न कर देंगी? कोई समय था द्रौपदी के तनिक से अपमान पर महाभारत का युद्ध हुआ। परन्तु अब जब कि लाखों अबलाओं पर अत्याचार हो रहे हैं नवयुवकों के कानों पर जूं तक नहीं रींगती।

इस आपत्ति से बचने के लिये अब राजदण्ड आवश्यक हो गया। दो कानून इस समय हिन्दु जाति को बचाने के लिये अवश्यमेव पास होने चाहिये। एक तो यह कि कोई भी पुरुष पहिली स्त्री के रहते हुए दूसरा विवाह नहीं करा सकेगा। दूसरा यह कि स्त्रियों को भी पति की सम्पत्ति में अधिकार होना चाहिये। यदि यह दो कानून आज होते तो पहली पत्नी के जीते जी दूसरा विवाह कराने की बुराई हिन्दू जाति में प्रवेश न करती।

हिन्दु नेताओं का कर्तव्य है कि वह इस बीमारी को हिन्दु जाति से निकालने की भरपूर चेष्टा करें। क्या ऐसम्बली के हिन्दु नेताओं ने कभी इस विषय पर विचार किया? यदि नहीं किया तो क्यों? उनका कर्तव्य था कि वह इस विषय पर सोचते। उनका कर्तव्य है कि वह कानून की सहायता से जाति की उन्नति करें।

मैं पाठकों से निवेदन करता हूँ कि वह अमृतसर की एक अभागी बहन का वह पत्र पढ़े जो कि अमृतसर के मारवाड़ी नवयुवक दल को उस अबला देवी की ओर से मिला है। पत्थर का दिल भी उस पत्र को पढ़ कर रोवेगा। हृदय के टुकड़े २ होजाते हैं।

मुझे हर्ष है कि मारवाड़ी नवयुवक दल अमृतसर ने इस बीमारी को निकालने के लिये एक विस्तृत रूप में आन्दोलन उठाया है। प्रभु उनकी सहायता करें। और उनको सफलता प्राप्त हो।

हिन्दी संन्देश के १० ग्राहक बनाने वाले सज्जन को, लाला जी की आत्म कथा की एक प्रति भेंट की जायगी।
मैनेजर हिन्दी सन्देश
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभागी बहन की करुणा कथा

सेवा में :—

श्रीयुत मन्त्री महोदय, मारवाड़ी नवयुवक दल

अमृतसर।

मान्यवर महोदय,

मैं आज एक दुःख भरी कहानी जो किसी तीसरे व्यक्ति से सन्बन्ध नहीं रखती अपितु मुझ पर ही बीते हुये कष्टों की शृंखला से ओत प्रोत है आपकी सेवा में उपस्थित करने की धृष्टता करती हूं। इसलिये नहीं कि, आप इसे पढ़ कर आंखें मूँद लें और शान्त भाव से बैठ जावें। अपितु हिन्दूसमाज में इस बात की क्रांति सी उत्पन्न करें जिससे मुझ जैसी अनेक अभागिन बहिनों का किसी अंश में उद्धार हो और समाज में इस प्रकार की दुर्घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो।

अपनी आत्म-कथा लिखते हुए लेखनी कांप सी उठती है जब कि बार बार यह विचार सामने आता है कि एक ओर तो पुरुषसमाज कितना स्वतन्त्र तथा स्वछन्द है। दूसरी ओर स्त्री समाज के अधिकारों की परिधि इतनी संकुचित है कि वे इसके विपरीत कोई शब्द नहीं कह सकतीं। फिर भी साहस करके यह मनोवेदना से सुनी हुई कथा लिखे ही देती हूँ जिससे भविष्य में अपने समाज का सुख उज्वल करने में कदाचित सहायक बन सकूं।

मैं हिन्दू-समाज के अत्याचारों से पीड़ित एक अभागिन नारी हूं। कोई भी वर्ष हुए मेरा विवाह एक मारवाड़ी नवयुवक (श्रीमान् बैजनाथ जी बांगला) से हुआ था। परन्तु यह वैवाहिक बन्धन न जाने किन अभागे नक्षत्रों के नीचे बंधा था और आज दिन तक मैं कोई भी गृहस्थ-सुख नहीं पा सकी। पति-गृह में निवास के लिये कोना भी मुझे प्राप्त नहीं हो सका। मैं नहीं समझती वह पाणिग्रहण ही कैसा और किसका! जिससे अपने सहवास में रखने का भी सौभाग्य अपनी सहधर्मणी अर्द्धांगणी कहलाने वाली नारी को प्राप्त न हो। अस्तु।

"विधाता के लेख को कोई मिटा नहीं सकता" यही एक आत्म-सन्तोष का उपाय जानकर अपने उद्विग्न तथा विक्षुब्ध हृदय में उठती हुई ताप तरङ्गों को थपकियां दे देकर सुलाती रही। पर यह कब तक हो सकता था। अन्त में किसी कष्ट के सहन करने की भी कोई सीमा होती है। एक ओर तो यन्त्रणाओं की प्रचण्ड ज्वाला से एक अनाथिनी जल रही हो दूसरी ओर किसी के सहृदय हृदय में सुख पहुंचाने या उस ज्वाला को शान्त करने का स्वप्न भी न आये। आप समझ सकते हैं कि यह कैसी विषमता है निष्टुरता क्रूरता तथा हृदय विहीनता है। इसमें दोष एक व्यक्ति विशेष का नहीं अपितु समस्त समाज का है। जिसकी छत्र छाया में पुरुष स्वछन्द पवन का सेवन कर सकते हैं और स्त्रियां उच्छिष्ट पवन का भी नहीं।

यदि यह कष्ट इतने तक ही सीमित रहते तो भी कदाचित कष्टों की कण्टक-स्थली में दिन रात सह लेती पर नहीं, भगवान को मुझे और भी किन्हीं पूर्वजन्म कृत्य कर्मों का कठोर दण्ड देना था जो उस मारवाड़ी युवक जिसे मैं तो पति मानने धारने और अन्तःकरण से स्वीकार करने के लिये समाज से धर्म से बाध्य हूं। और वह चाहे अपनी छाया भी मुझ पर न पड़ने दे के दूसरे विवाह के रूप में मिल रहा है। यह कार्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरे कष्ट को बढ़ाने वाला नहीं तो क्या है ? "जले पर नमक छिड़कना" और किस चिड़िया का नाम होसकता है। जब ऐसी विषमता समाज के अन्दर ज्वलन्त रूप में विद्यमान हो तो कौन सी सहृदय महिला अपने आपको हिन्दू-समाज में जन्मता हुआ चाहेगी।

आप मेरी इस करुण कथा को पढ़कर कोई विस्तृत रूप में आन्दोलन उठायें जिससे समाज में महिलाओं की दुरवस्था का भी चिन्तन हो सके। मैं तो कष्टों में निरन्तर पली और पलती आरही हूं और अभ्यस्त भी हो गई हूँ सो इसके लिये तो आप तनिक भी चिन्ता न करें और मेरे पति देव की आत्मा को किसी प्रकार से भी ठेस न पहुंचायें। परन्तु मैं अपने आप को अत्यन्त कृतकृत्य समझूंगी यदि आप इस घटना से अन्य मुझ जैसी अबलाओं का समुचित रूप से प्रबन्ध कर दें। मैं तो कष्ट सहते २ अब मंझ सी गई हूँ। (यदि पति देव मेरी और भी परीक्षा लेना चाहें तो भी सहर्ष अनेक कष्ट-समुदाय को सहन करने के लिये प्रस्तुत हूँ उनसे दिये हुए कष्टों की शृंखला मेरे लिये पुष्पों की माला होगी। जिसे मैं विवाह का हार समझ कर अपने कंठ में सादर पहिनूंगी) और क्या लिखूं मेरे इतने ही शब्द जिनके अक्षर२ में यातना, वेदना और अनीति की झंकार सुन पड़ती है। आपकी समाज के हृदय को हिला देने में यदि समर्थ हो सके तो बड़े सौभाग्य की बात है। मैं समझूंगी कि मेरा यह नश्वर भौतिक शरीर तपस्या की अग्नि में तप कर समाज को स्वर्णमय बनाने में लग गया।

अन्त में फिर एक बार आपसे अनुरोध करूंगी कि आप मेरे पति-देव के हृदय को कष्ट न पहुंचायें क्योंकि उन्हीं ही की कृपा से मुझे यह सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

आपकी एक अभागिनी बहिन,

अमृतसर पूर्णी।

ता० २७ नवम्बर १९३३.

अबला की आह !

(ले०—श्री ला० मेलाराम जी, भिवानी)

❋ अत्याचार पीड़ित अबला की आह ❋

यौवन काल न आने पाया पहिले मिला दुहाग।
क्यों न जुल्म जला डालेगा पति व्रत की आग॥
मुरदा हुआ समाज हमारा नहीं जुल्म प्रतिवाद।
धर्म हीन पञ्चों की टाली सुनती नहीं फर्याद।
असली वह भाई चार हैं धर्म काज सिखलात।
पाप कर्म में बने सहायक प्रवल पाप हो जात॥
सहती २ जुलम हाय मैं आज हूई मजबूर।
निगले राहू चन्द्रमुखी को अन्त उडे यशधूर॥
पड़ा पहाड़ विपत का मुझ पै रोती हूं दिन रात।
यह कैसी निर्दयी जाति है कोई न पूछे बात॥
गऊ की रक्षक हिन्दू-जाति है मेरी कौन सहाय।
क्या हिन्दू के नहीं जन्मी मैं होता क्यों नहीं न्याय॥
मारवाड़ वह वीर देश था दिये अबला पै प्रान।
धक्के पड़े आज निज घर से कहां रही वह शान।

पति के प्रेम तथा सहवास में आशा और उमंग की जो लहरें स्त्रियों के हृदय सागर में उठा करती हैं, सुख सम्पत्ति तथा सुसङ्गति प्राप्त करने की जो कामनायें वे किया करती हैं, पति-वियोग के साथ ही वे सब एक दम विलीन हो जाती हैं। किन्तु यह पति वियोग भी निराला ही है। यदि पति का दैवयोग से प्राणान्त हो जाये तब तो नारी अपने भाग्य का दोष और ईश्वरेच्छा समझ कर विवश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथा धैर्य्य धारण करती है और आयु पर्यन्त दुःख मय जीवन भी व्यतीत करने को तथा कड़ी यन्त्रणाओं की प्रचण्ड ज्वाला भी धधकती रहने को समाज के बन्धनों के कारण बाध्य हो जाती है। परन्तु वह अभागिनी किस प्रकार धैर्य्य धारण करे जिसके पति ने उससे न केवल प्रेम व्यवहार का त्याग करके उसके सुकोमल हृदय को आघात पहुंचाया हो, बल्कि बेचारी की छाती पर उसके हार्दिक घावों पर नमक छिड़कने के लिये एक नई जोरू को लाकर बिठा दिया हो ?

जिस देवी को उसकी सास अपनी क्रोधाग्नि में जलाना चाहती हो और पति ने भी अपनी माता के द्वारा नित्य प्रति बहकाये जाने से अथवा व्यभिचार प्रवृत्ति के कारण दूसरी नवबाला से आनन्द प्रेम प्राप्त करने की आशा से त्याग दिया हो उस बेचारी का संसार में हितैषी ही कौन रह जाता है) ! वह अपने दुःख भी रोवे तो किसके सामने ? ऐसी दुःखिनी देवियों के सिर पर विपत्ति के बादल ही मंडराया करते है।

जैसा अत्याचार इस उक्त अभागिन बहिन पर हुआ है ऐसे अत्याचारों से प्रभावित होकर ही सर हरिसिंह गौड़ ने व्यवस्थापिका सभा से तलाक बिल उपस्थित किया था। यद्यपि मैं उस बिल को भारत की सभ्यता का नाशक समझता हूं। किन्तु मैं यह निर्विवाद मानने को तय्यार हूं कि यदि वह बिल स्वीकृत हो गया होता तो ऐसे व्यक्ति की यह सामर्थ्य न होती कि वह अपनी सधवा स्त्री को इस प्रकार विधवा बनाकर बिठादे)।

प्रायः एक स्त्री के होते हुए दूसरा विवाह कराने वाले व्यक्ति कहा करते हैं कि मेरी स्त्री को सन्तान नहीं होती थी, जिसके कारण मुझे दूसरा विवाह करना पड़ा। परन्तु मैं यह पूछता हूं कि क्या वह अपनी स्त्री की किसी सुयोग्य लेडी डाक्टर द्वारा चिकित्सा कराते हैं ? "क्या ऐसा कराने वालों ने कभी अपनी डाक्टरी जांच कराई कि वह सन्तानोत्पत्ति के योग्य है या नहीं"। यदि नहीं तो मैं निस्संकोच कहूंगा कि वह सन्तान का बहाना करके अपनी व्यभिचार प्रवृत्ति के कारण ही दुबारा विवाह करते हैं।

यदि ईश्वर देता तो पहिली स्त्री से ही सन्तान हो सकती थी। उक्त देवी के पत्र से तो यही ज्ञात होता है कि वह देवी ९ वर्ष की लम्बी अवधि में अब तक यह भी नहीं जान सकी है कि विवाहित जीवन का आनन्द किस चिड़िया का नाम है ? फिर सन्तान का बहाना करना केवल अपने पाप को छिपाने के निमित्त एक ढकोसला है। मेरी सम्मति में तो एक विवाहिता स्त्री के रहते हुये दूसरा विवाह करना अर्थात् दूसरी स्त्री का पाणि-ग्रहण करना व्यभिचार की पराकाष्टा है।

मैं उस अत्याचार पीड़ित देवी को वह सम्मति देता हूं कि तुम हमारी जाति की लाज हो। कभी ऐसा न हो कि तुम क्रोध में आकर अथवा अत्याचारों से क्षुब्ध होकर कोई ऐसा कार्य कर बैठो जिससे मारवाड़ी समाज को अर्थात् तुम्हारी जाति को कहीं मुँह दिखानेका स्थान न रहे। यह मैं मानता हूं कि तुम्हारे साथ घोर अत्याचार हुआ है परन्तु फिर भी जाति की लज्जा तुम्हारे हाथ है। जिस प्रकार होसके धर्म-पूर्वक अपने दुःखमय जीवन को व्यतीत करो कभी ऐसा न हो कि तुम 'बुभुक्षितः किंन करोति पापम्' के अनुसार कोई कार्य्य करके जाति को कलङ्कित कर दो।

अन्त में मैं अपने मारवाड़ी भाइयों से सानुरोध प्रार्थना करूंगा कि आप अपना ऐसा सङ्गठन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कीजिये कि भविष्य में अपने मारवाड़ी समाज में ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो सके।

नवयुवको! जाति की उन्नति का भार तुम्हारे कन्धों पर है। भविष्य में तुम जाति के नेता तथा पथ प्रदर्शक बनने वाले हो। संसार में नवयुवकों ने ही भीषण क्रांन्तियां की हैं और बहुधा देशों तथा समाजों के भाग्यों को पलट दिया है। तुम अपने कर्तव्यों का पालन करने लगे हो। यह मुझे हर्ष है परन्तु स्मरण रहे कि अपनी जाति रूढ़ियों की दास बनी हुई है और जब तक जाति में क्रांति उत्पन्न करके जाति की सब कुरीतियों को जड़ से उखाड़ कर फैंक नहीं दोगे तब तक हमारी दुरवस्था का अन्त नहीं होगा और न हम में यह क्षमता आयेगी कि अपनी जाति को सुसङ्गठित कर धनान्ध तथा कामान्ध व्यक्तियों व पिशाचों के भीषण अत्याचारों तथा आक्रमणों का प्रतिशोध कर सकें।

मारवाड़ी नव-युवक दल अमृतसर के स्वीकृत प्रस्ताव

१. मारवाड़ी नवयुवक दल की यह सभा बैजनाथ बागला मालिक फर्म सेठ किशोरचन्द गंगाराम की इस बेजा हरकत को (जो कि उसने पहली स्त्री के होते हुए दूसरा विवाह किया है) घृणा की दृष्टि से देखती है, और जाति से अपील करती है कि वह ऐसे घृणित काम करने वाले के साथ उचित कारवाई करे जिससे आगे के वास्ते ऐसा घृणित कार्य करने का कोई साहस न करे।

२. दल बैजनाथ बागला की पहली स्त्री से हार्दिक सहानुभूति रखता है और बागला की इस कारवाई को अनुचित समझता है। इस विषय में दल यथाशक्ति उसकी सहायता करेगा।

महिलाओं का अपूर्व त्याग

जापान की स्त्रियों में देश व धर्म के प्रति कितनी अगाध श्रद्धा होती है इसका एक छोटा सा उदाहरण क्योटो नगर जो जापान की प्राचीन राजधानी रह चुका है, के सबसे बड़े मन्दिर होशंगजी में देखा जासकता है। लेखक ने वहां स्त्रियों के बालों से बने हुये मटे २ रस्सों का एक ढेर देखा। मन्दिर के मुख्य पुरोहित से मैंने पूछा कि ये खूबसूरत बालों के रस्से यहां किस अभिप्राय से रखे गये हैं। मैं यह सुनकर विस्मित व आश्चर्यित रह गया कि पहले यह सारा मन्दिर आग का शिकार होगया था, उस समय जंगल से लकड़ी के बड़े स्तम्भ लाने की आवश्यकता प्रतीत हुई। इंजिनियरों ने कहा साधारण रस्सों से वे विशाल स्तम्भ पहाड़ी की ऊँचाई सेमन्दिर तक नहीं लाये जा सकते। इस समाचार का अखबारों में छपना था कि सारे देश से लगभग ३०००० स्त्रियों ने अपने लम्बे २ सौन्दर्य के भंडार व आकर्षक केश, जिनका प्रत्येक स्त्री अभिमान करती है, काट २ कर मन्दिर के पुरोहित के पास भेज दिये। उन्हीं बालों से रस्से बनाये गये और मन्दिर का कार्य सम्पन्न हुआ। उनमें से कुछ अब तक भी पड़े हैं।

कूए में डूबने से बची

उज्जैन में एक युवती गृहजीवन के अत्याचार से ऊब कर इरसि के दर्वाजे के एक कूए में कूद पड़ी थी, परन्तु लोगों ने उसे देख लिया था। जब लोगों के यत्न से वह कूए से बाहर आई तो वह डर कर कहती रही कि "मैं घर पर न जाऊंगी, मुझे मेरी सास मारेगी।" यह हमारे गृह-जीवन का चित्र है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूम के मेहमान

(ले०—श्री पं० आत्मानन्द विद्यालङ्कार)

एक बार लखनऊ में एक सूम ने बहुत से मित्रों को न्योता दिया। घर वाली से कह दिया कि देखना सब्ज़ी कटोरियों में थोड़ी थोड़ी डालना और पूरियाँ छोटी छोटी बनाना। पत्नी भी पूरी पतिव्रता थी उसने वैसा ही किया। जब मेहमान आगये तो पंक्ति में सबसे आगे महात्मा सूमजी बैठे। नौकरों ने परोसना शुरू किया। अतिथियों ने सब्ज़ियों, शाकों की स्तुति शुरू की और कहने लगे सेठानी जी पाकविद्या में निपुण हैं क्या छोटी छोटी पूरियाँ बनाई हैं। इतने में सूमजी ने भौं चढ़ाकर नौकर से कहा, (जब वह इनकी थाली में तीसरी पूरी डालने लगा)' 'क्यों बे, तू देखता नहीं, हम इन्सान हैं कि हैवान" खाते ही जावेंगे कुछ देखता भी है। यह सुनकर सेठजी के पीछे बैठे अतिथियों ने भी अपनी अपनी थाली पर हाथ धर दिया। सेठ साहब अपनी सेठानी सहित बहुत खुश हुए जैसे तैसे मेहमान एक दूसरे का मुँह ताकते हुए उठ खड़े हुए और ऐसे जल्दी चले कि घर जाकर ही दम लिया और सबने अपने घर जाकर कहा जल्दी खाना बनाओ। सख़्त भूख लगी है।

भगवान् करे किसी के शिष्य मूर्ख न हों

एक बार एक गुरूजी के पास दो शिष्य आये। दोनों शरीर के हृष्ट पुष्ट थे। गुरूजी ने सोचा अच्छे हृष्ट पुष्ट शिष्य हैं खूब सेवा करेंगे। उन्होंने आते ही गुरूजी से कहा "गुरूजी! हम जो काम करेंगे बाँटकर करेंगे पर यह शर्त है कि एक बार काम बँटजाने पर फिर एक दूसरे के काम में हम में से कोई दखल नहीं दे सकता। गुरूजी ने कहा "ठीक है ऐसा ही होना चाहिये"। यह नियम बांध कर वे गुरूजी की सेवा करते थे। एक दिन गुरूजी बहुत सफ़र करके थक गये और आकर लेट गये शिष्य गुरुभक्त थे, विचारने लगे आज गुरूजी बहुत थक गये हैं आओ एक एक टाँग बाँटलें और अपने २ हिस्से में आई हुई टाँग को दबावें। कुछ देर जब गुरूजी टाँगे दबवाते रहे तो अकस्मात उन्होंने एक टांग दूसरी टांग पर रखदी। शिष्य थे नियम के पक्के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक ने कहा दूसरे शिष्य की दी हुई टांग मुझे सौंपी टांग पर क्यों आई ? यह सोच वह चुपचाप बाहर गया और मोटा सा सोटा उठा लाया और दूसरे को दी हुई गुरूजी की टांग की मरम्मत करने लगा। दूसरा भी कम न था उसने गुरूजी की दूसरी टांग को मोटा करना शुरू किया। गुरूजी ने ज़ोर ज़ोर से चिल्लाना शुरू किया। चेलों ने उनके शोर को अपनी लड़ाई के शोर में गुम कर दिया। बड़ी मुश्किल से पड़ोसियों ने गुरूजी को इन भक्त शिष्यों से छुड़वाया जिस जिस ने यह किस्सा सुना वह हँसता भी था तो रोता भी था पर साथ ही कहता जाता था भगवान् ऐसे शिष्यों से बचावे।

सखीगोष्ठी

(स्थान—लाहौर शहर में बड़े कुटम्बवाली स्त्रियों की बातचीत)

विमला—बहन कमला ! कहो प्रसन्न तो हो। कई दिन से तुम्हारे दर्शन नहीं हुए।

कमला—सच है बहिन गृहस्थी के काम धन्धों में फँसे आदमी को फ़ुर्सत बहुत कम मिलती है। एक बच्चे को बुखार हो गया थ सो न आ सकी।

गिमला—क्यों अब तो वह सकुशल है ? क्या हो गया था ?

कमला—कुछ नहीं। बच्चे हुए कुछ खा पीलिया होगा।

विमला—तो खाते पीते तो सभी हैं। कुछ खेलता भी है कि नहीं ?

कमला—सचमुच बिलकुल नहीं खेलता।

विमला—तुम्हारा घर कहाँ है ?

कमला—शाह-आलमी दरवाज़े के अन्दर एक गली में।

विमला—तभी तो। वहां तो सूर्य देवता के दर्शन भी दुर्लभ हैं। भगवान् ने धूप, प्रकाश, सूर्य की गर्मी सब को मुफ़्त दी हैं पर इस लाहौर ने तो इन पर भी टेक्स लगाया है। जो ४०) ५०) रु० माहवार किराया दे वह शहर के बाहर के मुहल्लों में कुछ अच्छे घर ले सके।

कमला—सचमुच बड़ी कम्बख़्ती है।

विमला—तो फिर छोटे से मकान में बच्चे खेलें कहाँ ?

कमला—हाँ कहाँ खेलें ! बड़ी मुसीबत है। क: [illegible] भी मुश्किल से आती हैं दो छोटी सी बारियां हैं। लाहौर शहर है कि नरक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विमला—तो फिर ऐसे तो हजारों घर शहर के अन्दर हैं। सब के बच्चे अन्दर बँधे रहते होंगे।

कमला—हाँ बाज़ारों में तो खड़ा रहना भी मुश्किल है। हरवक़्त, साईकिल, गाड़ी, टांगा, मोटरों ने बड़ों का, होशवालों का नाक में दम कर दिया है तो छोटे बच्चों का कहना ही क्या? इन मोटरों की तो टांग टूट जाय। जब तक बच्चे घर नहीं आते दिल कांपता रहता है। भगवान् की दया से कब बच्चों के दर्शन हों।

विमला—हाँ तो सच है। यह सोचकर तो मेरा दिल भी काँप उठता है इन में जान टंगी रहती है।

कमला—तुम्हीं बताओ। यही मिलकर सोचें इन बच्चों को खेलने की जगह कहाँ मिले।

विमला—चलो प्रमीला से भी पूछें। उसके ६ बच्चे हैं।

कमला—पूरे आधे दर्जन।

इतने में प्रमीला भी अन्दर आ गई।

प्रमीला—तुम दोनों ही आगयी हो।

कमला—देरी तो तुम्हारी थी।

प्रमीला—इन बच्चों के काम में रोज़ सारा समय बीत जाता है क्या करूँ? आपस में छोटे छोटे बच्चे सारा दिन लड़ते हैं। क्या करें खेलने को जगह भी नसीब नहीं।

विमला—तुम्हारी वहीं से हमारे साथ बेतार की-तार से बात चीत हो रही थी। हम भी यही कह रहा थीं।

प्रमीला—सखियाँ तो बहिनों सी हो जाती हैं उनके दिल बिना देखे भी समाचार भेजते रहते हैं।

कमला—कल एक पण्डित जी भी सत्संग में कह रहे थे एक 'प्रातिभ ज्ञान' होता है बहनें पहले कहदेती हैं आज मेरा भाई परदेश से आयगा यद्यपि उन्हें उसके आने का समाचार और किसी जरिये से मालूम नहीं होता।

विमला—अरी तू तो बड़े ध्यान से सत्संग के उपदेश सुनती है।

प्रमीला—पुराना तरीका भी तो यही है। रात को खा पीकर गप्प शप्प न मारी। सोने से घण्टा पहले रोज़ कथा कहानी, धर्मचर्चा होती रहती अपने अपने कान में कुछ न कुछ पड़ता रहता है। काशी में भी कई बुढ़ियाएँ पण्डितों की बातें सुन सुन जीव ब्रह्म की एकता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और मायावाद की बातें करने लगती हैं।

कमला—तुम्हारी बातचीत का कांटा दूसरी ओर फिर गया। हमारी बात तो बच्चों के खेलने पर चल रही थी।

विमला—ठीक है। सोचो भी। कुछ उपाय तो करना ही चाहिये।

कमला—तो यों करो स्त्री समाज में यह बात पेश करो।

प्रमीला—यह ठीक है। सब बच्चों वाली है। सब के लिये एक जैसी अड़चन है।

कमला—पहले यहीं से कुछ सोचलें नहीं तो स्त्रियां तो कहीं से चलाती है कहीं जा खत्म करती हैं।

प्रमीला—एक तो १ रु० चन्दा मासिक दें। ऐसे २५ घर भी हों २५ रु० हो जावेंगे।

कमला—एक भलामानस, हृष्टपुष्ट, खुशमिज़ाज का पुराना, बालबच्चों वाला व्यायाम मास्टर ढूँढ़ना चाहिये।

प्रमीला—कुछ पढ़ा लिखा भी हो। लड़कों को मालूम हुआ, सिर्फ सिपाही है तो हँसी उड़ावेंगे।

कमला—आठवीं पास तो होना ही चाहिये। संस्कृत पढ़ा हो तो बहुत अच्छा होगा। शाम को एक नज़दीक खुली जगह किराये पर लेकर वहां बच्चों को १॥ घण्टा व्यायाम भी करवाये और संध्या हवन भी। स्कूलों में न तो धर्म शिक्षा का ठीक प्रबन्ध होता है न व्यायाम का। अपने अपने मज़मून सब पढ़ाते जाते हैं।

प्रमीला-विमला—ठीक है। यह तजवीज़ अच्छी है। कल हम ही स्त्री समाज में पेश करेंगी। देखें क्या नतीजा निकलता है?

गायक चोर

एक चोर रात को किसी के घर में घुस गया। वहां उसे गाने का साज सामान दिखाई दिया। चोर गाने का शौकीन था। कई दिनों से उसे साज सामान के साथ गाने का अवसर न मिला था। साज सामान देखते ही वह बेकाबू होगया और साज सामान पर गाने लगा। गाने की आवाज सुनकर घर के आदमी जाग गये। चोर अपने हुनर से पकड़ा गया। तोता और मैना भी अपने गुणों से पकड़े जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्यापकों का आदर करो।

आज कल अध्यापकों के अपने दोष से, शिक्षा पद्धति के दोष से, और बच्चों के माता-पिताओं के दोष से भी अध्यापकों का जैसा आदर होना चाहिए वैसा नहीं होता। अध्यापकों, विशेषतया छोटे बच्चों के पढ़ाने वालों का, आदर बहुत कम होता है। उनके ऊपर मुख्याध्यापक यदि अच्छा हो तो उसका दिल तो चाहता है कि वह अपने आधीन अध्यापकों का आदर करे पर शिक्षा-प्रणाली ही ऐसी चलती है कि अपने अध्यापकों का पूरा आदर नहीं कर सकता। ज़माना बिलकुल व्यापारी भावों से पूर्ण है। हरएक चीज़ का दाम कूता जाता है और शहरों में रहने वाले अध्यापकों को तो इससे बहुत हानि हुई है। बेचारे २०) रु० मासिक से अपने बाल बच्चों का गुज़ारा करने के लिये मजबूर हैं। अब कहिए। उनका मन शांत कैसे रह सकता है। गृह कलह उठना भी अनिवार्य है। इसकी साफ़ छाप इनके छात्रों और छात्राओं के हृदय पर पड़ेगी। बच्चे जैसा अपने अध्यापक का मुख और आँखें देखते हैं वैसे ही उनके मुख बन आते हैं। येतो ऐसे भोले होते हैं। तो भाई ! इस विषय में उपेक्षा करने से अपने बच्चों की ही हानि है। यह हानि आज स्पष्ट नहीं दीखती। कुछ वर्ष बीतने पर स्पष्ट दीखेगी। जब यह सारी जाति में दीखेगी जब हमें होश आयेगा, तब तक तो हमें बहते ही चले जावेंगे। इस लिये माता पिता को अभी से सचेत हो ऐसा उद्योग करना चाहिये जिससे पीछे न पछताना पड़े। इस बात का उन्हें स्वयं दुःख होना चाहिये कि उनके बच्चों के अध्यापकों का पूरा पूरा आदर नहीं होता। अपने शिष्यों के माता पिताओं की ऐसी उच्चभावना देख कर अध्यापकों के हृदय में भी अपने अच्छे कार्य का और बच्चों को उन्नत करने का अधि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काधिक उत्साह होगा। राष्ट्रिय दृष्टि से भी दूसरे देशा के मुकाबिले में अपने देश के अध्यापक अधिक उन्नति दिखा सकेंगे।

उपदेशामृत

इन्द्र परमात्मा तो चलने फिरने हिलने जुलने वाले पुरुष का साथी है

वेद

भगवान् का आसरा अमृत है

यजुर्वेद

चित्त नदी दोनों ओर बहती है, पुण्य की ओरभी और पाप की ओर भी

(भाष्यकार) मुनि व्यास

सुभाषित तो बच्चे से भी सीख लेना चाहिये।

मनु

स्त्री रत्न बुरे कुल से भी ले लेना चाहिये

मनु

अज्ञानी भी बच्चा ही है

मनु

आत्म-बोधन

जाग गया तब सोना क्यारे।

जो नर तन देवन को दुर्लभ, सो पाया अब रोना क्यारे।
ठाकुर (ईश्वर) से कर नेह आपना, इन्द्रिन के सुख होना क्यारे।
जब वैराग्य ज्ञान उर आया, तब चांदी औ सोना क्यारे।
दारा सुवन सदन में पड़के, भार सबों का ढोना क्यारे।
हीरा हाथ अमोलक आया, काँच भाव में खोना क्यारे।
दाता जो मुख माँगा देवे, तब कौड़ी भर दोना क्यारे।
"गिरिधरदास" उदर परे पर, मीठा और सलोना क्यारे।

(गिरिधरदास)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझाने के अनोखे ढंग

सुनते हैं कि गुरु नानकदेव एक वार हरिद्वार गये। प्रातःकाल उन्होंने देखा कि कुछ लोग स्नान करके सूर्य की ओर मुँह करके खड़े हैं। कुछ बोलते जाते हैं और हाथों की अञ्जलि बना उसमें जलभर सूर्य की ओर बड़े प्रेम से छोड़ते जाते हैं। नानक जी भेद समझ गये उन्होंने सोचा जो मैं इनके पास जाकर इनसे कहूँ तुम ऐसा क्यों करते हो तो ये कहीं बुरा न माने और इससे इनका दिल दुखेगा। यह सोचकर वे चुपचाप उनके पास जा पश्चिम की ओर मुँह कर सूर्य की ओर पीठकर अपनी अञ्जलि भरभर पानी फेंकने लगे। यह अजीब काम देख पहले सूर्य की ओर जल छोड़ने वाले सज्जन पूछने लगे भाई तुम यह क्या कर रहे हो? गुरु नानकदेव ने उत्तर दिया "मेरे खेत पंजाब में हैं उन्हें मैं पानी देरहा हूँ" उन्होंने पूछा "आपके यहां से जल फेंकने से क्या पंजाब के खेतों को पहुँचेगा' गुरु नानकदेव ने उत्तर दिया "मेरे प्यारे क्या सूर्य की ओर मुँहकर पानी फेंकने से कहीं दूर, पता नहीं किस जन्म में गये तुम्हारे पितरों को पानी पहुँचेगा" ! यह कहना ही था कि ये लोग समझ गये कि पितरों की ऐसी पूजा से कोई ख़ास लाभ नहीं।

सुनते हैं कि एक वार कबीर गङ्गा के तटपर जल पीने गये। उन्होंने देखा कि कुछ पण्डित लोग गंगा की प्रशंसा कर रहे हैं। खूब श्लोक बोल रहे हैं। कबीर साहब सुनते रहे। थोड़ी देर पीछे पण्डितों को प्यास लगी, पर उनके पास कोई बर्तन न था। कबीर भी अपना कमण्डल लेकर उनके पास पहुँचे और कहा यह लो वर्तन। इससे पानी पी लो। पण्डितों ने कहा तू तो अछूत है, भ्रष्ट है, म्लेच्छ है तेरा बर्तन नहीं लेंगे। कबीर साहब ने कहा आप जो श्लोक ऊँचे बोल कर गारहे थे इनका अर्थ क्या था। पण्डित लोग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में आकर एक दूसरे से बढ़कर गङ्गा की स्तुति करने लगे। कोई कहता था पतित पावनी है कोई कहता था पवित्र जल है, कोई कहता था पापियों को भी पवित्र कर देती है। यह सुनकर कबीर साहब ने कहा हे विद्वानो! आप कहते तो हैं कि यह जल पापियों को पवित्र कर देता है तो क्या यह मेरे लकड़ी के कमण्डल को शुद्ध नहीं कर सकता? यह सुनकर पण्डित लोग एक दूसरे की ओर देखने लगे।

एक खेल

एक तौलिया भिगो लो। एक लोटे में पानी भर कर उस पर तौलिया डालकर तौलिये को लोटे के मुँह पर डाल लो। तले तक आये सिरों को चारों ओर से इकट्ठा कर एक दम लोटे को उलटा दो। देखो पानी नहीं गिरेगा। उलटा मुँह किये लोटे को धूप में किल्ली से लटका दो। घण्टे बाद देखोगे तो पानी उलटे लोटे में पूरा है तौलिया सूख गया है। पानी ठंडा हो गया है।

गिलहरी को वश में कैसे करें।

बच्चो! तुमने गिलहरी देखी होगी। पंजाब में इसे काटो कहते हैं। यह चपलता की मूर्ति है। चञ्चलता का अवतार है। फल कुतर कुतर कर जब खाती है तो बड़ी प्यारी लगती है पर जो इसे पकड़ने जाओ तो यह भाग जाती है। हमारे देश के एक मद्रासी सज्जन ने इंग्लेण्ड के लार्ड ग्रे महाशय से इसका उपाय पूछा। ग्रे महाशय एक प्रसिद्ध मन्त्री थे। अभी हैं, इन्हें पक्षियों, छोटे छोटे जीवों के पालने का बड़ा शौक था। इनका ज्ञान इस विषय में काफी बढ़ा-चढ़ा था। इन्होंने पत्र में गिलहरी को वशमें करने का अपना अनुभूत तरीका बताया है। यह सुनो।

मेरे यहां जंगली गिलहरियां घर के निचले फ़र्श की बारी पर बादाम अखरोट वगैरह के के खाने को चढ़ जाती थीं और कमरे के अन्दर बादाम वगैरह रखदिये जाते थे। इस तरह रोज आते जाते इन गिलहरियों को बादाम आदि के खाने के लिये अन्दर आने की आदत हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गई। मैं जब अपने लिखने की मेज पर अन्दर बैठा होता था तब भी ऐसे ही ये बेखटके आ जाती थीं। तब मैं अपनी कुर्सी के पास मूंगफली वगैरह रख देता था। जब मैं कुर्सी पर बैठा होता तब भी ये कुर्सी के पास से मेवा उड़ा ले जाती। जब ये कुछ दूर उस फल को छिपाने या खाने को जाती तो मैं अपने हाथ की पीठिका धरती पर रख लेता और फर्शपर हथेली रख कर उसपर मेवा रख कर बैठ जाता था। अब मैं बिलकुल निश्चल और चुप बैठता था। पहले तो वह हैरान होती कि हथेली पर बादाम कैसे आगये और डर कर, चौकन्ना हो कर, देख-भाल करती। कभी कभी अपने दांतों से मेरी अंगुली के सिरों को ज़रा छूती और देखती कि यह क्या चीज़ है।

जब इतबार आ जाता तो मज़े मज़े में मेरे हाथ से भी मेवा ले जाती और बार बार यों ही करती। जब फ़र्श पर धरे हाथ से मेवा उठा लेजाने की इसे आदत हो जाती तो मैं अपने हाथ उसी तरह पीठ की ओर ही धरती पर कुछ इंच ऊपर उठा लेता था तब वह पिछली टांग पर हो जाती। अपने अगले पंजों को मेरे हाथ पर धर लेती और मेवा उठा लेती। जब इसकी आदत भी उसे हो जाती तो मैं अपने हाथ को ज़रा और ऊपर उठा लेता। तब वह पिछली टांगों को फ़र्श से ऊपर उठा लेती और मेरी हथेली पर आ बैठती। कई गिलहरियां मेरे घुटनों पर भी आ बैठतीं। मेरी टेबिल पर बादाम, मूंगफली वगैरह पड़ी रहती थी इन्हें मेरे हाथ से ले ले वहीं टेबिल पर मज़े से उड़ातीं। पर इतना इतबार उन्हें न होता था कि मैं अपने हाथ से उन्हें पुचकारता भी। यदि मैं आ खड़ा होता तो वे झट बारी में से बाहर भाग जातीं। आखिर चञ्चल गिलहरी ही ठहरीं और थोड़ी देर बाद फिर अन्दर चली आतीं।

बच्चो! तुमने देख लिया कि लार्ड ग्रे ने कैसा सुन्दर और सरल तरीका गिलहरी को पकड़ने का बताया है। कई लड़कियाँ भी गिलहरी सी चंचल और शर्मीली होती हैं पर मेवा खाने को तो तय्यार रहती हैं न?

जग का ढंग अजीब है।

आज कल मेशीनरी और असमता के युग में एक अमेरिका निवासी ने अपने देश की हंसी उड़ाई है। "हमारे देश में गेहूँ जरूरत से भी ज्यादा हैं पर हज़ारों को रोटी का टुकड़ा नसीब नहीं। हमारे देश में रुई ज़रूरत से ज़्यादा है पर हज़ारों ने चीथड़ों से अपने देह को ढांपा हुआ है। हमारे यहां ईंटें अनन्त हैं पर रहने के घर काफ़ी नहीं। कई काम बिना बने रह जाते हैं पर सैंकड़ों को काम ही नहीं मिलता। सामान पैदा हुआ ढेरों ढेर पड़ा है पर मोल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेने को पैसा नहीं" । कैसा अजीब बँटवारा है । सब कोई तृप्त हो तो संसार में सुख और शान्ति फैलें । क्या तुम तो बाँट कर खाओगे न ?

पहेलियां

१. एक मर्द, मैं देखा जाता, पानी पत्थर पीता खाता ।
मुँह से चुरट पीता जाता, मनों मनों वह बोझ उठाता ॥

२. बाहरी ! कुदरत तेरे काम, बाहर हाड और अन्दर चाम ।

३. एक जान देखी बेजान, बोले है, पर नहीं जबान ।
बाज़ारों में करें व्यापार, सच झूठ वह दे निथार ।
दिन और रात कभी न डरती, सच्ची बात हमेशः करती ।

४. एक जानवर रफ्तः रफ्तः चलते चलते थक गया
लाओ चाकू गर्दन काटें, फिर चलने लग गया ।

५. नीली पगड़ी चावल बद्धाँ,
डीहाँ गोलाँ राती लम्भाँ । मुलतानी भाषा में ।

वह !!

उन्होंने उसे मुझसे छीन लिया ।

यहीं—यहीं वह खड़ा था जहां अब तुम खड़े हो । इसी कुटीर के द्वार में । सुनहरी केश उसके कन्धों को चूम रहे थे । जैसे सांयकाल की रश्मियां हिमाच्छादित गिरि-शिखरों को चूमती हैं और उसकी अधखुली आंखों में मस्ती के जाम छलछला रहे थे । परन्तु अब—

उन्होंने उसे मुझसे छीन लिया है ।

बहुत कठिनता से आया था वह । कितनी ही देर तक मैं गाता रहा । सावन की वर्षा के साथ स्वर मिलाकर, आधीरात के तारों के नीचे बैठ कर, आंखों से आंसू बहाकर, तब वह आया था । परन्तु अब—

उन्होंने उसे मुझसे छीन लिया ।

उसकी ध्वनि देवताओं के आशीर्वाद की जोति मधुर थी । वह बोलता था तो उसके होट यूं कांपते थे जैसे वसन्त समीर में पीपल की पत्तियां कांपती हैं । उसने आकर कहा—मैं तुम्हारा महबूब बनने के लिये आया हूं । मैं तुम पर जादू करूंगा । आह ! अस्तु अब—

उन्होंने उसे मुझसे छीन लिया है ।

वह स्वर्ग का देवता था । वहीं से आया था । वहीं वे लोग उसे वापिस ले गये । उनके पास धन था, सौंदर्य था, संगीत था, यश था । उन्होंने कहा—"इस झोंपड़ी में क्या करते हो ? हमारे साथ आओ" । और अब—

उन्होंने उसे मुझसे छीन लिया है ।

मैं जानता हूं वह वापस नहीं आएगा ! परन्तु फिर भी रोरहा हूं । चाहता हूं— चुप हो जाऊं । परन्तु आंसू थमते नहीं हैं । पुराना गीत एक आह बन गया है । सितार पड़ी है पर बजती नहीं । सोचता हूं—मर जाऊं ! अब जी के क्या करूंगा ? अब जब कि—

उन्होंने उसे मुझसे छीन लिया है !

रणवीर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गन्धर्व लोक

राग हमीर

(तीन ताल)

प्रयुक्त स्वर–दो मध्यम। एक शुद्ध दूसरा तीव्र।

वर्जित स्वर–जब शुद्ध मध्यम लगे तब पंचम वर्जित होता है।

चिन्हितस्वर—तीव्र मध्यम।

आलापस्वर—स ग म ध, नि सं रें सं, नि ध म(त) प ग म रे स।

(गीत)

के ते दिन हरि सिमरण बिन खोय।
पर निन्दा रसना के रस में, अपने कर्म भिगोय॥
तेल लगाये किया तन मर्दन, वस्त्र मल मल धोय॥
तिलक लगाये चले बन स्वामी, ऋषियन के संग जोय॥
सूर अधम की क्या गति होगी, उदर भरे भर सोय॥

संगीताचार्य भगत मंगतराम

हिन्दी संदेश के गन्धर्व-लोक के कालमों में श्रीमती गोपालदेवी जी हिन्दी प्रभाकर आचार्य गोपाल संगीत विद्यालय लाहौर के राग यथाक्रम प्रकाशित होते रहे हैं। यह संगीत-मय राग पुस्तकाकार प्रकाशित किये गये हैं। श्रीमती गोपालदेवी जी ने यह पुस्तक-प्रज्ञाचक्षु श्रीयुत भगत मंगतरामजी को समर्पित की है। इस पुस्तक के संगीत-नीति सुधार ईश्वर भक्ति, देश भक्ति की सात्विक भावनाओं से ओत प्रोत हैं। इस युग में संगीत स्वच्छन्दाचार तथा भोगाचार के साथ ओत प्रोत है। ऐसे समय में श्रीमती गोपालदेवी जी ने यह पुस्तक लिख कर, संगीत प्रेमियों तथा संगीत सीखने और सिखाने वालों के लिये विशेष सुविधा उपस्थित की है। कन्या पाठशालाओं में संगीत की शिक्षा देने के लिये यह पुस्तक विशेष उपयोगी सिद्ध हो सकती है। इस में, संगीत सिखाने के सम्बन्ध में सब आवश्यक निर्देश विस्तार तथा स्पष्टता के साथ प्रतिपादित किये गये हैं।

सरस संगीतज्ञों के मनो विनोद के लिये संगीताचार्य जालंधर निवासी श्री भगत मंगतराम जी का चित्र यहां दिया जाता है। आपके ईश्वर भक्ति के भजन हृदय स्पर्शी तथा मार्मिक होते हैं। पुस्तक म० राजपाल एन्ड संस हस्पताल रोड, से मिल सकती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

	१	२	३	२
ठेका	धा धिं धिं धा	धा धिं धिं धा	धा तिं तिं ता	ता धिं धिं धा
स्वर		म ध नी रें	सं नि ध प	म धप ग म
गीत		के ते दि न	ह रि सि म	र ण बि न
स्वर	ध ध	। ।	म म म	प प प
गीत	खो य	। ।	प र नि	न्दा र स
स्वर	ग ग म	ग रे स	स स सं	ध नि सं रें
गीत	ना के	र स में	अ प ने	क र म भि
स्वर	नि सं नि ध	। ।	प प प	नि ध नि नि
गीत	गो य	. .	ते ल ल	गा ये कि
स्वर	सं सं सं	सं सं सं सं	सं सं नि	ध नि सं रें
गीत	यो त न	म न ध न	व स त्र	म ल म ल
स्वर	नि सं नि ध			
गीत	धो य			

द्रष्टव्य—शेष अन्तरे ऊपर की तरह गाये जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिड़ियों से मैं बाज़ बनाऊँ।
सवा लाख से एक लड़ाऊँ।
तब गुरु गोविन्द कहाऊँ।
(स्फुट पद्य)

विचित्र नाटक के कवि लेखक
श्री गुरुगोविंदसिंह जी

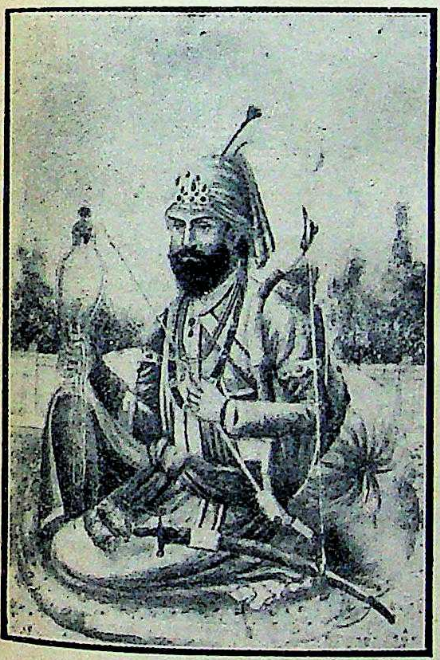

२१ दिसम्बर को आपकी जन्म जयन्ती मनाई गई थी। आपकी रची हुई वीररस की कविता कायरों को वीर बनाती है।

संगीताचार्य
प्रज्ञाचक्षु श्रीयुत भक्त मंगतराम जी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंजाबी बोली दी उन्नति किवें होवे ?

(ले०—श्री हीरासिंह जी दर्द सम्पादक फुलवाड़ी)

एह गल सभ विद्वान् मन्न चुके हन कि कोईकौम या देश अपनी मातृ भाषा बिन उन्नति नहीं करसकदा। एहो कारन है कि हिन्दोस्तान दे सारे सूबे आपो अपनी मातृभाषा दी उन्नति विच जुटे होए हन। ओह आपने बच्चे बच्चियां नूं आरम्भक विद्या आपने सूबे दी मातृ भाषा राहीं देंदे हन अते political राजसी, धार्मिक समाजक आदि सब विषय दीआं पुस्तकां आपो आपनी मातृ भाषा विच रचके प्रकाशित करदे हन ते इस तरह आपनी मातृ भाषा दा साहित्य भंडार भरपूर कर रहे हन। पर एह गल्ल बड़े अफ़सोस नाल कहणी पैंदी है कि पंजाब दी मंदभागी धरती विच अज कल हर इक गल्ल उपर फिरकू रंग चढ़ रिहा है पंजाब वासियां ने बोली दे सवाल नूं वी मजहबी सवाल बणाया होया है। पंजाब दे बहुत सारे आगू ते विद्वान् एह गल्ल तां मन्नदे हन कि पंजाब दी मातृ भाषा पंजाबी है ते इसे दे राहीं सूबे दा भला हो सकदा है पर अखरां दे सवाल ते आके फिर रह जांदे हन। सिक्ख कहिन्दे हन कि गुरमुखी अखर बरते जाण। हिन्दू देवनागरी अखरां नूं चाहुंदे हन। मुसलमान उर्दू अखरां, मगर लग्गे होए हन अते कई इस झगड़े नूं वेखके रोमन अक्खर पेश करदे हन। पंजाब दे फिरकू झमेले ने मातृ भाषा दी उन्नति दे राह विच अक्खरां दे झगड़े दा इक पहाड़ खड़ा कर दित्ता है। मैं एह मन्नदा हां कि पंजाबी बोली वास्ते सभतों चंगी लिपी गुरमुखी है पर मैं गुरमुखी दी लिपी दी खातर आपणी मातृ भाषा नूं पिछ्ह नहीं दे सकदा क्योंकि मैंनूं विश्वास है कि मातृ भाषा दी उन्नति बगैर ना असी किसे तरां दी उन्नति कर सकदे हां ते ना हीं साडी गुलामी दे संगल कट्टे जा सकदे हन।

गुरमुखी अक्खरां दे बाद जिस लिपी विच पंजाबी चंगी लिखी जा सकती है ओह देवनागरी अक्खर हन। देवनागरी अक्खर हिन्दुस्तान दे हर एक सूबे विच प्रचलित हो रहे हन।

पंजाब सूबे दी राजसी, मज़हबी दे समाजक अवस्था नूं मुख रखके अते पिछले कुछ वरिहां दे पंजाबी प्रचार दे तजरबे नूं सामने रखके मेरी एह राय बण गई है कि पंजाबी बोली दी उन्नति देव नागरी लिपी राही छेती ते ज्यादा हो सकदी है। इस कम विच हिन्दू सभा ससाइटियाँ अते इनांदे आश्रमां नूं अगवाई करनी चाहिदी है।

पहिली श्रेणी दी आरम्भिक पढ़ाई देवनागरी अक्खरां अते पंजाबी बोली राहीं शुरू कर देणी चाहिदी है। अते होर इलमी धार्मिक सामाजिक ते राजसी पुस्तकां इसे विच प्रकाशित करणीयां चांहिदोयां हन। एह ठीक है कि सारे पंजाब वासी इस गल नूं प्रवान नहीं करनगे पर जिन्हां दिलां विच आपणी मातृ भाषा दा सच्चा प्यार है अते जिन्हांनूं लिपियां नालों बोली दी वध कदर है। ओह इसनूं जरूर पसन्द करनगे। अते मैंनूं मौजूदा पंजाबी बोली दी निरामता नालों इस तजबीज़ विच वधेरे चानण अते उन्नति दी झलक नजर आउंदी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्तिम घड़ी

(ले०—श्री मायाराम गुप्त शास्त्री, शशांक)

रात के दो बजे थे आकाश में बादल छाये हुए थे। ठण्डी २ हवा चल रही थी। मैं बरामदे में खड़ा आकाश की ओर देख रहा था। आह! मैं नित्य ही तारों को देखकर दिल बहलाता था, पर उस दिन तो आकाश में तारों ने भी मुंह मोड़ लिया था। आकाश में कभी कभी बिजली चमकती थी और मेरे हृदय में जोति का संचार कर जाती थी। मैं इसी हालत में खड़ा था कि सहसा मेरा ध्यान टूट गया। रात्री के भयानक अन्धकार को चीरती हुई एक चीख़ सुनाई दी। वह चीख़ क्या थी? एक दुखिया की दर्द भरी आवाज़। मैंने चीख़ सुनी और उसी ओर बढ़ने का विचार किया परन्तु हा! मेरा एक पैर भी आगे नहीं उठा, वहीं रुक गया। किंकर्तव्य विमूढ़ सा हो कर वहीं खड़ा रहा।

चीख़ फिर सुनाई दी। इस वार चीख़ ने मेरे हृदय में प्रेरणा पैदा की। मैं सँभला और अपनी तलवार ले जिस तरफ़ से आवाज़ आई थो उसी तरफ़ चल दिया। घर से दो फलांग चलकर मैंने देखा कि एक मनुष्य एक सुन्दर युवती का धर्म भ्रष्ट करने को उतारू है।

युवती किसी बड़े घराने की प्रतीत होती थी। ज्यों ही मैं घटना स्थल पर पहुंचा, त्यों ही उस लम्पट-दुष्ट ने क्रोधपूर्ण नेत्रों से देखते हुए कहा,—

"नीच! तेरी इतनी धृष्टता, आह! तू मेरे काम में बाधा डालने के लिये यहां आया है। यदि तू अपना भला चाहता है तो यहां से चला जा, नहीं तो देख, (तलवार दिखाकर) यहां तुझे अपने प्राण गवाने

"पिशाच! नरपिशाच! तेरी इतनी धृष्टता, कि तू एक अबला, सच्चरित्र नारी को मेरे सामने स्पर्श करने को उद्यत हो। यदि जीना चाहता है तो, यहां से हट जा, शक्ति का घमण्ड है तो परीक्षा कर देख ले।" यह कहते हुए मैंने तलवार पर हाथ डाला त्यों ही उस दुष्ट ने ओंठ चबाते हुए अपने पूरे ज़ोर से मुझ पर आक्रमण किया। पर मैंने जल्दी से उछल कर उस वार को बेकार कर दिया। दूसरे ही क्षणमें दोनों की तलवारें रात्री के घोर अंधकार में चमक उठीं। बादलों की गर्जन के साथ बिजली ने भी एक वार उस चमक को देखा। खनन-आवाज़ हुई। इस बार मैंने भी उस पापी पर पूरे ज़ोर से वार किया। उसने इस वार को मेरी मूठ के पास से रोका। खनन—एक बार फिर अन्धकार में गूँज कर लीन हो गई। प्रबल चोट के कारण क्षणभर मेरी आँखें बन्द हो गईं। दूसरे वार के लिये मैंने ज्यों ही हाथ उठाया तो देखा हाथ विद्युत यन्त्र की तरह काम कर रहे हैं। एक वार के सबल प्रहार सहने के बाद भी हाथों में शिथिलता नहीं, बल्कि अधिक स्फूर्ति थी।

इस बार तलवार भी बिल्कुल हल्की मालूम पड़ी। आंख खोलकर ज्यों ही देखा तो केवल दोनों हाथों में पकड़ी हुई तलवार की मूठ शत्रु पर दूसरा वार करने के लिये उठती हुई नज़र आई। और तलवार की पैनी धार पिशाच के दाहिने कन्धे में चार अंगुल धसी हुई दिखाई दी। मैंने उसके कन्धे से वह टूटी हुई तलवार निकाली। दूसरे ही क्षण वह "आह!" कह कर पृथ्वी पर गिरपड़ा। ख़ून की धारा बह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और बिजली ने चमक कर, विजय की सूचना दी।

मैंने उसी प्रकाश में देखा, वह सुन्दरी भय भीत हुई काँप रही है। मैं कुछ देर स्तब्ध खड़ा रहा निस्तब्धता को भंग करते हुए उसने कांपते स्वर से कहा—

"विजयी युवक ? इस के लिये आपको धन्य बाद !—" वह और कुछ न कह सकी। मैंने ज़रा साहस करके कहा, "धन्यबाद की कोई आवश्यकता नहीं, मैंने तो केवल अपना कर्तव्य पूरा किया है। आप अपना पता बताइये। मैं आपको आपके घर पहुंचा दूँगा।"

उसने जबाब दिया 'युवक ! मैं लाहौर के प्रसिद्ध साहूकार लुहारीमल की लड़की हूं। यह पिचाश कई दिनों से मेरी ताक में था। आज मौका पाकर यह पापी कई साथियों के साथ आया और मुझे उठा लाया। उस समय मैं अपने बाग़ में सैर कर रही थी। मैंने बहुत शोर मचाया, बहुत रोई, चिल्लाई भी। परन्तु उस समय किसी ने मेरा रोना न सुना। मेरे साथ एक नौकर था, वह भी परमात्मा जाने कहां चलागया। पता नहीं, इस दुष्ट ने उसे मार दिया या वह प्राणों के डर से कहीं भाग गया। यहां पर आ कर इस दुष्ट ने मेरा धर्म भ्रष्ट करना चाहा, परंतु जब मैं चिल्लाती थी उस समय यह मुझे लोहे के डण्डे से मारता था, इस से मैं केवल दो ही बार चिल्ला सकी। यदि आज आप मेरी दर्द भरी आवाज़ को न सुनते और ऐसे कठिन समय में मुझे न बचाते तो यह नीच मेरा धर्म भ्रष्ट कर देता। हां ! इस समय मेरे पास ज़हर भी न था जिसे खाकर मैं इस से बच सकती। आपके इस महान उपकार के लिये मैं आप को हार्दिक धन्यबाद देती हूं,।

थोड़े से आराम के बाद उस ने अपना नाम "कुसुम" बतलाया। वह कुछ मिनट मेरी तरफ़

दूसरे दिन मैंने कुसुम को उसके घर पहुंचा दिया। जाते समय उसने एक बार सतृष्ण नेत्रों से मेरी ओर देख कर कहा क्या "मोहन", हमारा फिर भी मिलन होगा ?

* * *

जिस दिन से कुसुम अपने घर गई उस दिन से मैं एक तरह के अभाव का अनुभव करने लगा। मैं हमेशा ही किसी की स्मृति में अपने कमरे में लेटे हुए रह रह कर किसी के परिचित शब्दों को दुहराया करता था 'मोहन'! क्या फिर भी हमारा मिलन होगा ?' सहसा लज्जित हो कर चौंक कर करबट बदल लेता और इसे हृदय की कमज़ोरी समझ कर उन विचारों को भुला देने की कोशिश करता। अपने आप को कोशिश में असफल पाकर, उठकर बरामदे में टहलने लगता। जीवन की इतनी बड़ी घटना कैसे भुलाई जा सकती है ?

अपने इस बेबस जीवन से धीरे २ मैं भी उदास हो गया। दिन भर अकेले कमरे में लेटे हुए और चिंता मग्न रहने से यद्यपि हृदय को पूरा सुख प्राप्त था। पर शरीर की दशा शोचनीय हो गई थी, स्वास्थ्य धीरे २ शिथिल होने लगा था। अब वहां कमरे में अकेले बैठे रहना मुझे नहीं भाता था। अब मैं प्रातःकाल और सायंकाल उस रातवाले खुले मैदान में, जो करीब दो फर्लांग दूर था हमेशा टहलने जाने लगा। थोड़ी देर वहीं बैठ कर अपनी स्मृति चिह्नों को खोजता और हरी २ दूब पर कुछ देर बैठ कर वापिस घर आजाता। दोपहर मैं पुस्तकों की अलमारी खोलता। कुछ पढ़ता, जी नहीं लगता, लेट रहता, करबटें बदलता, आँखें न लगतीं, कुछ विचारने लगता, शाम हो जाती। इसी तरह चिन्ता में दिन बीतने लगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर टहलने जा रहा था, तब डाकिए ने एक लिफ़ाफ़ा लाकर मुझे दिया। मैंने कपड़े उतार दिये, और लिफ़ाफ़ा खोलकर पत्र पढ़ने बैठ गया। उस में सुन्दर काग़ज़ पर लिखे हुए दो पत्र थे, जिन की प्रति लिपि यह है।—

लाहौर ४ मई १९३१

प्यारे मोहन,

जिस समय मेरा और आपका मिलाप हुआ था, तब से मेरे हृदय ने आपको अपने में बसा लिया है। मैं तो अब आपके चरणों की दासी हूं, मुझे अपनाइए।

आपकी कुसुम।

* * *

जब मैंने यह चिट्ठी पढ़ी तो मैं .... मुझ को इस बात का स्वप्न में भी ध्यान न था। मैंने पत्र पढ़ा और फिर पढ़ा। एक, दो बार ही नहीं अनेक बार पढ़ा। ज्यों पत्र पढ़ता जाता था, त्यों २ इच्छा प्रबल होती जाती थी। यहां तक की दूसरा पत्र खोलने का भी ध्यान न आया। आख़िर बड़ी कठिनाई के साथ पत्र बन्द हुआ और फिर दूसरा पत्र खोला। वह कुसुम के पिता का था। उस की प्रतिलिपि यह है।

लाहौर ४ मई १९३१

चिरंजीव मोहन,

मेरा, अपनी इकलौती लड़की का सम्बन्ध, आप जैसे सज्जन के साथ ही करने का विचार है। मेरी दृष्टि में तो शायद ही मुझ को आप जैसा योग्य वर मिले। ज्यादा क्या लिखूं, कुसुम का पत्र पढ़ लीजिये।

मंगलाभिलाषी
लुहारीमल

विवाह हो गया, कुसुम ने आकर घर की शोभा बढ़ाई। वही घर जो कभी सुनसान था, आज चहल पहल से जीवित जागृत हो गया था। हम दोनों के दिन बड़े आनन्द से बीतने लगे। एक दिन हम दोनों अपने कमरे में बैठे हुए थे कि इतने में एक मनुष्य, जो देखने में भला सा मालूम पड़ता था, लबादा पहने हुए बड़े अदब के साथ अन्दर घुसा। हम दोनों को बैठे देख उस की आंखें ईर्षा से, प्रतिहिंसा से लाल हो गयीं। उस ने चेहरे पर हंसी प्रकट करते हुए कुछ देर कुशल-क्षेम की बातें की। पर रह रह कर वह कुसुम की ओर देख रहा था। अचानक उसके लबादे के बड़े से छेद में से पिस्तोल के दो फायर हुए। पहला निशाना कुसुम के पांवों के पास ज़मीन में लगा और दूसरा बड़ी सावधानी से—उसी क्षण—उस की छाती में! वह ज़ोर से चीख़ पड़ी "अहो" अब उस की पिस्तौल खाली हो गई थी। मैंने भी आवेश से अन्धे हो कर सिराहने से अपनी पिस्तोल निकाली और दो फ़ायर उस के दाहिने हाथ पर—फायर करने वाले हाथ पर.........................

...उस क्रूर हाथ पर-किये। पहला उसकी भुजा में लगा, और दूसरा कंधे के पास छाती से छूता हुआ। वह गिर पड़ा। मैं मूर्छित कुसुम के पास जा बैठा और उसे हवा करने लगा। उस ने आंखें खोलीं और एक बार कातर दृष्टि से देखते हुए कहा, "मोहन!" और सदा के लिये सो गई। आह! वह हमारे जीवन की अन्तिम घड़ी थी और उस समय घड़ी में पूरे दो बजे थे।

———

सूचना

हिन्दी संदेश का आगामी अङ्क हिन्दी-रत्न परीक्षा नम्बर होगा।

मैनेजर
हिन्दी सन्देश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी परीक्षा मन्दिर

बिहारी—परिचय

(श्री जगन्नाथदास रत्नाकर बी. ए.)

कई एक महाशयों ने बिहारी पर उनके जीवन चरित्र सम्बंधी अथवा उनके गुणदोष-निदर्शनार्थ कुछ लेख इत्यादि भी समय समय पर लिखे हैं। उनका कुछ विवरण नीचे लिखा जाता है—

ऐसे लेखों के विवरण से हमारा अभिप्राय उनमें कही हुई बातों के उचित अथवा अनुचित कहने का नहीं है। क्योंकि इस कार्य के निमित्त तो एक बृहत् स्वतन्त्र लेख की आवश्यकता है, और यहाँ उसका विशेष रूप से कहना अतिप्रसंग भी हो जायगा। हमारा तात्पर्य यहाँ ऐसे लेखों के संक्षिप्त विवरण द्वारा उनका तथा उनके लेखकों का परिचय दे देना मात्र है जिनमें बिहारी के पाठकों को तद्विषयक सब साहित्य का पता, जहाँ तक हमको ज्ञात है, मिल जाय और वे स्वयं उन लेखों के औचित्यानौचित्य पर विवेचना कर सकें।

पंडित अंबिकादत्तव्यासजी ने जिस संस्कृत गद्य टीका का उल्लेख बिहारी बिहार की भूमिका में किया है उसमें यह एक दोहा सतसई की प्रशंसा का है—

सतसैया के दोहरा ज्यों नावक के तीर।
देखत अति छोटे लगैं घाव करैं गंभीर॥

यह दोहा पहले पहल उक्त टीका ही में देखने में आता है, इसके पूर्व के किसी ग्रंथ में इसका पता नहीं है, यद्यपि मुखाग्र यह बहुत सुनने में आता है और पिछले लेखकों ने इसको अपने लेखों में भी

संवत् १८६१ में ठाकुर कवि ने देवकीनंदन की सतसैयावर्णार्थ नामक टीका के आदि में बिहारी का कुछ विशेष बृत्तांत वर्णन किया है तथा सतसई की कुछ प्रशंसा भी की है। उन्होंने सतसई को बिहारी की स्त्री की बनाई हुई माना है। उनके लेख का विशेष वर्णन बिहारी की जीवनी में द्रष्टव्य है।

संवत् १९५३ में डाक्टर सर, जी० ए० ग्रियर्सन, के० सी० एस० आई०, सी० आई० ने, जो कि भाषा के बड़े विद्वान् तथा अनुसंधानकर्त्ता थे, अपनी लालचन्द्रिका के संस्करण की भूमिका में, अँगरेजी भाषा में, बिहारी पर एक बृहत् लेख लिखा है। उसमें उन्होंने बिहारी के विषय में तथा सतसई की टीकाओं इत्यादि के विषय में, जहाँ तक उनको अनुसंधान से ज्ञात हो सका, बहुत कुछ लिखा है और बिहारी की रचना की बड़ी प्रशंसा की है। उन्होंने यहाँ तक कहा है कि, अँगरेज़ी भाषा का कोई मुक्तक काव्य करने वाला बिहारी की समता नहीं कर सका है; बिहारी के दोहों की रचना कुछ ऐसी है कि उनको अन्य भाषा में यथेष्ट रीति पर अनुवादित करने की चेष्टा करना सर्वथा व्यर्थ है।

संवत् १९६७ में मिश्रबन्धु महाशयों ने बिहारी को हिंदी-नवरत्न नामक ग्रंथ में चौथा स्थान देने का गौरव प्रदान किया। उक्त प्रबंध में उन्होंने बिहारी की जीवनी भी लिखी है और बिहारी को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रत्न में व्याप्त प्रशंसा की गई हैं, और उसके शब्द अर्थ, भाव, उक्ति, युक्ति, सूझ, बूझ सभी श्रेष्ठ बतलाए गए हैं; कुछ विशेष दोहों के संबन्ध में विशेष गुणों का कथन भी किया गया हैं। उक्त महाशयों ने, अपने अर्थबोध तथा मत के अनुसार, बिहारी के कुछ शब्दों, भावों इत्यादि में कुछ दोष भी बतलाए हैं, जो बिहारी के प्रेमी पाठक स्वयं उस ग्रंथ में देख सकते हैं। चाहे मिश्रबन्धु महाशयों का बिहारी तथा देव में तारतम्य करना एवं उनके गुणों तथा दोषों के आरोप यथार्थ समझे जायँ अथवा अन्यथा, पर उनके उस समय तक की लेख प्रणाली से कोई आग्रह अथवा पक्षपात लक्षित नहीं होता।

उक्त प्रबन्ध में जो ७ दोहे सतसई की प्रशंसा के बिहारी रचित कहकर रखे गए हैं वे वास्तव में बिहारी के नहीं हैं। मिश्रबन्धु महाशयों ने प्रभुदयाल पांडे जी की टीका के दोहांक इत्यादि अपने प्रबन्ध में आदृत किए हैं पर उस टीका में भी इन ७ दोहों में से केवल २ दोहों को एक स्थान पर भूमिका में बिहारीकृत कहा है। पर फिर अंत में ये सातों दोहे सतसई की प्रशंसा में एकत्र रक्खे हैं जिससे यह स्पष्ट विदित हो जाता है कि पांडे जी भी इन दोहों को बिहारीकृत नहीं समझते थे, और भूमिका में केवल २ दोहों के विषय में उनको भ्रम हो गया था।

मिश्रबन्धु महाशयों का सतसई को भलि भांति जी लगा कर न देखना ही इस असावधानी का कारण प्रतीत होताहै। उक्त महाशयों के बतलाए हुए सतसई के दोषों में से अधिकांश दोषारोप भी इसी असावधानी के परिणाम कहे जा सकते हैं, जैसे "दुसह बिरह दारुण दसा इत्यादि" (प्रभुदयाल अंक ४२१ दोहे में 'ज्यौं' शब्द का पाठ पांडे जी के अनुसार उन्होंने 'ज्यौं' मानकर और उसका अर्थ 'ज्यो त्यों' समझ कर बिना अन्य किसी टीका के देखे ही दोषारोप कर दिया है। यदि उक्त महाशय हरिप्रकाश अथवा लालचंद्रिका इत्यादि किसी टीका में इस दोहे को देखने का कष्ट उठाते अथवा स्वयं ही कुछ विचारते तो कदापि न करते। (क्रमशः)

नागरी प्रचारिणी पत्रिका।

प्रतापप्रतिज्ञा

(साहित्य कराची)

प्रताप—हिन्दूशिरोमणि महाराणा प्रताप पवित्र सीसौदिया वंशावतंस राणा उदयसिंह के पुत्र थे। जगमल के पश्चात् चित्तौड़ की गद्दी के उत्तराधिकारी बने। अकबर की आधीनता स्वीकार न करने पर इन्हें अनेक दुखों का सामना करना पड़ा। परन्तु राणा ने अपना सर्वस्व खोकर भी जंगलों में भूखे प्यासे नंगे पैर स्त्री बच्चों समेत भटकते हुए भी मातृभूमि के प्रति अकबर से भीषण युद्ध करते रहे। और अनेकों बार स्वतन्त्रता देवी की बलिवेदी पर असंख्य यवनों की आहुतियां दीं। जिसका प्रमाण आज भी मेवाड़ की घाटी २ पर प्रस्तुत है। प्रताप की प्रचण्ड देश भक्ति, अखंड-स्वाधीनता प्रेम, अमर-वीरता, अटल स्वाभिमान, तथा उज्वल त्याग और कठोर तपस्या जगत्-विख्यात है।

चन्द्रावत—पवित्र भूमि मेवाड़ के प्रजा-प्रतिनिधि थे। इनका चन्द्रावत कृष्ण के नाम से भी [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष से रक्षा किये हुए गौरव को गौरव प्रदान करने में ही अपने जीवन का मुख्य लक्ष्य समझते थे। प्रताप के तमाम वीरोचित कार्यों में आपका अग्रगण्य ध्येय रहा था। प्रताप के सिर से मुकुट लेकर अपने सिर पर रख युद्ध की धधकती ज्वाला में स्वयं आहुति बने। परन्तु प्रतापी प्रताप के प्राणों की रक्षा कर अपना नाम अमर कर गये।

पुरोहित—आधुनिक ब्राह्मण-समाज की ओर देखते ही, एक सर्वोत्कृष्ट आदर्श पर बिना दृष्टि डाले रहा ही नहीं जाता। जिसने केवल क्षणिक भ्रातृ-द्वेष को भी सहन न किया। और यह कह कर कि भविष्य काल के पुरोहितों के निमित्त यही एक उत्तम अवसर है कि अपने बचे राज्य तथा स्वामिभक्त होने का पूर्ण परिचय दें। प्रताप तथा शक्तसिंह की लड़ाई के मध्य अपने पेट में स्वयं छुरा भोंक कर मर गया। आज दीन हीन भारत को ऐसे वीर पुरोहितों की आवश्यकता है।

भामाशाह—यह वैश्य जाति का एक महान् पुरुष था। जिसके पिता-पितामह आदि का सम्पूर्ण जीवन राजस्थान मेवाड़ में सुख तथा शांति में व्यतीत होचुका था। इसने अनन्त पैतृक सम्पत्ति को अपनी प्रतिभा तथा हस्तकौशलता से और भी चमका दिया। भामाशाह के जीवन का लीला पट परिवर्तन होने वाला था कि इसने अपनी तमाम जीवनोपार्जित सम्पदा को प्रतापी प्रताप के चरणों में कर्त्तव्य समझ कर अर्पण कर दिया। इसके द्वारा प्रताप २५ वर्ष तक यवनों को सर्वोन्नत पताका वाली असंख्य सेनाओं का रक्त पानी की भाँति बहा कर अपनी प्रचंड चंडिका की तीक्ष्ण प्यास बुझाते रहे। यहां तक कि चित्तौड़ को छोड़ अन्य सभी जंगली अवान्तर प्रान्त यवनों से पुनः तलवार की धार से वापिस लेने में समर्थ हुये। वीर भामाशाह ने अपना जीवनसंचितधन पानी तथा पुष्पों की भांति स्वतन्त्रता देवी पर मुग्ध होकर अर्पित दिया। इसकी अमर कीर्ति आधुनिक अर्थ पिशाचों की रक्त रंजित आंखों का एक मात्र प्रकाश है।

शिवाबावनी

(ले० भीमसेन विद्यालङ्कार)

शिवाबावनी का महत्व केवल मात्र हिन्दी परीक्षाओं की नियत पाठविधि में नियत होने के इलावा जातीयता तथा साहित्यिक दृष्टि से भी है। हिन्दी साहित्य में यह ग्रन्थ अपने ढंग का एक ग्रन्थ है। शृंगार तथा भक्ति प्रधान हिन्दी साहित्य में शिवाबावनी के पद्य जगमगाते हीरे हैं। इसके रचयिता महाकवि भूषण हिन्दी साहित्य में वीर रसमयी कविताओं के लिये विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं। महाकवि भूषण के अन्य काव्यों में भी स्थान स्थान पर वीररस का संनिवेश है, परन्तु शिवा-बावनी में एकमात्र वीररस संनिवेश, इसे निर्बल हिन्दू जाति के लिये विशेष उपयोगी बनाता है। यदि महाकवि भूषण ने केवलमात्र शिवा-बावनी के ५२ पद्यों का ही निर्माण किया होता—तो यह पद्य ही उन्हें हिन्दी के महाकवियों की श्रेणी में सम्मिलित करने के लिये पर्याप्त थे।

शिवा-बावनी के महाकवि भूषण, छत्रपति शिवा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रण संग्राम में जाने वाली सेनाओं को उत्साहित करने के लिये, मदिरा मस्तानी बोतलों के स्थान पर, भूषण की ओजस्विनी कविताओं का प्रयोग किया जाता था। कवि तथा कविता अपने समय के प्रतिबिम्ब चित्र होते हैं।

यह स्थापना भूषण कविकी कविता में चरितार्थ दिखाई देती है। यदि हम इस वीर काव्य का रसास्वाद करना चाहते हैं तो हमें इन पद्यों को कण्ठाग्र कर लेना चाहिए। इन पद्यों में भाव तथा अर्थ की उत्तमता के साथ २ शब्दों की गूंज अपना विशेष महत्व रखती है। कण्ठाग्र पद्य जिस समय रंग मंच पर, अनुकूल हाव भावों के साथ गाये जाते है, उस समय वीररस जीवित जागृत रूप में श्रोताओं के सामने उपस्थित होता है। शब्दार्थों को जानने के लिये शब्दकोष देखने की आवश्यकता नहीं रहती। पद्यों की शब्द-झनकार अर्थध्वनि को व्यक्त करती है।

हिन्दू राष्ट्रीयता की दृष्टि से हमारी सम्मति में यह ५२ पद्य जातिके लिये उत्तेजन-वाक्य तथा मंत्र वाक्य का कार्य दे सकते हैं। शिवा-बावनी का संक्षिप्त परिचय यहाँ दिया जाता है।

शिवाबावनी का निर्माण कालः—यह स्फुट पद्य कब लिखे गये। साधारण तया कवि लोग अपने काव्य ग्रन्थों में ग्रन्थ निर्माण का काल लिख दिया करते हैं। परन्तु इस शिवाबावनी स्फुट ग्रन्थ में कविभूषण ने ग्रन्थ निर्माण काल नहीं लिखा। इस ग्रन्थ का निर्माण काल निश्चित करने का एक मात्र साधन, पद्यों का प्रतिपाद्य विषय है। प्रतिपाद्य विषयों से पता लगता है कि यह पद्य सन् १६७४ ई० में शिवाजी के राज्य मिलने के बाद निर्माण किये गये थे। यह पद्य "वेद राखें"...... "देव राखे, देवल स्वधर्म राखो घर में, भोरदेत असिस तिहारे भुजदण्ड का.........इस बात को ध्वनित करते हैं कि जिस समय यह पद्य रचे गये थे उस समय शिवाजी अकण्टक स्वराज्य स्थापित कर चुके थे।

शिवाबावनी के अलंकारः—शिवाबावनी में मुख्य तया निम्न लिखित अलंकारों का प्रयोग किया गया है। अनार्लापिका, उपमालंकार, अनुप्रास। अपह्नुति। यमक। भ्रमालंकार। विषमालंकार। रूपक परिकर। अर्थापत्ति। प्रश्नोत्तर।

यह अलंकार शिवाबावनी में किस प्रकार कहां प्रयुक्तकिये गये है इसका अलंकारों के लक्षणों के साथ सोदाहरण विवेचन अगले लेख में किया जायगा। छन्द शिवा बावनी में—कवित्त मनहरण, मालतीसवैया और छप्पय इन तीन छन्दों का ही उपयोग किया गया है। अतः इनके लक्षण नीचे दिये जाते हैं।

कवित्त मनहरण—यह वर्णिक छन्द है। इसको घनाक्षरी भी कहते हैं। इनके प्रत्येक चरण में ३१ वर्ण होते हैं। १६ और १५ अक्षरों पर विराम होता है तथा अन्त का अक्षर दीर्घ होता है।

मालती सवैया—इनमें सात भगण और दो गुरु होते हैं।

छप्पय—यह मात्रिक छन्द है। इसमें ६ चरण होते है। पहले चार चरणों में २४—२४ मात्राएँ होती हैं और प्रत्येक चरण में ११ वीं और १३ वीं मात्रा पर विराम होता है। अन्तिम दो चरणों में १५ और १३ पर विराम होता है।

भूषण की जीवनी

कविवर भूषण का जन्म सन् १६१४ ईसवी में त्रिविक्रमपुर (तिकवांपुर) ज़िला कानपुर में हुआ था। इनके पिता रत्नाकर जी कान्यकुब्ज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(जटाशंकर) नामक तीन भाई भी थे। ये मतिराम वे ही प्रसिद्ध मतिराम हैं, जिनका काव्य-रसिकों में अच्छा मान है। कहा जाता है कि बचपन से ही इन की प्रकृति में उद्दण्डता भरी हुई थी। पढ़ने लिखने में इनका जी नहीं लगता था। एक दिन भोजन बैठे तो इन्हें किसी चीज़ में नमक कम प्रतीत हुआ। अतः इन्हों ने भाभी से थोड़ा नमक माँगा। इस पर भाभी ने झुँझला कर कह दिया 'बहुत सा कमा कर रख दिया है न, जो लाकर दे दूं'। इस ओछी बात को भूषण की स्वतन्त्र और आत्माभिमानी प्रकृति न सह सकी। उन्होंने उसी समय भोजन छोड़ दिया और कह कर कि अच्छा भाभी अब तुम्हारे चौके में तब ही भोजन करेंगे जब नमक कमा कर ले आयेंगे, घर से प्रस्थान किया। तब से इन्होंने बड़े मनोयोग से विद्याध्ययन आरम्भ किया। प्रतिभाशाली तो थे ही, कुछ ही दिनों में इनकी कवित्व शक्ति विकसित हो उठी और ये काव्य रचना में प्रवृत्त हुए।

एक बार घूमते फिरते ये चित्रकूट नरेश के पुत्र रुद्रराम सोलंकी के यहां पहुंचे। वे इनकी अद्भुत कवित्व शक्ति देख कर अत्यन्त प्रसन्न हुए और इन्हें कवि भूषण की उपाधि दी, तब से ये भूषण ही कहे जाने लगे, यहां तक कि इनके वास्तविक नाम का अब पता भी नहीं लगता। यहां से ये छत्रपति शिवाजी के दरबार में गये। कहा जाता है कि शिवाजी ने पहिली भेंट में ही इनकी कविता से प्रसन्न होकर इन्हें १८ लाख मुद्रा, १८ हाथी और १८ गांव दिये। तदनन्तर चिरकाल तक ये उनके पास ही रहे और इसी बीच में 'शिवराज भूषण' बनाया।

जब भूषण जी घर लौटने लगे तो मार्ग में छत्रसाल बुन्देला के यहाँ पहुंचे। उन्होंने इनका बड़ा आदर किया, यहाँ तक कि चलते समय इनकी पालकी का डण्डा अपने कन्धे पर रख लिया। यह देख पड़े और मुक्त कण्ठ से छत्रसाल के गुण गाने लगे। इनके छत्रसाल विषयक छन्द 'छत्रसाल दशक' नाम से प्रसिद्ध हैं।

इसके उपरान्त कुछ काल घर रह कर इधर उधर भ्रमण करते हुए पुनः शिवाजी के दरबार में गये। सन् १६८० ई० में शिवाजी का स्वर्गवास हो जाने के पश्चात् कभी छत्रसाल बुन्देला के पास और कभी शिवाजी के पौत्र साहूजी के पास आते जाते और सन्मान पाते रहे। अन्ततः लगभग १०२ वर्ष की दीर्घायु भोग कर परलोक सिधारे।

विद्यार्थियों को शुभ सूचना। श्रीयुत कविराज रामलाल जी अग्रवाल, जिनके विद्वत्तापूर्ण लेख हिंदी सन्देश के पाठक समय समय पर पढ़ते रहे हैं। उन्हों ने हिन्दी परीक्षार्थियों की सहूलियत के लिये शिवाबावनी की सरल टीका की है। वह पुस्तकाकार प्रकाशित हो गई है। पुस्तक में पद्यों के अप्रयुक्त कठिन शब्दों के अर्थों के साथ २ भावार्थ तथा अलंकार दिगदर्शन भी कराया गया है। पुस्तक का मूल्य ।) है। पुस्तक सूरी ब्रादर्स मोरी गेट लाहौर से मिल सकती है।

हमें यह समाचार प्रकाशित करते हुए भी प्रसन्नता होती है कि श्री रामलाल जी अग्रवाल ने इस वर्ष अखिलभारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन की मध्यमा परीक्षा प्रथम विभाग में उत्तीर्ण की है। लाहौर में प्रथम वार ही सम्मेलन परीक्षाओं का केंद्र खुला है। हम इस सफलता पर भी रामलाल जी को बधाई देते हैं तथा आशा करते हैं कि वह हिन्दी प्रचार की दृष्टि से अन्य हिन्दी विद्यार्थियों को भी सम्मेलन की परीक्षाएं देने के लिये उत्साहित करेंगे। योग्यता की दृष्टि से सम्मेलन की मध्यमा परीक्षा देने वाले विद्यार्थी पंजाब युनिवर्सिटी की हिन्दी प्रभाकर परीक्षा बिना किसी कठिनता के देसकते हैं।

सम्पादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्तर्राष्ट्रीय विचार धारा

विद्यार्थियों का सार्वभौम राष्ट्र

आज कल संसार के अनेक विचारक विश्वराष्ट्र की कल्पना को सत्य-घटना का रूप देने का यत्न कर रहे हैं। संसार के प्रसिद्ध ऐतिहासिक विद्वान् एच जी वैल्स ने "History of the future" भविष्य का इतिहास, नाम का ग्रन्थ प्रकाशित किया है। इस का उद्देश्य संसार में विश्वराष्ट्र स्थापित करना है। इसी उद्देश्य को पूर्ण करने के लिये न्यूयार्क की न्यू हिस्ट्री सोसायटी ने "स्कूलों और युनिवर्सिटी के विद्यार्थी विश्वराष्ट्र की कल्पना को क्रियात्मक रूप देने में क्या सहायता दे सकते है" ? इस विषय पर युरोप के शिक्षणालयों के विद्यार्थियों को निवन्ध लिखने के लिये निमंत्रित किया गया था। भिन्न २ देशों से ४०० निवन्ध प्राप्त हुए हैं। निम्न लिखित देशों के विद्यार्थियों ने यह भाव प्रकट किये ।

(१) राष्ट्रों को उपनिवेश बनाने की नीति छोड़ देनी चाहिए। क्यों कि इस नीति से राष्ट्र उपनिवेशों के मूलनिवासियों को नुक़सान पहुंचा कर स्वयं समृद्ध होते हैं।

बैलजियम

(२)हमें सब प्रकार की सैनिक-सेना या फौजी नौकरी करने से इनकार कर देना चाहिये ।

बलगेरिया

(३) संसार की एक भाषा होने से ही भिन्न २ राष्ट्र एक राष्ट्र बन सकते हैं। एक भाषा के माध्यम से राष्ट्र एक दूसरे को समझ सकेंगे।

एस्तोनिया

जब तक संसार का लोक मत, शस्त्र तथा युद्ध वाद की निन्दा सगठित रूप में नहीं करता तबतक युद्ध जारी रहेंगे।

इंगलैण्ड

राष्ट्रों को—मनुष्य-समाज को जीवित रखने के लिये अपना पृथक् आस्तित्व मिटा देना चाहिए।

फ्रांस

हमारा उद्देश्य विश्वशान्ति और विश्वराष्ट्र स्थापित करना है। हमें इस उद्देश्य की पूर्ति में जुट जाना चाहिए और विश्वशान्ति के वीर बन जाना चाहिये।

जर्मनी

नवयुवकों को विश्वराष्ट्र का नागरिक बनने की प्रेरणा करनी चाहिये।

हौलैन्ड

जब तक राष्ट्र में अनियमित शासन सत्ता तथा निर्वाध स्वतन्त्रता की सत्ता विद्यमान है तब तक विश्वराष्ट्र का स्थापित करना असम्भव है।

हंगरी

सैनिकवाद से सहानुभूति रखने वाले प्रोफ़ेसरों तथा व्याख्याताओं का बायकाट करो। युद्ध के विरोध में भारी भयंकर आन्दोलन जारी करो।

इटली

कालेजों तथा स्कूलों के विद्यार्थियों को अन्तर्राष्ट्रीय-विद्यार्थी संघ में संगठित होना चाहिए।

लिथुनिया

हरेक मनुष्य अपने आपको विश्वराष्ट्र का नागरिक समझे।

पौलैण्ड

हम विद्यार्थी संसार में अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्या-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लय स्थापित करने की आवश्यकता को अनुभव करते हैं। चीन

हरेक युवक को पथ प्रदर्शन तथा त्याग का भाव हृदयों में जगाना चाहिए। स्विटजलैंण्ड

\+ \+ \+

मज़दूरों का सार्वभौम संगठन

वम्बई नेशनल ट्रेड यूनियन फैडरेशन का प्रथम अधिवेशन 'अमृत बाजार पत्रिका' के सम्पादक श्री मृणालकान्त घोष की प्रधानता में मनाया गया। प्रधान की हैसीयत से श्रीयुत घोष ने निम्न भाषण दिया—

"मजदूरों का आन्दोलन अन्तर्राष्ट्रीय आन्दोलन है। चाहे मज़दूर अन्य बातों में एक दूसरे से पृथक-पृथक हों, 'किन्तु संसार के मज़दूरों संगठित हो जाओ' इस वाक्य के अनुसार सभी इसके भाव से सहमत हैं। अन्तर्राष्ट्रीय मज़दूर कानफरेन्स के प्रयत्नों द्वारा प्रायः सभी देशों के मज़दूर एक दूसरे के समीप आ गये हे। परन्तु पूंजीपतियों के लगातार आक्रमणों से मजदूरों का यह संगठन छिन्न-भिन्न हो रहा है।

जर्मनी और इटली में पूंजीवाद ने अपना दूसरा बाना पहन रखा है और वह पूंजीवाद साम्ययाद के सिर पर सवार है। इंगलैंड में भी साम्यवाद को बड़ा धक्का पहुंचा है। इंगलैंड का साम्यवादी प्रधानमन्त्री अपनी शक्ति से साम्यवाद के प्रचार में सहायता नहीं पहुंचा सका। रूस को छोड़कर सारे यूरोप में पूंजीवाद प्रायः फिर से साम्यवादी मजदूरों के सिर पर सवार हो रहा है। भारतवर्ष में अन्य देशों की भांति मजदूरों के आन्दोलन को अपनी शैशवावस्था में होने के कारण बड़ा धक्का पहुंचा है। अभी निःशस्त्रीकरण कानफरेन्स की बातालाप की भयंकर बातों की चर्चा सुनाई दे रही है। मज़दूर लोग भावी महायुद्ध की सम्भावना को नहीं रोक सकते। वर्तमान आर्थिक दुरवस्था के ऐसे विकट समय में क्या भावी युद्ध रुक सकता है? वह केवल उसी हालत में रुक सकता है जब कि मजदूर लोग संगठित हो कर एक दूसरे की सहायता करें। संसार भर के मजदूरों ने साम्यवाद के सिद्धान्तों को स्वीकार किया है, परन्तु इन सिद्धातों को राष्ट्रीयवाद या पूंजीवाद की महत्वाकांक्षाओं ने छिपा दिया है।

करोड़ों दरिद्र लोगों से बसा हुआ भारतवर्ष साम्यवादी सरकार की स्थापना के लिये एक उत्तम क्षेत्र ही नहीं है, बल्कि साम्यवादी सरकार की स्थापना ही भारतवर्ष को दरिद्रता और अधःपतन के दल-दल से छुटकारा दिला सकती है। यदि ब्रिटेन या यूरोप राष्ट्रवाद अथवा पूंजीवाद की भावनाओं से प्रेरित होकर अपने मुल्क का उत्थान करना चाहे, तो संसार के मजदूरों का कभी भी संगठन मानसिक अथवा अन्य किसी प्रकार की रुकावटों से रक्षित नहीं होना चाहिये।

परन्तु अब पूंजीवाद का अन्त होना ही चाहता है। अब यह अपनी अन्तिम शक्ति पर सड़ रहा है। विश्वआर्थिक कानफरेन्स असफल हो चुकी है, इसी प्रकार निःशस्त्रीकरण कानफरेन्स भी हो गयी है। प्रेज़ीडेण्ट रुज़वेल्ट इन दिक्कतों से छुटकारा पाने वाली अपनी एक स्कीम को आगे रख रहे हैं। चीज़ों की दर इससे अधिक न गिरे, इस कारण खाद्यपदार्थों को नष्ट किया जा रहा है। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार अपनी चरम सीमा तक पहुंच गया। पदार्थों की प्रचुर पैदायश से लोग स्वयं मर रहे है।

जब तक पूंजी और मजदूरी दो पृथक २ वस्तुयें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं रहेगा। अतः पूंजीवाद का नाश करना ही हमारा उद्देश्य व कार्य की समाप्ति है। संसार की घटनाओं के सिलसिले में पूंजीवाद स्वयं ही, जैसे कि सम्प्रति कई घटनाओं से इस का अधःपतन हो रहा है, नाश हो जावेगा। परन्तु साम्यवाद ने संसार में मनुष्य मात्र को एक ऐसी गुलामी के बन्धन से मुक्त करना है जो बहुत अर्से से अपना जाल जकड़े हुये है।

हिंदी प्रचार-समाचार

दक्षिण भारत हिन्दी-प्रचार-सभा के तृतीय समावर्त्तन संस्कार में, जो सजे हुए विशाल गोखले-हाल में हुआ, म० गांधी ने सभापतित्त्व किया, ८७ विद्यार्थियों को जिन में ३ स्त्रियाँ भी थीं, इस में डिप्लोमा और डिग्रियाँ दी गईं।

महात्मा जी ने उपस्थित जनों से हिन्दी सीखने की प्रतिज्ञा लेने के लिए कहते हुए अपना यह मत ज़ाहिर किया कि यदि कोई भाषा हिन्दुस्थान की राष्ट्र-भाषा बन सकती है तो वह हिन्दी है।

सभा द्वारा प्रदत्त खद्दर के शाल को महात्माजी ने वहीं १०१) रु० में नीलाम कर दिया।

हिन्दी का महत्व

मध्यप्रान्त के अपने दौरे में महात्मा गांधी राजकुमार-कालेज (रायपुर) भी गये थे। वहाँ प्रिंसिपल के आमंत्रण पर उन्होंने राजकुमारों के सामने अंग्रेजी में जो भाषण किया, वह भावी नरेशों के लिए बहुत शिक्षाप्रद है। अतः सहयोगी 'हरिजन-सेवक' से उसका सारांश यहाँ दिया जाता है। आशा है, राजस्थानके सभीनरेश और राजकुमार उससे लाभ उठाने का प्रयत्न करेंगे।

राष्ट्रभाषा हिन्दी

राजकुमारो, आप लोगों को याद रखना चाहिये कि उन्नति और विकास की वृद्धि के इस में आबद्ध नहीं रख सकते। आपको अपना क्षेत्र व्यापक बनाना पड़ेगा और परिस्थिति आपको ऐसा करने को बाध्य करेगी। तो फिर सिर्फ़ अपने प्रान्त की भाषा जानने से ही आपका काम न चलेगा, आपको वह भाषा भी सीखनी पड़ेगी, जिसका व्यवहार इस देश में विशेष व्यापक रूप से होता है। शायद आप लोगों को यह मालूम न हो कि इस देश के २२ करोड़ स्त्री-पुरुष इतनी हिन्दी या हिन्दुस्तानी भाषा का ज्ञान रखते हैं कि उस भाषा में उन्हें जो कुछ कहा जाय, उसे वे समझ सकें और अपना भाव भी उस भाषा में व्यक्त कर सकें, उनकी हिन्दी टूटी-फूटी ही क्यों न हो। जैसी जिम्मेदारी आप लोगों पर आने वाली है, वैसी जिम्मेदारी वाले किसी भी व्यक्ति का काम हिन्दी जैसी व्यापक भाषा जाने बिना चलना सम्भव नहीं। हिन्दी भाषा के प्रति मेरा असीम प्रेम है। मैं अंगरेजी भाषा का भी प्रेमी हूँ। किसी विदेशी के लिये जितना सम्भव है, उतना मैं भी अंग्रेजी भाषा बोल लेता हूँ। वर्षों अंग्रेजों और अंग्रेजी बोलने वालों के साथ रहने से ही मैं थोड़ी बहुत अंग्रेजी सीख सका हूँ। सैकड़ों अंग्रेज स्त्री-पुरुषों को मैं अपना घनिष्ठ मित्र समझता हूँ। अतएव जब मैं आपसे यह अनुरोध करता हूँ कि हिन्दी सीखना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिये कि मुझे अंग्रेजी से कोई द्वेष है। मैं प्रिंसिपल महोदय और अन्य अध्यापकों से भी अनुरोध करता हूँ कि वे इस पर विचार करें कि देशी नरेशों के लिये हिन्दी जानना कितना ज़रूरी है, क्योंकि हिन्दी-भाषा के द्वारा ही वे भारत को जान सकते हैं।

औरंगज़ेब का हिन्दी-प्रेम

साधारण मुसलमानों की तो बात क्या, मुगल बादशाह तक संस्कृत और हिन्दी से अनुराग रखते थे। अकबर के रचे हिन्दी के कई छंद मिलते हैं। औरंगज़ेब, जो मज़हबी कट्टरता के लिये प्रसिद्ध है, संस्कृत और हिन्दी से परिचय रखता था। भूषण की हिन्दी कविताएँ उसने सुनी और समझी थीं, यह तो आप लोग जानते होंगे; आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि वह संस्कृत में भी दखल रखता था। उसके पत्रों का एक संग्रह प्रकाशित हुआ है। उसमें नं० ८ का रुक्का उसने अपने बेटे मुहम्मद आजमशाह के नाम लिखा था। मुहम्मद आजमशाह ने कुछ नये किस्म के आमों की डाली बादशाह की ख़िदमत में भेजी थी, और उन्हें आम के नाम रख देने की प्रार्थना की थी। बादशाह ने लिखा—

'फ़र्जन्द आलीजाह, डाली अम्बा लेमुर्स आँ के बजायके पिदर पीर खुशगवार आमद—बराय नाम अम्बए गुमनाम इस्तदुआ नमूदा अन्द—चूं आँ फ़र्जन्द जूदते तथा दौरन्द—रवादार तकलीफे पिदर-पीर चरा मी शवन्द—बहरहाल सुधारस वो रसना विलास तीतीदा शुद।'

अर्थात्, बेटा, आमों की डाली जो तुमने भेजी, वह तुम्हारे बुड्ढे बाप को बहुत पसन्द आई; तुमने इन गुमनाम आमों के नाम रखने के लिये लिखा; तुम तो बेटा! खुद प्रतिभावान हो; बुड्ढे बाप को क्यों तकलीफ देते हो। ख़ैर; सुधारस और रसना विलास नाम रख दिया जाता है।

आमों के लिये सुधारस और रसना-विलास नाम बादशाह औरंगज़ेब की सरस हृदयता के परिचायक है।

रामनरेश-त्रिपाठी

जगदुद्धारक महावीर

जैन धर्म के २४ वें तीर्थंकर भगवान् महावीर स्वामी की जयन्ती के शुभ अवसर पर श्री० ला० हरिचन्द्र इन्द्रसेन जैन अंबाला शहर ट्रस्ट फंड की तरफ़ से उपरोक्त विषय पर सबसे उत्तम लेख लिखने वाले सज्जन को २५) का पारितोषक दिया जायेगा।

१—लेख हिन्दी भाषा में हो।

२—लेख लगभग पांच हजार शब्दों का हो।

३—लेख १५ फरवरी तक मन्त्री श्री आत्मानन्द जैन सभा अंबाला शहर के पास पहुँचना चाहिये।

४—लेख के मुद्रण और प्रकाशित करने का अधिकार मन्त्री श्री आत्मानन्द जैन सभा अंबाला शहर को होगा।

नोट—इनामी लेख के अतिरिक्त बाकी लेख यदि लेखक चाहेंगे वापिस कर दिये जायेंगे।

निवेदक

मन्त्री; श्री आत्मानन्द जैन सभा

अंबाला शहर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माया के चमत्कार !!!

(ले०—खोजी)

५ दिसम्बर को पूना कालेज के ग्रेजुएट मि० वी. डी. केलकर ने इलाहाबाद में सर सप्रू के बूटों पर रोगन किया। सर सप्रू ने उन्हें ५) रु० मज़दूरी दी। मि० केलकर पूना की मज़दूर एसोसिएशन के मेम्बर हैं।

\+ + +

कलहारी रेगिस्तान के जंगली लोग अभी तक झाड़ियों में रहते हैं और सांप मकड़ी आदि जीवों को खाकर निर्वाह करते हैं।

\+ + +

न्यूयार्क (अमरीका) में जेम्स कैरोल नाम के व्यक्ति ने अपनी स्त्री की मृत्यु का झूठा समाचार अखबारों में प्रकाशित कराया। इस पर उसे गिरफ़्तार कर लिया गया। अदालत के पूछने पर उसने कहा कि मैंने यह इसलिये किया था कि मेरी स्त्री के सम्बन्धी इस समाचार को पढ़कर मेरे मकान पर आना जाना बन्द कर दें।

\+ + +

रूमानिया के गलाट नाम के बन्दरगाह में पोलीस ने कैमनिज़ नाम के आदमी को बिल्लियों को भारी तादाद में पालने के अपराध में गिरफ़्तार किया गया। तलाशी लेने पर उसके घर में १५० बिल्लियां निकलीं।

\+ + +

एमस्टर्डम में एक किसान ने अपना बटुआ घास पर रख दिया। एक बकरी घास चरते २ उसे निगल गई। किसान ने एक कसाई से उसे मरवा कर उसका पेट कटवा दिया। किसान बकरी के कटे पेट को लेकर बङ्क में गया। बङ्क के कर्मचारी ने २०० गिल्डर अथवा ३० पौं० के बङ्क नोट को पहिचान लिया, और उस किसान को धन दे दिया। विचारी बकरी को मँहगी भूख के लिये जान से हाथ धोना पड़ा।

\+ + +

इंडियाना युनिवर्सिटी के प्रोफ़ेसर मि० कैलोग तथा श्रीमती केलोग ने अपने आनाल्ड नाम के पुत्र के साथ शिम्पाँज़ी जानवर की कन्या को नौ महीने तक पाला पोसा। इस अवसर में जो उन्होंने अनुभव प्राप्त किए वह उन्हें लेख बद्ध करते गये। शिम्पाँजी को मोटर में सैर कराते थे और वह मिट्टी के खिलौने तथा महल भी बनाता था। १६ महीने की उमर में शिम्पाँजी ५८ शब्द समझने लगा तथा डोनाल्ड इस उमर में केवल ३९ शब्द समझ सकता था। शिम्पाँजी डोनाल्ड की अपेक्षा अधिक चतुर तथा सफाई से चमचे से भोजन करता था। बुद्धि के खेलों में डोनाल्ड की अपेक्षा ज्यादा बुद्धिमत्ता शिम्पाँजी में है। केवल मात्र वाणी का व्यवहार करने में शिम्पाँजी डोनाल्ड से आगे न बढ़ सका।

इङ्गलैंड के भूतपूर्व प्रधानामात्य मि० लायड जार्ज का कथन है कि संसार के बड़े आदमी आम तौर पर बहुत बातें करने के आदी होते हैं। उदाहरण के तौर पर उन्होंने यह नाम लिखे हैं। पेरिया मैकले, मौण्ड, लिवरहल्म, इन्च्केप, नार्थक्लिफ़ रौथरमीयर, बेवर कुक। इसी प्रकार जूलियस, सीज़र, नेपोलियन, फ़ौच, क्लैमन्शू नेलसन और उडरो विल्सन जैसे कर्मवीर भी बातें करने के बड़े शौकीन थे।

\+ + +

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

दिसम्बर १९३३ ई० के महीने में वर्मिंहम में एक

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय विचार

अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलनः--का वार्षिक अधिवेशन २६-२७-२८ मार्च को दिल्ली में होगा। सम्मेलन के लिये सभापति निर्वाचित करने के सम्बन्ध में हिन्दी समाचार पत्रों में चर्चा हो रही है।

इस पद के लिये निम्न लिखित नाम प्रस्तावित किये गये हैं। श्री सयाजीराव गायकवाड़ बड़ौदा नरेश। (२) ओरछा नरेश। (३) डा० भगवानदास जी, बाबू शिवप्रसाद जी गुप्त इत्यादि। हमारी सम्मति में श्री सयाजीराव गायकवाड़ और बाबू शिवप्रसाद जी गुप्त में से किसी एक को सभापति पद के लिये निर्वाचित करना चाहिए। विज्ञानपरिषद् आदि साहित्यिक-सम्मेलनों में केवल मात्र विद्वत्ता की दृष्टि से सभापति निर्वाचित किये जाते हैं परन्तु मुख्य सम्मेलन के सभापति पद के लिये, सार्वजनिक प्रभाव तथा हिन्दी-प्रेम आवश्यक है। श्री सयाजीराव गायकवाड़ का प्रभाव सर्वविदित है। उन्होंने अपनी रियासत में हिन्दी प्रचार के लिये जो कार्य किये हैं वह उनके हिन्दी प्रेम के जीवित जागृत प्रमाण हैं। इसी प्रकार बाबू शिवप्रसाद जी गुप्त भी सार्वजनिक दृष्टि से प्रभावशाली व्यक्ति हैं। दैनिक आज, ज्ञानमंडल काशी, बनारस विद्यापीठ उनके हिन्दी प्रेम को प्रकट कर रहे हैं। वह

---

५ फी० ८ इं० की लम्बाईवाले व्यक्ति ने २फी० ९इं० की कन्या से विवाह किया। कन्या का नाम पिसनांसी आर्चर है। पुरुष का नाम मि० सैमुअल रौबिन है। विवाह के बाद पति पत्नी को गोदी में लेकर मोटर में गया।

\+ + +

संसार में सबसे पुरानी अदालत स्पेन के वैलनशिया नाम के स्थान में है। ९७२ सालों से यह अदालत शहर के पानी सम्बन्धी मुकद्दमों का फैसला करती है इसका नाम ट्रिबुनल आफ वाटर्स है। ८ जज इन मुकदमों को सुनते हैं और मौखिक फ़ैसले करते हैं। इन फैसलों के विरोध में (अपील) सुनवाई नहीं होती।

\+ + +

जर्मनी में पुराने ज़माने के एक आदमी की गड़ी हुई लाश के साथ मक्खन अच्छी हालत में मिला है। अनुमान किया जाता है कि यह मक्खन २७०० साल पुराना मक्खन है।

\+ + +

कुछ समय के बाद मनुष्य के, दो आंखों के स्थान पर एक आँख रह जायगी। विकासवाद के नियमों के अनुसार नाक मिटती जायेगी और दोनों आंखें नाक के नीचे एक हो जायँगी। यह एक आंख ज़्यादा ताकत वाली होगी।

\+ + +

ब्रिटिश अजाबघर के ट्रस्टियों ने ५० हजार पौ० के चन्दे के लिये अपील निकाली है, जिसमें इतनी हो रकम सरकार की ओर से मिला कर 'कोडेक्स' नामक बायबल की पाण्डु-लिपि खरीदी जायगी। यह पाण्डु लिपि एक सबसे पुरानी पाण्डु-लिपि है। 'कोडैंक्स वेटिकेनस नामक दूसरी सबसे पुरानी पाण्डु लिपि रोम में है। इसमें सारा न्यूटेस्टमेण्ट है। चन्दे की अपील पर केण्टरबरी के आर्च विशप और प्रधान मन्त्री के भी हस्ताक्षर हैं। खरीद लिये जाने पर यह पाण्डु-लिपि ब्रिटिश अजायबघर में इस प्रकार रखी जायगा कि किसी भी देश का अध्ययनशील व्यक्ति किसी भी समय इसे लेकर पढ़ सकेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यवहार में हिन्दी अक्षरों के प्रचार के लिये आर्थिक कष्ट भी उठाते हैं। हमारी सम्मति में दोनों में से किसी एक को सभापति पद के लिये निर्वाचित करने से सम्मेलन को लाभ होगा।

हिन्दी साहित्य और अश्लीलता—दिन प्रतिदिन बढ़ रहे हिन्दी साहित्य में, अश्लीलता की मात्रा भी बढ़ रही है। विशेषतः सामयिक-समाचार पत्र अश्लील-शृंगारी चित्रों तथा कथा-कहानियों द्वारा इस को बढ़ा रहे हैं। विशेषतः मासिक पत्रों में स्त्रियों के शृंगारी हाव भाव पूर्ण चित्रों का प्रकाशित करना इस प्रवृत्ति का प्रदर्शक है। अभी मराठी साहित्य सम्मेलन में सम्मेलन के सभापति श्री खाडिलकरने मराठी साहित्य में बढ़ रहे अश्लील साहित्य कीरोक थाम के लिये प्रस्ताव उपस्थित किया। सम्मेलन में उपस्थित प्रतिनिधियों ने इस प्रस्ताव के आशय का समर्थन किया और सर्व सम्मत सिद्धान्त के लिये प्रस्ताव स्वीकृत करना अनावश्यक समझा। हमारी सम्मति में हिन्दी साहित्य में जिस ढंग से अश्लील साहित्य बढ़ रहा है, उसे रोकने के लिये विशेष यत्न की आवश्यकता है। हम आशा करते हैं कि दिल्ली में होनेवाले सम्मेलन में इस विषय पर विशेष विचार किया जायगा।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली की असफलता—दिसम्बर मास में, पंजाब युनिवर्सिटी, इलाहाबाद युनिवर्सिटी और बनारस युनिवर्सिटी के दीक्षान्त-संस्कार हुए हैं। इन अवसरों पर क्रमशः सर-शादीलाल, सर सप्रू तथा सर पी. सी. राय ने दीक्षान्त भाषण (Convocation address) दिये हैं। तीनों व्यक्ति वर्तमान शिक्षा प्रणाली की संभव उत्तमताओं के प्रतिदम्ब हैं, परन्तु तीनों ही इस शिक्षा प्रणाली को दोष पूर्ण समझते हैं—

सर सप्रू कहते हैं "मेरी सम्मति में युनिवर्सिटियों को शिक्षा विस्तार के स्थान पर, आर्थिक सम्पत्ति बढ़ाने वाली शिक्षा पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। यदि यह परिवर्तन न किया गया तो एक दो रमन और पराञ्जपे जैसे विशेषज्ञों को उत्पन्न करने के सिवाय, भारी संख्या ऐसे विद्यार्थियों की होगी जो नौकरियों के लिये सरकारी दफ़्तरों के दरवाजे खटखटाएँगे और शिक्षित धंधों में भाग्य परीक्षा करते फिरेंगे। सर शादीलाल ने भी युनिवर्सिटी शिक्षा की इस कमी को विशेष रूप से निर्दिष्ट किया है। सर पी. सी. रायने भाषण करते हुए कहा"—

अंग्रेज़ी शिक्षा का माध्यम न हो।

यदि हम भारत में प्रचलित शिक्षा प्रणाली की अच्छी तरह छान-बीन करें तो, आचार्य राय ने कहा, हम देखेंगे कि सबसे पहिली ख़राबी हमने यह की कि विदेशी भाषा (अंग्रेज़ी) को शिक्षा का माध्यम बनाया। अंग्रेज़ी या अन्य किसी आवश्यक विदेशी भाषा को मैं अनुत्साहित नहीं करना चाहता, परन्तु यह आवश्यक है कि वह शिक्षा का माध्यम न रहे। शिक्षा प्राप्त व्यक्ति ऐसा होना चाहिए, जिसे सब बातों का ख़ासा ज्ञान हो—और यह कम से कम समय में तभी अच्छी तरह हो सकता है कि जब उसे वह ज्ञान उसी भाषा में मिले जिससे बालपन में माता के स्तन-पान के साथ वह परिचित, इतिहास, अर्थशास्त्र, राजनीति, तर्कशास्त्र, भूगोल, संक्षेप में कहें तो समस्त ज्ञान, अपनी देशी मातृभाषा में ही शीघ्र प्राप्त किया जा सकता है। यदि हम अपने शिक्षा मन्दिर का निर्माण श्रेष्ठ और ऊँचे आधार पर करना चाहते हैं, तो यह बात सर्व प्रथम होनी आवश्यक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महान् पुरुष और विश्वविद्यालय की शिक्षा

शेक्सपीयर ग्रीक-भाषा बहुत कम जानता था और लेटिन तो उसे और भी कम आती थी। हमारे केशवचन्द्र सेन, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, उपन्यास और कहानी-सम्राट शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय और नाट्य कारों के प्रमुख गिरीशचन्द्र घोष ने कभी विश्व-विद्यालय की सीमा पार नहीं की। इनके साथ ही मुझे बनार्डशा, एच० जी० वेल्स और इस वर्ष नोबल प्राइज़ पाने वाले इवान एलेक्स बुनिन का भी नामोल्लेख करना चाहिए, जो सब अपने आप शिक्षा पाये हैं। यही नहीं बल्कि यूरोप के महान शासक और राजनीतिज्ञ रेम्ज़ेमैकडानल्ड, मुसोलिनी, हिटलर और स्टालिन भी, जो आज विश्व के भाग्य-विधाता बन रहे हैं, कालेज की शिक्षा से अछूत रहे हैं। अब्राहम लिंकन तथा अन्य ऐसे पुरुषों के नामोल्लेख की आवश्यकता नहीं, जो अमेरिका की झोंपड़ियोंमें पैदा होकर वहां के व्हाइट हाउस के गौरवशाली आसन तक जा पहुँचे। इंग्लैण्ड में मज़दूरदल का जो द्वितीय मन्त्रि-मण्डल बना था, उस में के अधिकांश मन्त्री ऐसे थे, जिन्होंने दिन में मजदूरी करते हुए शाम को स्वाध्याय करके ही ज्ञान प्राप्ति की।

विश्वविद्यालय का कार्य

विश्वविद्यालयों के कर्त्तव्य-कार्य का उल्लेख करते हुए आचार्य राय ने कहा कि उन्हें ज्ञान एवं संस्कृति के वास्तविक केन्द्र बनना चाहिये,--और यह तभी हो सकता है, जब शिक्षा का 'मैकेनिकल' भाग स्कूलों में ही समाप्त कर दिया जाय।

संक्षेप में विश्वविद्यालय की शिक्षाप्रणाली के कुछ मुख्य मुख्य दोष ये हैं—शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी होना, ज्ञानोत्पादन की प्रवृत्ति का अभाव, भाषण-पद्धति की अनिवार्यता और सार्वजनिक संस्थाओं में विद्यार्थियों का भाग न लेना।

क्या किया जाय?

अन्त में आपने कहा—

माध्यमिक शालाओं में सब विषयों का ज्ञान देशी भाषा द्वारा कराया जाना चाहिये। यह इंग्लैण्ड के 'स्कूल फाइनल' के समान होगा और विश्वविद्यालय में उस वक्त तक किसी को भी नहीं जाना चाहिये, जब तक कि उसकी आन्तरिक प्रवृत्ति उस ओर जाने के लिये प्रेरित न करे। विश्वविद्यालय तो विशेष योग्यता, शोध एवं संस्कृति का केन्द्र होना चाहिए। केवल वही उसके अन्दर प्रवेश करने की चेष्टा करें, जो अपने जीवन को ज्ञान-बारिधि का विस्तार करने में लगा देने के लिये तैयार हों।

———

नये हिन्दी दैनिक।

दिसम्बर मास से दिल्ली से नवयुग नाम का सचित्र दैनिक प्रकाशित होने लगा है। इसके सम्पादक श्रीयुत पं० सत्यकाम जी विद्यालंकार हैं। इसके संचालक अङ्गरेज़ी नेशनल-काल के मालिक हैं। लाहौर से प्रभात नामक दैनिक प्रकाशित हुआ है। इसके सम्पादक श्रीयुत छैलबिहारी दीक्षित कण्टक हैं। इसके संचालक दैनिक उर्दू प्रताप के मालिक म० कृष्ण जी हैं। कलकत्ता से श्री सी. आरदास की स्मृति में एडवांसके संचालक हिन्दी दैनिक राष्ट्रबन्धु निकाल रहे हैं। अङ्गरेज़ी तथा उर्दू के पत्रों के संचालक भी हिन्दी भाषा को अपना रहे हैं। राष्ट्र भाषा हिन्दी के बढ़ते हुये प्रभाव का इससे बढ़िया प्रमाण क्या होसकता है? पंजाब यूनिवर्सिटी-जांच-समिति के एक दो सदस्यों ने उर्दू को पंजाब की एक मात्र मुख्य प्रान्तीय भाषा सिद्ध करने के लिये यह युक्ति भी दी थी कि यहां के हिन्दी के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हामी भी समाचार पत्रों का सम्पादन उर्दू में ही करते हैं। नवयुग प्रभात तथा हिंदी मिलाप का जन्म इस समालोचना का उचित उत्तर है। हम इन पत्रों के संचालकों के साहस की सराहना करते हैं और पंजाब के सार्वजनिक जीवन में सबका हार्दिक स्वागत करते हैं।

लाहौर की इंडियन एम्पायर प्रदर्शनी।

२२ दिसम्बर १९३३ को लाहौर में पंजाब के गवर्नर महोदय ने इण्डियन एम्पायर प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। इस प्रदर्शनी में भांति २ की आकर्षक तथा मनोरंजक वस्तुओं का संग्रह किया गया है। इसके संचालक तथा संयोजक पंजाबी हैं। चमक दमक तथा जगमग की दृष्टि से प्रदर्शनी को सफल प्रदर्शनी कह सकते हैं। पंजाब सरकार के शिक्षा-विभाग, कृषि विभाग तथा व्यवसाय विभाग के कार्यों का भी प्रदर्शन किया गया है। इस सारे प्रदर्शन में एक कमी हरेक देश भक्त पंजाबी को अखरती है वह यह है। कि इस प्रदर्शन में न तो पंजाबी-पन पाया जाता है और न भारतीयता। सब काम अङ्गरेजी भाषा में अङ्गरेजी रंगढंग पर किये गये हैं। नाटक-घरों के सामने देवियों का नटी रूप में प्रदर्शन कर जनता की भोगाचार तथा अनाचार की प्रवृत्तियों को उत्तेजित किया गया है। हमें संदेह कि इससे पंजाबी व भारतीय व्यवसाय में कोई विशेष उन्नति हो सकेगी। यह प्रदर्शनी १५ जनवरी १९३४ तक खुली रहेगी। प्रदर्शनी के संचालकों को चाहिए कि इस प्रदर्शनी में भारतीयता तथा पंजाबीपन को उचित स्थान दें।

देवनागरी लिपि और पंजाबी भाषा।

हिन्दी-संदेश पंजाबी बोली में देवनागरी अक्षरों का प्रचार करने के लिये, देव नागरी लिपि में पंजाबी बोली के लेख नियम पूर्वक प्रकाशित करता रहा है। इस विषय में पक्ष-विपक्ष के लेख भी प्रकाशित होते रहे हैं। इस अङ्क में पाठक श्रीयुत हीरासिंह जी दर्द, का लेख पढ़ेंगे। गम्भीर विचार के बाद हमने यह निश्चय किया है कि पंजाबी बोली को देवनागरी अक्षरों में लिखने का आन्दोलन संगठित रूप में चलाना चाहिए। इसके लिये हम आर्य हिन्दू सनातनी स्कूलों के संचालकों से निवेदन करना चाहते हैं कि वह अपने पाठ्य-क्रम में श्रीगुरुगोविन्दसिंह जी लिखित, विचित्र नाटक को पाठविधि में स्थान दें। पंजाबी साहित्य में विचित्र नाटक से बढ़िया ग्रन्थ और कौन सा मिल सकता है।

सिक्ख भाइयों तथा सिक्ख-शिक्षणालयों के संचालकों और समाचार-पत्रों के सम्पादकों को अपने शिक्षणालयों, पुस्तकमालाओं तथा समाचार पत्रों में गुरुमुखी की वर्णमाला के साथ २ देव नागरी की वर्णमाला सिखाने का भी प्रबन्ध करना चाहिए। इस आन्दोलन से जहाँ पंजाबी साहित्य देवनागरी वर्णमाला में प्रकाशित होकर दूसरे प्रान्त वासियों तक पहुंच सकेगा वहाँ पंजाबी भाई, देवनागरी वर्णमाला की सहायता से, दिन प्रति दिन उन्नत होते हुए हिन्दी साहित्य से लाभ उठा सकेंगे। जो भाई इस आन्दोलन में क्रियात्मक भाग लेना चाहते हैं वह हमसे पत्र व्यवहार करके इस पुण्य कार्य को सफल बनाने में हमारा हाथ बटावें।

हिन्दी सन्देश का द्वितीय वर्ष

इस अङ्क के साथ २ हिन्दी संदेश द्वितीय वर्ष में प्रवेश करता है। पिछले वर्ष हिन्दी संदेश को वर्ष भर में लगभग ७००) की आर्थिक क्षति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रही है। हिन्दी-संदेश का संचालन केवलमात्र हिन्दी प्रचार की दृष्टि से किया जारहा है। हमें इस बात पर संतोष है कि हिन्दी संदेश ने एक वर्ष में कई हिन्दी लेखकों तथा हिन्दी कवियों को अपनी लेखनशक्ति तथा कविता शक्ति को विकसित करने का अवसर दिया है। इस वर्ष इस पत्र को अधिक मनोरंजक और उपयोगी बनाने के लिये हमें अधिक व्यय करना पड़ेगा। इसके लिये हम हिन्दी संदेश के प्रेमियों से निवेदन करना चाहते हैं कि वह कम से कम ५ ग्राहक बनाकर हिन्दी संदेश को स्थिर बनाने में हमारा सहयोग दें। पिछले वर्ष प्रसिद्ध हिन्दी प्रेमी श्री प्रेम-राज जी ने नियत वार्षिक शुल्क के अतिरिक्त आर्थिक सहायता देकर हिन्दी सदेश को सचित्र बनाने में हमारा सहयोग दिया था आशा है कि हिन्दीसंदेश के अन्यपाठक भी इनका अनुकरण करेंगे।

पंजाब के हिन्दी प्रेमी।

अभी पिछले दिनों हिन्दी संदेश के उत्साही प्रबन्धक श्री सत्येन्द्रनाथ जी हिन्दी संदेश का प्रचार करने के लिये पंजाब के बड़े २ शहरों में गये थे। फ़िरोजपुर में श्रीयुत दरबारीलाल जी नारंग श्रीयुत साँझीराम जी तथा प्रो० वृन्दावन नी शास्त्री ने समय देकर हिन्दी संदेश के ग्राहक बनवाए थे। मुकसर में श्री ला० जसराज जी ने सत्येंद्रनाथ जी को हिन्दी प्रचार की भावना से प्रेरित होकर मुक्तसर के हिन्दी प्रेमियों से परिचित कराया। लुधियाना के श्री बाबूराम जी गुप्त पं० अर्जुनदेव जी तथा श्री ऊधोराम जी आर्य का सहयोग अनुकरणीय है। हिसार के श्री ला० कलवन्त राय जी अग्रवाल प्लीडर श्री और विष्णुदत्त जी तथा ईश्वरदत्त जी शास्त्री ने निष्काम भाव से हिन्दी संदेश को अपनाया है। भिवानी के श्री ला० मेलाराम जी तथा फ़तहचन्द जी जैन ने भिवानी की स्थानीय संस्थाओं को हिन्दी संदेश अपनाने के लिये विशेष रूप से प्रेरित किया। इसी प्रकार मुसलिम-प्रधान पंजाब के रावलपिण्डी शहर में श्री० पं० मुकुन्दराम जी शास्त्री तथा श्रीयुत व्रजभूषण जी ने रावलपिण्डी के हिन्दी प्रेमियों में इसका विशेष प्रचार किया। रावलपिण्डी की श्रीमती भागदेवी जी ने रावलपिण्डी की देवियों में इसका विशेष प्रचार करने के लिये उत्साह प्रकट किया है। इसके लिये हिन्दी-सन्देश इन सबका आभारी है।

इसके इलावा श्री० प्रो० बंशीधर जी विद्यालंकार, श्री० देवेन्द्र जी सत्यार्थी श्री मनमोहन जी आनन्द श्री० जंगबहादरसिंह जी श्रीमती गोपालदेवी जी श्री० सत्यकेतु जी विद्यालंकार श्री रामलाल जी अग्रवाल श्री० कृष्ण गोपाल जी वीर, श्री० शान्तिस्वरूप जी वर्म्मा, आदि ने ओजस्विनी कविताएँ भेजकर हिन्दी सन्देश को अपनाया है। द्वितीय वर्ष का प्रारम्भ हम इन सब हिन्दी प्रेमियों तथा हिन्दी संदेश के सहायकों का हार्दिक धन्यवाद देने के मंगल कार्य के साथ करते हैं। हम आशा करते हैं कि यह महानुभाव इस वर्ष भी हिन्दी संदेश को लेख व कविताओं से कृतार्थ करते रहेंगे।

आगामी अङ्क के विशेष लेख।

(१) श्री० देवेन्द्र जी सत्यार्थी। पंजाबी की ५० रसीली लोकोक्तियाँ।
(२) हिन्दी रत्न परीक्षा का प्रश्नोत्तरी सहित विस्तृत विवरण।
(३) अन्तरिक्ष के चमत्कार।
(४) रोमांचकारी प्रेम के खेल!
(५) वीर पंजाबी की अनूठी शूरता।
(६) हिन्दू महिलाएँ और तलाक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी प्रेमियों को

शुभ समाचार

पंजाब यूनिवर्सिटी की रत्न भूषण व प्रभाकर परीक्षा देने वाले नोट करलें।

यदि आप घर बैठे इन परीक्षाओं में पास होना चाहते हैं **तो** हिन्दी परीक्षाओं के मुख्य केन्द्र लाहौर से श्री भीमसेनजी विद्यालंकार भूतपूर्व सम्पादक दैनिक अर्जुन तथा पञ्जाब केसरी के सम्पादकत्व में प्रकाशित होने वाले **सचित्र साहित्यिक मासिक पत्र**

"हिन्दी-सन्देश"

के ग्राहक बनिये

३१ जनवरी १९३४ से पहले ग्राहक बनने वालों को ३) रुपये में हिन्दी सन्देश मिलेगा। इसके बाद हिन्दी सन्देश का **वार्षिक मूल्य ३) रु० हो जायगा।**

हिन्दी सन्देश के हरेक अङ्क में मनोरञ्जक कहानियां, भड़कीली कविताओं तथा शिशु-संसार और महिला संसार के साथ-साथ **हिन्दी-रत्न, हिन्दी-भूषण, तथा हिन्दी-प्रभाकर** परीक्षाओं के सम्बन्ध में विशेष लेख छपते हैं।

फ़र्वरी, मार्च, अप्रैल में क्रमशः

हिन्दी-रत्न, हिन्दी-भूषण, हिन्दी-प्रभाकर

नाम के विशेषाङ्क प्रकाशित होते हैं।

हिन्दी सन्देश विद्यार्थियों का घरेलू अध्यापक तथा अध्यापकों का साथी है। शीघ्र ग्राहक बनिये। ३१ जनवरी १९३४ को याद रखिये।

मैनेजर—हिन्दी सन्देश, १७ मोहनलाल रोड, लाहौर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग का
सामयिक साहित्य

सचित्र हिन्दी-महाभारत

इलाहाबाद का इंडियन प्रेस, लिमिटेड, महाभारत का एक सुन्दर और सचित्र संस्करण हिन्दी में प्रकाशित कर रहा है। यह सम्पूर्ण संस्कृत महाभारत का हिन्दी अनुवाद है। अनुवाद की भाषा सरल और सुन्दर है। हिन्दी में सम्पूर्ण महाभारत पहले भी छप चुका है परन्तु ऐसा सचित्र और सुन्दर महाभारत अभी तक हिन्दी पाठकों को नसीब नहीं हुआ। इस में चार पांच रंगीन तथा दर्जनों सादे चित्र हैं। यह लगभग ४५ अङ्कों में पूरा होगा, प्रति अङ्क का मूल्य १।), स्थाई ग्राहकों से १) लिया जाता है। अब तक इसके उनतालीस (३९) अङ्क प्रकाशित हो चुके हैं। यह पुस्तक प्रत्येक हिन्दू गृहस्थ के घर में रहने लायक है। पंजाब में हिन्दी प्रेमियों की सुविधा के लिए इंडियन प्रेस, लिमिटेड ने अपनी एक ब्राञ्च गणपत रोड, लाहौर में खोली हुई है, जहां सब प्रकार की और प्रायः सभी हिन्दी प्रकाशकों की हिन्दी पुस्तकें मिल सकती हैं।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग की मासिक पत्रिका

सरस्वती

वार्षिक मूल्य ६।।) एक प्रति का मूल्य ।।=)

सम्पादक

देवीदत्त शुक्ल श्रीनाथसिंह

हिन्दी की सबसे प्राचीन, विविध-विषय विभूषित सर्वाङ्ग-सुन्दर सचित्र साहित्यिक मासिक पत्रिका। यह पत्रिका राष्ट्र-भाषा हिन्दी की सेवा ३३ वर्ष से सफलता पूर्वक करती आ रही है। इस पत्रिका में प्रतिमास साहित्य, इतिहास, विज्ञान, भ्रमण, समालोचना आदि अनेक विषयों पर हिन्दी के सभी सिद्धहस्त लेखकों, बड़े बड़े प्रतिभाशाली विद्वानों के विद्वत्तापूर्ण मनोरञ्जक मौलिक लेख, यशस्वी कवियों की मनोहर कवितायें और कौतूहल-वर्द्धक अनूठी कहानियां रहा करती है! इसके सिवा सामयिक विषयों पर विचार-पूर्ण टिप्पणियां भी रहती हैं।

इसमें एक से एक सुन्दर कई चित्ताकर्षक रङ्गीन और सादे चित्र रहते हैं और यह अच्छे सफेद कागज पर प्रतिमास बड़ी सुन्दरता के साथ छपती है।

आज ही एक कार्ड भेजकर सरस्वती के ग्राहक बन जाइए! क्योंकि केवल एक यही पत्रिका मँगाने से प्रायः सभी उत्कृष्ट देशी-विदेशी-पत्र-पत्रिकाओं के पढ़ने का आनन्द मिलता है और समय तथा धन की बचत होती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, (पञ्जाब ब्राञ्च) गणपत रोड, लाहौर।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग
के
कुछ सुप्रसिद्ध लेखकों की कृतियाँ

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

१—गौर-मोहन (दो भागों में) ... ४)
२—आश्चर्य-घटना ... ... १॥)
३—विचित्र प्रबन्ध ... ... २)
४—विचित्र वधूरहस्य ... ... १)
५—मुकुट ... ... ।)
६—डाकघर .. ... ।–)
७—गल्प-गुच्छ प्र० भाग ... ॥।)
८— ,, द्वि० भा० ... ... १)
९— ,, तृ० भा० .. ... १)
१०— ,, च० भा० .. ... १)
११—प्राचीन साहित्य ... ... ॥।)
१२—हास्यकौतुक ... ... ।≈)
१३—व्यङ्ग्य कौतुक ... ... ॥)
१४—राजारानी ... ... १।)

शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय

१—लेनदेन ... ... २॥)
२—गृहदाह ... ... २॥)
३—देहाती समाज ... २)
४—पण्डितजी ... ... १॥)
५—बड़ी दीदी ... १)
६—मंझली दीदी ... ... ॥।)
७—परिणीता ... ... १)
८—नवविधान ... १)
९—अरक्षणीया ... १)
१०—छुटकारा ... १)

रमेशचन्द्र दत्त

१—महाराष्ट्र-जीवन-प्रभात ... १॥)
२—राजपूत-जीवन-सन्ध्या ... १।)
३—सुधा ... ... २)
४—माधवी-कंकण ... ... १)
५—समाज ... ... १)

प्रभातकुमार मुखोपाध्याय

१—देशी और विलायती ... २॥)
२—मणिमाला ... ... २॥)
३—नवकथा ... ... १॥।)
४—पत्र-पुष्प ... ... १॥)
५—षोड़शी ... १।)
६—रत्नदीप ... ... २)

रखालदास बन्द्योपाध्याय

१—करुणा ... ... ३॥)
२—शशाङ्क ... ... ३)
३—प्राचीन मुद्रा ... ... ३॥)

ज्ञानेन्द्र मोहनदास

१—चरित्रगठन ... ... १)
२—ऋद्धि .. ... १॥।)

लाला लाजपतराय

१—दुखी भारत ... ५)

महामहोपाध्याय काशीप्रसाद जायसवाल

१—हिन्दूराजतन्त्र ... ... ३॥)

श्रीस्वामी सन्तदास बाबाजी व्रजविदेही महन्त

१—वेदान्तदर्शन (श्रीनिम्बार्काचार्यकृत वेदान्त पारिजात-सौरभ नामक भाष्य-सहित) ४)
२—गुरुशिष्य-संवाद ... ... १।)
३—श्रीस्वामी रामदास काठिया बाबाजी १।)

बाबू हीरेन्द्रनाथ दत्त, एम० ए० वेदान्तरत्न

१—कर्मवाद और जन्मान्तर ... २॥)

रायबहादुर विनायक चिन्तामणि वैद्य एम० ए०, एल-एल० बी०

१—महाभारत-मीमांसा ... ४)

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, (पंजाब ब्रांच) गणपत रोड, लाहौर।
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी

१—हिन्दी-महाभारत ... ... ४)
२—शिक्षा ... ... ३॥)
३—कविताकलाप ... ... ३)
४—आध्यात्मिकी ... ... १)
५—आख्यायिका सप्तक ... ॥=)
६—कोविदकीर्तन .. .. १)
७—कुमारसम्भव ... ... १)
८—आलोचनाञ्जलि ... ... १)
९—विदेशी विद्वान् ... ... १)
१०—चरितचर्य्या ... ... ॥।=)
११—मेघदूत ... ... ।-)
१२—हिन्दी-भाषा की उत्पत्ति ।=)
१३—कालिदास की निरङ्कुशता ... ।=)
१४—विक्रमाङ्कदेवचरितचर्या ।=)
१५—नाट्यशास्त्र ... ... ।)
१६—प्राचीन चिह्न ... ... ॥।)
१७—पुरावृत्त ... ... ॥।=)

रायसाहब बाबू श्यामसुन्दरदास, बी० ए०

१—हिन्दीशब्दसागर (चार भाग) .. ५०)
२—हिन्दी भाषा और साहित्य ... ६)
३—रूपक रहस्य ... ... २)
४—गद्य-कुसुमावली ... ... २)
५—हिन्दी निबन्धमाला, प्रथम और द्वितीय भाग ... ... २॥)
६—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ... ... ॥।)
७—मानस सूक्तावली ... १)
८—हिन्दी-साहित्य का संक्षिप्त इतिहास ॥=)

रायबहादुर लाला सीताराम, बी० ए०

१—मैकबेथ ... ... १)
२—प्रेमकसौटी .. .. १)
३—प्रकृति की नीति ... ... ॥।)

बाबू जगन्नाथदास रत्नाकर, बी० ए०

१—उद्धवशतक ... ... १॥)
२—गङ्गावतरण ... ... १)

ठाकुर गोपालशरणसिंह

१—माधवी ... ... १॥)

श्रीयुत सुमित्रानन्दन पन्त

१—पल्लव ... ... २)
२—वीणा ... ... १)
३—ग्रन्थि ... ... ॥।)

श्रीयुत सुदर्शन

१—सुदर्शन सुधा ... ... २)
२—तीर्थयात्रा ... ... २)
३—आनरेरी मजिस्ट्रेट ... ... ॥=)
४—परिवर्तन ... ... ॥)
५—फूलवती ... ... ॥=)
६—सोहराब रुस्तम ... ... ॥=)

श्रीयुत सन्तराम, बी० ए०

१—अलबेरूनी का भारत (तीन भाग) प्रथम भाग १।), द्वितीय भाग २) और तृतीय भाग ... ... ३॥)
२—इत्सिंग की भारतयात्रा ... ... २॥।)
३—मानसिक आकर्षण-द्वारा व्यापारिक सफलता ।)
४—मानव जीवन का विधान ... ॥।)
५—नीरोग कन्या ... ... १)
६—सद्गुणी बालक ... ... १)
७—दयानन्द ... ... ॥।)
८—रसीली कहानियां ... ... ॥।)

श्रीयुत भाई परमानन्द, एम० ए०

१—योरप का इतिहास ... ... ४)

श्रीयुत सत्यकेतु विद्यालङ्कार

१—मौर्यसाम्राज्य का इतिहास ... ५)

बाबू बेनीप्रसाद

१—महर्षि सुकरात ... ... १।)
२—रणजीतसिंह ... ... १।)
३—गुरुगोविन्दसिंह ... ... १।)

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, (पंजाब ब्रांच) मयापत रोड, लाहौर।
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राणनाथ विद्यालङ्कार

१—रोम का इतिहास .. ... १)

२—शासनपद्धति ... ... १)

३—मुद्राशास्त्र ... ... २॥)

मेहता लज्जाराम शर्मा

१—आदर्श-हिन्दू (तीन भाग) .. ३॥)

श्रीयुत ज्वालादत्त शर्मा

१—मौलाना हाली और उनका काव्य १)

२—गीता में ईश्वरवाद (बंगला से अनुवादित) १॥)

श्रीयुत राधामोहन गोकुलजी

१—नेपोलियन बोनापार्ट ... १)

श्रीयुत नन्दकुमार देव शर्मा

१—सिक्खों का उत्थान और पतन ... १)

श्रीयुत रघुराजकिशोर 'वतन' बी० ए०

१—महाकवि अकबर ... १)

डाक्टर गोरखप्रसाद

१—फ़ोटोग्राफ़ी ... ७)

पं० रामचन्द्र शुक्ल

१—हिन्दी-साहित्य का इतिहास ... ४॥)

२—विश्वप्रपञ्च (दो० भा०) ... २॥)

३—बुद्ध चरित ... २॥)

४—आदर्श जीवन १)

५—शशाङ्क ३)

६—गोस्वामी तुलसीदास १॥)

७—जायसी ग्रन्थावली (सम्पादित) ३)

पं० देवीदत्त शुक्ल

१—मध्यप्रदेश और बरार का इतिहास १॥)

२—जापान का हाल ॥)

३—बाल कविता माला ।≈)

४—बाल गोपाल तथा अन्य कहानियां ।≈)

५—पकौड़ी वाली ।≈)

राय साहब जगदानन्द राय

१—प्राकृतिकी २॥)

२—वैज्ञानिकी १॥)

३—ग्रहनक्षत्र २)

श्रीयुत कामताप्रसाद गुरु

१—हिन्दी व्याकरण ३।)

२—संक्षिप्त हिन्दी व्याकरण ॥≈)

३—मध्य हिन्दी व्याकरण ॥≈)

४—प्रथम हिन्दी व्याकरण ।)

पं० मन्नन द्विवेदी गजपुरी

१—मुसलमानी राज्य का इतिहास (दोनों भाग) २॥)

पं० गोविन्दराम केशवराम जोशी

१—अहिल्याबाई १)

चतुर्वेदी द्वारकाप्रसाद शर्मा

१—ऐतिहासिक कहानियां १)

२—भीष्म पितामह १)

डा० मुकुन्दस्वरूप वर्मा

१—शिशु पालन १)

पं० रामनरेश त्रिपाठी

१—लक्ष्मी ॥≈)

२—नीति-रत्नमाला ॥≈)

श्रीयुत सत्यजीवन वर्मा, एम० ए०

१—स्वप्नवासवदत्ता ॥≈)

२—दर्पण १)

३—वीसलदेवरासो (सम्पादित) ॥)

पं० बदरीनाथ भट्ट, बी० ए०

१—टटोलूराम टलास्त्री ॥)

२—मिस्र अमेरिकन ॥≈)

डा० बोधराज चोपड़ा एम० बी० सी० एच० बी (एडिनबरा)

१—मां और बच्चा २)

पण्डित उदयशङ्कर भट्ट

१—तक्षशिला (ऐतिहासिक काव्य) २)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महिलाओं को उपहार देने योग्य
नौ पुस्तकें

आदर्श महिला—इस पुस्तक में सीता, सावित्री, दमयन्ती, शैव्या और चिन्ता इन पांच देवियों की जीवन-घटनाओं का सजीव वर्णन किया गया है। मूल्य २) दो रुपये।

सीता-वनवास—श्रीसीताजी के जीवन चरित्र के सम्बन्ध में ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने बँगला में एक बहुत ही सुन्दर पुस्तक लिखी थी, उसी का यह अनुवाद है। इस पुस्तक की एक एक पंक्ति करुण-रस से ओत-प्रोत है। मूल्य ॥≈) दस आने।

बड़ी दीदी—यह पुस्तक शरद् बाबू के बँगला-उपन्यास का अनुवाद है। इसमें एक हिन्दू-विधवा की करुण-कथा का वर्णन है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १) एक रुपया

मझली दीदी—मझली दीदी हेमाङ्गिनी ने अपनी जेठानी कादम्बिनी के सौतेले भाई के प्रति कितना स्नेह किया था, और सौतेली बहन के अत्याचारों से किस प्रकार उसकी रक्षा की थी, यही इस उपन्यास का विषय है। इसकी एक एक पंक्ति सरल तथा भावपूर्ण है। मूल्य केवल ।॥) बारह आना।

परिणीता—इस उपन्यास की नायिका ललिता ने खेल-खेल में शेखर को माला पहना दी थी, और उसी दिन से उसे अपना पति मान लिया, यद्यपि शेखर के धनवान् पिता ललिता जैसी निर्धन पिता की कन्या का विवाह अपने पुत्र के साथ करने पर सहमत नहीं हुए। अन्त में शेखर की स्मृति में ही उसने अपने जीवन का उत्सर्ग कर दिया था। उपन्यास बहुत ही शिक्षाप्रद है। मूल्य केवल १) रुपया।

नव-विधान—पाश्चात्य सभ्यता का अनुकरण करने वाली महिलाओं की अपेक्षा पुरानी चाल की महिलायें घर-गृहस्थी का प्रबन्ध कैसी उत्तमता से कर सकती है, इसी बात का इस उपन्यास में दिग्दर्शन कराया गया है। हर एक गृहस्थ के घर में इसकी एक प्रति होनी आवश्यक है। मूल्य केवल १) एक रुपया।

शिशु-पालन—यह पुस्तक स्त्रियों के बड़े काम की है। इसमें प्रसूती चर्या से लेकर बच्चों के पालन-पोषण के सम्बन्ध की सभी आवश्यक बातों पर प्रकाश डाला गया है मूल्य १॥) डेढ़ रुपया।

नीरोग-कन्या—यह पुस्तक स्वास्थ्य-सुधार के सम्बन्ध में है। इसे पढ़ कर कन्याओं को तो अपना स्वास्थ्यसुधारने में सहायता मिलती ही है, साथ ही बड़ी और परिपक्व अवस्था की स्त्रियों के लिए भी यह लाभदायक है। मूल्य १) एक रुपया।

माँ और बच्चा—स्त्रियों के गर्भ और बच्चे के पालन पोषण के सम्बन्ध की यह पुस्तक माताओं के लाभ के लिए और विशेषतः ऐसी माताओं के लिए लिखी गई हैं जो अपनी शक्ति भर स्वयं अपना स्वास्थ्य भी बनाये रखना चाहती हैं और यह भी चाहती हैं कि हमारी सन्तान ठीक तरह से बढ़ती रहे। मूल्य २) दो रुपये।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, (पंजाब ब्रांच) गणपत रोड, लाहौर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संक्षिप्त हिन्दी शब्द-सागर

हिन्दी में अभी तक एक उपयुक्त कोष का बड़ा अभाव था। इस ग्रन्थ के प्रकाशित हो जाने से उस भारी अभाव की पूर्ति हो गई है। इसका शब्द-संग्रह बहुत बड़ा है, परन्तु यह ग्रन्थ एक विशेष प्रकार के पतले और मज़बूत ओपीक काग़ज में छापा गया है, जिससे १२०० पृष्ठों के होने पर भी वैसा भारी होने नहीं पाया है, यह कोष खासकर हिन्दी रतन, हिन्दी भूषण, हिन्दी प्रभाकर और दशमीं श्रेणी (Matriculation) के परीक्षार्थी को अवश्य खरीदनी चाहिये। एक प्रति का मूल्य केवल ४) रुपया।

हिन्दी रत्न, हिन्दी भूषण, हिन्दी प्रभाकर तथा अन्य अन्य परीक्षाओं की सारी पुस्तकें हमारे यहां मिलने का पूरा पूरा प्रबन्ध किया गया है। इस कारण ग्राहकों को पुस्तकें खरीदने में बहुत आसानी होगी।

जज़्बाते बिस्मिल (उर्दू)

प्रयाग के सुप्रसिद्ध उर्दू-कवि श्रीयुत 'बिस्मिल' की चुनी हुई कविताओं का संग्रह

भूमिका लेखक

लाहौर हाईकोर्ट के जज माननीय जस्टिस सर अब्दुल क़ादिर

इस संग्रह में 'बिस्मिल साहब की सुप्रसिद्ध रचनायें 'रुबाइयात फ़लसफ़ाये हस्ती', सरस और भावपूर्ण गज़लें, महात्मा गांधी, पं० मोतीलालजी और पं० जवाहरलालजी आदि के सम्बन्ध में उत्तमोत्तम राष्ट्रीय और व्यङ्ग कवितायें प्रकाशित की गई हैं। यह संग्रह सचित्र प्रकाशित होगया है। मूल्य ४॥) रुपया।

कहानी कैसे लिखनी चाहिए

प्रणेता मुंशी कन्हैयालाल एम० ए०, एम० आर० ए० एस०

भूतपूर्व सम्पादक 'उर्दू-चाँद' संयुक्त सम्पादक 'अदबी दुनियाँ' (लाहौर)

हिन्दी और उर्दू में यह पुस्तक अपने ढंग की बिलकुल निराली है। सफल कहानी-लेखक बनने के लिए इस से बहुत ही काम की बातें सीखी जा सकती हैं। प्रत्येक उदीयमान लेखक को इस पुस्तक की एक प्रति अवश्य रखनी चाहिए, क्योंकि उच्च कोटि की कहानी लिखने के लिए जिन जिन बातों का जानना ज़रूरी है, उन सबका इसमें समावेश किया गया है। मूल्य केवल ॥) आठ आना।

आर्डर भेजने में शीघ्रता करनी चाहिए।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, (पंजाब ब्रांच) गणपत रोड, लाहौर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग की
बालक-बालिकाओं के लिये सबसे अच्छी पुस्तकें

बाल-स्मृतिमाला	॥≈)
बाल-स्वास्थ्यरक्षा	॥≈)
आनरेरी मॉजस्ट्रेट	॥≈)
विदेश की बात	१।)
दूध मलाई	॥)
गुदड़ी के लाल	।≈)
पकौड़ीवाली	।≈)
फूलवती	॥≈)
सद्गुणी बालक	१)
बच्चों की बातें	।)
नया खिलौना	।≈)
बाल-सद्बोध	॥)
बाल-आख्योपन्यास (चार भाग) ॥≈), ॥≈), ॥≈), ॥≈)	
बाल-हितोपदेश	।॥)
बालोपदेश	।≈)
बाला-पत्र-बोधिनी	॥)
बाला-पत्र-कौमुदी	।)
मज़ेदार ख़ज़ाना	।≈)
पारस्योपन्यास	१।)
दमयन्ती	।)
सावित्री	।)
सती	≈)
सीता ।) सीतावनवास	॥≈)
बालकों के विद्यासागर	।≈)
जानवरों की कहानियां	॥)
सोने का पेड़	॥)
लकड़ी का घोड़ा	॥)
मां के लाल	१)
मिस्र और हब्श देश का परिचय	।≈)
युधिष्ठिर	।≈)
राजकहानी	।≈)
लाल खिलौना	॥≈)
शेख़चिल्ली की कहानियां (हिन्दी)	॥≈)
सदुपदेश-संग्रह	।≈)
सोने का झरना	।॥)
ईसप की कहानियां (हिन्दी)	२)
अद्भुत कथा	।॥)
खिलौना	।≈)
खेल-तमाशा	।)
गारफ़ील्ड	।॥)
गोबर-गणेश (कविता)	॥≈)
चमत्कारी बालक	।≈)
चरित्रगठन	१)
ड्रिल	।॥)
देवनागर-वर्णमाला (सचित्र)	॥≈)
नीरोग कन्या	१)
पञ्चतन्त्र (संस्कृत)	॥)
पोत की माला	॥)
प्रह्लाद	।)
फ़व्वारा	१)
बाल-कविता-माला	।≈)
बाल-कालिदास	।≈)
रोबिन्सन क्रूसो	।॥)
सोहराब रुस्तम	॥≈)
दयानन्द	।॥)
बाल-गीता	।॥)
बाल-गीतावली	॥≈)
बाल-निबन्ध-माला	॥≈)
बाल-दुर्गा	॥≈)
बालनीति-माला	॥≈)
बाल-पञ्चतन्त्र	॥≈)
बाल-पुराण	॥≈)
बाल-भागवत (दो भाग)	॥≈), ।॥)
बाल-भारत ,,	॥≈), ॥≈)
बाल-भोजप्रबन्ध	॥≈)
बाल-मनुस्मृति	।≈)
बाल-रघुवंश	॥)
बाल-रवीन्द्रनाथ	॥)
बाल-रामायण (सातों काण्ड)	॥≈)
बाल-विष्णुपुराण	।≈)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, (पंजाब ब्रांच) गणपत रोड, लाहौर ।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल सखा

(हिन्दी)

वार्षिक मूल्य २॥) रु०
छमाही मूल्य १।) रु०
एक प्रति का ।=) आ०

इसमें प्रतिमास लगभग ४० पृष्ठ, एक सुन्दर रङ्गीन और १०-११ सादे चित्र भी रहते हैं

यह पत्र बालक-बालिकाओं का मनोरञ्जन, उनके ज्ञान की वृद्धि, और स्कूली शिक्षा के अभ्यास में पूरी सहायता प्रदान करता है। इसमें उपदेश प्रद कवितायें, जीवन-चरित, मनोहर कहानियां, यात्रा वर्णन और निबन्ध रहते हैं। साथ ही भूगोल, इतिहास, गणित, विज्ञान, आदि मोटे मोटे सिद्धान्त भी सरलता से समझाये जाते हैं। इसको देखकर बच्चे बहुत प्रसन्न होते हैं। यदि आप इस पत्र के ग्राहक न हों तो अपने बच्चों के लाभ के लिये तुरन्त बन जाइए।

बच्चों की दुनिया

(उर्दू)

सालाना चन्दा २॥) रु०
छमाही चन्दा १।) रु०
फ़ी कापी ।=) आ०

इसमें हर महीने करीब २ ४० सफ़े, एक खूबसूरत रङ्गीन और १०-१२ सादी तसवीरें होती हैं।

यह पत्र उर्दू में निकलता है। बाल-सखा ही के समान बालक-बालिकाओं के लिए यह भी मुफ़ीद है। अगर आप इस पर्चे के ग्राहक न हों तो अपने बच्चों के फ़ायदे के लिए फ़ौरन बन जाइए।

विशेष द्रष्टव्य

इस विज्ञापन द्वारा हिन्दी प्रेमियों तथा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि—

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

के इस शाखा दफ़्तर में अपनी पुस्तकों के अतिरिक्त और भी कई प्रसिद्ध हिन्दी के प्रकाशकों की पुस्तकें मिलती हैं, जैसेः—

१. नागरी प्रचारिणी सभा, काशी। २. गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ।
३. हिन्दुस्तानी एकेडमी, प्रयाग। ४. विश्व साहित्य ग्रन्थमाला कार्यालय, लाहौर।

पुस्तकों के चुनाव के लिए हमारा सूचीपत्र मंगाकर देखिए।

इनके अतिरिक्त डा० लक्ष्मण स्वरूप जी, एम० ए०, डि० फ़िल महोदय के अनुवादित तथा सम्पादित कई फ्रान्सीसी ड्रामे भी मिलते हैं। इन ड्रामों के नाम—

१. बनिया चला नवाब की चाल ... ... मूल्य २)
२. वहमी रोगी ... ... ,, २)
३. अम्बिका परिणय चम्पू ... ... ,, २)

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, (पञ्जाब ब्रांच) गणपत रोड, लाहौर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई भी डायरी खरीदने से पहले

बढ़िया जिल्द

आर्य डायरी

१९३४ ई०

को अवश्य देखें

क्योंकि

इस बार हमने आर्य डायरी में खास याददाश्त, छुट्टी अदालत व हाईकोर्ट, आर्यों के यज्ञ तथा पर्व, आर्यों के नित्यकर्म, आर्यों के समय विभाग, आर्य सिद्धान्त, आर्य समाज का विस्तार, आर्यसमाज का काम, आर्य समाज के गुरुकुल, आर्य समाज के कालिज, आर्यसमाज की विशेष घटनाएं आदि और जीवन का उद्देश्य, यम, नियम, याद रखने की बातें, गोपालन की कुछ बातें, एक दिन के वेतन का नकशा, माप तोल की सूची, घरेलू नुसखे, डाकखाने के नियम, रेल के साधारण नियम आदि अनेक नये विषय विस्तार से बढ़ा दिये हैं। इस वर्ष की डायरी इतनी उपयोगी बन गई है कि उसे लेते ही बनता है। पृष्ठ संख्या ५००, मूल्य भी घटा कर ।=) कर दिया है। व्योपारियों और समाजों को ३) दर्जन दी जावेंगी।

मिलने का पता—

शहीद राजपाल एण्ड संज़,

हस्पताल रोड, लाहौर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुन्दर रमणियां

खद्दर क्रेप

असली जहाज़ मार्का को धारण कर गर्व से फूली नहीं समातीं क्योंकि यह उनके सौन्दर्य में एक आकर्षण उत्पन्न करती है।

शत प्रति स्वदेशी फ़ैशनेबल कपड़ों का सरताज, पक्के तथा मनमोहक रंगों में प्राप्त होने वाला "असली जहाज़ मार्का" खद्दर क्रेप ही ख़रीदने के लिये आग्रह करें।

बावा प्रद्युम्नसिंह एण्ड सन्ज़
अमृतसर

ब्रांचें—लाहौर, बम्बई, कलकत्ता, देहली, कोइटा।

नवयुग प्रिण्टिङ्ग प्रैस, मोहनलाल रोड, लाहौर में भीमसेन वर्मा प्रिण्टर पब्लिशर द्वारा छप कर हिन्दी सन्देश कार्यालय, मोहनलाल रोड, लाहौर से प्रकाशित। सम्पादक भीमसेन विद्यालङ्कार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

वार्षिक मूल्य ३)　　एक प्रति का मूल्य ।=)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवनागरी—हिन्दी—भारतीय राष्ट्रीयता का मूल-मन्त्र है

हिन्दी-सन्देश

का

हिन्दी-प्रभाकर-विशेषांक

पंजाब के सर्वप्रथम हिन्दी-महिला-विद्यापीठ कन्या-महाविद्यालय जालंधर की छात्राएँ लाठी-संचालन का व्यायाम कर रही हैं।

सम्पादक—भीमसेन विद्यालङ्कार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय सूची

विषय	लेखक	पृष्ठ
१ ईश्वर (कविता)—	[श्री जंगबहादुरसिंह उपसम्पादक 'ट्रिब्यून'	१८७
२. आधुनिक टर्की	[श्री इन्द्र जी वेदालंकार	१८८
३. निराशा (कविता)—	[श्रीजुगलकिशोर	१९०
४. दिनों का फेर (कहानी)—	[श्री कुमारी रामप्यारी धवन	१९१
५. २३वाँ हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन	[एक दर्शक	१९५
६. भीख (कहानी)—	[शान्तिदेवी	२०१
७. माया के चमत्कार—	[श्री महाव्रतजी विद्यालंकार	२११
८. अग्निस्वरूप—	[मनमोहन	२१४
९. हिन्दी-परीक्षा मंदिर (प्रभाकर सम्बन्धी लेख)		२१४-२४६
१०. स्वाधीनता के पथ पर—		२४७
११. महिला-संसार—		२५२
१२. नवीन साहित्य—		२५६
१३. सम्पादकीय—		२५८
१४. हिन्दीरत्न, भूषण, प्रभाकर परीक्षा परिशिष्ट		

CAREERS

ASIA'S ONLY JOURNAL ON VOCATIONAL GUIDANCE INDUSTRY, TRADE, EDUCATION, GENERAL KNOWLEDGE & UNEMPLOYMENT.

Highly Spoken of by

H. E. the Viceroy, the Governors and Ministers of various provinces, Maharajas-Privy Councillors, Directors of Public Instruction. Directors of Industries, Directors of Agriculture, Vice Chancellors and Registrars of Universities, Principals for Colleges, Educationalists, Parents and General Public. Reviewed in all leading papers.

Indispensable for all those who have an ambition to better their prospects in life and specially to those responsible for guiding youngmen into proper choice of careers, after leaving school or college.

C. Y. Chintamani Esq. Chief Editor Leader, says :

Mr. M. C. Mohan of Lahore has favoured me with a copy of the first number of his periodical publication 'Careers'. I have glanced at it and formed a very favourable opinion of its utility. The contents are attractive as the get up is inviting. The choice of subjects is Judicious as well as liberal and the articles will I am confident be found both inspiring and instructive. I congratulate Mr. M. C. Mohan on his wisdom in breaking new ground and wish him the best success. And I trust that the many educated youngmen in search of Careers will profit by a regular perusal of 'Careers' month by month.

High Class get up. Annual subscription Rs. 6/- **Price Per copy -/8/-**

"CAREERS" LAHORE.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२३वें हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के कार्यवाहक सभापति

श्री अयोध्यासिंह उपाध्याय

सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष

श्री घनश्यामदास बिडला

सकसेरिया-पारितोषक विजेत्री

श्रीमती चन्द्रावती लखनपाल, एम्. ए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मातृदेवोभव

हिन्दी-सन्देश

हिन्दी प्रचारक साहित्यिक मासिक पत्र

वर्ष २ | चैत्र १९९० वि० अप्रैल १९३४ ई० | संख्या ४

ईश्वर !

(रचयिता—श्री० जंगबहादुरसिंह उप-सम्पादक "ट्रिब्यून")

तुम कहते हो शरीर नश्वर ,
मैं कहता हूँ ईश्वर है।
नस-नस जब स्पन्दित होती ,
मन लेता है लम्बी पैंग ॥१॥

भावों की आँधी के रथ पर ,
जब मद-माते हो आरूढ़ ।
नंदन वन को तुम जाते हो ,
इन्द्र-धनुष सा हँस कर हास्य ॥२॥

तब बतलाओ, क्या तुम को यह ,
है शरीर नश्वर लगता ?
रक्त प्रवाहित जो होता है ,
धवनि-पुंज में द्रुत गति से ॥३॥

प्रेम अग्नि में तप तप कर ,
सत्य-सार है वही, और सब ।
है असत्य इस भू मराडल में ,
यह शरीर ही ईश्वर है ॥४॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधुनिक टर्की

[श्री पं० इन्द्रजी, वेदालंकार]

टर्की की रिपब्लिक को स्थापित हुए १० वर्ष होने को आये हैं। इस अर्से में उसने आश्चर्यजनक उन्नति की है। और फिर वह केवल इकतर्फ़ा नहीं परन्तु राष्ट्रीय जीवन के प्रत्येक पहलू में। १९१४ ई० के महायुद्ध से पूर्व उसे यूरोप का 'बीमार' दी सिक मैन आफ़ यूरोप कहा जाता था। उसकी अपनी आन्तरिक स्थिति शोचनीय होती जाती थी। उसके ईसाई पड़ोसी राष्ट्र आँखें फाड़-फाड़ घूरते थे मानों एक ग्रास में हड़पना चाहते हों, इंगलैण्ड तथा रशिया इनमें प्रमुख थे।

टर्की की युनियन एण्ड प्रौग्रैस कमिटी में कुछ सुधारक भी थे जो उसका कायापलट किया चाहते थे। पर सुलतान के विरुद्ध सिर उठाना आसान न था। महायुद्ध में टर्की मित्र राष्ट्रों के विरुद्ध लड़ा था। विजयी राष्ट्रों ने उसके साथ १९२० में सन्धि की जिसमें उसकी स्थिति और भी शोचनीय बना दी। केवल अनातोलिया का भाग उसके अधिकार में रह गया शेष थ्रेस ग्रीस को दिया गया। स्मर्ना एशिया माइनर को। इस सन्धि पर सुलतान (जो कि वास्तव में मित्र राष्ट्र का क़ैदी था) के हस्ताक्षर थे।

टर्की के नेशलिष्ट लोगों ने उस सन्धि को ठुकरा दिया और सुलतान को गद्दी से उतार दिया। उन्होंने अंगोरा (एशिया माइनर) में नई सरकार की स्थापना कर ली। ग्रीस जिसकी १९२० की सन्धि में पाँचों अँगुलियाँ घी में थीं, उसने १९२१ में अंगोरा की सरकार के विरुद्ध युद्ध घोषित किया और एशिया माइनर पर धावा बोल दिया। परन्तु वीर तुर्कों ने मुस्तफ़ाकमाल के नेतृत्व में ग्रीक लोगों को पराजित किया और उन्हें उलटे पाँव लौटना पड़ा। इस युद्ध में गुप्त रूप से इंगलैण्ड ने भी ग्रीस की सहायता की थी। १९२३ में लासेन में पुनः सन्धि की गई जिसमें यूरोप में उसकी समान स्थिति स्वीकार की गई। उसकी मुख्य शर्तें निम्न थीं :—

१—कुस्तुन्तुनियाँ या कौन्सैण्टीनोपल, पूर्वीय थ्रेस तथा गलापोली यूरोप में, अनातोलिया, सिसीलिया अदालिया, एशिया माइनर में, टर्की के अधिकार में रहें। २—बाहर से आनेवालों पर किसी प्रकार का प्रतिबंध न रहे। ३—मुसलिम तथा ग्रीक लोगों से समान व्यवहार किया जाय।

इस सन्धि में टर्की को सीरिया, फ्रांस को पैलेस्टाइन, इंगलैण्ड को Derdenells द्वीप समूह इटली को भेंट करने पड़े। Straits जलडमरूमध्य की स्वतन्त्रता तथा उस क्षेत्र में युद्ध ठनने पर टर्की का हस्ताक्षेप न करना भी स्वीकार किया गया। इसके साथ टर्की के राष्ट्रीय अधिकारों को स्वीकार किया गया। इस संधि में जो थोड़ी बहुत सफलता हुई, उसका कारण राष्ट्रीय सरकार (National Govt.) थी। इसका नेता मुस्तफ़ाकमाल था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुस्तफ़ा कमाल के नेतृत्व में टर्की ने जातीय जागृति में यथातथा उसे सभ्य बनाने (Modernisation) में पगपग पर उन्नति की। प्रजातन्त्र राज्य स्थापित हुआ। भाषा, क़ानून एवं सभ्यता को धार्मिक भावनाओं से पृथक् कर इस प्रकारका परिवर्तन किया गया जो आधुनिक सभ्यता की आवश्यकताओं के अनुकूल हो।

मुस्तफ़ाकमाल को रिपब्लिकन पीपल्स पारटी सहायता देती है। केवल यही टर्की में संगठित दल है। इसके उद्देश्य हैं (Nationalism) राष्ट्रीयता का प्रचार (Secularism, Industrialism) और औद्योगिक उन्नति सरकार को आधीनता में रह कर करना। इसका दृष्टिकोण उदार धार्मिक भावनाओं से भरपूर है। किसी प्रकार के दकियानूसीपन की इसमें गंध तक नहीं। इसके परिणामस्वरूप वहाँ पर धर्म तथा राजनीतिको पृथक् पृथक् कर दिया गया है। टर्कीका मुख अब पश्चिम की ओर रहता है? मक्के मदीने पूर्वीय मुस्लिम देशों की ओर नहीं। धर्म तथा जन्म के बन्धनों से स्वतन्त्र प्रत्येक नागरिक को समान अधिकार है। किसी ख़ास श्रेणी को विशेषाधिकार नहीं। स्त्रियों को भी सामाजिक तथा नागरिक सभाके पूर्ण अधिकार हैं। इस दलका उद्देश्य है टर्की की उन्नति के साथ साथ प्रजासत्तात्मक शासन, एवं प्रजा के लिये शासन करना।

आधुनिक टर्की यूनिटरी तथा पार्लमेन्ट्री प्रजातन्त्रीय राज्य है। क़ानून आदि बनाने के लिये राष्ट्रीयसभा (Grand National Assembly) है। इस के सदस्यों का चुनाव प्रजा द्वारा होता है। मन्त्रियों का चुनाव भी यही करती है। विदेशीनीति शान्ति, सन्धि, युद्ध आदि करने का अधिकार इसी को है। इसके द्वारा पास हुए किसी क़ानून को रद्द करने का अधिकार प्रधान को है, परन्तु यदि दुबारा वही क़ानून बहुमत से पास हो जाय तो उसे रद्द करने का अधिकार उसे नहीं।

मुस्तफ़ाकमालपाशा रिपब्लिक का प्रधान है वही क्रियात्मक रूप से इस सभा की नीति (Policy) का संचालक है और रिपब्लिक पीपल्स पार्टी का भी। इसके प्रतिनिधियों का सम्बन्ध 'राष्ट्रीयमहासभा' (Grand National Assembly) से है, वही प्रधान है। जिसके इलावा अन्य कोई संगठित दल ही वहां पर नहीं है। अतः इसके नियन्त्रण में वह पूरी तरह समर्थ है। पार्लिमेन्ट के उम्मीदवारों का चुनाव भी रिपब्लिकन पीपल्स पार्टी ही करती है। सदस्य बनने पर उन्हें इस पार्टी के निर्णय मानने पड़ते हैं। राज्य के प्रत्येक मुख्य स्थान पर इसका अधिकार है। इस प्रकार वास्तव में यही पार्टी 'राष्ट्रीय महासभा' को भी नियंत्रित करती है और इस पार्टी का लीडर मुस्तफ़ा कमाल है।

उसके नियन्त्रण में धार्मिक व आनुवंशिक व नियमित विचार भेदों को नष्ट कर दिया गया है। राज्य के अधिकारों में धार्मिक लोगों को दस्तन्दाज़ी का कोई हक़ नहीं। सुलतान और ख़िलाफ़त का नाम भी नहीं रहा। उसने अक्षरशः पश्चिम का अनुकरण किया है।

शिक्षा के सुधारों के बारे में—प्राचीन अरबी फ़ारसी भाषा का स्थान यूरोपीय भाषाओं को दिया गया है। तुर्की भाषा को पढ़ाई में मुख्यता दी जाती है। और उसमें से अरबी आदि के शब्दों को शीघ्रातिशीघ्र छोड़ने का प्रयत्न किया जा रहा है। कुरान का टर्की में रोमन लिपि में अनुवाद करवा दिया गया है। और उसी भाषा में उपासना की जाती है। प्रारम्भिक शिक्षा प्रत्येक के लिए आवश्यक है। हस्त कौशल, उद्योग धन्धा तथा कृषि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की भी बहुत उन्नति की जा रही है। निरक्षरता बड़ी तेज़ी से नष्ट हो रही है। स्त्रियों की भी उच्च शिक्षा दी जाती है और प्रोत्साहित किया जाता है। आजकल विद्यालयों तथा कार्यालयों में उनकी बड़ी संख्या काम कर रही है। १९२८ में जब से टर्की ने लैटिन अक्षरों को अपना लिया है तब से शिक्षा की रफ़्तार में चौगुनी उन्नति हो गई है।

सामाजिक मामलों में स्त्रियों पर कोई प्रतिबन्ध नहीं। विश्वविद्यालयों में सहशिक्षा (Co-education)दी जाती है। पर्दे की प्रथाका सर्वथा वहिष्कार किया गया है। सम्पूर्ण देश में यूरोपियन वेश पहिरा जाता है। सम्पूर्ण समाज में उदार विचारों, वैयक्तिक जागृति तथा यूरोपियन देशों के मुक़ाबले में उन्नति करने के भाव जागृत हो गये हैं।

विदेशी नीति में टर्की की शक्ति और मित्रता की नीति है। तथा विदेशी युद्धों में भी उसने उदासीन रहने की भावना धारण की है। वह अपनी सम्पूर्ण शक्ति आन्तरिक उन्नति में सर्फ़ करना चाहता है। उसने अपने चारों ओर के देशों से मित्रता स्थापित की हुई है—एशिया, पर्शिया; ईराक़, अफ़ग़ानिस्तान ग्रीस, सभी उसके मित्र हैं। १९३२से वह (League of nations) या राष्ट्रसंघ का भी सदस्य है।

इस आधुनिक टर्की का विधाता मुस्तफाकमाल और उसके साथी हैं। इनमें राष्ट्रीय भावनाओं ने जीवन फूँका है और इसे इन्होंने क्रियात्मिक रूप से नियम सुधार, राष्ट्रीय उन्नति आदि में पूर्वीय मध्यकालीन मुस्लिम राज्यों में सब से ऊँचा बना दिया है।

नि रा शा

आशा के भव्य भवन में,
प्राणों का दीप जलाये।
उत्सुक हो स्वागत पथ पर,
बैठी थी ध्यान लगाये ॥१॥

उठती तरंग माला में,
शरादिन्दु किरण खिलती थी।
हिलती मिलती इठलाती,
पगली सरिता हँसती थी ॥२॥

ये नील गगन में तारे,
मुक्ता का हार पिरोते।
मेरी सूनी कुटिया में,
आँखों से झरने सोते ॥३॥

है स्नेह सिन्धु उफनाता,
पर जर्जर तरणी मेरी।
क्या कभी लगेगी तट पर,
जब छाई रात अँधेरी ॥४॥

प्रियतम! क्या भूल सकूँगी?
सूने पन में तुम आये।
सुहाग पराग को लेकर,
कलियों के दल बिखराये ॥५॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

जुगल किशोर

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिनों का फेर

[कुमारी रामप्यारी धवन 'प्रभाकर']

—१—

जगन्नाथ बाबू ने टेबल पर बैठते ही ज़ोर से चिल्लाकर कहा—"हरि! ओ हरि!! खाना लाओ।"

"बाबूजी, अभी तैयार नहीं हुआ।"

बाबूजी धड़धड़ाते हुए तुरन्त ही रसोईघर में पहुँच गये। "क्यों रे गधे! अभी तक खाना क्यों नहीं तैयार हुआ? मैंने कितनी बार कहा कि मुझे ऑफ़िस जाने के पहिले भोजन मिल जाना चाहिये।"

हरि ने भयभीत हो क्षीण स्वर में उत्तर दिया, "बाबूजी मैं क्या करूँ, पहिले छोटे बाबू ने साईकल साफ़ करने को कहा, वह किया, फिर छोटी बीबी को स्कूल छोड़ने जाना था।"

"हूँ! स्कूल छोड़ने जाना था। जल्दी उठते तो मौत पड़ती है। बस, बहानेबाज़ी में तू अपनी जान छुड़ा लेता है। जल्दी करो!"

"अच्छा लीजिए"—कहता हुआ हरि अपने काम में मस्त हो गया। बाबूजी भी कुछ गुनगुनाते हुए कमरे में कपड़े बदलने चल दिए। पर हैं यह क्या! अभी उल्लू ने मेरा बूट भी पालिश नहीं किया। सुबह का न मालूम क्या करता है। कुछ कहो तो बस झट बहाना तैयार। इस नमकहराम ने तो मेरे नाकों दम कर दिया है। कोट पर ब्रश भी नहीं किया।" बस, फिर क्या था, जो टेम्परेचर अभी पूर्ण रूप से उतरा न था फिर एक सौ दस डिगरी पर चढ़ गया। क्रोध से पागल हो ज़ोर से पुकारा, 'हरि'!

"जी हुजूर"—कहता हुआ हरि नयी आफ़त आई जान, हाथ का काम छोड़ शीघ्र सामने आ खड़ा हुआ।

'क्या है बाबूजी?"

"गधा कैसे मज़े से पूछता है, 'क्या है बाबूजी?' मेरे बूट पर पालिश क्यों नहीं किया, कोट भी वैसे ही पड़ा है।"

हरि को तो मानों काठ मार गया। मन ही मन अपनी दशा पर आँसू बहाते हुए एकदम मौन साध लिया।

भला इस मौन से बाबूजी का क्रोध कब कम होनेवाला था। उन्होंने उठकर दबे हाथों दो-तीन बूट हरि की पीठ पर जमा दिए। हरि वास्तव में तो पिटने का आदी ही था, पर फिर भी उस निर्दोष प्राणी से यह मार सही न गई, हाथ जोड़ रुँधे कण्ठ से बोला—"बाबूजी, मुझ से काम न होगा, मेरी तनख्वाह का फ़ैसला........"बिचारा अभी वाक्य भी पूर्ण न करने पाया था कि बाबूजी ने लात जमाते हुए कहा—"हाँ, उल्लू का पट्ठा, अब तनख्वाह माँगता है। काम करते तो मौत आती है, जा जहां जी चाहे, तनख्वाह-वनख्वाह कोई नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरि अपना-सा मुँह लेकर रह गया।

—२—

"क्या हुआ रे ? आज मुँह क्यों फुलाया हुआ है ?" रामू ने झट हरि के उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना ही बड़ी साँस ले उत्तर दिया—"बाबू ने पीटा होगा, होना क्या है ! ये बाबू लोग हम ग़रीबों को तो कुछ समझते ही नहीं।"

कल्लू भला कब चुप रहनेवाला था। वह भी झट बोल उठा—"हरि को भी बाबू ने पीटा होगा। क्यों हरि ठीक है न ? रामू को भी तो बाबू खूब पीटता था, इसलिए बेचारा दुम दबा कर भाग आया।" रामू ने ज़रा तेज़ हो उत्तर दिया—"दुम दबा कर कैसे ! हम कोई कुत्ते हैं जो इन लोगों की झिड़कियाँ, जूतियाँ खाते रहें ! हम ग़रीब निर्धन हैं इसीलिए न ? तुम्हें जूतियाँ खानी पड़ती तो होश आ जाता।"

बिहारी ने हँसते हुए रामू की पीठ पर हाथ फेर कर कहा—"ठीक है रामू, ठीक है। ये अपने को बड़े बाप का लौंडा समझते हैं तो समझने दो, हमें क्या पड़ी। क्यों हरि, तुम भी अब न जाओगे।"

हरि ने आँसू पोंछते हुए कहा—"बिहारी ! इतनी मार खाकर फिर जाऊँगा ? तनिक मेरी पीठ तो देखो। अब तो मैं भूल कर भी इन बाबू लोगों का काम न करूँगा।"

बिहारी, कल्लू, रामू, शामू सब मिल कर हरि की चोट से नीलवर्ण हुई पीठ को देख अचम्भित हो गए। क्षण-भर के लिए सबके मुँह बंद हो गये। अन्त में बिहारी ने निस्तब्धता को भंग करते हुए कहा—"आज अपनी पंचायत को बुला कर फ़ैसला करना होगा कि हमें क्या करना चाहिए।"

बस, बिहारी का कहना ही था रामू और शामू ने अपनी पंचायत को एकत्रित कर लिया। बिहारी को मुखिया बनाया गया।

बिहारी ने हरि की दशा का वर्णन करते हुए कहा—"भाइयो, हमें आगे क्या करना चाहिए ?" जितने मुँह उतनी बातें। क्रमवार सबने अपनी अपनी सम्मति प्रकट की। किसी ने मज़दूरी करना उचित समझा, और किसी ने खेती-बाड़ी, पर हरि की दौड़ान बहुत आगे की ठहरी। उसने खड़े होकर ऊँची आवाज़ से चिल्लाते हुए कहा—"मैं तो काँग्रेस में काम करना सबसे अच्छा समझता हूँ। आप में से कोई माने या न माने पर मैं अपने विचार को न छोड़ सकूँगा।"

झंडू जो अभी तक चुपचाप कान लगाए सबकी बातें सुन रहा था, घबरा कर शीघ्र उठ खड़ा हुआ। काँपते हुए बोला—"हरि, तुम्हें यह विचार छोड़ना होगा। सुना है लाल पगड़ीवाले काँग्रेसियों को नाकों चने चबवाते हैं। बच्चा जब उनके डंडे पड़ेंगे तो फिर नानी याद आएगी। भला इसी में है कि कोई और काम चुन लो।"

"चाचा, यह नहीं हो सकता, उनकी मार किसी दुनिया में नाम रोशन करनेवाली होगी"—कहता हुआ हरि चौकी पर से कूद पड़ा।

लोगों ने उसे बहुत समझाया, बुझाया, भय दिखाया, पर हरि दुनिया के धनवान बाबुओं की मार से जला सब की ओर पीठ दे, देखते ही देखते काँग्रेस के दफ़्तर में घुस गया।

—३—

हरि को जेल में आए चार मास हो गये हैं। बेचारे की कोई बात पूछनेवाला भी नहीं है। पुलिस की गाली-गलौच से नाकों दम आ गया है, परन्तु एक प्रशंसा की आशा ने सब कष्टों को स्वप्नवत भुला दिया है। इसकी कोठरी के पास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही एक शिक्षित बंगाली बाबू रहते हैं। काम से निपट कर कभी कभी यह उन्हीं के पास जा बैठता है। एक दिन बातों बातों में हरि ने पूछा—"बाबूजी, मनुष्य संसार में उन्नति किस तरह कर सकता है?"

बंगाली बाबू इस प्रश्न को सुन कुछ मुसकराए। फिर गम्भीरतापूर्वक बोले—"हरि, संसार में उन्नति केवल पूछने से नहीं होती। उसके लिये पुरुषार्थ चाहिए, आत्मिक बल चाहिए। संसार परिवर्तन-शील है अतः मनुष्य को भी संसार के परिवर्तन के साथ-साथ अपना परिवर्तन करने के लिए भी उद्यत रहना चाहिए, न मालूम कब हमें कैसी परिस्थिति का सामना करना पड़े। प्रकृति के नियमों का पालन करता हुआ जो प्राणी सांसारिक कुचक्रों को अपने पुरुषार्थ से प्रसन्नतापूर्वक पार कर जाता है, वही उन्नति को प्राप्त होता है। परन्तु जो भय से एक कोने में छिप कर बैठ जाता है वह पद पद पर ठोकर खाता है, कभी उन्नति को प्राप्त नहीं होता, सहृदय समाज में उसका आदर नहीं होता। क्यों? किसलिए? केवल साहस न होने से। इस संसार में पग-पग पर मनुष्य की परीक्षा होती है। इसलिए ज्ञानी, बुद्धिमान् की भाँति प्रसन्नता पूर्वक सफलता-असफलता का ध्यान न करते हुए परीक्षा के लिये तत्पर रहो।"

"हरि, आज उन्नति के पथ का अनुसरण करना चाहते हो, एक गौरवशाली हरि बनना चाहते हो, तो भय को त्याग साहस का जामा पहिन मैदान में आओ। भली-बुरी का ध्यान छोड़ दो, बस फिर क्या होगा, जो आज तुम्हें पैरों से ठुकराते हैं वही कल तुम्हारा आदर करेंगे। तुम्हारे आगे मस्तक झुकायेंगे।"

हरि इस अन्तिम वाक्य को सुन हर्ष से उछल पड़ा। उसके शरीर में एक बार फिर रक्त का संचार हुआ, आशा की लहर तरंगित हो उठी। जिस वस्तु की खोज में था, वह पाली।

—४—

सचमुच यह संसार परिवर्तनशील है, मनुष्य भी इसमें चक्र की भाँति घूमता रहता है। यदि आज वह दुःखी है तो कल वह अवश्य ही अतीव सुखी होगा। यदि आज रङ्क है, तो कल वह राजा हो सकता है। आज किसी को हम रुलाते हैं, तो कल हमें भी जो भरकर रोना पड़ेगा। यहाँ तो 'एक हाथ दे दूसरे हाथ ले' वाला सौदा है। अर्थात मनुष्य को सदा समभाव से रहना चाहिए; क्योंकि उसके प्रत्येक हाव, भाव, चाल, ढंग में किसी दिन परि-वर्तन आ सकता है।

अस्तु, उसी चक्र में हरि के दिन भी फिर गये। अब हरि वह हरि नहीं है, जो बाबू के यहाँ बर्तन साफ़ करता था, अब हरि वह हरि नहीं है, जो जेल की कोठरी में पड़ा गाली-गलौच सुनता था, अब तो वह 'ए' क्लास का क़ैदी किसान-दल का सभापति और कांग्रेस वरकर्ज़ का नेता है। स्थान-स्थान पर उसके व्याख्यान आदि होते हैं। लोग उसके नाम से भागे चले आते हैं। हरि अपनी इस उन्नति पर बहुत प्रसन्न है, बार-बार ईश्वर का धन्यवाद करता है। कई लोगों ने उससे विवाह का प्रस्ताव किया। परन्तु इसने अस्वीकार किया। वह अपने जीवन को कण्टकमय नहीं बनाना चाहता था।

एक दिन हरि अपने कमरे में बैठा अख़बार पढ़ रहा था कि इतने में एक तार मिला। वह तार जगन्नाथ का था और पहिली गाड़ी से ज्वालापुर को प्रस्थान लिखा हुआ था।

हरि एक अपरिचित व्यक्ति की तार पा कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़े असमञ्जस में पड़ा। उसने उलट फेर करते हुए तार को दो-तीन बार पढ़ा, पर उसको 'क्यों' और 'किस लिए' का उत्तर न मिला। अंत में, बहुत कुछ सोचने के पश्चात् हरि शाम की गाड़ी से रवाना हो गया।

स्टेशन पर किसान-दल उसके अभिनन्दन के लिए खड़ा था। इसे देखकर लोगों ने मन चाहे नारे लगाए और भीड़ को चीर कर मोटर पर बैठा जगन्नाथ के घर लाया गया। जगन्नाथ वही सज्जन थे जिस के घर से हरि मार खा कर निकला था। उन के यहाँ बहुत परिवर्तन हो गया था। उस समय वे एक सरकारी नौकर थे, रात-दिन साहबी ठाठ की नक़ल करनेवाले अँगरेज़ बाबू थे, अब वे एक लम्बा कुरता, तथा गांधी-टोपी पहननेवाले किसान दल के सेक्रेटरी थे। इन्होंने ही दल में कुछ दंगा होने के कारण हरि को तार दिया था।

इन्होंने हरि को नहीं पहचाना पर हरि ने पहचान लिया। इन्होंने हरि की जी-जान से सेवा टहल की। हरि जिस काम के लिए बुलाया गया वह केवल एक व्याख्यान से ठीक हो गया, इसलिए हरि को वहाँ बहुत देर तक ठहरना उचित न लगा। उसने बातों-बातों में एक दिन चलने का प्रस्ताव पेश कर दिया। जगन्नाथ ने कुछ दुःखित हो कर कहा--"सभापतिजी, यह क्या! अभी तो दल पूर्णरूप से सचेत भी नहीं हुआ, एक दो दिन के पश्चात् जाइयेगा।"

"सेक्रेटरी साहिब, यह तो मैं जानता हूँ कि मेरे जाने से फिर खलबली भी मच जाएगी, परन्तु मेरा यहाँ रहना इनके लिए लाभकारी भी नहीं। अब तो यह तन मन से काम में लगे हुए हैं फिर इनमें व्याख्यान सुनने का ही स्वभाव पड़ जायेगा। काम की लगन चली जायेगी। अतः इस विचार से मैं आज ही चला जाना चाहता हूँ। फिर कभी आवश्यकता पड़े, तो पत्र लिख कर सूचित कीजिएगा। मैं तो आपका दास हूँ।"

"वाह सभापतिजी! आपने भली कही! इस प्रकार हमें लज्जित मत कीजिए। आप हमारे स्वामी हैं, देश के नेता हैं, हम आपका जितना आदर करें उतना थोड़ा है।"

हरि ने हँस कर उत्तर दिया—"बाबूजो, अब चाहे जो कुछ हूँ पर वास्तव में स्मरण कीजिए मैं आपका वही त्याज्य दास·······।"

जगन्नाथ की आँखें आश्चर्य से खुल गईं। मस्तक चकराने लगा, लज्जा के मारे शरीर काँपने लगा। उसने अपने को सँभालते हुए कहा, "ओह, यह हैं दिनों का फेर।"

———

हिन्दी-सन्देश क्यों पढ़ें?

हिन्दी-संन्देश के हरेक अङ्क में मनोरञ्जक कहानियों, भड़कीली कविताओं तथा शिशु-संसार और महिला संसार के साथ साथ हिन्दी-रत्न हिन्दी भूषण, तथा हिन्दी-प्रभाकर परीक्षाओं के सम्बन्ध में विशेष लेख छपते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२३वाँ हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन

[ले०—एक दर्शक]

अखिल भारतीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन का २३वां अधिवेशन दिल्ली में २४ मार्च १९३४को प्रारम्भ हुआ। दिन के ९ बजे जुलूस निकला, जो चावड़ी बाज़ार, चाँदनी चौक आदि से हो कर प्रदर्शिनी के स्थान पर पहुँचा। जुलूस में बहुत से स्त्री पुरुष थे।

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति ने पण्डित अयोध्यासिंह उपाध्याय "हरिऔध" से प्रदर्शिनी खोलने का अनुरोध किया। हरिऔधजी ने भाषण करके प्रदर्शिनी खोली। प्रदर्शिनी में उपस्थित लोगोंमें सर्वश्री० माधवराव किबे, कमलाबाई किबे, माखनलाल चतुर्वेदी, प्रेमचन्द, दुलारेलाल भार्गव, लक्ष्मीधर वाजपेयी, नवीनजी, टंडनजी आदि के नाम उल्लेख योग्य हैं। प्रदर्शिनी में पुस्तकें, सामयिक पत्र, चित्र, हस्तलिपियाँ आदि हैं जो गया, किशनगढ़, चूरू आदि से आयी हैं।

दुपहर बादको महिलाओं की ईशवन्दनाके साथ सम्मेलन का अधिवेशन आरम्भ हुआ। स्वागताध्यक्ष सेठ घनश्यामदास बिड़ला ने स्वागत भाषण किया। डाक्टर सरयूप्रसाद और पण्डित श्यामविहारी मिश्र ने बड़ौदा नरेश के हिंदी प्रेम की प्रशंसा की। बड़ौदा के दीवान ने सभापति बड़ौदा नरेश का भाषण पढ़ा और कहा कि महाराजा ने १०००) सम्मेलन को दिया है। सभापति बड़ौदा महाराज उपस्थित नहीं थे। सभापति के आसनपर हरिऔधजी विराजमान थे। मंत्री ने रिपोर्ट पढ़ी। महात्मा गांधी, पूज्य मालवीयजी, राजेन्द्र बाबू, सेठ जमनालाल बजाज़ श्री सेकसरिया, मुरारका, कौशिक आदि के सहानुभूति के सन्देश पढ़े गये। ओड़छानरेश भी सभा में उपस्थित थे।

बड़ौदा नरेश का भाषण

बड़ौदा नरेश का नीचे लिखा भाषण सम्मेलन में पढ़ा गया।

हिन्दुस्तान को एक साधारण भाषा की बहुत ज़रूरत है यह निर्विवाद है। भाषारूपी अड़चनें हमारी जातीय कमजोरी के मुख्य कारण हैं।

दो भिन्न प्रकार के विचार

वे जो इसको साफ साफ देख रहे हैं दो संभावित विभागों में बटे हुए हैं। एक जो दक्षिण निवासी हैं वे देख रहे हैं कि अंग्रेज़ी ही सब हिन्दुस्तान की सर्व साधारण भाषा है। उनका तर्क है कि हिन्दुस्तान के बुद्धिमान पुरुषों को पश्चिम के संसर्ग में रहने और राजनीतिक कानूनी और उच्च अभ्यास करने के लिये अंग्रेज़ी जानना चाहिए, तो यही सर्वसाधारण जनता की भाषा हो जाना स्वाभाविक है।

प्रत्येक हिन्दुस्तानी त्रिभाषी है

अथवा यों कहिए कि प्रत्येक हिंदुस्तान निवासी कमसे कम तीन भाषायें जानने वाला हो ऐसी कल्पना करनी पड़ेगी। इनमें से एक तो उनकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मातृभाषा अपने घर और सामाजिक काम के लिये, दूसरे अंग्रेजी जो पूर्ण रूपमें असंबद्ध है—सार्वजनिक अन्तः प्रांतीय व्यवहार के लिये। इन पर यदि वह हिंदू है तो संस्कृत, मुसलमान है तो अरबी और फ़ारसी पढ़ानी चाहिए। पिछली तीनों जबानें यदि अपने पैत्रिक साहित्यिक दायभाग से पृथक होना नहीं चाहतीं तो जरूरी हैं।

अंग्रेज़ी साधारण भाषा

इस प्रकार जो मन साधारण रीति से प्रतिदिन बंगला अथवा मरहठी में काम कर रहा है, उस मन का एक भाग अंग्रेज़ी और दूसरा संस्कृत अथवा फ़ारसी के लिये सुरक्षित होना चाहिए, ताकि वह पूर्वीय तथा पाश्चात्य संस्कृति से लाभ उठा सके। उसके उपरान्त एक सार्वजनिक भाषा की दृष्टि से अंग्रेज़ी भाषा पर उसका अच्छा अधिकार होना चाहिए। यदि इस प्रकार का मार्ग अनुसरण करना हो, तो मैं स्वयं इस प्रकार से हिन्दुस्तान को संघटित देश तथा संस्कृति में उन्नति करने वाले की कल्पना नहीं कर सकता।

हिन्दी राष्ट्रभाषा के रूप में

दूसरे आन्दोलन की जड़ उत्तर हिन्द में है। इसका प्रयोजन यह है कि हिन्दी भाषा स्वाभाविक ही हमारी राष्ट्रीय भाषा है और भाषा की दृष्टि से यह प्रकट है कि एक ऐसी भाषा के प्रचार से जिसका आधार संस्कृत हो, हमारे देशवासियों के लिये दैनिक साधारण व्यवहारकी दृष्टि एवम् साहित्यिक दृष्टि से काम करते हुए बहुत ही कम भेद पड़ेगा। हम हिन्दुओं को संस्कृत जानना चाहिए और मुसलमान फारसी भाषा में एक उचित विद्या सम्बन्धी भाषा और हिंदी में एक ऐसी देशी भाषा पायेंगे, जिसको वे उर्दू के वेश में व्यवहार में ला रहे हैं। यह भाषा वास्तव में अरबी और फ़ारसी शब्द से मिली हुई हिंदी है। अतएव यदि हिंदी को अपनी राष्ट्रीय भाषा मान लिया जाय तो उत्तरीय हिन्द के दो तृतीयांशके लिये इनकी दैनिक विद्या संबंधी तथा घरों में साधारण बोलचाल में संबंधित भाषाएं होंगी। एक दूसरे से अत्यन्त सम्बन्धित तीन भाषाओं का ज्ञान अनेक असंबन्धित भाषाओं से विशेष सुगम और संस्कृति के संबन्ध में अधिक उपयोगी होगा। हमारी दशा भूमध्यसागर के तट-निवासियों के समान होनी चाहिए, जो लेटिन भाषा को संस्कृतिजन्य भाषा, फ्रेंच भाषा को अन्तरराष्ट्र की संयुक्त भाषा और इटली की तथा स्पेन की भाषाओं को मातृ भाषा के अधिकार से अनुभव करते हैं। यह एक अत्यन्त सामान्य अन्तर विधि है। इनका दृष्टान्त यहां स्विटजरलैण्डनिवासी प्रजाका अधिक उत्साहवर्धक होगा, जिन्हें फ्रेंच, जर्मन और अंग्रेज़ी भाषाएं जाननी पड़ती हैं, अपनी निंजी जिनकी भाषा कोई साहित्यिक सेवा भी नहीं की।

अंग्रेज़ी भाषा की आवश्यकता

यदि हिन्दी को भारतवर्ष के लिये राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया जाय तो भी हम यह नहीं कह सकते कि हमें अंग्रेज़ी सीखने की आवश्यकता नहीं। हम इंगलैण्ड तथा पश्चिम के साथ अपना सम्बन्ध त्याग नहीं सकते।

हिन्दी के व्यावहारिक लाभ

यह केवल विद्वानों के लिये होगा। दश लाख सुशिक्षित मनुष्यों का एक विदेशी भाषा सीखना और तीस करोड़ अनपढ़ मनुष्यों के सीखने में बहुत भेद है। साधारण जनता हिन्दी को बड़ी सरलता से ग्रहण कर सकेगी और अन्तरप्रान्तीय व्यवहार में अधिक वाकपटुता परिणाम में प्राप्त कर सकेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस के आध्यात्मिक प्रभाव

यह एक अत्यन्त व्यावहारिक लाभ है, परन्तु इससे अधिक उपयोगी इसका आध्यात्मिक प्रभाव है। विदेशी भाषा का सदैव उपयोग मन्द प्रभावोत्पादक है। यह वाणीके स्वाभाविक लालित्यके स्थान पर शब्द प्रयोग में वर्णसंकरता तथा बांझपन को उत्पन्न करती हुई स्वाभाविकता और सौंदर्य को नष्ट करती है।

राष्ट्रीय भाषा की आवश्यकता

इसके उपरांत जो बात राष्ट्रीय भावों को नष्ट करती है वह दासता को भी जन्म देती है। आइये हम इग्लैंड का दृष्टांत लें। जब वह देश विदेशी दासताके पाशोंसे मुक्त हुआ, तब ही उसने वाइक्लिफ, शेक्सपियर और मिल्टनका अंग्रेजी साहित्य उत्पन्न किया। इसी प्रकार जब जापान ने चीनका अनुकरण करना छोड़ दिया तब ही उसने अपनी संस्कृति उत्पन्न की। तभी उसने सर्वप्रिय कविता, कला, तथा बुशीदो के धर्म के नियम, अपने प्रामाणिक जापानी भाव अर्थात् यामाटी दामाशो आईके रूप में उत्पन्न किये।

आजकल जापानी लोग पश्चिमके साहित्य के तथा पश्चिमीय लोगों के साथ व्यवहार के लिये अंग्रेजी सीखते हैं, वे कभी स्वप्न में भी अपने लिये अथवा साहित्यिक उपयोग में इसे नहीं लायेंगे। इसलिये हमें हिन्दी का एक सामान्य व्यवहार की भाषा के उपयोग के लिये प्रबल आधार मिलता है।

हिन्दी के लक्षण करने की आवश्यकता

हिन्दी हमारी सामान्य तथा प्रभावशाली भाषा होनी चाहिये। हिन्दी का सावधानी से लक्षण करना होगा। हम इसे वह समझें जिसे उत्तरीय भारत में हिन्दू देवनागरी लिपि में, तथा मुसलमान उर्दू लिपि में लिखते हैं। निःसंदेह केवल साहित्यिक अत्युक्तियाँ हैं। जहां एक ओर अधिक संस्कृतजन्य शब्दों के लिये और दूसरी ओर अधिक अरबी तथा फ़ारसीजन्य शब्दों के लिये हमें लखनऊ के मुसलमान और काशी के हिंदू को समझाने में कठिनाई उत्पन्न कर दी हैं।

चीन में भी यही बात है, जब कि एक पेकिन निवासी कन्टन निवासी के साथ व्यवहार करना चाहता है। चीन देश इस समस्या को सुलझाने का यत्न इस प्रकार से कर रहा है कि पी-हुआ अथवा ग्राम्यभाषा साहित्यके तथा दैनिक व्यवहार की भाषा के रूप में ली जाय।

तुलसी और कबीर की हिन्दी-भाषा

तुलसीदास और कबीरने सिद्ध कर दिया कि महान साहित्यका माध्यम हिन्दी ही होगी। बंगाली थोड़े दिनोंमें इसको सीख सकता है जब कि उसको बहुत वर्ष उस बाबूशाही अंग्रेज़ी भाषाको सीखने में लगते हैं। अर्थात् मेकाले की भाषा का अनुकरण करने में उपहासास्पद बनता है। मेकालेने दो बातें कहीं जो सत्य तथा असत्य हैं। सत्य इस लिये कि उसने अंग्रेज़ी शिक्षा का प्रभाव भारतीय संस्कृति पर दीर्घ दृष्टि से अनुभव किया, असत्य इसलिये कि वह भूल गया कि भारतीय संस्कृति से पृथक् करना मानसिक दासता है। राजद्वारी कार्यों के लिये अंग्रेज़ी और संस्कृत, राष्ट्रीय जीवन के लिये हिन्दी, घरेलू व्यवहार के लिये प्रान्तीय भाषाएँ इस प्रकार का तात्कालिक मार्ग भारतवर्ष के लिये मेरे विचार में होना चाहिये।

चतुर्विध मार्ग

प्रांतीय भावों के कारण प्रांतीय भाषाएँ सामाजिक संस्कृतिजन्य व्यवहार में कुछ अंश में बनी रहेंगी। परन्तु जैसे ही भारतवर्ष संघटित होकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधुनिक जगत में अपना स्थान बनायेगा वैसे ही वे गौण रूप धारण कर लेंगी। ऐसा करने के लिये साधारण ईर्ष्यालु भाव और संकुचित दृष्टिबिंदु को त्यागना पड़ेगा। "एक महान् राष्ट्र तथा संकुचित मन इकट्ठे नहीं रह सकते।"

भारतवर्ष के लिये एक लिपि देवनागरी

भारतवर्ष की लिपि के प्रश्न पर मैं रोमन लिपि के विरुद्ध इस ही लिये हूं जिस लिये अंग्रेजी भाषा के विरुद्ध हूँ। यह हमारे देश के अनुकूल नहीं है, यह एक कृत्रिम प्रबंध है जो स्वाभाविक विकास नहीं है। हमारी कठिनाइयाँ वास्तव में अधिक हैं। बोलचाल की भाषाओं में कई लिपिओं ने गड़बड़ मचा रखी है। हिन्दी जैसे एक राष्ट्रभाषा बन सकती हैं, वैसे ही देवनागरी अपनी स्वाभाविक एक लिपि है। कोई भी मनुष्य जो संस्कृत लिपि को जानता है वह सब उससे बनी हुई लिपियोंको आसानी से सीख सकता है, और यदि दक्षिणी द्राविड़ संस्कृति का अभ्यास करता है कि वह शेष भारत की संस्कृति के साथ सहभागी हो, तो उसको हिन्दी भाषा और देवनागरी भी सीखनी चाहिये, जिसके साथ नांदी नागरीका बहुत सबन्ध है। यदि हम इस नीति का शनैः शनैः अवलम्बन करेंगे तो कोई कारण नहीं है कि भारतवर्ष क्यों न एक लिपि और एक भाषा में संघठित होकर, दैनिक एक लिपि तथा एक भाषा के पत्र को पढ़े, जो सार्वजनिक विषयों पर विचार विनिमय करता हुआ नवीन राष्ट्रीय साहित्यका निर्माण करे। यह एक ध्येय है जिसके लिये यत्न करना चाहिये। सुधारक गण भावों की प्रबलता का अनुभव करते हैं। यह प्रायः तर्क को दबा देते हैं, परन्तु यहाँ पर तर्क और भाव निस्सन्देह सम्मिलित हैं। उज्ज्वल देशभक्ति चाहती है कि एक राष्ट्रीय भाषा हो और बुद्धिमत्ता प्रेरणा करती है कि हम एक ध्येय को पहुँचें और सर्वदेशीय एक लिपि हो।

चीन का उदाहरण

हमारे महान् पड़ौसी चीन देश में जिसमें चालीस करोड़ जन संख्या है, वह एक लिपि सबको सिखा रहा है और एक भाषा में नवीन साहित्य रच रहा है। यदि चीन देश इस उत्पात के समय में कर सकता है, तो हम भी कर सकते हैं।

हिन्दी-साहित्यिक प्रदर्शनी

अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के तेईसवें अधिवेशन की प्रदर्शिनी का श्रीअयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ने उद्घाटन किया। इस अवसर पर कृतज्ञता-प्रकाश करके, प्रदर्शिनी के लाभ बताने के बाद, आपने निम्न भाषण दिया—

"इस समय जिस प्रदर्शिनी का उद्घाटन हो रहा है, वह है साहित्य-सम्बन्धी। उसमें अन्य विषयों का भी समावेश है, परन्तु अल्प मात्रा में। उसका निर्माण साहित्यिक उद्देश्य से ही हुआ है। उसमें आपको प्राचीन और आधुनातन हिन्दी-साहित्य सम्बन्धिनी अधिकांश पुस्तकें और वस्तुएँ मिलेंगी। हिन्दी भाषा-साहित्यकाल लगभग नौ सौ ईस्वी से आगे नहीं जाता। सहस्र वर्ष में हिन्दी कितना फूली-फली, कितनी समुन्नत हुई, उसमें क्या-क्या परिवर्तन हुए, उसका आदिम रूप क्या था, फिर बाद को वह किन रंगतों में ढली, उसका व्यापक रूप पद्य था अथवा गद्य; पद्य में उसने कैसे-कैसे रत्न लाभ किये; गद्य में उसने क्या चमत्कार दिखाये; उसकी व्यापकता पद्य द्वारा कहाँ तक हुई, और अब गद्य ने उसको कहाँ से कहाँ पहुँचाया। मेरा विश्वास है, प्रदर्शिनी आपको इन बातों का यथावश्य ज्ञान कराने में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत-कुछ समर्थ होगी। जहाँ तक मुझको ज्ञात है, मैं कह सकता हूँ कि जहाँ प्रदर्शिनी के प्रबन्धकों ने विविध पुस्तकालयों और राज्यों से अनेक उत्तमोत्तम प्राचीन ग्रन्थों और चित्रों का संग्रह किया है, लेखमालाएँ इकट्ठी की हैं, कितनी प्राचीन अप्राप्य हस्तलिखित पुस्तकों का संग्रह किया है, वहाँ वर्तमान काल के लगभग समस्त पुस्तकों और लेखकों के चित्रों एवं अन्य तत्सम्बन्धी उपकरणों के एकत्रित करने में भी कसर नहीं है। प्रदर्शिनी के आवश्यक और उपयोगी उपकरणों के संग्रह करने में कितनी असुविधा होती है, कितनी बाधाएँ सामने आती हैं, कितना परिश्रम करना पड़ता है, कैसे-कैसे लोगों का मुँह देखना होता है, कैसे लोगों की खुशामद करनी पड़ती है, इसको वही जान सकता है, जिसने कभी इस कार्य को किया है। इन सब झंझटों और असुविधाओं के होते हुए भी, प्रदर्शिनी के उत्साही कार्यकर्ताओं ने थोड़े समय में जितनी सफलता प्राप्त की है, वह प्रशंसनीय है। आशा है, प्रदर्शिनी को अवलोकन कर आप लोग मुझसे सहमत होंगे तथा ऐसे उत्साही और प्रयत्नशील पुरुषों की उचित प्रशंसा करने में कतिपय शब्दों की कमी न करेंगे।

"मैं पहले कह चुका हूँ कि प्रदर्शिनी ज्ञानार्जन, अभिज्ञतालाभ, बोध एवं अनुभव प्राप्त करने का लाभ प्राप्त करने का स्थान है, उसमें आमोद-प्रमोद की सामग्री भी होती है। आशा है, आप लोग भी इन बातों पर दृष्टि रखकर प्रदर्शिनी से उचित लाभों और उपयोगी विषयों के संकलन में कसर न करेंगे और सूक्ष्मदृष्टि से उन बातों पर विचार करते रहेंगे, जो देश, जाति और समाज के हित और उनके समुन्नत बनाने के साधन बनें। किसी काल का साहित्य उस काल की सामाजिक परिस्थिति का प्रतिबिम्ब होता है।

व्रजभाषा की निधि

"प्रदर्शिनी में प्रवेश करते ही आपके सामने साहित्यिक ग्रन्थमालाएँ आवेंगी। उनमें से कुछ आधुनिक साहित्य-सम्बन्धी होंगी। प्राचीन साहित्य में ९०० वर्ष का संचित भांडार मिलेगा और आधुनिक साहित्य में पचास वर्ष का। पहले में वे अमूल्य रत्न मिलेंगे, जो व्रजभाषा-सुन्दरी के सर्वस्व होंगे, और दूसरे में वे चमकते मौक्तिक पावेंगे, जो विचकवदना खड़ी बोली के कण्ठहार कहे जा सकते हैं। आप लोगों को दोनों की सेवा में उपस्थित होना होगा, और दोनों की उचित मर्यादा करनी पड़ेगी। व्रजभाषा हिन्दी-साहित्य की जननी है। वह प्राचीन है, अतएव उसके पास बड़े सुन्दर-सुन्दर रत्न हैं। वह अपनी भगिनी अवधी के साथ इस विषय में बड़ी भाग्यवती है। यदि इन दोनों के रत्न अलग कर दिये जायें, तो हिन्दी-भांडार ही रिक्त हो जावेगा। अवधी में व्रजभाषा जैसी व्यापकता नहीं, वह उतनी आराधिता भी नहीं, फिर भी वह अपनी विशेषता रखती है। इन दोनों में इतनी घनिष्टता है कि अधिकांश स्थलों में इनकी एकरूपता भिन्नता का बाधक हो जाती है। इनके पादांबुजों की अर्चना ऐसे-ऐसे आचार्यों और महाकवियों ने की है, जो आज भी हिन्दू-संसार के लिए प्रातःस्मरणीय हैं। ऐसे-ऐसे राजा महाराजाओं ने इनके चरणों में पुष्पांजली अर्पण की है, जो राज-सुख त्याग कर उन्हीं के लिए उत्सर्गीकृत-जीवन कहे जा सकते हैं। चाहे गुरु गोरखनाथ की रचनाओं को लें, चाहे कबीर साहब जैसे सन्तों की ग्रन्थमालाओं को, चाहे दशम गुरु के दशम ग्रंथ को। चाहे अष्ट छाप के वैष्णवों की कृतियों को देखें, चाहे गोस्वामी तुलसीदास-जैसे महात्माओं की महान विभूतियों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को, चाहे महाकवि केशवदास एवं कविवर देवदत्त-जैसे काव्यकारों के काव्यों को अवलोकें, चाहे सरस हृदय बिहारीलाल और घन आनन्द की कान्तकलाओं को, सबों में ही इन की छाप लगी दृष्टिगत होती है और तो क्या ख़सरो, जायसी, रहीमखाँ ख़ानख़ाना, रसखान, जैसे मुसलमान सहृदयों को भी इनकी पदबन्दना करते अवलोकन करते हैं, वरन सम्राट् अकबर को भी। ऐसी अवस्था में ये भाषायें उपेक्षणीय नहीं। आप भक्ति से नत-सिर होकर इनकी सेवा में पहुँचिये और सहृदयता से इनकी विभूति पर दृष्टिपात कीजिये, आपको आज दिन भी उनसे बहुत कुछ प्राप्त होगा। इनमें कहीं-कहीं सामयिकता न मिले, कहीं-कहीं असम्भवता और अपरिमार्जित रुचि की केलि क्रीड़ा दिखलाई पड़े, परन्तु आर्य संस्कृति का सुन्दर आदर्श और विकास प्रायः दृष्टिगत होता रहेगा। इसमें माधुरी मोहती, मनोहरता विहँसती, सरसता विलसती, कोमलता किकलती, रसिकता मुसुकराती, मंजुता मधु बरसाती और रस छलकता मिलेगा। इनमें सप्तलोक की अनिर्वचनीय विभूति, स्वर्ग की सुरदुर्लभ सम्पत्ति और संसार को विपुल अवलोकनीय और वांछनीय वस्तुयें दृष्टिगत होंगी। नवों रस, उत्तमोत्तम भाव, ज्ञान के अलौकिक आदर्श, शिक्षा और उपदेश के विचित्र प्रकरण, हासविलास के सुन्दर दृश्य, राग-रंग के मुग्धकर चित्र और प्रेम एवं भक्ति के लोकोत्तर प्रसंग पाये जायँगे। निदान जो जिस विचार, रुचि एवं प्रकृति का होगा, उसके लिए इनमें अनेक साधन प्रस्तुत मिलेंगे। आप लोगों को चाहिये कि आप उनको देखें, उन पर विचार करें, उनका अनुशीलन करें, और यह सोचें कि उनमें कौन ग्रहण योग्य है, और कौन त्याग योग्य। जिनको ग्रहण करने योग्य समझें, उनको इस प्रकार समय के रंग में डाल लें; जो देश समाज, और जाति के लिये रसायन का काम दे सके। यदि कोई स्थान कुरुचि पूर्ण हो, यदि किसी ग्रन्थ में अश्लीलता और विलासिता की नग्नक्रीड़ा हो, तो भी उससे न घबरावें, उद्वेगजनक विषयों से भी विचलित न हों, इसलिये कि उनसे अभिज्ञता लाभ कर इस प्रकार के दोषों से अपने वर्तमान साहित्य को बचावें। और उनसे ऐसा पाठ सीखें, जो कुप्रवृत्ति के लिये कशा का काम दे सके। कुछ सज्जनों का यह विचार है कि जो कलुषित ग्रन्थ हैं, उनमें कुछ सुन्दर भाव ही क्यों न हो, परन्तु उनको अस्पृश्य हो समझना चाहिये। परन्तु इस कथन द्वारा हंस-गुणग्रहण की महत्ता का निरादर किया गया है, यह युक्तिसंगत नहीं ज्ञात होता। याद रखिये "सन्त हंस गुन गहँहि पय, परिहरि वारि विकार"—शास्त्र कहता है—

विषादप्यमृतं ग्राह्यम्
अमेध्यादपि काञ्चनम्।
नीचादप्युत्तमाविद्या
स्त्रीरत्नम् दुष्कुलादपि॥

विष में से अमृत को निकाल लो, बुरे स्थान में कञ्चन पड़ा हो तो उसे उठा लो, नीचे से भी अच्छी विद्या सीख लो और स्त्री रत्न को बुरे वंश से भी ले लो।

वर्तमान साहित्य में कमी

अधुनातन ग्रन्थरत्नों के भाण्डार का अवलोकन करना प्रारम्भ करके आपको कई विशेष बातों पर दृष्टि रखनी होगी। इस भाण्डार का गद्य-विभाग इस समय जितना समुन्नत है, उतना समुन्नत वह कभी नहीं था। हिन्दी-भाषा का पद्य भाण्डार जितना प्राचीन और पूर्णता प्राप्त है, वह गौरव किसी भारत की प्रांतीय भाषा को नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राप्त हुआ। हम हिंदी-भाषा की पद्य-सम्बन्धी विस्तार और महत्ता पर बहुत कुछ गर्व कर सकते हैं। किन्तु आज से पचास वर्ष पहले उसका गद्य विभाग नगण्य था। किन्तु आज दिन वह इतना व्यापक और उन्नत हो गया है, कि उसके सामने वर्तमान पद्य-विभाग दब-सा गया है। किन्तु कष्ट की बात यह है कि सामयिक आवश्यकताओं की पूर्ति न तो इस समय हमारा वर्तमान पद्य-विभाग कर रहा है, न गद्य-विभाग। यदि विचार कर देखा जावेगा तो आप लोगों को ज्ञात होगा कि हिन्दी भाषा में अनेक विषय हैं कि जिन पर अब तक ग्रन्थ रचना हुई ही नहीं, कुछ ऐसे हैं जिनमें कतिपय ग्रन्थ लिखे गये हैं, परन्तु अभाव की पूर्ति उन के द्वारा अब भी नहीं हुई, विज्ञान और दर्शन के कुछ ग्रन्थ हैं, कुछ ग्रन्थ अर्थशास्त्र और प्राकृतिक शास्त्रके भी बनाये गये हैं, पर वे उँगलियों पर गिने जा सकते हैं। आवश्यकता की दृष्टि से उनकी संख्या थोड़ी है और उनका अनेकांग अबतक स्पर्श भी नहीं किया जा सका है। रसायनशास्त्र, भूगर्भ-विद्या, वनस्पतिशास्त्र, खगोल-विद्या, नीति-शास्त्र इत्यादि पर अबतक कुछ लिखा ही नहीं गया। पद्य-विभाग में अबतक ऐसे ग्रन्थों का अभाव हैं, जिनका संबंध जातीयता और देश के अनुराग से है। देश के हृदय में प्रवेश कर और जातीयता की रगों को टटोल कर चमत्कृत कर देनेवाली कविता अब कहाँ लिखी गई। किसने ऐसी ओजमयी रचनायें की जो सूखी नसों में रक्त संचार कर दे, निर्जीव को सजीव बना दे और कानों में वह मंत्र फूँक दे, कि चिरकाल के सोये भी जाग जाँय, आजकल कवियों की भरमार है, कविता का स्रोत भी बड़े वेग से बह रहा है, जो हमको निष्क्रिय और किंकर्तव्यविमूढ़ बना रहा है। आप लोगों को अवलोकन करना होगा और विशेष मननशील बनकर यह सोचना होगा कि हम लोग कैसे स्वावलम्बी और कार्यपरायण बन न्यूनताओं की पूर्ति कर सकेंगे।

यह कष्ट की बात है कि हिन्दुओं की वर्तमान शोचनीय अवस्था को देख कर आजकल कुछ लोग हिन्दू संस्कृति के विनाश के लिये बद्ध परिकर हैं। क्योंकि उनका विचार है कि जबतक उनका आमूल परिवर्तन न होगा, तबतक देश का उद्धार न होगा। इस कारण इन दिनों हिंदू-संसार में एक हलचल सी मच गई है, ऐसे साहित्य बनने लगे हैं, जो हिन्दू-क्षेत्र में वैमनस्य के बीज बो रहे हैं। इसी प्रकार के कुछ और विषय हैं, जो आजकल हमारे साहित्य को कलुषित बना रहे हैं। उपन्यास, मासिक साहित्य और पत्र-पत्रिकाओं को उठाकर पढ़िये, विद्वेष मूलक विभिन्न विचारों का प्रवाह बहता मिलेगा। प्रदर्शनी के वर्तमान-कालिक साहित्य भण्डार में भी उसका विकटरूप दृष्टिगत होगा। मैं जानता हूँ क्रान्ति का आदिम रूप ऐसा ही होता है। यह भी ज्ञात है कि विचार-विभिन्नता जीवन का लक्षण है। परन्तु यह भी सत्य है कि संस्कृति का नाश होने पर कोई जाति जीवित नहीं रह सकती। दूसरी बात यह है कि अवांछनीय साहित्य की प्रशंसा योग्य नहीं। किन्तु न मेरे पास इतना स्थान है, न इतना समय कि उन सब पर मैं पूरा प्रकाश डाल सकूँ। केवल यह विनय अवश्य है कि वर्तमान कालिक साहित्य-भण्डार के पुस्तकों का और निरीक्षण आप लोग विवेक दृष्टि और विवेचनात्मक बुद्धि से करें और अपने मानस पटल पर ऐसे भाव अङ्कित करके प्रदर्शनी से बाहर निकलें, जो देशकालानुकूल मानवता के महान सम्बल बन सकें। आप लोग कलुषित और अवांछनीय ग्रन्थों द्वारा अपने हृदय में ऐसी शक्ति सञ्चय करें, जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूषित भावों के निराकरण में समर्थ और निन्दनीय विषयों के प्रचार का पूरा बाधक सिद्ध हो सके। मेरी प्रार्थनायें यदि स्वीकृत हुईं तो मुझको विश्वास है कि प्रदर्शनी का वह उद्देश सफल होगा, जिसके लिये उसकी आयोजना हुई, और हिन्दी देवी का वह विशाल मण्डप पूज्यतम बन जायेगा, जिसकी स्थापना अपने कर-कमलों द्वारा आदरणीय विबुध जनों ने की।

हिन्दी-साहित्य-प्रदर्शनी का विवरण

दिल्ली में साहित्य-सम्मेलन के साथ साथ साहित्य प्रदर्शनी का भी आयोजन हुआ सुनकर अपने राम सबसे पूर्व यही चीज़ देखने गये। दरिया-गंज के पटौदी हाऊस में यह प्रदर्शन किया गया है। मैले कपड़े और फटे हुए जूते होने के कारण कुछ उजलेपोश साहित्य-सेवियों ने नाक-भौं भी सिकोड़ी। पर यारों को वह बात ज़रा भी न अखरी, क्योंकि अपने लिये यह कोई नई बात न थी।

प्रथम स्थान में प्रवेश करते ही छपी हुई पुस्तकों का संग्रह देखकर जी बहुत कुढ़ा। जी में सोचा क्या इन्हीं बाज़ारू पुस्तकों के लिये इतना तूल-तबील बाँधा था। प्रदर्शनी क्या हुई, किसी पुस्तक विक्रेता की दूकान हुई। मन ही मन में कुढ़ता हुआ आगे बढ़ा तो दूसरे स्थान में समाचार पत्रों का संग्रह था। देख कर तबियत झुँझला उठी। समाचार पत्रों के लिये क्या दिल्ली का मारवाड़ी पुस्तकालय था, जो यहाँ एकत्रित किये गये हैं। इतने पर भी तुर्रा यह कि एक साहब आकर बोले—"हाथ न लगाइये सामान ख़राब होता है ?" मैंने धीरे से कहा यदि देखने से ख़राब होने का भय था तो इन सबको यहाँ रखने की आवश्यकता क्या थी? सूचीपत्र रख दिये होते। न कोई दिखानेवाला है न बताने वाला, तब ऐसी हालत में ख़ुद भी न देखें तो क्या करें ? मेरा तीखा उत्तर सुनकर वह महाशय जरा झेंपे और अत्यन्त प्रेमपूर्वक प्रदर्शनी की बहुमूल्य पुस्तकों का दिग्दर्शन कराने लगे।

सबसे प्रथम उल्लेखनीय श्रीमन्नूलाल-पुस्तकालय (गया) का संग्रह है। इनके यहाँ कुछ ऐसा अपूर्व नयनाभिराम पुस्तकों का संग्रह दृष्टिगोचर हुआ कि व्यर्थ किसी की प्रशंसा करने का आदी न होते हुए भी मेरे मुँह से बेअख़्तियार वाह-वा निकली पड़ती थी। भारतीय पुरातन कला का वह अनूठा और बेजोड़ दिग्दर्शन था कि भारतीय हृदय न रखनेवाला भी उस कुशल भारतीय लिपिकारों की प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकता। एक ग्रन्थ केले के कई सौ बल्कलों पर लिखा हुआ है। एक ग्रन्थ ताड़पत्र के कई सौ पत्र पर दोनों ओर खुदा हुआ है और एक मुख्य ताडपत्र पर लिखा हुआ है। और उनका लेख अत्यन्त स्पष्ट और सुन्दर है और यह सब आज से १००० वर्ष पहिले की चीजें हैं। एक दो इंच लम्बे-चौड़े काग़ज़ के फीते पर कुरान भी अच्छे ढंग से लिखा हुआ देखा। इसके अलावा हज़ारों ग्रन्थ देखने योग्य थे। स्थानाभाव के कारण उक्त पुस्तकालय के अनेक ग्रन्थ प्रदर्शनी में न रखे जा सके।

दूसरा उल्लेख योग्य श्री किशनगढ़ दर्बार का पुस्तकालय है।

एक सुनहरी जिल्द की हस्तलिखित मारवाड़ी गीत है, जो २०० वर्ष पुरानी है। एक दो इंच लम्बी चौड़ी पुस्तक है। जिसमें श्रीमद्भागवत का दसम-स्कन्ध है, यह भी ४०० वर्ष पुरानी कृति है। इसके अतिरिक्त अवतार चरित्र, शाहनामा आदि हस्त-लिखित सचित्र पुस्तकें ऐसी सुन्दर हैं कि चुरा लेने को जी चाहता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीसरा उल्लेख योग्य सुराना पुस्तकालय (चूर बीकानेर) का संग्रह है।

आज ऐसे वीरों की सन्तानों का यह संग्रह देख अत्यन्त चित्त प्रसन्न हुआ। उलूक के वाहन लक्ष्मी के उपासकों की सरस्वती की ऐसी सच्ची उपासना को देख किस का हृदय गद गद न होगा। इनके यहाँ भी सचित्र कल्पसूत्र ५०० वर्ष पूर्व का देखने में आया। साथ ही अध्यात्म रामायण जिसकी श्लोकसंख्या बारह हज़ार हैं चार गज़ और दो इंच चौड़े कागज़ पर देखकर आश्चर्य में रह गया। इसके अतिरिक्त अनेक ग्रन्थ और मोनोग्राम चित्र आदि दर्शनीय थे।

गल्पसम्मेलन

२७ मार्च प्रातः ९ बजे से सम्मेलन के विशाल पण्डाल में गल्प-सम्मेलन का अधिवेशन श्रीमती कमलाबाई किबे के सभापतित्व में प्रारम्भ हुआ। श्रीमती कमलादेवी ने कहा—आपका साहित्य भद्दा अश्लील नहीं होना चाहिये। किसी गिरे हुए को उठाने का कार्य गल्प से तथा साहित्य से भी होता है। जिसके साथ हमने पाप किया है, उसको उठाने के लिए साहित्य चाहिये। भाषा के नाते से अन्य समाजें कल आकर आप से पूछेंगी कि हमारा साहित्य कहाँ है। मासिक पत्रों को आपस में विषय बाँट लेना चाहिये। जैसे एक पत्र में केवल राष्ट्रीयता के समाचार हों, दूसरे में महिलाओं के, तीसरे में हरिजनों के आदि आदि।

परन्तु कुछ भी विचार न करना राष्ट्र की हानि है।

आपने बतलाया कि नवयुवकों को आजकल "लिबर्टी" नहीं है। "लिबर्टी" का अर्थ स्वतन्त्रता नहीं, परन्तु घर में सच्चरिता के साथ जीवन बिता कर रहना है।

इस समय मेरे दिल में एक भाव आता है कि हम में अपनी संस्कृति, अपने देशप्रेम आदि के भाव नहीं रहे है। हम पाश्चात्य रहन-सहन को पसन्द करते हुए उसमें स्वतन्त्रता तथा गौरव समझते हैं।

मद्रास में विद्वत्ता का बहुत आदर है। वहाँ पर पुरुषों तथा महिलाओं में कोई पर्दे आदि का भेद-भाव नहीं है और दोनों ही वर्ग एक-दूसरे के साथ पूर्ण सहयोग से कार्य करते हैं।

श्री० प्रेमचन्दजी का भाषण

श्री प्रेमचन्दजी ने अपने भाषण में कहा—

राष्ट्र के अर्थ किसान हैं। जब तक उन अवस्थाओं में मनुष्य नहीं गुज़रता, तब तक वह उसका अनुभव नहीं करता है। साहित्य का भोजन वही है, जिसमें पढ़ने वाला रोवे और उसके स्वाद को महसूस करे।

पुराने लेखकों की जीविका कुछ और थी, जब जी में आय तब लिखने बैठ गये। साहित्य कभी "स्वान्तः सुखाय" में पूरा नहीं होता।

साहित्य तभी पैदा हो सकता है जब आपका अणु अणु उसमें लिपटा हुआ हो। अब साहित्य हमारे और आप जैसे गरीबों के हाथ में आया है, अब आप ऐसा लिखें कि जिससे राष्ट्र काँप उठे।

किसी साहित्य की उम्र पर उसका बनना बिगड़ना नहीं होता, यह सब कुछ दिल के विचारों पर ही निर्भर है। जब तक उसके वाक्यों में यह ताकत है कि वह दूसरे के दिलों को स्पर्श करता रहे तब तक वह जीता है। यदि उसको सुनने के समय मुँह ताकने लगे तो समझो वह मरा हुआ है।

श्रीमती विद्यावती

श्रीमती विद्यावती देवी ने कहा कि देवियाँ

Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जगत की माता हैं। बच्चों को उनके संस्कारों से ही शिक्षा मिल सकती है। मैं आपसे प्रार्थना करती हूं कि आप हमें उठने का अवसर दें जिससे हम कुछ सीख लें और अपने को शिक्षित तथा सभ्य बना सकें।

यदि आपका आधा अङ्ग खराब हो जाय तो आप उसे काट कर फेंक नहीं सकते। उसी प्रकार आप अपनी अर्धाङ्गिनी को भी पीछे नहीं छोड़ सकते। यह भी सम्भावना नहीं है कि आधा भाग रोशन हो जाय और आधा अन्धेरे में रह जाय।

महिलाएँ और पर्दा

परदे के विषय में मेरा अनुभव यह है कि जिस समय यात्रा में हो तो परदेवाली स्त्रियों को असभ्य भाई धक्के दे देते हैं। परन्तु अब पर्दा न रखने पर स्वयं ही मेरे भाई भीड़ में भी रास्ता करा देते हैं। हो सकता है कि किसी समय परदे की आवश्यकता हो परन्तु समय परिवर्तन-शील है, और अब वह समय नहीं है कि महिलाओं को परदे में रखा जाय।

हमें हरेक कार्य में क्यों इतनी तकलीफ उठानी पड़ती है उसका कारण यह है कि हम में संगठन नहीं है। यह घातक रोग है जो धर्म, समाज तथा सब को कष्ट देता है।

देवियों की कोख से ही महात्मा गांधी जैसे रत्न पैदा होते हैं। ऐसी माताओं का अब भी अभाव नहीं है। हमें अशिक्षित रखने का परिणाम यह होता है कि हमारी सन्तानें मूर्ख रह जाती हैं जो देश के लिये भारी कलंक है।

पं० माखनलाल चतुर्वेदी का भाषण

पं० माखनलाल चतुर्वेदी ने श्रीमती रत्नदेवी का परिचय कराते हुए कहा कि हृदय की किताबें कानून की किताबों से भी आगे है। श्रीमती रत्न-देवी ने ऐसी ही अवस्था में अध्ययन किया और अङ्गरेजी की थोड़ी सी शिक्षा के साथ ही काव्यतीर्थ की परीक्षा भी पास की। आप जबलपुर के सेठ गोविन्ददास की पुत्री हैं।

वैभव में पल कर, संकटों को उठाते हुए भी उन्होंने आगे पढ़ने का यत्न किया है। इसके बाद रत्नदेवीजी ने गल्प सुनाई।

श्रीयुत गुरुप्रसाद टण्डन का भाषण

श्रीयुत गुरुप्रसाद टण्डन ने कहा कि रचनाओं के समय ऐसी विभूतियों को रखना आवश्यक है। परन्तु उपन्यासलेखकों के विचार बहुत ऊँचे हो जाते हैं! मेरे विचार में तो "स्वान्तः सुखाय" वाली बात ठीक नहीं है, यह कहना श्री प्रेमचन्द जी की भारी भूल है।

पं० माखनलाल जी का भाषण

पं० माखनलाल जी चतुर्वेदी ने कहा कि कहानी साहित्य पर मेरे शब्दों का क्या अर्थ हो सकता है, यह मैं नहीं जानता। मैं तो कहानी कहना मनुष्य जीवन का प्रति दिन का साहित्य समझता हूँ। मनुष्य प्रति दिन अपनी कहानी कहता है। पति विदेश से लौट कर आया, लोगों ने पूछा कैसे बीती, कहानी हो गई इत्यादि। कहानी समाज का साहित्य है। जो पढ़ नहीं सकता, केवल दर्शन कर सकता है, उनका तथा पढ़े-लिखों का—सब का नाटक कहानी है।

कहानी और उपन्यास लेखकों को यह स्वतन्त्रता है कि एक पाठ के बाद जो पाठ चाहे वह उसमें ला सकते हैं। परन्तु नाटक के लेखक इच्छा होने पर भी ऐसा नहीं कर सकते। उदाहरणार्थ आपने बताया कि कहानी वालों का राजा एकदम बाग से निकल कर महल में जा सकता है। परन्तु नाटक वालों का राजा बाग से निकल कर एकदम महल में नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जा सकता क्योंकि स्टेज छोटी होती है और जब तक बाग के दृश्य को नष्ट कर के महल का दृश्य न बनाया जाय, उस समय तक को पूरा करने के लिये नाटक वाले को बीच में कुछ और दृश्य देना पड़ेगा।

सीता ने अपने चरित्र से इतनी सीताएँ पैदा नहीं कीं, जितनी कि बाल्मीकि ने रामायण में सीता का चरित्र खींच कर सीताएँ पैदा की हैं।

आदर्शवाद जीवन की वस्तु है। उसे ग्रहण करना चाहिये। कहानी के साहित्य में बहुत बड़ा बल है।

श्रीनाथसिंह का भाषण

श्रीनाथसिंह ने कहा कि 'आदर्श' एक ऐसा शब्द है जो हमेशा साहित्य के रास्ते में रुकावट डालता है। बहुत-से आर्डिनेन्स हैं। कोई भी धर्म जाति या राजा रहे, परन्तु साहित्य पर हमेशा किसी न किसी का आर्डिनेन्स बना रहेगा।

आज संसार के साहित्य में यह आवाज़ उठ रही है कि फाँसी की सजा उठा देनी चाहिये। पहले जमाने में शायद फांसी की सजा आदर्शवाद समझा जाता होगा। इसी तरह आदर्शवाद हमेशा पलटता रहता है।

श्री जैनेन्द्रकुमार का भाषण

श्री जैनेन्द्रकुमार जैन ने भाषण देते हुए कहा कि सबसे पहले हमें आप से क्षमा माँगनी है। यह जो सभा के रूप में आप बैठे हैं, इसका नाम गल्प सम्मेलन कहा गया है। मुझे अभी तक इस नाम के प्रति कुछ विस्मय और कुछ जिज्ञासा है। लेकिन उसका संयोजक मैं बन गया हूँ, और मैं आप के सामने आ रहा हूँ।

जब मुझे गल्प सम्मेलन के सम्बन्ध में लिखा गया तब मैंने सोचा कि यह चीज़ आखिर क्या होगी। वहाँ गल्प पढ़ी जायगीं या गल्प कला पर विवेचन होगा, अथवा उसके द्वारा गल्प लेखकों का जमाव बुलाकर उनका संगठन कर डालने की इच्छा है।

गल्प क्या बहुतसी जमाअत के बीच में पढ़कर सुनाने की चीज़ है। मुझे ऐसा नहीं मालूम हुआ। फिर लेखकों के संगठन के पक्ष में भी मैं नहीं हूँ। उससे लेखकों का लाभ उतना नहीं होता जितनी जल्दी दलबन्दी का भाव उत्पन्न हो जाता है।

तब यही निर्णय रहा कि साहित्य के उस रूप पर, जोकि दुनिया में शायद आज सबसे अधिक प्रिय है और जिसको गल्प कहते हैं, उस पर विवेचनात्मक और कुछ प्रामाणिक भाषण हो जाय तो सबसे उपयोगी रहेगा। आज उसका समय भी है।

प्रेमचन्द जी जब बोले, मेरा दुर्भाग्य, तब मैं यहाँ न था। लेकिन देखता हूँ कि उनके एक आध रिमार्क को उपलक्ष बना कर मुझ से पूर्व वक्ताओं ने चर्चा की है।

साहित्य के भिन्न भिन्न रूपों की तुलना भी श्री माखनलालजी ने की है। मुझ में साहित्य को खण्ड खण्ड करके देखने की क्षमता नहीं है। न मैं उन्हें इस तरह अलग करके देखना चाहता हूँ। मैं उसको समग्र रूप में एक ही भाव और एक ही दृष्टि से देख लिया करता हूँ। प्रकार कितने ही हों। साहित्य का प्राण तो एक ही है। अर्थात् वही जो जीवन का प्राण है—अहंकार का लोप, और प्रेम का प्रसार।

साहित्य के टुकड़े करना ठीक नहीं है। साहित्य का सन्देश एक है। दायित्व एक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वान्तः सुखाय यह वाक्यांश उद्धृत करके वक्ताओं ने चर्चा की है। उस पद का क्या तात्पर्य है। मैं क्या दूसरे के लिये लिखता हूँ मैं अगर किसी के सुधार के या उपकार के लिये लिखता हूँ, यह मानता हूँ, तब इस में दम्भ की भावना है।

हम कौन हैं कि उपकर्ता बनें, जज बनें। अपने ही सुख के लिये मैं लिखता हूँ, तो उसे प्रकाशित देख कर सुख की भावना क्यों होती हैं। मेरे मनको क्यों तृप्ति मिलती है जब उसकी कोई बड़ाई करता है। मैं अपने भीतर ही अपनी रचना से सुख पाकर तृप्त क्यों नहीं हूँ? क्यों इच्छा शेष रहती है कि मेरे दुःख दर्द में, सुख विलास में जितनों को हो सके, साँझी बना देखूँ।

बहरहाल "स्वान्तः सुखाय" से ही साहित्य की सृष्टि हो तो अपने से बाहर जाकर सहानुभूति पाने की गुंजायश कहाँ से है। हमारा लिखना, सुन्दर, ललित, सरल और प्रभावोत्पादक हो यह भाव क्यों है। इसलिये वास्तविक बात यह है कि रचनाकार की रचना, उसके स्वयं के लिए उतनी ही है, जितनी पाठक के लिये।

लेखक और पाठक में जितनी घनिष्ठ एकता है, उतनी ही उस रचना में सफलता और सार्थकता हैं। लेख लेखक और पाठक के अन्तर को विलीन कर देने के भाव से उत्पन्न हुई सृष्टि है।

अपने सुख के लिये ही साहित्य है, यह तो साहित्य की साधना है, अपने से बाहर की ओर देखने या दायित्व मानने को आवश्यकता नहीं है। यह साधक की दृष्टि हुई और सब्जेक्टिव यथार्थता यह है कि मनुष्य अपने लिये कुछ न करे, सब कुछ दूसरे के लिये करे। जो अपने लिये जितना करता है उस में उतना ही मिथ्या का अंश है और इन दोनों दृष्टियों को समन्वित करनेवाला सम्पूर्ण सत्य है कि साहित्य परमसत्ता का—ईश्वर—का अर्चन है। भक्त यही कहेगा। तर्क की अपेक्षा कहें तो कह दें, साहित्य सत्य की प्रतिष्ठा है।

श्रीनाथजी ने बातचीत में एक दिन मुझ से कहा कि उनका बड़ा विरोध मेरी रचनाओं से यह है कि उसमें आस्तिकता है। अगर मेरी आस्तिकता, मेरी रचनाओं में समाये नहीं समाती तो मेरी त्रुटि है। मेरी आस्तिकता प्रदर्शन की वस्तु नहीं है। वह हृन्मर्म की वस्तु है। लेकिन मैं मानता हूँ कि परमात्मा के बिना जी नहीं सकता हूँ, वही परमात्मा जो तर्क के सामने शून्य से भी शून्य है। यथार्थवाद और आदर्शवाद का परस्पर विरोध यदि स्थापित किया ही जावे तो मैं "वाद" लग गया है जिसमें, ऐसे आदर्श के खिलाफ हूँ। जो "वाद" के सहारे आदर्श को पकड़ते हैं, वह मिथ्या को पकड़ते हैं। ऐसा बौद्धिक आदर्शवाद व्यक्ति को असफलता में गिराता है। मेरी "परख" पुस्तक की प्रतिपाद्य वस्तु यही है।

लेकिन जितना दीखता है, जितना हमारी व्यवहारिक बुद्धि की पकड़ में आ सकता है, सत्य उतना ही नहीं है। व्यवहारिक बुद्धि से जो बाहर रहता है उसे यथार्थ न कह कर हम आदर्श कह देते हैं।

मैं आप से सच कहता हूँ कि वैसे आदर्श की नींव भूमिका और वैसे आदर्श की बैक ग्राउण्ड से हम वंचित हुए, तो जीना हमारे लिये दूभर हो जायगा।

———

सम्मेलन में स्वीकृत प्रस्ताव

प्रस्ताव नं० १

यह हिन्दी साहित्य सम्मेलन श्रीमान लाला कन्नोमल जी सेशन जज धौलपुर, वाणी भूषण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हेमन्त लक्ष्मणाचार्य ग्वालियर, हरिशरण जी 'मराल' मेरठ, राजा मोतीचन्द जी काशी, राज कुमारी कवला राजा ग्वालियर तथा पं० श्याम लाल नेहरू प्रयाग की असामयिक मृत्यु पर हार्दिक दुःख प्रकट करता है और उनके कुटुम्बियों के साथ समस्त हिन्दी-जनता की ओर से सहानुभूति प्रदर्शित करता है।

प्रस्ताव नं० २

इस सम्मेलन को यह जानकर सन्तोष है कि श्रीमान महाराजा गायकवाड़ ने अपनी रियासत में सन् ३५ ई० से हिन्दी को राजभाषा करने की जो घोषणा की थी, उसके अनुसार कार्य आरम्भ हो गया है। यह सम्मेलन अन्य नरेशों से भी अनुरोध करता है कि वे अपने अपने राष्ट्र में राष्ट्र भाषा हिन्दी का प्रचार करने की कृपा करें।

प्रस्ताव नं० ३

यह सम्मेलन भारत के समस्त सम्पादकों और प्रकाशकों से साग्रह अनुरोध करता है कि सम्मेलन संग्रहालय में हिन्दी के साहित्य को संग्रह करने के विचार से वे अपने प्रकाशित, दैनिक, साप्ताहिक तथा मासिक पत्र-पत्रिका और पुस्तकों की एक प्रति अवश्य भेजते रहने की कृपा करें।

प्रस्ताव नं० ४

यह सम्मेलन भारत के समस्त हिन्दी-प्रेमियों से अनुरोध करता है कि हिन्दी संग्रहालय में हिन्दी के कवियों, लेखकों और सम्पादकों की कृतियों के संचय के लिये उनके चित्र, लेख, काव्य आदि की हस्त लिखित एवं प्रकाशित सामग्री हिन्दी संग्रहालय को प्रदान कर उसे हिंदी का आदर्श-संग्रहालय बनाने में सहायक हों।

प्रस्ताव नं० ५

यह सम्मेलन दिल्ली की स्थानीय गवर्नमेन्ट से अनुरोध करता है कि वह दिल्ली म्युनिसिपैल्टी और कचहरियों की भाषाओं में उर्दू व अँगरेज़ी के साथ साथ हिन्दी को भी स्थान दे, और हिंदी में लिखे बहीखाते उर्दू तथा महाजनी के साथ साथ स्वीकार किए जायें।

प्रस्ताव नं० ६

यह सम्मेलन दिल्ली के म्युनिसिपल बोर्ड और डिस्ट्रिक्टबोर्ड के अधिकारियों का ध्यान आकर्षित करता है कि देहली-ज़िले की अधिकांश जनता हिन्दी-भाषा-भाषी है। इसलिये उसकी सुविधा के लिये देहली-ज़िले की सभी पाठशालाओं में हिन्दी-भाषा और देवनागरीलिपि के अध्यापकों द्वारा शिक्षा का प्रबन्ध करे।

प्रस्ताव नं० ७

(क) यह सम्मेलन पंजाब-प्रान्तीय डाक-विभाग. के अधिकारियों का ध्यान आग्रह पूर्वक आकर्षित करता है कि पंजाब में हिन्दी पढ़ने और समझने वालों की संख्या बहुत अधिक है। इसलिये उनकी सुविधा के लिये प्रत्येक डाकख़ाने में हिन्दी जानने वाले कर्मचारी रखने का उचित प्रबन्ध करें जिससे हिन्दी में लिखे हुए पत्र तथा मनीऑर्डर आदि अपने निर्दिष्ट स्थान पर यथा समय पहुँच सकें।

(ख) यह सम्मेलन प्रत्येक हिन्दी-हितैषी सज्जन से अनुरोध करता है कि वे अपने पत्रों के ऊपर राष्ट्रभाषा हिन्दी में ही पते लिखा करें, जिससे डाक-विभाग के अधिकारियों को जनता की सुविधा के लिये विवश होकर हिन्दी जानने वाले कर्मचारी नियुक्त करने पड़ें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रस्ताव नं० ८

आंध्र, मद्रास और मैसूर विश्वविद्यालयों ने अपने अपने पाठ्यक्रम में हिन्दी को स्थान दिया है, इसलिए यह सम्मेलन उक्त विश्वविद्यालयों का अभिनन्दन करता हुआ उनसे अनुरोध करता है कि बी० ए० (ऑनर्स) के पाठ्यक्रम भी हिन्दी को स्वतन्त्र विषय के रूप में रखने की व्यवस्था करें।

प्रस्ताव नं० ९

यह सम्मेलन दिल्ली, लखनऊ, अलीगढ़, पंजाब और नागपुर के विश्वविद्यालय के अधिकारियों से अनुरोध करता है कि हिन्दी-भाषा उसके साहित्य की उच्च शिक्षा देने के लिए अपने अधीन कालेजों में जहाँ बी० ए० और साहित्य के विषय की पढ़ाई का प्रबन्ध नहीं है, वहाँ उसकी पढ़ाई का प्रबन्ध करें और इस सम्बन्ध में डेपुटेशन भी भेजा जाय।

प्रस्ताव नं० १०

यह सम्मेलन हिन्दी-भाषा-भाषी जनता का ध्यान आकर्षित करता हुआ अनुरोध करता है कि हिन्दी-साहित्य की उन्नति के लिये समय-समय पर सभा, सम्मेलन, जयन्ती, उत्सव तथा वसन्तोत्सव जैसे अनुष्ठानों द्वारा जनता में हिन्दी के प्रति अनुराग बढ़ाने का प्रयत्न होना आवश्यक है। स्थायी समिति इस प्रस्ताव को कार्यरूप देने के लिये समय-समय पर उन तिथियों के सम्बन्ध में सूचना प्रकाशित करती रहे।

प्रस्ताव नं० ११

राष्ट्र-भाषा हिन्दी की विस्तृत अभिवृद्धि और हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के कार्यों और उद्देश्यों का सुसंगठित प्रचार करने की दृष्टि से यह सम्मेलन आवश्यक समझता है कि प्रत्येक प्रान्त में प्रान्तीय साहित्य-सम्मेलन और महत्वपूर्ण बोलियों के क्षेत्र में मण्डल-सभायें स्थापित की जायँ, जो हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन से सम्बद्ध होकर सुव्यवस्थित रीति से निरन्तर कार्य करती रहें।

प्रस्ताव नं० १२

श्रीमन्सवाई महेन्द्र महाराजा श्री वीरसिंहदेव ओरछा-नरेश ने पिछले वसन्तोत्सव सं० १९९० पर ब्रजभाषा एवं खड़ी बोली के पद्यात्मक मौलिक ग्रन्थ के लिये प्रति वर्ष दो सहस्र रुपये के 'श्री वीर-सिंह-देव-पुरस्कार' की घोषणा कर हिन्दी के कवियों को जो प्रोत्साहन दिया है, उसका यह सम्मेलन सादर अभिनन्दन करता है तथा उक्त श्रीमान की इस साहित्य-सेवा के लिये समस्त हिन्दी-जनता की ओर से उन्हें धन्यवाद देता है और साथ ही अन्य भारतीय नरेशों से प्रार्थना करता है कि वे भी हिन्दी-साहित्य की अभिवृद्धि में निरन्तर सहायक बनें।

प्रस्ताव नं० १३

यह सम्मेलन उत्तर तथा दक्षिण के प्रान्त के विभिन्न सांस्कृतिक विनिमय के लिये यह आवश्यक समझता है कि विद्वान् शिक्षा-प्रेमियों के दल राष्ट्र-भाषा हिन्दी-प्रचार को लक्ष्य में रख कर देश के भिन्न-भिन्न प्रान्तों में भ्रमण किया करें। इस दिशा में दक्षिण-भारत हिन्दी-प्रचार सभा ने जो आयोजना की हैं उसके लिये बधाई देता है और देश की अन्य शिक्षण-संस्थाओं से अनुरोध करता है कि वे भी इस तरह की आयोजना करें।

प्रस्ताव नं० १४

राजपूताने की प्रायः सभी रियासतों की अदालतों में हिन्दी प्रचलित रहते हुए भी जयपुर रियासत की अदालतों में अभी तक इसका प्रचार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं है। इसलिये यह सम्मेलन श्रीमान महाराज जयपुर से सादर और साग्रह अनुरोध करता है कि अपनी प्रजा की सुविधा का विचार कर शीघ्र ही हिन्दी के प्रचार की आज्ञा देने की कृपा करें।

प्रस्ताव नं० १५

यह सम्मेलन दिल्ली-विश्वविद्यालय तथा बोर्ड आफ् एजूकेशन दिल्ली से निम्न अनुरोध करता है :—

(क) दिल्ली विश्वविद्यालय भी पंजाब की भाँति (रत्न, भूषण, प्रभाकर) परीक्षाओं के पास करने वाले छात्रों को केवल अँगरेजी में बी० ए० तक बैठने की अनुमति दें।

(ख) दिल्ली अपने अधीनस्थ स्कूलों और कालेजों में हिन्दी पढ़ाने के लिये हिन्दी परीक्षोत्तीर्ण या हिन्दी साहित्य के विशेषज्ञ अध्यापकों को ही नियुक्त करे।

(ग) दिल्ली बोर्ड आफ एजुकेशन मैट्रिक परीक्षा में हिन्दी को अनिवार्य विषय बना दे और हिन्दी परीक्षा के प्रश्नपत्रों की भाषा अँगरेज़ी के बजाय हिन्दी ही रखें।

(घ) यह सम्मेलन दिल्ली-विश्वविद्यालय की सीनेट से सानुरोध निवेदन करता है कि विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में अन्य विश्वविद्यालयों की भाँति हिन्दी की पुस्तकें प्रत्येक विषय पर रखने का उद्योग करे।

प्रस्ताव नं० १६

यह सम्मेलन निश्चय करता है कि हिन्दी की व्यापकता के विचार एवं सर्वसाधारण में व्यवहृत सरल भाषा का मान बढ़ाने के लिये नियमों की स्वच्छन्दता में बाधा न डाली जाय, अर्थात् व्याकरण भाषा का अनुगामी हो न कि भाषा व्याकरण की।

प्रस्ताव नं० १७

ओझा-अभिनन्दन-ग्रन्थ में भारतवर्ष की भाषाओं को नागरी लिपि में लिखने की जो शैली रखी गई है, उसके लिये सम्मेलन धन्यवाद करता है और उसके प्रचार के लिये अनुरोध करता है।

प्रस्ताव नं० १८

यह सम्मेलन ओझा-ग्रन्थ-समिति के विद्वान् सम्पादकों, सहायकों और कार्यकर्त्ताओं को उनके निःस्वार्थ और स्तुत्य कार्य के लिये हार्दिक धन्यवाद देता है।

प्रस्ताव नं० १९

हिन्दी-भाषा की राष्ट्रीयता तथा उसके प्रचार की दृष्टि से हिन्दी-शब्दों के लिंगभेद का यथा संभव नियंत्रण करने के हेतु उचित मार्ग उपस्थित करने के लिये यह सम्मेलन प्रतिष्ठित भाषाशास्त्री सज्जनों की एक कमेटी बनाता है और उनसे निवेदन करता है कि वे अपनी रिपोर्ट ६ मास में सम्मेलन कार्यालय में भेजने की कृपा करें—सम्मेलन के प्रधान-मन्त्री का कर्तव्य होगा कि उस रिपोर्ट को प्रकाशित कर इस पर सम्मतियाँ इकट्ठी करें और फिर आगामी सम्मेलन में कमेटी की रिपोर्ट और सम्मतियाँ अपनी रिपोर्ट के साथ उपस्थित करें।

प्रस्ताव नं० २०

हिन्दी के प्रचार तथा प्रकाशन की गति को तीव्र करने के लिये यह आवश्यक है कि सम्मेलन के अन्तर्गत एक कोष की स्थापना की जाय, जिसके द्वारा यह कार्य हो सके। अतः यह सम्मेलन देशभर के हिन्दी-प्रेमियों से अनुरोध करता है कि वह कम से कम ५ लाख रुपये शीघ्र इकठ्ठा करने में सहायता करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगामी अधिवेशन का निमन्त्रण

आगामी अधिवेशन के लिये मद्रास, इन्दौर, लाहौर, नागपुर, अजमेर आदि बहुत से स्थानों के निमन्त्रण आए थे परन्तु अन्त में सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि आगामी २४वाँ अधिवेशन इन्दौर में किया जावे।

कवि सम्मेलन

साहित्य-सम्मेलन का अन्तिम अधिवेशन कवि-सम्मेलन के रूप में रात के नौ बजे हिन्दी की प्रथम श्रेणी की कवयित्री श्रीमती महादेवी जी वर्मा की अध्यक्षता में हुआ। उपस्थित सज्जनों में से जिन प्रमुख कवियों ने अपनी कवितायें पढ़ीं, वे पं० माखनलाल जी चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', भगवतीचरण वर्मा और हरिकृष्ण 'प्रेमी' थे। श्रीयुत बच्चन की 'मधुशाला' बड़े चाव से सुनी गई। दर्शकों की संख्या सम्मेलन के किसी भी अधिवेशन में इससे अधिक न बढ़ी होगी। नियन्त्रण में काफ़ी कठिनाई पड़ी। पढ़ी हुई कविताओं का स्टैण्डर्ड साधारण था। दर्शकों का व्यवहार किसी भी प्रकार रम्य अथवा सन्तोषजनक नहीं कहा जा सकता। सम्मेलन १२½ बजे समाप्त हुआ।

भीख

[कवयित्री कुमारी शान्तिदेवी भार्गव हिन्दी-भूषण]

भर दो ! पागलपन से हिय प्रभु ! प्रथम दर्शनों ही में,
आँखों में छवि बस जाए, भर जाए श्रद्धा जी में।

तप्त अश्रु हों शान्त, दान दो, पद-रज-कण तुम अपने,
दो वरदान रहें शुचि-छवि के नित्य देखते सपने।

भूलें चाहे हम भक्ति को भक्ति हमें न भूलें,
मानव-हृदय मरुस्थल में प्रिय भक्ति-वाटिका फूले।

इस नश्वर-जीवन की सारी वैभवशाली घड़ियाँ,
वह विलास की कल क्रीड़ाएँ वह सुख की फुलझड़ियाँ।

हों विलीन सब क्षणभंगुर मायावी वैभव जग के,
जहाँ न सुख दुख जहाँ न माया बनें पथिक उस मग के॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

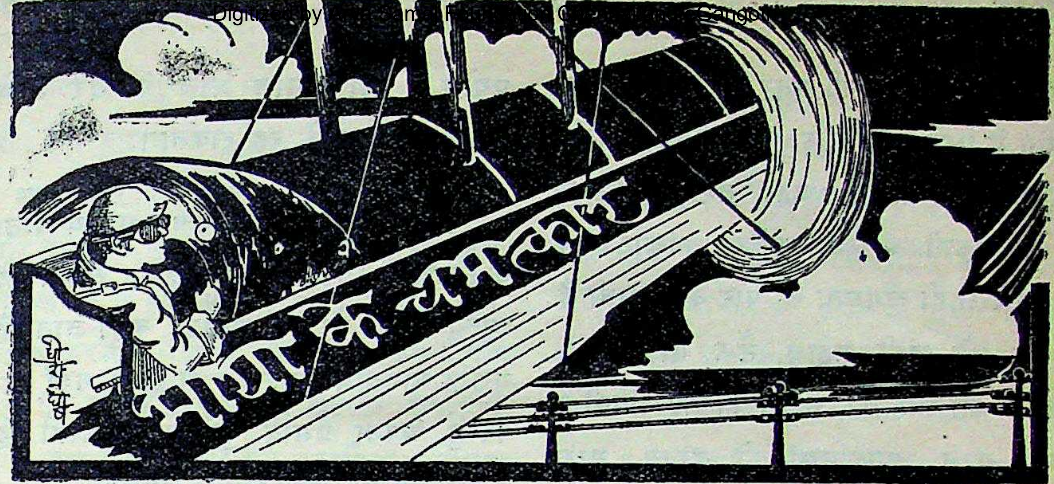

—बीसवीं सदी के नर-संहारक आविष्कार

[ले०—श्री महाव्रतजी विद्यालंकार]

> इस लेख में सुयोग्य लेखक ने कुछ नरसंहारक आविष्कारों पर प्रकाश डाला है। इस के पढ़ने से पाठकों को ज्ञात होगा कि वैज्ञानिक उन्नति का कितना भीषण दुरुपयोग हो रहा है और वे युरोप के भावी युद्ध की कुछ कल्पना भी कर सकेंगे।
>
> —सम्पादक

१—"मृत्यु किरण" ने जिसे वैज्ञानिक भाषा में 'गामा' कहते हैं। गत योरोपिन महासंग्राम की समाप्ति पर अख़बारी दुनिया में एक सनसनी सी पैदा करदी थी। घटना यह हुई थी कि कई फ्रेंच हवाई जहाज़ फ्रांस से जैकोस्लोवाकिया जर्मन प्रदेश पर होते हुए जा रहे थे, जर्मनीने स्टटगर्ड के पास एकदम नीचे गिरा दिया। ऐसा विश्वास है कि स्टटगर्डके "ब्राश मेग्नेटो वर्क्स" से किरणे फेंकी गई थीं जिनसे फ्रेंच हवाई जहाज़ों के मेग्नेटो एक दम बेकार हो गये और फलतः हवाई जहाज़ों को नीचे आना पड़ा। यथार्थ "मृत्यु किरण" की चर्चा चिरकाल से होरही थी। लोग इसकी यथार्थता पर विश्वास नहीं नहीं लाते थे, कारण यह था कि उस समय तक इसके परीक्षण क्रियात्मक दृष्टि से सफल नहीं हो सके थे। परन्तु आजकल यह एक जीवित-जागृत यथार्थता है।

"मृत्यु-किरण" एक असाधारण लम्बाई की रेडियो किरण होती है। डा० आर्नो ब्राश और फ्रिल्ज़ लांग दो जर्मन वैज्ञानिकों को इससे भी शक्तिशाली किरण का स्वतन्त्र रूप से पता मिला था जब कि वे साढ़े वीस लाख वोल्ट की विद्युत्शक्ति से एक अणु को तोड़ने का परीक्षण कर रहे थे।

२—"मृत्यु-तरंग" इस के विषय में अनेक आश्चर्यजनक परीक्षण किये गये हैं। यह तरंग छोटी परन्तु लम्बी होती है। यद्यपि रेडियो से ब्राडकास्ट होने वाली तरंग के समान ही होती है, परन्तु उससे कई गुना छोटी होती है। यह उष्णता प्रसारक तरंग की लम्बाई की ही होती है। इसके एक ख़ास दिशा में प्रोजेक्शन और फ़ोकस करने से दूरस्थ प्राणी की मृत्यु हो जाती है। परीक्षण कर्ता वैज्ञानिकों का दावा है कि अब इसमें इतनी उन्नति हो चुकी है कि "इस तरंग से कई मील ऊपर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की ओर, कई मील भूमि की सतह पर और सैकड़ों गज़ ज़मीन में सिर्फ़ सैकेण्ड के एक भाग में प्राण-नाश किया जा सकता है। यह "तरंग" भूमि के अन्दर बने क़िलों की लोहे और कांक्रीट की दीवारों को वैसी ही सुगमता से पार कर जाती है जैसे कि वह बड़े जंगी जहाज़, टैंक या हवा में उड़ते जहाज़ की लोहे की चद्दरों को भेद जाती है और वहां वाले आदमियों को तुरन्त मार देती है।"

यद्यपि "मृत्यु तरङ्ग" के विषय में जरमनों की बड़ी बड़ी विद्युत प्रयोग शालाओं में देर से परीक्षण हो रहे थे परन्तु इस दशा में वास्तविक सफलता आज से दो वर्ष पहिले हुई थी, जब कि कई सौ मील दूर पर ख़रगोशों, गिनीपिगों और चूहों पर इसका प्रयोग करने पर पता लगा है कि वे सब मर गये थे। यही बात मनुष्य तथा अन्य प्राणियों के साथ भी हो सकती है।

३—इसी दिशा में एक और नया आविष्कार किया गया है। वह एक नन्ही सी 'इलैक्टोन-नलिका' है, जिससे ऐसी तरङ्ग छोड़ी या पैदा की जाती है, जो सूर्य की किरणों की गति से चलती है। इस नलिका द्वारा फेंके गये इलेक्टोन को क्रिस्टलैन्स द्वारा कतिपय जन्तुओं पर केन्द्रित किया गया जिसका परिणाम यह हुआ कि सब प्राणी एक दम मर गये। इनके शरीरों को चीरने पर विदित हुआ कि उनकी रीढ़ नाड़ी तन्तु के साथ, सम्पूर्ण मस्तिष्क भी नष्ट हो गया था।

अब इस "इलेक्टोन-नलिका" में बड़ी उन्नति हो चुकी है। इसकी मार "मृत्यु-किरण और मृत्यु-तरङ्ग', से आठ गुना से भी ज़्यादा भयानक और व्यापी होती है। वैज्ञानिकों का दावा है कि "इसके प्रयोग से साढ़े सात मील के घेरे में एक भी प्राणी ज़िन्दा नहीं रह सकता।

४—एक और आश्चर्य-प्रद अदृश्य घातक-शक्ति के विषय में भी हम कुछ कहना चाहते हैं। इसे 'मृत्यु-ध्वनि' या 'मृत्युनाद' कहा जाता है। यह यद्यपि मानवीय कर्णेन्द्रिय से सुनी नहीं जा सकती परन्तु अपना प्रभाव बुरी तरह करती है। यह 'मृत्यु-नाद या 'मृत्यु-ध्वनि' चुपचाप बड़ी शीघ्रता से फ़ौजों की फ़ौजों को पल भर में धराशायी कर सकती है, हवाई जहाज़ों को गिरा सकती है; बड़े बड़े जंगी जहाज़ों को डुबा सकती है, शहरों और क़िलों को चकनाचूर कर सकती है। अनेक वैज्ञानिकों का विश्वास है कि यह वही 'शब्द-तरङ्ग' है जिसके कारण आज से दो हज़ार वर्ष पूर्व पेलिस्टाइन में जेरिका नामक शहर की दीवारें तबाह होगई थीं। जिनका अब वैज्ञानिक युग में पता लगा है। प्रोफ़ेसर फ्रोद्रिख टाटबाइन ने हाइनरिख हेल्ज इन्सटीट्यूट की प्रयोगशाला में कई दर्शकों के सन्मुख इसका प्रयोग सिखाया था। छोटे से घरेलू वायरलेस-सेट के समान यन्त्र के बटन और हेण्डल आदि दबाते ही सम्पूर्ण प्रयोगशाला एक प्रचण्ड झंझावात के समान तीक्ष्ण ध्वनि से भर गई जिससे उपस्थित दर्शक यकायक कांपने लगे थे। ज्योंहीं यह शब्द उत्तरोत्तर तीक्ष्ण-तीक्ष्णतर होता गया—दर्शकों की हड्डियां बिंधने लगीं—और ऐसा प्रतीत होने लगा कि सम्पूर्ण ज्ञानतन्तु किसी भयंकर आघात से टूटने को हैं। परन्तु अब यह शब्द सुनाई नहीं देता था। यह प्रति सैकण्ड ४०,००० स्पन्दनों पर हालत थी। उक्त प्रोफेसर ने बताया कि यदि यह स्पन्दन १,५०,००० प्रति सैकेण्ड तक बढ़ा दिये जायँ तो कोई भी प्राणी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इनके आघात से तुरन्त मर जायगा। परन्तु आज भी इन स्पन्दनों को ४ से ५ करोड़ प्रति सैकण्ड तक पैदा किया जा सकता है—जिसके घातक परिणाम का पाठक उक्त परीक्षण से अनुमान लगा सकते हैं। प्राणियों पर इस 'मृत्यु-ध्वनि' का परीक्षण करने से विदित हुआ है कि इसके एक आघात से ही उनकी हड्डियां चूर चूर हो जाती हैं और खाल झुलस सी जाती है। वैज्ञानिक परिभाषा में "मृत्यु-ध्वनि" का प्रभाव यह है कि आण्डिवक-सन्तुलन के भंग होने से भौतिक पदार्थ का रूपान्तर हो जाता है।

हाइनरिख हेर्ल्ज इन्स्टीटयूट के प्रो० गुस्टेव लीथहासर का दावा है कि "मृत्यु-ध्वनि" के सिर्फ एक धक्के द्वारा हम आक्रमणकारी फ़ौज को सिर्फ अन्धा, या बहिरा ही नहीं कर सकते—बल्कि बिलकुल नष्ट भी कर सकते हैं। यह तो इस शब्द तरंग को उस सीमा तक पैदा करने का सवाल है जब यह हड्डियों और तंतुओं के आण्विक-संतुलन को नष्ट करदे। और यह आज सर्वथा सम्भव है।

(५) इनके अतिरिक्त एक "मृत्युगैस" भी है—जिसके आविष्कारक, बर्लिन टैक्नोलाजिकल इन्स्टीट्यूट के रासायनिक विभाग के प्रधान प्रो० कार्ल हौफ़मैन हैं। (संभवतः ये गत योरोपियन महायुद्ध के जनरल हौफ़मैन ही हैं।—लेखक) इनका दावा है कि इस गैस का एक परमाणु भी इन्जिन द्वारा चूसे जाने पर टैंक, लारी, मोटरकार, और हवाई जहाज़ जहाँ के तहाँ खड़े किये जा सकते हैं। इस गैस की एक तरंग से शत्रु की सम्पूर्ण यांत्रिक सेना ठंडी की जा सकती है। और उसके मानवीय अंग विरोधी की दया के भिखारी बनाये जा सकते हैं।

उपर्युक्त नरसंहारक-आविष्कारों से पाठक कल्पना कर सकते हैं कि भावी महासंग्राम कितना व्यापी, भीषण और संक्षिप्त होगा, और इस में लड़नेवाले सिपाहियों का ही नहीं, अपितु निरपराध निःशस्त्र प्रजा का भी कितना प्राण नाश होगा। जहाँ विज्ञान से मनुष्य जाति का भला होना चाहिए, वहाँ योरोप की भौतिक तृष्णा, लालच, अविश्वास और ज़्यादतियों के कारण आज योरोप का प्रत्येक राष्ट्र दूसरे को हड़पने और तबाह करने के लिये तय्यारियाँ कर रहा है। यह योरोप के वर्तगान राज्य और समाज-संगठन का ही दोष है। जिसके दूषित चक्र से उद्धार तब तक असम्भव है, जब तक कि उसमें मौलिक परिवर्तन न हों। परन्तु इन का होना सम्भवतः अन्तिम-क्षण के बाद हो हो सके। आज योरोप के देशों में परस्पर समझ और विश्वास की कमी है। वर्सेलाज की सन्धि का यह उग्र परिणाम फूटता दीख रहा है। भिन्न २ राष्ट्रों ने अपनी समझ में तो जर्मनी को एक छोटी सी लुटिया में बन्द कर दिया, परन्तु किसी जाति का आत्म-सम्मान बन्द नहीं किया जा सकता। उपर्युक्त आविष्कारों के प्रयोग के आधार पर कल्पना की जा सकती है कि भावी में रक्षा और आक्रमण के दुर्ग, विशालकाय बिजली घर होंगे। जहां से इन संहारक-किरणों, तरङ्गों और ध्वनियों का प्रयोग होगा, जो सम्भवतः राइन नदी के दाएँ तट पर बन रहे हों या बनाये जायेंगे, परन्तु ये वर्सेलीज़-संधि के 'दुर्ग' के लक्षण से बाहिर हैं। क्या ही बुद्धि विडंबना है।

सम्भवतः योरोप के इस रोग का अन्त उसके अन्त से ही होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"____"

अग्निस्वरूप !

तुम्हारी एक फूंक ने इस नग्न-गगन में, शान्त वायु-मण्डल में
हिल चुल मचादी, कोई बुझी हुई आग जगा दी ॥

तुम्हारा "अट्ट-हास" था—
जब पर्वत पर्वतों से टकराते थे, शिलाएँ फटी जाती थीं, और
पाषाण आग बरसाते थे—

तुम्हारा "ताण्डव-नृत्य" था—
जब प्रकृति के सुन्दर मुख पर मनुष्य के दूषित कर से लिखी
हुई वर्ण-माला बुझी जा रही थी, जब अट्टालिकाएँ लुढ़क रहीं थीं
और—झोंपड़ियां उड़ी जाती थीं—

तुम्हारा "दैवी-कोप" था—
जब पृथिवी का भरा हुआ दिल आग उगलता था . . . और
ज्वाला-मुख में मूक शिखा चटखारे ले रही थी—
हां जब दुनिया किसी पाप की याद में, किसी विपरीत-फल के भय से,
किसी आज्ञा-भंग के पश्चात्ताप, या किसी महादेव के अभिशाप
में काँप रही थी—
उस समय—पूर्व-पुरुष ने हाथ फैलाकर—"हे रुद्र !" तुम से
दया-दृष्टि की भीख मांगी, और तुम्हारा क्रोध शान्ति
में बदल गया—
उसी "एक फूंक" की याद हमारे हृदयों पर भय बनकर छा गई है
......और...उसी शान्ति की प्रार्थना लिए...हमारी आंखें
आपके चरणों में लिपट रही है ।

(ऋ० १-१-३ के आधार पर)

—मनमोहन—

[क्रमशः]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी-परीक्षा-मन्दिर

अलङ्कारों की मौलिकता

[ले०—पं० चन्द्रमणि शास्त्री]

कमनीय कविता कौमुदी का विकास जितना औचित्यपूर्ण एवं विस्तृत होगा, उतनी ही अलंकार शास्त्र की उपादेयता तथा प्रियता अधिक होगी। मानव-समाज में तो एक लत सी लगी है, वह यह कि सौन्दर्य समावेश किये बिना वस्तु को उपादेय कोटि में नहीं लाता। अतएव कविता में उपादेय गुण को गुम्फित करने के लिये, तदीय कमनीयता का अविरल गति से विकास कर हो डाला। इससे यह न समझ लेना चाहिये कि अलङ्कारों के अभाव से कविता का ध्येय पूरा ही नहीं होता; होता है पर उसमें सरसता की सत्ता से जितनी सर्व प्रियता चाहिये उतनी नहीं होती। अलंकारों की विद्यमानता से कविता के ध्येय में न तो क्षति है न ही लाभ, पर उस ध्येय की पूर्ति अनायास होती है; यही तो अलंकार शास्त्र की उपयोगिता है।

एक सामान्य कोटि के समाज का कथन है कि जितनी जितनी सभ्यता का विकास होता है, उतना कविता से घृणा का भाव उद्भासित होता है। पर यह भूल है, कविता का यह अभिप्राय नहीं कि "छन्द के पिञ्जर में भाव भङ्गी विहङ्ग को बन्द कर देना"। एक कुमार भी अक्षर गिनकर संकीर्ण कर लेता है तो वह कविता कोटि में गण्य होगा? कदापि नहीं। कविता का रणक्षेत्र शब्द और अर्थ की न्याँई गद्य और पद्य दोनों को सीमित करता है। अतएव अलङ्कार भी गद्य और पद्य दोनों के साक्षी हैं।

अब यह रहा कि अलङ्कार शास्त्र का जन्म कब और कैसे हुआ। यह लिखना अप्रासंगिक न होगा कि हिन्दी-साहित्य ने संस्कृत-साहित्य से ऋण ले लिया है। इस समय तो हिन्दी-साहित्य और संस्कृत-साहित्य का अन्तर ही कैसा, वह पिता और यह पुत्र। दोनों को सन्मुख रख कर समान भाव के क्षेत्र में स्थिर होकर अलङ्कार की विवेचना की जायगी कि अलङ्कारों का कब से उद्भव हुआ।

जब से साहित्य का जन्म हुआ तब से अलङ्कार भी प्रकट हुए, परन्तु अलङ्कार उस समय में संकुचित एवं अविकसित थे। इसको इस प्रकार भी कह सकते हैं कि साहित्यज्ञ अलङ्कारों की वर्तमान स्थिति की भाँति अलङ्काररूप में न समझते थे; अर्थात् अलङ्कारों को जैसा स्वरूप वर्तमान संसार ने दिया है वैसा स्वरूप तो पूर्वज समझ भी न पाये थे; हाँ व्यवहार—वाह्य ज्ञान पूर्वक—अवश्य होता था।

संस्कृत साहित्य में 'वेद' सबसे प्राचीन एवं परमात्मकृत है। वेद पुरुषकृत नहीं, अपितु परमात्म

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

कृत है। अलङ्कारों की उपलब्धि वेदों में। अलङ्कार भी अपने आधार के गुण से पुरुषकृत नहीं अपितु परमात्म कृत हैं। इनकी सत्ता यद्यपि वेदों में विद्यमान है, परन्तु पूर्वज जन केवल पाठमात्र के आधार पर निर्वाह करके अलङ्कारत्व का ज्ञान न कर पाए। जब अर्थ ज्ञान की अपेक्षा हुई तब यास्कादि पूज्य मुनियों ने निरुक्तादि ग्रन्थों का निर्माण करके "न इत्युपमायाम्" पाठ लिखकर अलङ्कारत्व का सूत्रपात कर डाला।

यद्यपि पाणिनि मुनि ने स्वनिर्मित अष्टाध्यायी में दूसरे अध्यायके प्रथमपाद में 'उपमानानि सामान्य वचनैः।२।१।५५।" और "उपमितं व्याघ्रादिभिः सामान्याऽप्रयोगे।२।१।५६।" यह दो सूत्र लिखकर 'उपमा' का परिचय दिया है परन्तु 'उपमा' शब्द अलङ्कार वाचक नहीं, यहाँ पर "उपगत्वा मीयते=तोल्यते" के अर्थ में प्रयोग किया गया है। इसका कारण यह है कि उस समय उपमा को सामान्य प्रयोग समझा गया है जैसे—

'"पुरुष व्याघ्रः, नृसोमः, व्याघ्रादि आकृतिगणः सामान्याप्रयोगे किम्। पुरुषो व्याघ्र इव शूरः। (भट्टोजी०)

अब यह सिद्ध हो गया कि उपमालङ्कार वेदों में है, पर उसका बोध न था, श्री यास्क महोदय से पूर्व पाणिनि पर्यन्त इसका अलङ्कारत्व रूप में आविष्कार न हुआ।

अब रहे नैयायिक। नैयायिकों ने उपमा का स्मरण भी किया और प्रयोग भी। उन्होंने उपमा को चौथा प्रमाण ही मान लिया। जिसे 'उपमान' की मुद्रा लगी है। वे विचारे 'अस्माकूणां नैयायिकेषाम् अर्थेर एव प्रयोजनम्; अर्थेरीति कथं कर्तरी यथम्" कहने वाले सीधे साधे अभिधावृत्ति की ओट रख कर काम करने वाले अलङ्कार को क्या समझें जहां तक उनके मस्तिष्क ने काम किया वहां तक 'उपमान' का आविष्कार कर डाला। उपमान में वह रस कहाँ और वह चमत्कार कहाँ।

वेदों में उपमा—

अग्निरिव मन्यो त्विषितः सहस्व, सेनानीर्नः सहुरे हूत एधि। हत्वाय शत्रून विभजस्व वेद ओजो मिमानो विमृधो नुदस्व। ऋ० सं० ८३, १६, २।

दुर्मदासो न सुरायाम। ऋ० स० ५, ७, १६, १।

वृक्षस्य नु ते पुरुहूतवयः। ऋ० स० ४, ६, १७, ३।

यहाँ पर उपमा है, इव, न, नु, चित्, यह सब उपमा द्योतक हैं। इनका आविष्कार यास्क के समय में हुआ। अब यह प्रश्न रहा कि वेदों में अलङ्कार हैं कि नहीं? अलङ्कार वहाँ होते हैं जहाँ रस हो, वेदों में रस कहाँ पाओगे? हाँ, इसका उत्तर यह है—अलङ्कार चमत्कार रूप में यद्यपि न हों, अर्थ को पूर्ण तथा विस्तृत करने के लिये उपमा है अवश्य। जैसे—

"मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः।"

मृग का अर्थ है सिंह, भीम का अर्थ है परमात्मा। सिंह के समान परमात्मा पृथिवी एवं पहाड़ों में घूमता है; अथवा परमात्मा के समान सिंह पृथिवी और पहाड़ों में घूमता है। यहाँ पर रस के उपकारक अलङ्कार कोटि में उपमा नहीं हैं। अर्थ को पूर्ण तथा सुन्दर बनाने के लिये उपमा का व्यवहार है।

अब अच्छी तरह से ज्ञात हो गया कि अलङ्कारों की मौलिकता यास्क कृत निरुक्त ही—वेदाङ्गत्व से वेद—है। शेष रहे अलङ्कार, उनकी मौलिकता उपमा में है। रामायण और महाभारत के समय में ६ और ७ अलङ्कार प्रयुक्त हैं। उनमें से रूपक,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपूर्णोपमा, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति और कारण-माला इत्यादि इने गिने अलङ्कार हैं। उपमा को लेकर शिष्ट अलङ्कार आविष्कृत किये गये। उपमा में उपमेय उपमान मुख्य हैं। जहां पर उपमान को उपमेय की कोटि में एवं कक्षा में लाया गया तो रूपक अलङ्कार बन गया।

इसी प्रकार शेष अलंकार—उपमान और उपमेय की खींचातानी से रबड़ की भाँति मस्तिष्क के बल से खिंच गये। इस आविष्कार का प्रचार प्रथमतः भरत, वाल्मीकि और व्यास की कृपा से हुआ, विस्तार कवियों की दया से।

ज्यों ज्यों सभ्यता का, मस्तिष्क का प्रभाव बढ़ता गया त्यों त्यों अलंकार अपना स्थान पकड़ते गये। पहले उपमा थी, तदनन्तर अन्य अलंकारों की स्थिति क्रमशः एक दो तीन होती गई।

इन अलङ्कारों के काल के विकास की गणना सेठ अर्जुनदास केड़िया ने कैसी सुन्दर की है।

शताब्दि			अलं० सं०
नवीं	...	...	७३
दसवीं	...	...	३१
ग्यारहवीं	...	...	७२
बारहवीं	...	...	६७
तेरहवीं	...	...	१०४
चौदहवीं	...	...	८४
अठारहवीं	...	...	७०
बीसवीं	...	...	१००

यह तो निर्भ्रान्त विषय है कि कविता एक कामिनी है। उसका शरीर अर्थ और शब्द से रजः और रेतः की भाँति बना है। शौर्य औदार्य्यादि गुणों की न्याईं माधुर्य प्रसाद एवं ओज गुण हैं। बाहु भुजा की भान्ति रीतियाँ हैं, काणत्व खंजत्व के तुल्य अश्लीलतादि दोष हैं। कनकवलय और कुण्डल की तरह अलङ्कार हैं। जितनी सौन्दर्य्योपासना बढ़ती जायगी उतनी भूषण परिपाटी परिणत होती जायगी। कविता के भूषण बढ़ते और परिणत होते जा रहे हैं। पहले उपमा एक थी, क्रमशः बढ़ते बढ़ते सौ (१००) हो गई है। जब से अलङ्कार प्रारम्भ हुए तब ही इनकी मौलिकता थी। पीछे काम सहल हो गया अलंकारों का चमत्कार क्रमपूर्वक बढ़ ही रहा है।

कविता-महत्व

[ले०—श्री महेशकुमार जी शर्मा]

मानव-सृष्टि के आरम्भ से यह एक प्राकृतिक नियम है कि मनुष्य सौंदर्य-प्रिय है, और वह प्रकृति-सौंदर्य में एक दिव्य आनन्द का अनुभव करता है, जो उसकी आत्मा को प्रेरित करता है कि वह अपने विचार, भाव और अनुभव का संसार के सन्मुख चरित्र-चित्रण करे। परन्तु ऐसा करना प्रत्येक व्यक्ति की शक्ति से बाहर है। क्योंकि प्रत्येक मनुष्य का मानसिक विकास, कविता-निर्माण की ओर नहीं होता। कवि का मन ही स्व-कल्पना द्वारा मानव-जाति के सुख-दुःख, राग-द्वेष, आशा-निराशा, हानि-लाभ, संयोग-वियोग, बोल-चाल, रीति-रिवाज, रहन-सहन, ज्ञान अज्ञान, और उत्थान-पतन का सजीव, वास्तविक और स्वाभाविक वर्णन कर सकता है। अँगरेज़ी-भाषा के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वनामधन्य महाकवि कीट्स (Keats) ने एक अटल तत्त्व जगत् के सन्मुख रखा है आपका अनुपम वाक्य "The thing of beauty is a joy for ever" सौंदर्य नित्य आनन्द का स्रोत है। किस सहृदय व्यक्ति की आत्मा पर जादू का-सा प्रभाव नहीं डालता। आपका यह सिद्धान्त "Truth is beauty and beauty is truth" अर्थात् सत्य ही सौन्दर्य है और सौंदर्य ही सत्य है। आदर्शरूपेण सोलह आने सत्य है। जो कवि सांसारिक सत्यता अर्थात् (facts) का आदर्श (ideal) निर्धारित करके कवितारूपी प्रासाद का निर्माण नहीं करता वह मानों बालू की भीत चुनना चाहता है अर्थात् हवाई क़िले बनाता है।

कविगगन-प्रभाकर, कविता-सुधाकर, रस-रत्नाकर, श्री सूरदास ने क्या ही अच्छा कहा है—

सूर सूर तुलसी ससि उडुगन केशवदास।
अब के कवि खद्योत सम जहँ तहँ करें प्रकाश॥

सत्य है भक्त सूरदास कविता के सूर्य थे। जिनकी कविता का प्रबल प्रकाश प्रभाव डाले बिना नहीं रह सकता था। आपकी कविता रूपी सूर्य की किरणें विलासता रूपी तम को दूर करने का असर रखती थीं।

गो-स्वामी तुलसीदास सचमुच ही चन्द्रमा के समान थे जिनकी शीतल कविता-सूक्तियाँ वीर-रस सुधा का पान करा बाद में मनुष्य को राम का पुजारी बना देती थीं। केशवदास तारों की भाँति कविता के माधुर्य, सौंदर्य, अलंकार और रस रूपी प्रकाश से सांसारिक पथिक का पथ-प्रदर्शक के रूप में महान् आनन्द, शिक्षा और महत्त्व का काम करते थे। यद्यपि उनका शरीर इस असार नाशवान् और परिवर्तनशील संसार से सदा के लिये उठ गया है पर उनका यशरूपी शरीर सदा उनके दिव्य नाम का परिचायक बना हुआ है।

कवि का यह कथन कि वर्तमान समय के कवि खद्योत सम हैं, ठीक है क्योंकि कविता-निर्माण-कला में वर्तमान कवि-समाज बहुत पीछे है। इस अवनति के अनेक कारण हो सकते हैं। प्रथम तो कवि को स्वयं कविता-कल्पना (Imagination) में दिव्य शक्ति का अनुभव (Inspiration) अधिकमात्रा में होना चाहिये। इसलिये कहा है "Poets are born, they are not made" अर्थात् कवि जन्म-सिद्ध होते हैं, उनका निर्माण नहीं किया जा सकता। कवि में कविता का गुण स्वभाव सिद्ध होता है, कृत्रिम नहीं। पर वर्तमान कवि नक़्क़ाल की भाँति स्वाभाविक कवि का अनुसरण तो करते हैं पर स्वभाव सिद्ध कल्पना-शक्ति के अभाव से प्रायः असफल ही रहते हैं। कवि को सांसारिक अनुभव या ज्ञान का होना परमावश्यक है। यह ज्ञान (Knowledge) या तो विस्तृत शिक्षा (education) से प्राप्त होता आता है अथवा विश्व भ्रमण से। इसलिये अविद्वान् या कूप-मण्डूक को कविता करने का साहस न करना चाहिये। अन्यथा कविता के दोष कवि के उपहास का कारण होंगे। तीसरी बात कविता में कौशल कला अर्थात् माधुर्य, सौन्दर्य, रस, अलंकार का यथायोग्य प्रयोग एक महान् गुण है। इसके बिना कविता की सामग्री निर्जीव, असत्य, असुन्दर, रसहीन, अलंकार-शून्य और अस्वाभाविक है। किसी साहित्यकार ने सत्य कहा है कि "कविता जीवन की व्याख्या है" पर व्याख्या करने के लिये काव्य-कला में दक्षता ही (Perfection) कवि की कविता की एकमात्र सहायक है। सारांश यह है कि कवि विद्वान् हो, विवेकी हो, अनुभवी हो और आदर्शरूपेण प्रभावशाली हों। संसार की सत्यता का स्वाभाविक सजीव और वास्तविक चरित्र का चित्रण करने में सिद्ध-हस्त हो। यह ही काव्य की आत्मा है, यह ही कविता के प्राण हैं और यह ही काव्य-कला का निचोड़ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुद्राराक्षस नाटक और उसके पात्र

[लेखिका—श्री स्वदेश कुमारी, लाहौर]

मूल संस्कृत-नाटक के लेखक श्री विशाखदत्त वटेश्वरदत्त के पौत्र तथा महाराजा पृथु के पुत्र थे। वे कहाँ हुए, कब हुए—इसका अभी तक निश्चित निर्णय नहीं हो सका।

साहित्यिक दृष्टि से यदि कालिदास तथा भवभूति की भाँति इनकी गणना नहीं की जा सकती, तोभी यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि यह कुशल नाटककार थे। कुटिल राजनीति के दाव-पेंचों को जिस प्रकार इन्होंने दिखलाया है, इससे कहा जा सकता है कि यह स्वयं भी कुटिल राजनीतिज्ञ होंगे।

संस्कृत-नाटक का अनुवाद भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने किया है। इस नाटक का कथानक दूसरे नाटकों की भाँति रामायण, महाभारत या पुराण से नहीं लिया गया। यह एक शुद्ध ऐतिहासिक घटना का वर्णन है। नन्दों को मारकर चन्द्रगुप्त की सहायता से चाणक्य ने राक्षस को कैसे परास्त किया, इसी का इस में वर्णन है। इस नाटक में वीर-रस प्रधान है। शृङ्गार और करुण-रस का अभाव है। पात्रों का चरित्र-चित्रण अच्छा किया गया है। स्त्री-पात्रों की कमी है। नाटक के अन्त में चन्दनदास की स्त्री आती है। परन्तु वह भी कर्तव्यपरायणा रमणीके रूप में, न कि नवयुवती प्रेमिका के विरह-वेश में।

नाटक के नायक तथा प्रतिनायक का चरित्र-चित्रण उत्तमता से किया गया है। चाणक्य तथा राक्षस की राजनीति की चालों का मनोरंजक और उत्तेजक वर्णन है। मित्रता का आदर्श, स्वामीभक्ति का भाव, कर्तव्य तथा प्रेम का उत्तम अनुकरणीय वर्णन किया गया है।

नाटक में प्रकृति वर्णन,तथा मानसिक भावों का सच्चा चित्र उतारा गया है। घटना क्रम के कारण क्रमशः रोचकता बढ़ती जाती है। पढ़ते समय पहिले अंक से लेकर अन्तिम अंक तक निरन्तर उत्सुकता बढ़ती जाती है। यद्यपि इसमें कालीदास का सौन्दर्य्य तथा माधुर्य्य नहीं। और भवभूति का पत्थरों को पिघला देने वाला करुणा रस नहीं, तो भी नाटक कार अपनी रचना को आकर्षक बनाने में सफल हुए हैं।

पात्र

चाणक्य तथा राक्षस :—

नाटक के आरम्भ से लेकर अन्त तक चाणक्य और राक्षसकी क्रिया प्रति क्रियायों का वर्णन किया गया है। दोनों व्यक्ति भिन्न भिन्न विशेषताओं तथा गुणों से अलंकृत हैं। चाणक्य आत्माभिमानी तथा दृढ़प्रतिज्ञ हैं। उनका स्वभाव कठोर है, और वह अपने सिद्धान्त के अनुसार "अपने विश्वासी से विश्वासी साथी पर भी विश्वास न करना, जहां तक कि हृदय की बात का ज्ञान जिह्वा को भी न हो"। किसी पर विश्वास नहीं करते। राक्षस भी दृढ़ प्रतिज्ञ है। परन्तु उसमें भक्ति और प्रेम की मात्रा अधिक है। वह स्वामिभक्त है। जहां चाणक्य किसी पर विश्वास नहीं करता वहां राक्षस सब पर विश्वास कर लेता है। वह भावुक है। उसका हृदय कोमल है, आदर्श मित्र है। मित्र के स्नेह के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये अपना सर्वस्व अर्पण कर देता है। राक्षस की स्वामिभक्ति तथा सरलता को देखकर इसका प्रतिद्वन्दी चाणक्य भी उसकी प्रशंसा करता है। चाणक्य जानता है कि यदि राक्षस चन्द्रगुप्त का मन्त्री बन जाय तो चन्द्रगुप्त का राज्य सुरक्षित हो जायगा।

चाणक्य भी राक्षस की भांति निःस्वार्थ भाव रखता है। एक स्थान पर कवि ने चाणक्य के निवास स्थान का वर्णन किया है। इतने बड़े चक्रवर्ती राज्य के मन्त्री का निवास स्थान, सहस्रों अलंकृत साज सामानों से सुसज्जित कोई विशाल भवन नहीं। प्रत्युत टूटी फूटी झोंपड़ी और शिष्यों द्वारा भिक्षा में संचित की हुई भिक्षा ही की विभूति है। इसका जीवन निःस्वार्थ चरित्र चर्या का आदर्श जीवन है। वह केवल नन्द से अपने अपमान का बदला लेना चाहता था, साम्राज्य का उपभोग नहीं। नाटक के अन्त में कहा है—

छोड़ो सब गज तुरंग अब, कछु मत राखो बांधि।
केवल हम बांधत सिखा, निज परतिज्ञा साधि॥

राक्षस भी भक्ति में मग्न अपने स्वामी के शोक तथा उसके राज्य की पुनः स्थापना तक वस्त्राभूषणों को तिलाञ्जलि दे चुका था।

राक्षस भावुक था, उसे अपने स्वामी की स्मृति दुःख देती थी वह अपने स्वामी के पुत्र मलयकेतु को राज्य पर सुशोभित देखना चाहता था, और चाणक्य चन्द्रगुप्त को। कवि ने दोनों मन्त्रियों का चरित्र आदर्श चरित्र वर्णन किया है।

राक्षस यदि मन्त्री न होकर सेनापति होता तो अधिक सफल होता क्योंकि दूत के द्वारा कुसुमपुर घेरे जाने का संवाद सुनते ही राक्षस अपनी कृपाण निकालकर प्रवीरक को आज्ञा देता है—

चढ़ौं लै सरैं धाइ घेरौं अटा को।
घरौ द्वार पै कुंजरैं ज्यों घटा को॥
कहौं जोधनै मृत्यु को जीति धावैं।
चलैं संग मैं छांड़ि के कीर्ति पावैं॥

राक्षस अपने भावों को छिपाने में भी असमर्थ है।

चन्द्रगुप्त और मलयकेतु

चन्द्रगुप्त चाणक्य को गुरु मानता है। उस पर विश्वास करता है और साथ ही उससे डरता है।

मलयकेतु—दूसरों की बातों में आ जाता है। वह जल्दबाज़ है दूरदर्शी नहीं। वह राक्षस को गुरु नहीं मानता और न ही उससे डरता है। वह स्वच्छन्द है।

चन्दन दास—एक आदर्श मित्र है। राक्षस के प्रति प्रेम तथा मित्र धर्म-पालन का ध्यान है। मित्र की रक्षा के लिये अपने प्राणों की आहुति देने के लिये तत्पर है।

नाटककार ने उस समय की सामाजिक, धार्मिक, तथा राजनैतिक अवस्था का भी अच्छा चित्र खींचा है।

राजनीति में देश निकाला, राजद्रोहियों को प्राणदण्ड, सम्पत्ति हरण तथा कुटुम्ब को बन्दी बनाना आदि नियम प्रचलित थे। समाज में शिक्षा प्रचलित थी। जनता पढ़ी लिखी थी। स्त्रियाँ विदुषी थीं। वह धर्म तथा कर्तव्य से अनभिज्ञ न थीं। समाज में अहिंसावादी व्यक्तियों का मान था। लोग मूर्ति-पूजा तथा यम की पूजा करते थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-काव्य-साहित्य का संक्षिप्त इतिहास

(ले०—श्री कविराज रामलाल जी अग्रवाल)

[हिन्दी प्रभाकर के पाठ्य-क्रम में 'हिन्दी-साहित्य का इतिहास' विषयक एक 'पत्र' नियत है। इस विषय पर लिखी हुई पुस्तकें प्रायः दीर्घकाय हैं। पाठ्य-क्रम में नियत ग्रन्थ भी विशाल हैं। इस कारण विद्यार्थियों की सुविधा के लिए सम्पूर्ण आवश्यक बातों का संक्षेप में परिचय कराने के लिए यह लेख लिखवाया गया है।] —सम्पादक

हिन्दी-साहित्य का आरम्भ 'अपभ्रंशकाव्य' से होता है। जब प्राकृत बोलचाल की भाषा न रही तब 'अपभ्रंश' या 'प्राकृताभास' का आविर्भाव हुआ। आरम्भ में बौद्ध और जैन धर्मों के प्रचारकों ने इस भाषा में काव्य रचना की।

संवत् ९९० में देवसेन नामक एक जैन विद्वान् ने 'श्रावकाचार' नाम की पुस्तक दोहों में लिखी। तदनन्तर अन्य विद्वानों ने भी इसका अनुसरण किया। बारहवीं शताब्दी से इसी भाषा में साधारण साहित्य की भी सृष्टि हुई। हेमचन्द्र ने 'सिद्ध हेमचन्द्र शब्दानुशासन' नामक व्याकरण ग्रन्थ रचा। चौदहवीं शताब्दी के अन्तिम चरण में 'शार्ङ्गधर' हुए। इनका 'शार्ङ्गधर संहिता' नामक वैद्यकग्रन्थ प्रसिद्ध है। इसके अतिरिक्त 'शार्ङ्गधर पद्धति' नामक एक सुभाषित संग्रह बनाया। 'हम्मीर रासो' भी इन्हीं का बनाया हुआ माना जाता है। यह काव्य अब नहीं मिलता, इसके अनुकरण पर बहुत पीछे का लिखा हुआ एक ग्रन्थ 'हम्मीर रासो' नाम से ही मिलता है।

'अपभ्रंश काव्य'की परम्परा यहाँ समाप्त होती है। अब धीरे धीरे काव्य भाषा का झुकाव देशभाषा की ओर होने लगा। आगे चलकर देशभाषा में 'वीर गाथात्मक' काव्यों की रचना हुई।

चन्द बरदाई (संवत् १२२५ से १२४९)—हिन्दी के प्रथम महाकवि चन्द बरदाई का जन्म विक्रम की बारहवीं शताब्दी के आरम्भ में लाहौर में हुआ। यह अन्तिम हिन्दू सम्राट् पृथ्वीराज के परमसखा राजकवि और सामन्त थे। इनका प्रसिद्ध काव्य ग्रन्थ 'पृथ्वीराज रासो' हिन्दी का प्रथम महाकाव्य है। इस ढ़ाई हज़ार पृष्ठों के वृहद् ग्रन्थ में ६९ समय (खण्ड या अध्याय) हैं। कवित्त, त्रोटक, गाथा और आर्या आदि अनेक प्रकार के छन्दों में पृथ्वीराज के वीर-दर्प-पूर्ण कार्यों का वर्णन है। जिस प्रकार प्राचीन वीर क्षत्रियों के अद्भुत कार्य कलाप का परिचय महाभारत से मिलता है, उसी प्रकार उत्तर कालीन राजपूतों की वीरता का परिचय इस महाकाव्य से मिलता है।

इस ग्रन्थ की ऐतिहासिकता और चन्द के विषय में अनेक इतिहासकारों में मत भेद है। दुर्भाग्यवश भारत का प्राचीन इतिहास लगभग बहुत सा अप्राप्य है। इतिहास लेखकों ने जो कुछ संग्रह किया है उसमें जनश्रुति ही प्रधान आधार है। ऐसी दशा में इतने भारी काव्यग्रन्थ के विषय में मतभेद होना कोई बड़ी बात नहीं। इसमें ऐतिहासिक घटनाओं में जो असम्बद्धता दृष्टिगोचर होती है उसका कारण एक यह है कि इस ग्रन्थ की रचना में इतिहास की ओर बिलकुल ध्यान नहीं दिया गया। केवलमात्र काव्य रचना को ही लक्ष्य बनाया गया है। दूसरी बात यह भी हो सकती है कि समय के साथ साथ इस ग्रन्थ में भी भाटों की कृपा से कुछ सम्मिश्रण बहिष्करण और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिवर्तन होता रहा है। संवतों में तो किसी कारण वश जानबूझ कर ही अन्तर रखा गया है, क्योंकि इस ग्रन्थ में सर्वत्र ही संवतों में ९०-९१ वर्ष का अन्तर नियम से पड़ता है। अस्तु, भाषा या साहित्य के इतिहास की दृष्टि से चाहे इस ग्रन्थ का स्थान कुछ भी हो, परन्तु प्राकृत और अपभ्रंश भाषा काव्यों में इसका स्थान सब से ऊँचा है। छप्पय छन्दों की रचना में कवि को विशेष सफलता मिली है।

संस्कृत के प्रसिद्ध गद्यकाव्य 'कादम्बरी' की भांति इसके विषय में भी यह प्रसिद्ध है कि इसके अन्तिम १० समय चन्द के पुत्र जल्हन ने लिखे हैं। क्योंकि पृथ्वीराज के कैद होकर गज़नी चले जाने पर चन्द भी यह ग्रन्थ अपने पुत्र को देकर वहीं पहुँचे और बड़े कौशल से शहाबुद्दीन गोरी का वध कर पृथ्वीराज के साथ साथ वीर लोक को सिधारे रासो में इसका उल्लेख है:—

रघुनाथ चरित हनुमन्त कृत भूप भोज उद्धरियजिमि।
पृथिराज सुजस कवि चन्द कृत, चन्द नन्द उद्धरिय तिमि॥

जागनिक (सं० १२३०)—कालिंजर के राजा परमाल के भाट थे। इन्होंने महोबे के वीर—आल्हा ऊदल—की कथा वीर गीतात्मक काव्य के रूप में लिखी थी। उसके आधार पर बने हुए गीत 'आल्हा' के नाम से प्रसिद्ध हैं और बरसात में गाए जाते हैं। उत्तर भारत की ग्रामीण जनता में इसका अत्यधिक प्रचार है और 'बैसवाड़ा' इसका केन्द्र माना जाता है।

खुसरो—ये फ़ारसी के बहुत विद्वान, ग्रन्थकार और अपने समय के नामी कवि थे। इनकी कविता का मुख्य लक्ष्य जनता का मनोरञ्जन था। अतः इनकी रचना में मुकरियाँ, पहेलियाँ और ढकोसलों का ही आधिक्य है। खुसरो के समय तक खड़ी बोली का भी प्रचार हो चला था। अतः इनकी रचना में खड़ी बोली और व्रजभाषा दोनों ही विद्यमान हैं। फ़ारसी और हिन्दी मिलाकर भी इन्होंने कविता की हैं। इनका मृत्यु काल संवत् १३४० है।

जैसे—

एक नार दो को ले बैठी। टेढ़ी होके बिल में पैठी।
जिसके बैठे उसे सुहाय। खुसरो उसके बल बल जाय॥

ज हाल मिसकी मकुन तगा फुल दुराय नैना बनाय बतियाँ।
किताबें हिज्राँ न दारम, ए जाँ ! न लेहु काहे लगाय छतियाँ॥
शबाने हिज्राँ दराज चूँ ज़ुल्फ व रोजे वसलत चूँ उम्र कोतह।
सखी ! पिया को जो मैं न देखूँ तो कैसे काटूँ अँधेरी रतियाँ॥

विद्यापति—(सं० १४६०) उन्होंने अपनी पदावली में मैथिल भाषा का प्रयोग किया है। पदावली की रचना बहुत सरस और मधुर है। इस कारण आप 'मैथिल कोकिल' कहलाते हैं। इन पदों की रचना जयदेव के गीत गोविन्द के अनुकरण पर की गई प्रतीत होती है।

भक्ति काल

भारतवर्ष में मुगलों का आधिपत्य हो जाने पर उनके अत्याचारों से पीड़ित हिन्दू जनताको परमात्मा का नाम लेकर सान्त्वना देनेकी इच्छा से तत्कालीन प्रतिनिधि कवियों ने भक्ति का राग अलापा। धीरे धीरे इसकी गूंज समूचे भारत में व्याप्त हो गई और हिन्दू ही नहीं अपितु अनेक सहृदय मुसलमानों ने भी इसमें अपना स्वर मिलाया। इससे राम और कृष्ण की उपासनाको लेकर सगुण भक्ति की परम्परा चली जिसमें हिन्दी काव्य भण्डार को भरने वाले सूर तुलसी आदि काव्य कलामर्मज्ञों का आविर्भाव हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इधर हिन्दू और मुसलमानों के पारस्परिक वैमनस्य को मिटाने के लिये एक ऐसे भक्तिमार्ग की स्थापना हुई जिसे जातिपांति आदि समस्त भेद भावों को भुला कर मनुष्य मात्र ग्रहण कर सके। इस क्षेत्र में कबीर, नानक आदि सन्त कवि उतरे जिससे निर्गुणोपासना की जड़ जमी।

इस प्रकार एक साथ ही निर्गुण और सगुण दोनों प्रकार की उपासनाओं का क्षेत्र दिनों दिन विस्तृत होता गया।

कबीर—निर्गुणोपासकों में सबसे ऊँचा स्थान कबीर का है। इनका जन्म काशी में एक विधवा ब्राह्मणी के गर्भ से जेठ सुदी पूर्णिमा सोमवार सं० १४५६ विक्रमी में हुआ। माता ने लोक लाज के कारण इनको लहरतारा तालाब के किनारे रख दिया जहां से नीरू नामक जुलाहा उठा लाया और पालने लगा।

कबीर पर भक्ति का संस्कार बाल्यवस्था से ही पड़ने लगा। उन दिनों स्वामी रामानन्द का प्रभाव खूब बढ़ रहा था और इधर कबीर आरम्भ से ही हिन्दूभाव की उपासना की ओर आकर्षित हो रहे थे। अतः उन्होंने स्वामी रामानन्द को ही अपना गुरु माना और 'राम' नाम को गुरुमन्त्र समझा। साथ ही कबीर ने मुसलमान फ़क़ीरों का भी सत्संग किया जिससे उनकी प्रवृत्ति अद्वैतवाद की ओर बढ़ी। फल यह हुआ कि कबीर का 'राम' दशरथ के पुत्र नहीं रह गये, वे ब्रह्म के पर्याय बन गये।

कबीर यद्यपि पढ़े लिखे न थे, तथापि सत्संग के द्वारा उन्होंने बहुतसा ज्ञान प्राप्त कर लिया था। वे बड़े स्पष्टवक्ता थे। जाति पांति के भेद भाव को दूर करने की चेष्टा उनकी बाणी बराबर करती रही। उनकी बाणी का संग्रह बीजक के नाम से प्रसिद्ध है। भाषा में खड़ी बोली, अवधी पूरबी आदि कई बोलियों का संमिश्रण है।

कबीर ने मगहर में जाकर शरीर त्याग किया जहाँ इनकी समाधि अब तक बनी है। इनका मृत्युकाल संवत् १५७५ माना जाता है।

गुरु नानक—का जन्म संवत् १५२६ में तिलवंडी ग्राम जिला लाहौर में हुआ। ये बाल्यावस्था से ही अत्यन्त साधु स्वभाव थे। इनके श्रीचन्द और लक्ष्मीचन्द नामक दो पुत्र हुए। श्रीचन्द आगे चलकर उदासीन सम्प्रदाय के प्रवर्तक हुए।

बाल्यकाल से ही भक्ति की ओर झुकाव होने के कारण उपासना का सामान्य स्वरूप स्थिर करने के लिए उन्होंने घरबार छोड़ दूर देशों में भ्रमण किया। अन्त में कबीर की निर्गुण उपासना के मार्ग का अवलम्बन करके आपने सिख सम्प्रदाय चलाया। कबीर की भाँति नानक भी विशेष पढ़े लिखे न थे, परन्तु सत्संग से बहुत कुछ ज्ञान प्राप्त कर लिया था। भक्ति भाव से पूर्ण होकर वे जो भजन गाया करते थे उनका संग्रह 'ग्रन्थ साहब में किया गया है। भजन पञ्जाबी और कुछ मिली जुली हिन्दी भाषा में हैं। सम्बत १५९६ में ये महात्मा स्वर्ग सिधारे।

दादू दयाल—इनका जन्म सम्बत् १६०१ ई० में अहमदाबाद में हुआ। सिद्धान्त की दृष्टि से दादू कबीर पन्थ के अनुयायी ही हैं। परन्तु उन्होंने एक नया पन्थ चलाया जो दादू पन्थ के नाम से प्रसिद्ध है। दादू पंथी अपने को निरञ्जन निराकार का उपासक बताते हैं। ये लोग न तिलक लगाते हैं और न कण्ठी पहिनते हैं। हाथ में एक सुमिरनी रखते हैं और 'सत्तराम' कह कर अभिवादन करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दादू की बाणी अधिकतर कबीर की साखी से मिलते जुलते दोहों में है। भाषा राजस्थानी और पश्चिमी मिली जुली हिन्दी है। नराना के समीप भराने की पहाड़ी (जयपुर से २०-२५ कोस दूर) पर सम्बत् १६६० में इनका देहावसान हुआ। वह स्थान दादूपन्थियों का प्रधान अड्डा है।

सुन्दरदास—निर्गुण पन्थियों में ये ही एक ऐसे व्यक्ति हुए हैं जिन्हें समुचित शिक्षा मिली थी। इन का जन्म संवत् १६५३ में द्यौसा नामक स्थान में हुआ। ये जाति के खंडेलवाल बनिये थे। दादूदयाल इन के गुरु थे। इन की रचना-साहित्यिक और सरस है। भाषा भी मँजी हुई व्रजभाषा है।

इन का 'सुन्दर विलास' ग्रन्थ प्रसिद्ध है, जिस में काव्य-रस पूर्ण अनेक सवैये और कवित्त हैं। व्यर्थ की तुकबन्दी और ऊटपटांग वाणी इन को अच्छी न लगती थी। इस विषय पर इन्हीं का बनाया एक कवित्त देखिये—

बोलिए तो तब जब बोलिबे की बुद्धि होय,
ना तौ मुख मौन गहि चुप होय रहिए।
जोरिये तो तब जब जोरिबे की रीति जाने,
तुक छन्द अरथ अनूप जा में लहिए।
गाइए तौ तब जब गाइबे को कण्ठ होय,
श्रवण के सुनत ही मनै जाय गहिए।
तुकभंग, छन्दभंग, अरथ मिलै न कछु,
सुन्दर कहत ऐसी बानी नहिं कहिए॥

सुशिक्षित होने के कारण इन्होंने लोकधर्म पर भी बहुत कुछ लिखा है। संवत् १७४६ में साँगानेर में इन का देहान्त हो गया।

मलूकदास—इन का जन्म संवत् १६३१ में केड़ा जिला इलाहाबाद में हुआ। ये भी निर्गुण मत के नामी सन्तों में से हैं। इन की अनेक करामातें प्रसिद्ध हैं। आलसियों का मूल मन्त्र—

अजगर करै न चाकरी पंछी करै न काम।
दास मलूका कहि गए, सब के दाता राम॥

इन्हीं का बनाया हुआ है। इन की कविता में भी अरबी, फ़ारसी शब्दों का प्रयोग बहुत है।

प्रेममार्गी (सूफ़ी) शाखा

निर्गुणोपासक भक्तों की दूसरी शाखा उन सूफ़ी कवियों की है जिन की कृति में ईश्वर को मिलाने वाले प्रेमतत्व का आभास लौकिक-प्रेम के रूप में मिलता है। इस सम्प्रदाय में कुतबन, रूँझन उसमान आदि अनेक साधु कवि हुए परन्तु अधिक प्रसिद्ध 'मलिक मुहम्मद जायसी' ही हैं।

मलिक मुहम्मद जायसी—ये प्रसिद्ध सूफ़ी फ़क़ीर 'जायस' में रहते थे। इसी कारण इनका नाम जायसी पड़ा। इन्होंने 'शेरशाह दिल्ली सुलतानू' के राजत्वकाल सन् १५९७ ईसवी में अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'पद्मावत' की रचना की थी। इनका एक ग्रन्थ 'अखरावट' भी है। उसमें वर्णमाला के एक एक अक्षर को लेकर चौपाइयाँ लिखी गई हैं जिसमें ईश्वर, सृष्टि, जीव आदि विषयों पर अपने विचार प्रकट किए गए हैं। परन्तु जायसी का कीर्तिस्तम्भ 'पद्मावत' ही है। इसके कथानक में इतिहास और कल्पना का मनोरम सम्मिश्रण वीर-रसात्मक गाथाओं में इसका स्थान सर्वोच्च है। इसके पढ़ने से प्रतीत होता है कि जायसी का हृदय कैसा कोमल और 'प्रेम की पीर' से भरा हुआ है। क्या लोकपक्ष में और क्या अध्यात्म पक्ष में दोनों और ही उसकी गूढ़ता, गम्भीरता और सरसता विलक्षण प्रतीत होती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पद्मावत का ऐतिहासिक आधार चित्तौड़गढ़ का वही प्रसिद्ध घेरा है जो सन् १३०३ ई० में अलाउद्दीन खिलजी ने पद्मिनी के लिए डाला था। कविता की भाषा तत्कालीन जनसमाज को बोलचाल की भाषा है। उसमें फ़ारसी शब्दों और मुहाविरों की खासी झलक है। 'पद्मावत' आरम्भ में फ़ारसी लिपि में लिखा गया था।

सगुणधारा

विक्रम की पन्द्रहवीं शताब्दी में स्वामी रामानन्द ने भक्तिमार्ग से जातिपाँति का भेद दूर करके राम भक्ति की जो लहर चलाई थी उसमें उनकी शिष्य परम्परा ने पूरा सहयोग दिया। इस प्रकार राम भक्ति की पुष्टि तो निरन्तर होती रही पर हिंदी साहित्य क्षेत्र में इस का प्रकाश तुलसीदासजी की वाणी द्वारा स्फुरित हुआ। वस्तुतः हिन्दी काव्य की प्रौढ़ता का युग भी इन्हीं के विशद साहित्य सौन्दर्य से हुआ।

गोस्वामी तुलसीदास—कहा जाता है कि संवत् १५५४ के लगभग बाँदा ज़िले के राजापुर में एक निर्धन ब्राह्मण के घर तुलसीदास जी का जन्म हुआ। जनश्रुति के अनुसार इनके पिता का नाम आत्माराम दुबे और माता का नाम हुलसी था। ये मूल नक्षत्र में हुए थे, अतः इनके माता पिता ने उन्हें पैदा होते ही त्याग दिया था।

"मातु पिता जग जाहि तज्यो,
विधिहू न लिख्यो कछु भाल-भलाई" कवितावली
"जनक जननि तज्यो जनमि,
करम बिनु बिधिहु सृज्यो अवडेरे" विनयपत्रिका

आदि वचनों के अनुसार भी यही सिद्ध होता है।

बाबा नरहरिदास इन के गुरु थे। उन्हीं से ये राम-कथा सुना करते थे। वेद, वेदाङ्ग, दर्शन और इतिहास आदि में भी इन्होंने प्रवीणता प्राप्त की। इनका विवाह दीनबन्धु पाठक की कन्या रत्नावली से हुआ था।

इनकी जीवनधारा को एक दूसरी दिशा में बहा देनेवाली घटना इनके प्रति इनकी पत्नी का उपालम्भ है। अपनी पत्नी पर ये इतने अनुरक्त थे कि एक बार उस के मायके चले जाने पर ये बढ़ी हुई नदी पार कर के उस से जा कर मिले। पत्नी को इस से बड़ी लज्जा हुई। उसने खिज कर कहा—

"लाज न लागत आप को दौरे आएहु साथ।
धिक् धिक् ऐसे प्रेम को कहा कहौं मैं नाथ॥
अस्थि-चर्म-मय देह मम ता में जैसी प्रीति।
तैसी जो श्रीराम मँह होति न तौ भव-भीति॥"

यह बात तुलसीदासजी को ऐसी लगी कि उन्होंने उसी समय गृहस्थाश्रम का विसर्जन कर दिया। इस प्रकार संवत् १६०७में ये विरक्त हो गये। तत्पश्चात् इन्होंने जगन्नाथपुरी, रामेश्वर, द्वारका, बदरिकाश्रम, कैलाश और मानसरोवर तक तीर्थाटन किया। संवत् १६१६ में सूरदासजी ने चित्रकूट में इन से भेंट की। उनके 'सूरसागर' के पदों की शैली पर आपने सीतावली रामायण और कृष्ण-गीतावली लिखी।

आप ने 'संवत् सोरह सौ इकतीसा' में अपना प्रसिद्ध 'रामचरित्रमानस' लिखना आरम्भ किया और दो वर्ष सात महीने में (स० १६३३ में) उसे समाप्त किया।

इनकी मृत्यु के सम्बन्ध में यह दोहा प्रसिद्ध है—

"संवत् सोरह से असी, असी गंग के तीर।
श्रावण शुक्ला सप्तमी, तुलसी तज्यो सरीर॥"

गोस्वामीजी की सर्वतोमुखी प्रतिभा से हिन्दी साहित्य का बड़ा उपकार हुआ। वीर-गाथा-काल के कवियों का काव्यक्षेत्र बड़ा संकुचित रहा, और कबीर आदि सन्तों का उद्देश्य ही साहित्यिक नहीं था। इस कारण चलती भाषा का संस्कार और हिन्दी-काव्य की शक्ति का पूर्ण प्रसार सर्व प्रथम इन्हीं की रचनाओं में हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोस्वामीजी के समय में काव्य-भाषा के दो रूप प्रचलित थे—व्रज और अवधी। इन दोनों ही भाषाओं पर उनका पूर्ण अधिकार था। गीतावली और कृष्णगीतावली में व्रजभाषा का माधुर्य है। जानकी मंगल और पार्वती मंगल आदि में अवधी का मिठास है।

गोस्वामी जी के १२ ग्रन्थ प्रसिद्ध हैं, जिनमें दोहावली, कवितावली, गीतावली, रामचरितमानस, रामाज्ञा प्रश्नावली, और विनय पत्रिका, ये ६ ग्रन्थ बड़े हैं और रामललानहछू, पार्वती-मंगल, जानकी मंगल, बरवैरामायण, वैराग्य-सन्दीपनी और कृष्णगीतावली ये ६ छोटे हैं।

उस समय जो रचना शैलियाँ प्रचलित थीं उन सब पर ही गोस्वामी जी का पूर्ण अधिकार था। सूरदास और विद्यापति की पदशैली पर विनय पत्रिका, गंग आदि भाटों की कवित्त सवैया पद्धति पर कवितावली, नीति के दोहों की सरणी पर दोहावली और जायसी आदि की दोहा-चौपाई की रीति पर रामचरितमानस की रचना की। वीर-गाथा-काल की छप्पय-पद्धति पर भी इन्हीं ग्रन्थों में यत्र-तत्र पर्याप्त रचना है।

प्रतिपाद्य विषय की दृष्टि से भी गोस्वामीजी का स्थान सबसे ऊँचा है। मानव-जीवन की अधिक से अधिक दशाओं का सन्निवेश उनके काव्य में है। वस्तुतः भारतीय जनता का प्रतिनिधि कवि गोस्वामी जी को ही कहा जा सकता है। प्रायः अन्य समस्त कवि किसी एक पक्ष को लेकर ही आगे बढ़े हैं। किसी ने वीरता और उत्साह को लक्ष्य बनाया, किसी ने प्रेम और ज्ञान को तथा किसीने दाम्पत्य प्रणय या शृङ्गार को। पर गोस्वामीजी जी ने भक्ति और वैराग्य के साथ ही साथ सामाजिक व पारिवारिक कर्तव्यों का उपदेश भी पूर्णरूप से दिया है। अन्य भक्त कवियों की भाँति लोक पक्ष की अवहेलना नहीं की है।

भाषा को भी भावों के अनुरूप रखने में गोस्वामीजी सिद्ध हस्त थे। उनकी सी भाषा की सफ़ाई और किसी कवि में नहीं। शब्द चमत्कार आदि खिलवाड़ों में, वे कहीं नहीं पड़े। अलङ्कारों की योजना बड़े मार्मिक ढंग से की है। सब रसों की व्यञ्जना की है पर मर्यादा का उल्लङ्घन नहीं किया। प्रेम और शृङ्गार का ऐसा वर्णन जो बिना किसी लज्जा और सङ्कोच से सबके सामने पढ़ा जा सके, गोस्वामी जी का ही है।

नाभादास—ये स्वामी अग्रदास जी के शिष्य थे। इनका प्रसिद्ध ग्रन्थ 'भक्तमाल' संवत् १६४२ के पीछे बना और संवत् १७६९ में प्रियादास जी ने उसकी टीका लिखी। इसमें २०० भक्तों के जीवन की चमत्कार पूर्ण बातें दी गई हैं। रचना 'छप्पय-वृत्त' में है। व्रजभाषा पर इनका अच्छा अधिकार था और पद्य रचना में निपुणता प्रसिद्ध थी।

इनके बनाए दो 'अष्टयाम' भी मिलते हैं। एक व्रजभाषा-गद्य में और दूसरा दोहा चौपाइयों में।

हृदयराम—ये पञ्जाब के रहने वाले थे। इन्होंने संवत् १६८० में संस्कृत के 'हनुमन्नाटक' के आधार पर भाषा हनुमन्नाटक लिखा। इसमें अधिकतर कवित्त और सवैयों में बड़े अच्छे संवाद हैं। कविता सुन्दर और परिमार्जित है।

इस प्रकार रामभक्ति की काव्यधारा से कई प्रकार की रचना पद्धतियों को उत्तेजना मिली। रामचरित को लेकर अनेक प्रबन्ध काव्यों की रचना हुई, जिससे हिन्दी साहित्य भण्डार दिनों दिन भरता ही गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी प्रभाकर तथा हिन्दी भूषण के लिये।

छन्दःशास्त्र और अलङ्कार

[ले०—साहित्याचार्य पं० बृहद्बल "संयमी" शास्त्री वेदतीर्थ, बी० ए०]

(१) आचार्य पिंगल ने छन्दःशास्त्र की रचना की है। यह शास्त्र ६ वेदांगों में सर्व-प्रथम है। "छन्दः पादौ तु वेदस्य" वास्तव में छन्दःशास्त्र वेदों का चरणस्थानीय है और चरण ही पूजे जाते हैं, अतः पूजा के योग्य हैं, चरणों के बिना लँगड़े आदमी के समान रचना भी लँगड़ी न हो जाय, अतः छन्दों का होना परमावश्यक है।

(२) 'छन्दांसि छादनात्'। किसी भाव को आच्छादन करने का एकमात्र साधन छन्द ही हैं। इसी कारण ऋषि, मुनि, आचार्य तथा कवि लोग भी विस्तृत भावों को साधारण और इने-गिने शब्दों में छन्दों-द्वारा वर्णन करते हैं।

(३) स्वभावतः स्मरणशक्ति का छन्दोबद्ध रचना पर विशेष अधिकार होता है। यह नियम बच्चे से बूढ़े तक समान है।

(४) छन्दःशास्त्र की संगीत से विशेष मैत्री है। रचना, छन्दोबद्ध होते ही संगीत-द्वारा गाने योग्य हो जाती है। किसी ने ठीक कहा है—"छन्दः सांगीतकं विदुः।"

(५) छन्द और संगीतशास्त्र में 'लय' का विधान ऊँची मंज़िलवाले मकान पर पहुँचानेवाली सीढ़ियों के समान है।

(६) 'कवित्वं दुर्लभं तत्र' कविता करना दुर्लभ है। 'पीतं न काव्यामृतमद्वितीयं वृथागतं तस्य नरस्य जीवितम्' जिसने काव्यरसास्वादन नहीं किया, उसका जीवन ही व्यर्थ है। और इस पर तुर्रा यह कि बिना छन्दों के ऐसी कविता भी नहीं बन सकती। अस्तु, जिसमें एक मात्रा हो, वह 'ह्रस्व'; दो मात्राएँ हों, वह दीर्घ होता है। ह्रस्व का चिह्न (।) है, और दीर्घ का चिह्न (ऽ)। संधिस्वर अनुस्वार सहित, विसर्गान्त और संयुक्तवर्ण से पूर्व का अक्षर सदा दीर्घ होता है। शेष ह्रस्व हैं। हाँ, कभी आवश्यकतानुसार पदान्त वर्ण को भी दीर्घ मान लेते हैं। छन्दःशास्त्र में आठ गण होते हैं, 'मनभाये जरे सरतू' अर्थात् मगण नगण, भगण, यगण, जगण, रगण, सगण और तगण। प्रत्येक गण तीन तीन वर्णों का होता है। तीन अक्षरों में से आदि गुरु हो तो 'भगण' मध्य गुरु हो तो 'जगण' अन्त गुरु हो तो 'सगण' आदि लघु हो तो 'यगण' मध्य लघु हो तो 'रगण' अंत लघु हो तो 'तगण' सब गुरु हों तो 'मगण' और सब लघु हों तो 'नगण' होता है। इसके क्रम से उदाहरण पढ़िये—"भारत, गणेश, सरिता सुशीला शीलता, धर्मेन्द्र, विज्ञानी और गगन।

छन्द दो प्रकार का है। मात्रिक और वर्णिक। जिनके चारों चरण समान हों वे 'सम' पहिले और तीसरे, दूसरे और चौथे चरण समान हों वे 'अर्द्धसम' और जो न सम हों न अर्धसम हों, वे विषम छन्द कहलाते हैं। ३२ मात्राओं तक साधारण मात्रिक छन्द होते हैं। इससे अधिक मात्रायें हों तो दण्डक होगा। इसी प्रकार वर्णिक छन्दों में भी २६ वर्णों तक साधारण और इससे अधिक 'दण्डक' कहलाता है। 'भूषण' के परीक्षार्थियों को नीचे लिखे पहिले १५ छन्द और 'प्रभाकर' के परीक्षार्थियों को सब छन्द लक्ष-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

णोदाहरण सहित याद होने चाहिए। मात्रिक और वर्णिक दोनों छन्द दिये जाते हैं। अनुष्टुप, दोहा, सोरठा, छप्पय, चौपाई, वसन्ततिलका, आर्या, कुण्डलियाँ, कवित्त, सवैया, मालिनी, शिखरिणी, उपजाति, तोटक, भुजंगप्रयात, अतिबरवै, अपर-वक्त्र, आख्यानिकी, आर्यागीति, आल्हा, इन्द्रवज्रा, केतुमती, गीतिका (मात्रिक तथा वर्णिक) चौपाई, चौबोला, दोधक, दोहा, द्रुतमध्या, द्रुतविलम्बित, पंचचामर, प्रहर्षिणी, पज्झटिका, पुष्पिताग्रा, बरवै, मंदाक्रान्ता, मनहरण, महास्रग्धरा, मोतियदाम, यवमती, रथोद्धता, रोला, लावनी, विपरीताख्यानिकी, वेगवती, शार्दूलविक्रीड़ित, स्रग्धरा, हरिणी, और त्रिभंगी। ये कुल ५ छन्द अच्छी तरह याद होने चाहिये, छन्दःप्रभाकर में कुल ८१३ छन्द हैं, उनमें से ५० छन्द याद करना बिलकुल साधारण बात है। और आज तक कोई वर्षों से प्रायः ये ही छन्द परीक्षाओं में पूछे जाते रहे हैं, और ऐसा होना स्वाभाविक है क्योंकि प्रसिद्ध छन्दों का ज्ञान होना अत्यंत आवश्यक है, अप्रसिद्ध छन्दों के लिये मत्था-पच्ची करना परीक्षा की दृष्टि से व्यर्थ है।

अलंकार

गद्य और पद्य में शब्द और अर्थ-संबंधी कोई चमत्कार जिससे उत्पन्न हो उसे 'अलंकार' कहते हैं। अलंकार का साधारण अर्थ 'भूषण' है, भूषण जैसे अंगों की शोभा बढ़ाते हैं, अलंकार भी रचना की शोभा के सहायक हैं। अलंकार तीन प्रकार का है—शब्दालंकार, अर्थालंकार और उभयालंकार। जिसके शब्दों में चमत्कार हो वह 'शब्दालंकार' जैसे 'बस बजेगी बाँसुरी ब्रजबासियों के बास में, बन गये वसुदेव बन्दी विश्व के विश्वास में'। जिस के अर्थ में चमत्कार पाया जाये' वह 'अर्थालंकार' जैसे—राधा दुति लखि सरद ससि, घन माँहीं बिलगाय' जिसके एक ही पद्य में दो या अधिक अलंकारों का मिश्रण हो और शब्द एवं अर्थ दोनों की बहार हो, जैसे—'छिनु छिनु पिय-विधु-बदन निहारी प्रमुदित मनहुँ चकोर कुमारी' इस पद्य में रूपक और उत्प्रेक्षा स्पष्ट ही है।

'हिन्दी भूषण' परीक्षा में 'अलंकार प्रबोध' तथा 'हिन्दी प्रभाकर' परीक्षा में इस वर्ष के लिये 'भारती भूषण' नियत पाठ्यपुस्तक है। 'भारती भूषण' के स्थान पर यदि "अलंकार मंजूषा" ही रहती तो अधिक सन्तोष की बात थी, परन्तु 'भारती भूषण' की नियुक्ति ने अलंकारमंजूषा का बहुत ही मान किया है। यदि यह पुस्तक नियुक्त न होती तो 'अलंकारमंजूषा' का इतना समुचित आदर भी प्रतीत न होता। अस्तु, 'अलंकारप्रबोध' निस्संदेह अत्युत्तम पुस्तक है, वर्तमान दोनों पुस्तकों में प्रायः बराबर ही अलंकार हैं और एक ही जैसे हैं, हाँ, लक्षणोदाहरणों में बड़ा विस्तार है, परन्तु परीक्षाओं में किसी भी पुस्तक के आधार पर लिख देना क्षन्तव्य है। अलंकार की भावुकता उस उदाहरण से स्पष्ट होनी चाहिये। पाठकों को सहृदयता के साथ अलंकारों की मार्मिकता का पूर्णज्ञान होना चाहिये। ताकि परीक्षास्थल में यदि उदाहरण विस्मृति भी हो जाय, तो भी विद्यार्थी उस अलंकार की मार्मिकता को अपनी परिमार्जित गद्य में प्रगट कर सकेगा। यदि छात्र सहृदय कवि होगा तो अपनी कविता बनाकर उदाहरण स्वरूप लिख सकेगा, जो अधिक प्रतिभाशाली प्रतीत होगी। अस्तु। नीचे लिखे हुये अलंकार परीक्षार्थियों को भली भाँति स्मरण रखने चाहिये।

अनुप्रास—(Alliteration) जहाँ व्यंजनों की समानता हो चाहे उनके स्वर मिलें या न मिलें।

उदा०—'ललित लेख लिखते हैं लिखने वाले' यहाँ 'ल' की समता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यमक— जहाँ एक-सा हो शब्द बार बार सुनाई पड़े परन्तु अर्थ जुदा जुदा हो।

उदाहरण—'तीन बेर खाती ते वै तीन बेर खाती हैं' यहाँ 'बेर' शब्द का अर्थ बार और 'बेर' है।

उपमा—(Simile) जहाँ दो वस्तुओं में पृथक्ता रहते हुए भी कोई समता वर्णन की जावे। उपमा सूचक चिह्न 'सो, से, सी, इव, तूल, लौं, सम, समान, ज्यों, जैसे, जिमि, इमि, सरिस, इत्यादि हैं। जैसे—

'पीपर पात सरिस मन डोला, या तव मुख ससि सो सुन्दर सोहै।

उत्प्रेक्षा—जहाँ किसी उपमेय का कोई उपमान कल्पना शक्ति द्वारा कल्पित किया जाय। उत्प्रेक्षा सूचक चिन्ह मनु, जनु, मानो, जानो, निश्चय, प्रायः, बहुधा, खलु हैं। जैसे—

'सोहत ओढ़े पीत पट, श्याम सलोने गात। मनो नीलमणि शैल पर आतप पर्‌यो प्रभात'

साँवरे शरीर पर पीली चादर ओढ़े हुए कृष्ण ऐसे शोभायमान हैं मानों नीलम मणि के पहाड़ पर प्रातःकाल की धूप पड़ रही हो।

रूपक—(Metaphor) जहाँ उपमेय और उपमान को एक ही मान लें। अर्थ करते समय 'रूपी' प्रयोग किया जावे।

उदा०—'मुख शशि वा शशि ते अधिक उदित ज्योति दिन रात' अर्थात् चाँद से मुख रूपी चाँद बढ़कर है।

अपह्नुति—जहाँ सच्ची बात छिपा कर मिथ्या कल्पना द्वारा दूसरे को समझा दिया जावे।

उदा०—पहिरे श्याम न पीत पट घन में बिज्जु विलास'

अर्थात् कृष्ण पीली चादर ओढ़े हुये नहीं है, बल्कि यह तो बादलों में बिजली चमक रही है।

श्लेष—जिसमें एक ही शब्द के दो तीन या इससे अधिक अर्थ हों।

उदा०—'सत्यासक्त दयाल द्विज प्रिय अघहर सुख कन्द। जनहित कमला तजन जय शिव, नृप कवि, हरिचन्द॥

इस पद्य में 'सत्यासक्त' और 'कमला तजन' के कई अर्थ हैं जैसे—

'सत्य+आसक्त' सत्य में आसक्त, सत्या+आसक्त=सत्यभामा में आसक्त, सती+आसक्त=पार्वती में आसक्त, एवं 'कमला' लक्ष्मी धन इत्यादि

अतिशयोक्ति—(Hyperbole) जहाँ किसी बात को बहुत बढ़ाकर कहा जावे।

उदा०—हनूमान की पूँछ में लगन न पाई आग। लंका सिगरी जरि गई गये निशाचर भाग।

अर्थात् पूंछ में बिना आग लगे ही सारी लंका जला डाली और राक्षस भी भाग गये। क्या ठिकाना है?

विभावना—जहाँ किसी घटना के कारण के सम्बन्ध में कोई विलक्षण कल्पना की जाये। जैसे-

'राजकुमार सरोज से हाथन सों गहि शम्भु शरासन तोर्‌यो' अर्थात् राम ने कमल जैसे हाथों से पकड़ कर शिव के धनुष को तोड़ डाला बहुत खूब!!!

अर्थान्तरन्यास—पहिले कही हुई किसी साधारण बात का विशेष उदाहरण से अथवा विशेष का साधारण सिद्धान्त से समर्थन किया जावे।

उदा०—बड़े न हूजै गुणन बिनु बिरद बड़ाई पाय। कनक धतूरे सों कहत गहनो गढ़ो न जाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्थात् केवल बड़ाई पाने से कोई बिना गुणों के बड़ा नहीं हो सकता, क्या हुआ, जो धतूरे ने 'कनक' की पदवी प्राप्त कर ली परन्तु उसके गहने नहीं बन सकते।

सहोक्ति—जिसमें साथ का कथन हो, जैसे—

'लछिमन गये राम संग बन में'

विनोक्ति—जिसमें 'बिना' का कथन हो जैसे—

'लाज बिना राजत नहीं कुलतिय लोचन त्याग' अर्थात् कुलांगना, नेत्र और दान बिना लज्जा के शोभा नहीं देते।

दृष्टान्त—इसमें उपमेय और उपमान वाक्यों के पृथक् धर्म होते हुये भी एक प्रकार की वाचक शब्दों के बिना समता सी होती है।

उदा०—जगत जनायो जेहि सकल सो हरि जान्यो नाहिं। ज्यों आँखिन सब देखिये आँखिन देखी जाहिं।

अर्थात् जिस प्रभु ने संसार उत्पन्न किया उसे किसी ने नहीं जाना, ठीक है आँखों से सब कुछ देखते हैं मगर स्वयं नहीं देखी जातीं।

स्वभावोक्ति—जाति या अवस्था के अनुसार जिसका जैसा प्राकृतिक कृत्य हो वैसा ही वर्णन करना। जैसे—

भोजन करत चपल चित इत उत अवसर पाय। भागि चलत किलकाल मुख दधि ओदन लिपटाय॥ भाव स्पष्ट है।

हिन्दी सन्देश के नियम

(१) हिन्दी संदेश अंग्रेज़ी मास के प्रथम सप्ताह में प्रकाशित होता है। जिन ग्राहकों को चलत महीने का अङ्क न मिले उन्हें एक सप्ताह के अन्दर २ सूचना देनी चाहिए।

(२) वार्षिक मूल्य ३) है

(३) एजण्टों को अगाऊ मूल्य देने पर ही हिन्दी संदेश दिया जायगा। कम से कम २५ प्रतियां मंगाने वाले सज्जन ही एजण्ट बन सकते हैं।

(४) हिन्दी संदेश में समालोचनार्थ-पुस्तकें भेजने वालों को समालोचनीय पुस्तक की कम से कम दो प्रतियां भेजनी चाहिए।

(५) हिन्दी सन्देश में अश्लील विज्ञापन नहीं छपेंगे।

मैनेजर—हिन्दी—सन्देश
मोहनलाल रोड लाहौर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-समालोचना के मूल-तत्व

[समालोचक पत्र से उद्धृत]

साहित्य-संसारमें समालोचकका स्थान जितना महत्त्वपूर्ण है, उसका उत्तरदायित्व भी उतना ही गम्भीर है, और उसके कर्त्तव्य कर्म भी उतने ही कठिन हैं। यदि कोई कवि उत्तम कविता न करे या कोई औपन्यासिक जीवन की सम्यक् व्याख्या न करे अथवा कोई नाटककार पात्रों के चरित्र-चित्रण की ओर यथोचित ध्यान न दे, तो उससे उतनी अधिक हानि समाज की नहीं हो सकती जितनी किसी समालोचक की त्रुटिपूर्ण कुरुचिपूर्ण या द्वेषपूर्ण समालोचना से हो सकती है। एक प्रकार से देखा जाय तो कवि औपन्यासिक या नाटककार तो आँखवालों को सुन्दर वस्तुएँ दिखलाते हैं पर समालोचक अन्धों को रास्ता दिखलाता भूले भटकों को सन्मार्ग पर लाता और परिष्कृत भूमि में उन्हें चलाता है। इतना ही नहीं कभी कभी तो वह पथ-विचलित कवियों औपन्यासकों आदि को भी सत्पथपथी बनाने का सदुद्योग करता है, साथ ही उनके संकुचित या अव्यवस्थित दृष्टिकोण को दुरुस्त करता है। इस दृष्टि से विचार करने पर यह स्पष्ट हुए बिना नहीं रहता कि समालोचक का कार्य बड़ा ही पवित्र है। वह कठिन तो इतना है कि देखते ही डर लगता है। विचारते ही प्रकंपन होता है और लाख योग्यता होते हुए भी धड़कन बनी ही रहती है, जी हिचकता ही रहता है।

समालोचना में व्यक्तिगत आक्षेपों का होना तो अतिशय अनुचित दूषित तथा घृणित है।

ऊपर पंक्तियों में सत्समालोचना के उन अभावों पर स्थूल रीति से विचार किया गया है जो वर्तमान हिन्दी में बेतरह खटकते हैं—जिनके अस्तित्व से भाषा को बड़ी क्षति पहुँच रही है। अब निम्नांकित पंक्तियों में सत्समालोचना के लिये किन किन गुणों की आवश्यकता है, समालोचना है क्या, किस प्रणाली का प्रतिपालन करने से समालोचना के क्षेत्र में उन्नति की जा सकती है—आदि बातों का विवेचन किया जायगा। परन्तु इस नवीन क्षेत्रमें प्रवेश करना भी सहज नहीं—यह नवीन क्षेत्र बड़ा ही विषम है। अभी तक हिन्दी संसार ने इस विषय में कोई निश्चित मत स्थिर नहीं कर पाया है और न इस विषय का कोई विस्तृत विवेचन ही अभीतक हिन्दी में हुआ है। विषय विवादग्रस्त भी कम नहीं है जो विचार बहुत दिनों से चक्कर काट रहे हैं, जिन्होंने हृदय में डेरा जमा लिया है उन्हें ही व्यक्त कर देना और निर्णय का भार विषय के निष्पक्ष आचार्यों पर छोड़ देना उचित है। अस्तु समालोचना क्या है इसका विवेचन सर्वप्रथम होना चाहिए। यद्यपि अंगरेजी साहित्य के कतिपय आचार्यों ने समालोचना की परिभाषाएँ लिखी हैं पर उनमें से किसी से पूर्ण संतोष नहीं होता। उन व्याख्याकारों में से यहाँ पर स्थानाभाव के कारण केवल एक का ही उल्लेख किया जा सकेगा। जो उसकी एक परिभाषा हमें सर्वाधिक संतोषप्रद मालूम हुई है, वह परिभाषा मैथ्यू आर्नल्ड द्वारा की हुई है। इस विद्वान् समालोचक-प्रवर ने समालोचना की इस प्रकार व्याख्या की है—

Criticism is a disinterested endeavour to learn and propagate the best that is known and thought in the world."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"संसार के सर्वोच्च ज्ञान एवं विचार के जानने और प्रचार करने का निर्लिप्त प्रयत्न ही समालोचना है।" संसार का सर्वोच्च ज्ञान एवं विचार और उसके जानने का निर्लिप्त प्रयत्न! इस व्याख्या के दोनों अंग कल्पना क्षेत्र में चाहे जितने उपादेय समझे जायँ पर वास्तविक व्यवहार क्षेत्र में इसकी गुजर नहीं है। न तो निर्लिप्त प्रयत्न ही संभव है और न संसार भर के सर्वोच्च ज्ञान तथा विचार का एकत्रीकरण ही। हमारे यहां निर्लिप्त वासना मोक्ष का उपाय कही गई है परन्तु वह साधारणतः अप्राप्त मानी गई है—कल्पना क्षेत्र की एक लुभावनी वस्तुमात्र बतलाई गई है। संसार भर के सर्वोच्च ज्ञान एवं विचार के जानने और उसके प्रचार करने के सम्बन्ध में तो केवल इतना ही कह देना यथेष्ट होगा कि वह तो बड़े बड़े महात्माओं के लिये दुर्लभ वस्तु है—समालोचक महात्मा नहीं और न उसे महात्मा बनकर अपने क्षेत्र से अलग हो जाना ही इष्ट है। वह तो संसारी जीव है और संसार का होकर रहना ही उसे पसन्द है।

कहा जा सकता है कि समालोचना के लिये—ऐसी श्रेष्ठ समालोचना के लिये जिसका निरूपण ऊपर की पंक्तियों में किया गया है, विद्वत्ता ही सर्वापेक्षा आवश्यक वस्तु है। यद्यपि वैयक्तिक अनुभव आदि, ज्ञानोपार्जन के साधन माने जाते हैं पर वर्तमान समय में विचारशील, विवेकपूर्ण अध्ययन को ही विद्वान् बनने का सबसे सुगम मार्ग मान लेने में किसी को विशेष आपत्ति न होनी चाहिए। हमारा तो यहां तक विचार है कि इस समय वैयक्तिक अनुभव द्वारा विद्वान् बनने का कार्य जितना दुरूह है, साथ ही जितना निष्प्रयोजनीय है उतना अब से पहिले कभी नहीं था। समस्त संसार ज्ञान के क्षेत्र में इतना आगे बढ़ चुका है, मानव-बुद्धि इतनी अग्रसर हो चुकी है, ज्ञान भंडार इतना भर चुका है और पुस्तकों में मनुष्य ने अपने एकत्रित ज्ञान को ऐसी सुसंबद्ध रीति से रख दिया है कि उसका उपयोग न करना और वैयक्तिक अनुभव पर अवलम्बित रहना एकदम उपाहासास्पद है। बात भी ठीक है विचारने की बात है कि जिन बातों का पता मानव मस्तिष्क लगा चुका है—पूर्णता के लक्ष्य की ओर संसार जितनी दूर आगे बढ़ चुका है उसका विचार न कर, उसका उपयोग न कर यदि कोई मनुष्य वैयक्तिक अनुभव को ही ज्ञान का साधन मान बैठे तो कहां तक उसका ऐसा मान लेना उचित समझा जा सकता है। ऐसा मान लेना तो क़रीब क़रीब एक विद्वान् को एम० ए० पास कर लेने पर फिर से एफ़०, बी०, सी०, डी० पढ़ने के लिये समुत्सुक होने के समान है। क्या आवश्यकता है कि हम पास की परसी हुई थाली के विशुद्ध भोजन को छोड़ कर अपनी क्षुधा शाँति के निमित्त फिर से बटलोही चूल्हे पर रक्खें? निश्चय ही हमारी यह नवीन खिचड़ी अढ़ाई चावल की ही कहलाएगी। सिवा समय और शक्ति के दुरुपयोग के इससे अन्य कोई लाभ नहीं देख पड़ता।

लेकिन विचारशील अध्ययन भी सरल काम नहीं है। इसके लिये "भाषा-ज्ञान" और साहित्य ज्ञान की अतिशय आवश्यकता है। 'भाषा-ज्ञान' से मेरा आशय है अपनी भाषा का—हिन्दी का—सम्यक ज्ञान। "साहित्य-ज्ञान" से मेरा मतलब है हिन्दी साहित्य का—भारतीय भावों तथा विचारों का क्रम-बद्ध ज्ञान। दोनों का अन्तर अत्यधिक स्पष्ट है। भाषा आवरण है साहित्य का, और साहित्य जीवन है भाषा का। बिना आवरण के कोई कैसे बाहर निकले और बिना जीवन के कोई कैसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवित रहे ? यही सम्बन्ध है भाषा और साहित्य का। 'भाषा-ज्ञान' के लिये हमको भाषा-विज्ञान की शरण लेनी होगी और साहित्य-ज्ञान के लिये साहित्य के क्रम बद्ध अध्ययन की। पर निश्चय ही दोनों मिलकर काम करेंगे अलग अलग नहीं। भाषा का ज्ञान सर्व प्रथम होना चाहिए तदुपरान्त साहित्य के क्रमबद्ध ज्ञान का। वह दोनों कार्य इतने कठिन हैं कि हमारा उसमें प्रवेश करने का जी नहीं चाहता। पर हमें अपने कल्याणार्थ अपनी भाषा के कल्याणार्थ और भारतीय राष्ट्र के कल्याणार्थ इस विषम क्षेत्र में प्रवेश करना ही होगा। बिना इसमें प्रवेश किए हमें यह सगर्व कह सकने का अवसर नहीं मिलेगा कि हमारी हिन्दी का प्राचीन काव्य-साहित्य किसी भी पाश्चात्य के प्राच्य-काव्य-साहित्य से किसी अंश में न्यून नहीं है। बिना इसमें प्रवेश किए यह कौन कह सकेगा कि हमीरे 'चंद' हमारे 'तुलसी' हमारे 'सूर' 'जायसी, बिहारी, देव, केशव, भूषण मतिराम आदि श्रेष्ठ कवि संसार के साहित्य में अत्युच्च स्थान रखते है। बिना इसमें प्रवेश किए बंगला आदि प्रान्तीय भाषाओं को राष्ट्र-भाषा बनाने की हिम्मत रखने वालों के अनुचित गर्व को भंग करता हुआ यह कौन कह सकेगा कि तुम्हारा प्राचीन साहित्य क़रीब क़रीब नगण्य है, अनुल्लंघ्य है और असंबद्ध है। बिना इसमें प्रवेश किए हमें आर्य जाति और भारतीय राष्ट्र के विचारों और भावों के विकास का पता कैसे चलेगा और बिना पता चले हमारा काम कैसे चलेगा, क्योंकि भारतीय मौलिक विचारों का प्रकाशन हमारी हिन्दी ही द्वारा तो अधिकतर हुआ है। अतः थोड़े से अर्थ और थोड़े से साहस को लेकर इस पुण्य भूमि में प्रवेश करना ही होगा। थोड़े समय के बाद जब हमारी उत्सुकता जागरित हो जायगी। जब हमें अपनी प्राचीन कविता का आनन्द मिलने लगेगा, तब तो उसे छोड़ने तक का जी न चाहेगा। हम अवकाश के समय में सर्वदा उन सरस सुकवियों की सुधासुक्तियों के पारायण में तत्पर रहेंगे। वर्तमानयुग विज्ञान का युग है, काव्य का नहीं। हमें अपने जीवन की आवश्यकताओं की परिपूर्ति का समय ही नहीं मिलता, प्राचीन काव्य के अध्ययन का समय मिलना तो और भी कठिन है पर साथ ही यह भी है कि यदि हम में वास्तविक लगन हो, यदि हम में अपने हितों के पहिचानने की शक्ति हो, अथच यदि हम दैहिक आवश्यकताओं को ही सब कुछ न मानकर मानसिक क्षेत्र में भी कुछ कर दिखलाने की सदभिलाषा रखते हों, तो हम बिना विशेष बाधा के समय निकाल सकते हैं और उसे अपने प्राचीन साहित्य के अध्ययन में लगाकर उसका सदुपयोग कर सकते हैं।

निष्पक्ष-विवेचन के लिये दो आवश्यक वस्तुएँ हैं संयम और सुरुचि। आत्मविज्ञापन की अभिलाषा संयम की पुरानी वैरिन है और छिद्रान्वेषण की प्रवृत्ति तथा सुरुचि का भी यही सम्बन्ध है। अतः इन दोनों कुसंस्कारों का बहिष्कार सुसमालोचन के लिये अतीव श्रेयस्कर सिद्ध होगा, इसमें संदेह नहीं।

अन्य क्षेत्रों में संदिग्धता चाहे कितनी ही अनावश्यक असमीचीन क्यों न समझी जाय पर समालोचना के क्षेत्र में संदिग्धता से काम लेना कदापि अनुचित नहीं—यहाँ तक कहा जा सकता है कि समालोचना में संदिग्धता से बड़ा लाभ पहुंचता है। जो मेरा विचार है वही सत्य है अन्य कोई विचार इस विषय में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्य हो ही नहीं सकता—सुसमालोचक को ऐसा स्वप्न में भी न समझना चाहिए। साहित्य में मत-वैभिन्य बहुत साधारण-सी बात है—एक ही दृष्टिकोण समस्त संसार का नहीं हो सकता, ऐसा विचार कर जो आलोचना लिखी जाएगी वह संकीर्णता से सर्वथा रहित होने की अधिक संभावना रक्खेगी। यद्यपि संकीर्णता का रोग भी हिन्दी में अपनी जड़ जमा चुका है, पर यदि उचित औषधि का प्रयोग हो तो अभी उसका उन्मूलन हो सकना असम्भव नहीं है। यदि और नहीं तो समालोचक इतना तो अवश्य ही समझ लें कि उसके समालोच्य लेख का लेखक निरा बुद्धू या निरक्षरभट्ट नहीं है। उसने भी साहित्य का अध्ययन किया है—वह भी माता सरस्वती का उपासक है। साहित्य-मन्दिर के पवित्र पुजारी तुम दोनों हो। उसकी अनन्यता में संदेह करने का तुझको कोई अधिकार नहीं, हाँ, उस अनन्यता पर श्रद्धा और सहानुभूति रखने का अधिकार तुमको अवश्य है। खुशी से उस अधिकार का उपयोग कर सकते हो। जो समालोचक अपने इस अधिकार का उपयोग करते हैं—सम्यक्रीत्या करते हैं वे निश्चय ही समादरणीय व्यक्ति हैं, पर कहना न होगा कि ऐसे समादरणीय व्यक्ति हिन्दी-साहित्य में अभी उँगलियों पर गिने जाने-भर को भी नहीं हैं।

———

पृथ्वीराजरासो का संक्षिप्त परिचय

[श्री० गौरीशंकर हीराचन्द जी के लेखों से संकलित]

हमारी सम्मति है कि यह ग्रन्थ विक्रम संवत् १६०० के आसपास बना। इसके लिये हम संक्षेप से नीचे विचार करते हैं—

वि० सं० १४६० में हम्मीर महाकाव्य बना, इसका निर्देश कई जगह किया गया है। उसमें चौहानों का विस्तृत इतिहास है, परंतु उसमें पृथ्वीराजरासो के अनुसार चौहानों को अग्निवंशी नहीं लिखा और न उसकी वंशावली को आधार माना गया है। इससे ज्ञात होता है कि उस समय तक पृथ्वीराजरासो प्रसिद्धि में नहीं आया। यदि रासो की प्रसिद्धि हो गई होती, तो हम्मीर महाकाव्य का लेखक उसी के आधार पर चलता।

चंदबरदाई ने रावल समरसिंह के ज्येष्ठ पुत्र कुंभा का बीदर के मुसलमान बादशाह के पास जाना लिखा है, जिसकी जाँच हम ऊपर कर चुके हैं। पृथ्वीराज के समय में तो दक्षिण में मुसलमानों का प्रवेश भी नहीं हुआ था। बीदर का राज्य तो बहमनी राज्य की उन्नति के समय में अहमदशाह वली ने ई० सं० १४३० (मि० संवत् १४८७) में स्वतंत्र रूप से स्थापित किया। इससे यह निश्चित है कि पृथ्वीराजरासो उक्त संवत् के पीछे बना होगा।

चंदबरदाई ने सोमेश्वर और पृथ्वीराज की मेवात के मुगल राजा से लड़ाई और उसमें उसके कैद होने तथा उसके पुत्र वाजिदखाँ के मारे जाने की कथा लिखी है। हिंदुस्तान में मुगल राज्य तो वि० संवत् १५८३ में बाबर ने स्थापित किया। उससे पूर्व भारत में मुगलों का कोई राज्य था ही नहीं और मुगलों का सबसे पहला प्रवेश, तैमूरलंग द्वारा वि० सं० १४५५ में हुआ जिससे पहले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुगल राज्य की भारत में कल्पना भी नहीं की जा सकती। इससे यह स्पष्ट है कि पृथ्वीराजरासो वि० सं० १५८३ से और यदि बहुत पहले भी मानें तो वि० सं० १४७५ से पूर्व नहीं बन सकता।

महाराणा कुंभकर्ण ने वि० सं० १५१७ में कुंभलगढ़ के किले की प्रतिष्ठा की और वहाँ के मामादेव (कुंभ स्वामी) के मंदिर में बड़ी पाँच शिलाओं पर कई सौ श्लोकों का एक विस्तृत लेख खुदवाया, जिसमें मेवाड़ के उस समय तक के राजाओं का बहुत कुछ वृत्तांत दिया है। उसमें समरसिंह के पृथ्वीराज की बहिन पृथा से विवाह करने या उसके साथ शहाबुद्दीन की लड़ाई में मारे जाने का कोई वर्णन नहीं है, परंतु वि० सं० १७३२ में महाराणा राजसिंह ने अपने बनवाए हुए राजसमुद्र तालाब के नौचौकी नामक बाँध पर २५ बड़ी बड़ी शिलाओं पर एक महाकाव्य खुदवाया, जो अब तक विद्यमान है। उसके तीसरे सर्ग में लिखा है कि "समरसिंह ने पृथ्वीराज की बहिन पृथा से विवाह किया और शहाबुद्दीन के साथ की लड़ाई में वह मारा गया, जिसका वृत्तांत भाषा के "रासो" नामक पुस्तक में विस्तार से लिखा हुआ है।" इन दोनों लेखों से निश्चित है कि पृथ्वीराजरासो वि० संवत् १५१७ और १७३२ के बीच किसी समय में बना होगा। वि० सं० १६४२ की पृथ्वीराजरासो की सबसे पुरानी हस्तलिखित प्रति मिली है, इसलिये उसका वि० सं० १५१७ और १६४२ के बीच अर्थात् १६०० के आसपास बनना अनुमान किया जा सकता है।

पृथ्वीराजरासो की भाषा

पृथ्वीराजरासो की भाषा विक्रम की तेरहवीं शताब्दी की नहीं, किंतु वि० सं० १६०० के आसपास की है। हेमचन्द्र के "प्राकृत-व्याकरण" में अपभ्रंश भाषा के छंदोबद्ध उदाहरणों, सोमप्रभ के 'कुमारपाल प्रतिबोध', मेरुतुंग की 'प्रबंधचिंतामणि' तथा 'प्राकृतपिंगल' में दिए हुए रणथंभोर के अंतिम चौहान राजा हम्मीर के प्रशंसात्मक पद्य, तथा वि० सं० १५९२ के बीठू सूजा रचित 'जैतसी राव को छंद' नामक ग्रंथ में मिलनेवाले छंदों की भाषा से पृथ्वीराजरासो की भाषा का मिलान किया जाय, तो बहुत बड़ा अंतर मालूम होता है। पठित चारण और भाट लोग अब भी कविता बनाते हैं, उसमें वीररस की कविता बहुधा डिंगल भाषा में करते हैं और दूसरी कविता साधारण भाषा में डिंगल भाषा की कविता में व्याकरण की ठीक व्यवस्था नहीं होती और शब्दों के रूप तथा बिभक्तियों के चिह्न कुछ पुराने ढंग के होते हैं। एक ही ग्रन्थ में भिन्न भिन्न प्रकार की कविता देखनी हो, तो विक्रम संवत् १८७९ में आढ़ा किशन के बनाए हुए 'भीमविलास' और विक्रम की बीसवीं सदी में बने हुए मिश्रण सूर्यमल के बृहद्ग्रन्थ 'वंशभास्कर' को देखना चाहिए। राजस्थानी कविता में पहले फारसी-शब्दों का प्रयोग नहीं होता था, पीछे से कुछ कुछ होने लगा। पृथ्वीराजरासो में प्रति सैकड़ा दस फारसी शब्द पाए जाते हैं, जो उसकी प्राचीनता सिद्ध नहीं करते। आधुनिक लेखक भी स्वीकार करते हैं कि 'भाषा' की कसौटी पर यदि ग्रन्थ (पृथ्वीराजरासो) को कसते हैं तो और भी निराश होना पड़ता है, क्योंकि वह बिलकुल बे ठिकाने है—उसमें व्याकरण आदि की कोई व्यवस्था नहीं है। दोहों की और कुछ कुछ कविता (छप्पयों) की भाषा तो ठिकाने की है, पर त्रोटक आदि छोटे छंदों में तो कहीं कहीं अनुस्वारांत शब्दों की ऐसी मनमानी भरमार है जैसे किसी ने संस्कृत-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राकृत की नकल की हो। कहीं कहीं तो भाषा आधुनिक साँचे में ढली सी दिखाई पड़ती है, क्रियाएँ नए रूपों में मिलती हैं। पर साथ ही कहीं कहीं भाषा अपने असली प्राचीन साहित्यिक रूप में भी पाई जाती हैं, जिसमें प्राकृत और अपभ्रंश शब्दों के साथ साथ शब्दों के रूप और विभक्तियों के चिह्न पुराने ढंग के हैं। इस दशा में भाटों के इस वाग्जाल के बीच कहाँ पर कितना अंश असली है, इसका निर्णय असंभव होने के कारण यह ग्रंथ न तो भाषा के इतिहास के और न साहित्य के इतिहास के जिज्ञासुओं के काम का है।

भाषा की दृष्टि से भी रासो वि० सं० १६०० से पूर्व का सिद्ध नहीं हो सकता।

पृथ्वीराजरासो का परिमाण

भाषा साहित्य के आधुनिक इतिहास-लेखक जब पृथ्वीराजरासो की घटनाएँ अशुद्ध पाते हैं तब यह कहते हैं कि 'मूल पृथ्वीराजरासो छोटा होगा और पीछे से लोगों ने उसे बढ़ा दिया हो, यह संभव है', परंतु यह कथन भी स्वीकार नहीं किया जा सकता, क्योंकि चंदबरदाई के वंशधर कवि जदुनाथ ने करोली के यादव राजा गोपालपाल (गोपालसिंह) के राज्य-समय अर्थात् वि० संवत् १८०० के आसपास 'वृत्तविलास' नाम का ग्रन्थ बनाया। उसमें वह अपने वंश का परिचय देते हुए लिखता है कि 'चंद ने १०५००० श्लोक (अनुष्टुपछन्द) के परिमाण का पृथ्वीराज के चरित्र का रासो बनाया।' यह कथन नागरीप्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित रासो के परिमाण से मिल जाता है। जदुनाथ के यहाँ अपने पूर्वज का बनाया हुआ मूल ग्रंथ अवश्य होगा, जिसके आधार पर ही, उसने उक्त ग्रंथ का परिमाण लिखा होगा। ऐसी स्थिति में पृथ्वीराजरासो के छोटा होने की कल्पना भी निर्मूल है।

पृथ्वीराजरासो को प्राचीन सिद्ध करनेवाली की कुछ अन्य युक्तियाँ

पृथ्वीराजविजय के पाँचवें सर्ग में विग्रहराज के पुत्र चन्द्रराज का वर्णन करते हुए जयानक ने उसे अच्छे वृत्त (छन्द) संग्रह करनेवाले चन्द्रराज से उपमा दी है। इस पर से कोई कोई विद्वान् यह कल्पना करते हैं कि अच्छे छन्दों का वह संग्रह-कर्त्ता चन्दबरदाई हो, परंतु यह युक्ति भी स्वीकार नहीं की जा सकती, क्योंकि चन्दबरदाई रासो में अपने को पृथ्वीराज का मित्र और सर्वेसर्वा होना बतलाता है। इसके विपरीत पृथ्वीराजविजय का कर्त्ता पृथ्वीराज के वंदिराज अर्थात् मुख्य भाट का नाम 'पृथिवी भट' देता है, न कि चन्द। कश्मीरी पंडित जयानक ने जिस चन्द्रराज का उल्लेख किया है वह वही चन्द्रकवि हो सकता है, जिसका उल्लेख विक्रम की ग्यारहवीं सदी के उत्तरार्द्ध में होनेवाले कश्मीरी क्षेमेंद्र ने भी किया है। इसके सिवाय चन्द्र नाम के कई और भी ग्रन्थकार हुए, परंतु उनमें से किसी को हम चन्दबरदाई नहीं मान सकते।

मिश्रबंधुओं का लिखना है कि 'यदि कोई मनुष्य सोलहवीं शताब्दी के आदि में इसे बनाता, तो वह स्वयं अपना नाम न लिख के ऐसा भारी (२५०० पृष्ठों का) बढ़िया महाकाव्य चन्द को क्यों समर्पित कर देता'। इसके उत्तर में इतना ही लिखना आवश्यक होगा कि चन्द नाम के अनेक कवि समय समय पर हो सकते हैं। कालिदास नामक अनेक कवि हो गए और तेरहवीं सदी के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आसपास होने वाले 'ज्योतिर्विदाभरण' के कर्त्ता ज्योतिषी कालिदास ने अपने को विक्रम का मित्र और उसके दरबार के नवरत्नों में से एक होना लिख दिया है। इतना ही नहीं; किंतु कलियुग संवत् ३०६८ (वि० सं० २४) में अपने ग्रंथ का प्रारम्भ और अंत होना भी लिख डाला है।

मेघदूत

[ले०—कविराज रामलाल अग्रवाल 'हिन्दी-प्रभाकर']

संस्कृतसाहित्य में कविवर कालिदास का स्थान सर्व प्रथम है। उनकी कृतियाँ आज भी देश विदेश में सम्मान पा रही हैं। 'मेघदूत' नामक खण्ड काव्य भी उन्हीं की कृतियों में से एक है। इसमें एक यक्ष का मेघों द्वारा अपनी प्रिया को संवाद भेजना दर्शाया गया है। रामगिरि से अलकापुरी तक का भौगोलिक परिचय देने के साथ ही इसमें एक विशेष मर्म की भी व्याख्या की गई है।

इस परिवर्तन शील संसार में कोई वस्तु परिवर्तित हुए बिना नहीं रहती। पहले की अवन्तिका तथा अलकापुरी अब दिखाई नहीं देतीं। पहले की-सी उर्वरा और फल फूल समन्विता भूमि अब दृष्टिगोचर नहीं होती। पहले की-सी वसन्त और वर्षा का सम्मान अब नहीं रहा। अभिप्राय यह कि समय में ऐसा परिवर्तन आगया है कि कोई भी बात पहले सी अब नहीं रही। जब सब बातों की यह दशा है तो 'प्रेम' ही इससे अछूता कैसे रह सकता है। पहले के से सत्य प्रेम का चिन्ह भी अब कहीं नहीं झलकता। वर्तमान काल में न स्त्रियाँ पति के विरह में व्याकुल होती हैं और न पुरुष स्त्रियों के विरह में।

इस छोटे से काव्य में विरही यक्ष की वेदना के रूप में यह दर्शाया गया है कि प्रत्येक कार्य परिमित होना चाहिए। जो कार्य मर्यादा से आगे बढ़ जायगा उसी में पश्चात्ताप करना पड़ेगा। यदि आप संसार से पृथक् होकर, सांसारिक कर्तव्यों की उपेक्षा करके प्रेम जाल में फँसेगें तो बुरी तरह छट पटायेंगे।

यक्ष ने दाम्पत्य प्रेम की मर्यादा को उल्लङ्घन किया था, उसने स्त्री के प्रेम में निमग्न होकर कर्तव्य को भुलाया था। बस, इसी कारण उसे अपनी प्रियतमा से बिछुड़ना पड़ा। शाप का मूल कारण कर्तव्य की अवहेलना और मर्यादा का उल्लङ्घन ही है। एक यक्ष ही अपनी प्रियतमा के लिए नहीं रोया, मनुष्य मात्र की ही यह दशा है। यह तो आभास मात्र है। ऐसे कथानक संसार में नित्य ही घटित होते हैं। यह कथानक तो मधुर 'मन्दाक्रान्ता' वृत्त की रसधारा में यह दिखाने के लिए बहाया गया है कि अन्य सांसारिक कर्तव्यों की अवहेलना करके जो एक में अनुरक्त होते हैं, वे अवश्य कष्ट पाते हैं।

काम के आवेग में मनुष्य को जड़ चेतन का कुछ भी ध्यान नहीं रहता। कामार्त प्राणि जड़ को भी चेतन ही समझ लेता है। यक्ष ने भी कामार्त होकर मेघ को अपना दूत बनाया। वह भूल गया कि मेघ संदेश कैसे पहुँचा सकता है—

"धूमज्योतिः सलिल मरुतां सन्निपातः क मेघः।
सन्देशार्थाः क पटुकरणैः प्रापणीयाः मनुष्यैः॥"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसने तो मेघको सामने देखा और उसीको दूत बनाकर अपनी प्राणेश्वरी को सन्देश भेजा।

यक्ष अपनी प्रिया के पास पहुँचना चाहता है, परन्तु शाप की प्रबल दीवार बाधक बन कर खड़ी हुई है। वह उसे वहाँ तक पहुँचने नहीं देती। बस, इसी प्रकार प्रत्येक व्यक्ति शान्ति पद पाने का इच्छुक है परन्तु उसके दुष्कर्म उसे वहाँ तक पहुँचने नहीं देते। उज्जैनी अब अतीत काल में परिणत हो गई है। हम वहाँ पहुँचना चाहते हैं परन्तु सशरीर नहीं पहुँच सकते। इस मानवद्वीप से हम कल्पना को ही वहाँ भेज सकते हैं। आकाश, मेघ, पृथ्वी आदि भूत हमारे मन में आकांक्षा उत्पन्न करते हैं परन्तु उनकी निवृत्ति नहीं करते। हम मानस लोक में पहुँचना चाहते हैं, वहाँ के ऋषि मुनियों के साम गान सुनना चाहते हैं, हम फिर से एक होना चाहते हैं, परन्तु बीच में शाप-रूप पृथ्वी अड़ी हुई है, जो हमें मिलने नहीं देती। वही हमारी इच्छा की बाधक है।

———

हिन्दी में नाटक-साहित्य

[संकलित]

आधुनिक हिन्दी नाटकों के प्रधान आचार्य हैं भारतभूषण भारतेंदु बाबू हरिश्चंद्र। आपने अन्य भाषाओं के नाटकों का अनुवाद करते हुए सुन्दर मौलिक नाटकों का भी पर्याप्त संख्या में निर्माण किया है। भारतेंदुजी की रचनाएँ काव्यमयी तो हैं ही, कहीं कहीं पर तो वे उसके अतिरिक्त और कुछ रह ही नहीं जातीं। वे पढ़ने की सामग्री हैं न कि देखने की। यह दोष उनके किसी रचनाविशेष का नहीं है, प्रायः उनके समस्त नाटक तथा नाटिकाएँ चाहे वे अनुवादित हों चाहे मौलिक, इस दोष के प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। उनकी कृतियों को रंगमंच पर अभिनीत करने का न तो कोई व्यवसायिक कंपनी ही साहस करती है और न कोई अव्यावसायिक मंडली ही इनके खेलने की क्षमता दिखाती है? इसमें इन दोनों में से किसी का दोष नहीं है, दोष है स्वयं इन नाटकों का। अभी तक इन नाटकों का कोई ऐसा संस्करण नहीं निकला जो अभिनय के लिए उपयुक्त हो?

भारतेंदुजी की रचनाओं में सत्यहरिश्चन्द्र नाटक का विशेष स्थान है। नाटक में आया हुआ यह दोहा कि—

> चंद टरै सूरज टरै, टरै जगत् व्यवहार।
> पै दृढ़व्रत हरिचंद को, टरै न सत्य विचार॥

उनके आत्मजीवन पर भी कुछ प्रकाश डालता है।

इसमें करुणा रस का ऐसा स्रोत बहा है कि कदाचित् ही कोई पाठक ऐसा होगा जिसने शैब्या के विलापस्थल अथवा राजा हरिश्चंद्र के मर्घट के कर्तव्यपालनवाले अंक को पढ़ कर दो आँसू न बहाये हों! चंद्रावली नाटिका सुन्दर ब्रजभाषा का एक काव्य है। वास्तव में यही ज्ञात होता है कि चंद्रावली के लिखते समय भारतेंदुजी की काव्यश्री का विशेष विकास हुआ था। "जिन आँखिन में तव रूप बस्यो तिन आँखन सों अब देखिय का" अथवा "रावरे विरह में ये अँखियां खुली रह जायंगी" आदि पंक्तियाँ किसी साहित्य के कोशा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गार को प्रकाशित करने में समर्थ हैं। इस नाटिका में तो हरिश्चंद्र ने अपना हृदय ही खोलकर रख दिया है। भावुकता का इससे अधिक परिचय कदाचित् ही कहीं और मिल सकता है। मुद्राराक्षस नाटक यद्यपि अनुवाद है फिर भी भाषासौष्ठव का श्रेय हरिश्चंद्र को ही है और ऐसा सुन्दर अवतरण हिंदी-भाषा में तो कदाचित् ही और कोई कर सकता है। "अंधेरनगरी" प्रहसन तो अत्यत लोकप्रिय हुआ। परंतु हरिश्चंद्रजी के नाटकों के संबंध में सर्वदा इस बात का स्मरण रखना चाहिए कि वे नाटक अभिनयों में सफलता कभी नहीं पा सकते। इनकी अस्वाभाविकता या लंबी चौड़ी बातचीत कभी किसी दर्शक को प्रिय हो ही नहीं सकती। फिर भी सत्य हरिचन्द्र का अभिनय तो काशी के भारतेंदु नाटक-मंडली ने कुछ काट छांट के साथ किया ही था। भारतेंदुजी की रचनाओं का एक संस्करण श्रद्धेय बाबू श्यामसुन्दरदासजी ने अभी हाल में प्रयाग के इंडियन प्रेस से निकलवाया है। अब एक ऐसे संस्करण की आवश्यकता है जिससे उन नाटकों के अभिनय उपस्थित करने में मंडलियां क्षमताशील हों।

कालिदासकृत अभिज्ञान शाकुंतल का अनुवाद कर राजा लक्ष्मणसिंह ने हिंदी-साहित्याकाश में अपना एक अमर स्थान प्राप्त कर लिया है। अनुवाद तो यह कहने-भर को है। इससे अधिक मौलिकता क्या हो सकती है? नाटक सजीव है। संस्कृत श्लोकों का जो अनुवाद इस नाटक में राजा साहब ने हिंदी के छंदों में किया उससे आपकी अपूर्व काव्य-शक्ति का परिचय मिलता है। प्रायः सभी हिंदी के विद्वान् मुक्तकंठ से इसकी प्रशंसा करते हैं और राजा साहब के लिये हिंदी साहित्य के इतिहास में एक सुरक्षित स्थान रखते हैं।

पंडित सत्यनारायण कविराज जी ने भवभूति पर कृपा की है। "मालतीमाधव" तथा "उत्तर-रामचरित" के अनुवाद भी हिन्दी-नाटकों के विकास के इतिहास में अपना विशेष स्थान रखते हैं। 'मालतीमाधाव' में भवभूति ने जिस समाज का चित्र खींचा है उसमें तांत्रिक माहात्म्य के प्रावल्य तथा बौद्ध सत्ता के ह्रास का परिचय मिलता है। विदूषक को नाटक में स्थान नहीं दिया गया है परंतु इससे नाटककार की हास्यप्रियता पर कोई आक्षेप नहीं पड़ता। इस अभाव की पूर्ति उन्होंने अन्य रूप से करदी है। शृङ्गार, वीभत्स तथा करुण रसों का प्राधान्य इसमें है। भारतेंदुजी के ज्येष्ठ भ्रातुष्पुत्र श्रीकृष्णचंद्रजी ने भी उत्तररामचरित का एक अच्छा अनुवाद किया है। शेक्सपियर कृत "मर्चेंट आव् वेनिस" के दो अनुवाद भी उल्लेखनीय है। तीसरा अनुवाद स्वयं भारतेंदुजी ने 'दुर्लभ बंधु' के नाम से किया है। इनके अतिरिक्त शेक्सपियर के अन्य नाटकों के भी अनुवाद अब हिंदी में प्राप्त हैं। "टू जेंटलमेन आव वेरोना" "हैम्लेट" तथा "मेकबेथ" और "किंगलियर" के अनुवाद भी हो चुके हैं। "हैम्लेट" का अनुवाद जयंत, अथवा "बलभद्रदेश का राजकुमार" नाम से पं० गणपतिकृष्ण गुर्जर ने किया है और "मेकबेथ" "साहसेंद्र साहस" नाम से मिर्जापुर के चौधरी मथुराप्रसाद उपाध्याय ने किया है। इन नाटकों में पात्रों तथा स्थानों के नाम बदलकर उनको भारतीय परिधान पहनाने का प्रयत्न किया गया है। परंतु इस दृष्टि से वे नाटक सफल नहीं हुए। इन नाटकों में दूसरे ही समाज का चित्र है जो केवल नामपरिवर्तन से ही पूर्ण रूप से दूसरे ढाँचे के उप-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युक्त नहीं हो सकता। इनका वातावरण ही बिना बदले इनका भारतीयकरण कठिन है।

आजकल के उच्च कोटि के नाटककारों में श्रीयुत जयशंकर प्रसाद, प्रोफेसर बदरीनाथ भट्ट तथा श्रीयुत जो० पी० श्रीवास्तव हैं। बाबू जयशंकर प्रसाद हिंदी-संसार के चिरसुपरिचित कवि तथा काशी के प्रसिद्ध रईस हैं। आपने "अजातशत्रु" "जनमेजय का नागयज्ञ", "कामना" इत्यादि नाटक लिखकर हिंदी-नाट्य-साहित्य की अच्छी सेवा की है। हाल में आपने "स्कंदगुप्त" लिखकर उपर्युक्त नामावली में एक और वृद्धि की है। आपके नाटक ऐतिहासिक हैं। प्राचीन भारत का इतिहास हिंदुओं के उत्कर्ष का इतिहास है। आधुनिक काल के इतिहासकार प्राचीन भारत का नियमित इतिहास शिशुनाग वंश से आरंभ करते हैं। इस शिशुनाग वंश के ही छठे राजा महाराज अजातशत्रु हुए। इन्हीं का वर्णन इस नाटक में हुआ है। अजातशत्रु के राजकाल के आठवें वर्ष में भगवान बुद्ध के निर्वाण पद प्राप्त करने की बात प्रसिद्ध ही है। अतएव इस नाटक का चित्र ईसा के पूर्व छठीं शताब्दी का ही समझना चाहिए। जनमेजय के नागयज्ञ की कथा पौराणिक आधारों पर अवलंबित है। स्कंदगुप्त नाटक के नायक तो परमवैष्णव परमभट्टारक महाप्रबल गुप्तवंश के पंचम सम्राट् कुमार गुप्त के पुत्र सम्राट् स्कंदगुप्त विक्रमादित्य हैं। "प्रसाद" जी ने उस काल की रहन-सहन वेषभूषा तथा उस समय के वायुमंडल का विशेष रूप से अध्ययन किया है और उसके स्पष्ट चित्रण में आप सफल भी हुए हैं। प्रसिद्ध पुरातत्त्ववेत्ता विद्वद्वर्य आचार्य राखालदास वंद्योपाध्याय के "करुणा" तथा "शशांक" उपन्यासों की स्पष्ट झलक से बाबू साहब का "स्कंदगुप्त" अंकित है। यथार्थतया आचार्य महोदय के दोनों ही उपन्यास अद्वितीय कृतियाँ हैं और उक्त काल के इतिहास का उपयोग करके जो कोई भी साहित्यसेवी कुछ लिखेगा वह अवश्य आपका ऋणी रहेगा, चाहे वह स्वीकार करे अथवा नहीं। बाबू जयशंकरप्रसादजी के नाटकों की भाषा नाटकों के उपयुक्त नहीं होती। नाटक की भाषा सर्वथा बोलचाल की होनी चाहिए। साहित्यिक बनावटी शैली नाटकों के लिये सर्वथा अनुपयुक्त है। समझ में नहीं आता कि नाट्यशास्त्र के ऐसे उत्कट विद्वान् होते हुए भी प्रसादजी निरंतर वही शैली क्यों पसंद करते हैं। यह सब होते हुए भी ये नाटक साहित्यिक हैं और इतना गुण ही इन्हें अमरत्व प्राप्त कराने के लिये पर्याप्त कराने के लिये पर्याप्त है।

लखनऊ विश्वविद्यालय के हिंदी के अध्यापक पंडित बदरीनाथ भट्ट भी हिंदी नाटकों के सुलेखकों में से हैं। आपकी रचनाएँ भावपूर्ण तथा सुंदर हैं। भाषा भी श्री जयशंकर प्रसाद की भाषा की अपेक्षा सरलतर है।

कुछ वर्षों से हिन्दी-संसार में अन्य प्रान्तीय भाषाओं के नाटकों के अनुवाद करने की प्रवृत्ति विशेषरूपसे बढ़ रही है। बँगला, मराठी, गुजराती के नाटकों के अनुवाद हिन्दी-साहित्य में विशेष स्थान प्राप्तकर रहे हैं। श्रीयुत द्विजेन्द्रलाल, श्री रवीद्रनाथ ठाकुर के नाटकों के हिन्दी-अनुवाद मेवाड़-पतन, चन्द्रगुप्त तथा राजरानी ने हिन्दी परीक्षाओं की पाठविधि में भी विशेष स्थान प्राप्त किया है। उन नाटकों के संविधान संस्कृत-साहित्य के नाटकों से भिन्न ढंग के हैं। इनको रंगमंच पर अभिनय द्वारा भी दिखलाया जाता है।

यह कहना अप्रासंगिक तथा असंगत न होगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि श्री बा० राधाकृष्णदास के प्रताप नाटक को छोड़कर हिन्दी-साहित्य में अभिनय की दृष्टि से लिखे गये नाटकों का प्रारम्भ श्री द्विजेन्द्रलाल के नाटकों के हिन्दी-अनुवाद से ही हुआ है।

अब हिंन्दी में भी अभिनय की दृष्टि से मौलिक नाटकलिखने की प्रवृत्ति दिन प्रतिदिन बल पकड़ रही है। यह प्रवृत्ति हिन्दी-साहित्य को जीवित-जागृत साहित्य बनाने में सहायक सिद्ध होगी। वर्तमान विज्ञान के भाव-प्रकाशन करनेवाले, नए साधनों के प्रयोग के कारण हिन्दी-नाटकों की रचना तथा अभिनय में भी दिन-प्रतिदिन परिवर्तन हो रहा है।

महाकवि बिहारीलाल जी

[संकलित]

ये महाशय ककोर कुल के माथुर ब्राह्मण थे। इनका जन्म अनुमान से संवत् १६६० में ग्वालियर के निकट बसुवागोबिंदपुर में हुआ था। इनकी बाल्यावस्था बुँदेलखंड में बीती और तरुणावस्था में ये मथुरा अपनी ससुराल में रहे। कहते हैं कि इनके टीकाकार कृष्ण कवि इन्हीं के पुत्र थे। इनका मरण-काल अनुमान से संवत् १७२० समझ पड़ता है। ये महाशय जयपुर के मिर्ज़ा महाराजा जयसिंह के यहाँ रहा करते थे। कहते हैं कि एक समय जयसिंह एक छोटी-सी रानी के प्रेम में ऐसे मग्न हो गये थे कि कभी बाहर निकलते ही नहीं थे। इस पर निम्नलिखित दोहा बिहारी जी ने किसी तरह से महाराज के पास भिजवाया :—

नहिं पराग नहिं मधुर मधु नहिं विकास यहि काल।
अली कली ही सों विंध्यो आगे कौन हवाल॥

इसको पाकर महाराज बाहर निकले और तभी से दरबार में बिहारी का बड़ा मान होने लगा। इसके बाद कहते हैं कि बिहारी को प्रति दोहे एक अशरफ़ी मिलती रही और ये महाशय समय समय पर दोहे बना कर महाराजा को देते रहे। इसी तरह सात सौ दोहे एकत्र हो गये, जो पीछे क्रमबद्ध कर दिये गये। इनके कुलविषयक कुछ लोग सन्देह उठाते और इन्हें भाट बतलाते हैं। पीछे से यह निश्चयरूप में जान पड़ा कि ये महाशय चौबे थे। इनके वंशज अमरकृष्ण चौबे बूँदी दरबार के राजकवि हैं। उन्होंने दो छन्दों द्वारा अपने पिता से लेकर बिहारीलाल तक सब पूर्व पुरुषों के नाम दिये हैं। वह दोनों छन्द उनके वर्णन में लिखे मिलते हैं।

सतसई में कुछ ७१६ दोहे हैं और ७ दोहों में उसकी प्रशंसा की गई है। इस ग्रंथ पर बहुत से कवियों ने टीकायें कीं और बहुतों ने इसी के प्रतिबिंब पर कुंडलिया, सवैया, श्लोक, शेर इत्यादि बनाये हैं। इनके टीकाकारों में सूरति, चंद्र (पठान सुल्तान अली), कृष्ण, सरदार और भारतेंदुजी सुकवि हैं। इनकी सतसई पर लगभग ३० टीका और प्रतिबिंब रचनेवाले कवियों के वर्णन स्थान स्थान पर प्रचलित हैं। इसका क्रम जो आजकल देख पड़ता है, वह आज़मशाह ने कराया, अतः वह आज़मशाही कहलाता है।

सतसई के प्रथम, पंचम और सप्तम शतक बड़े ही उत्तम हैं। इसमें कोई क्रमबद्ध वर्णन नहीं किया गया, परन्तु कितने ही विषय आगये हैं। इनकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कविता में बहुत से प्रकार और भाषाओं के शब्द मिलते हैं, पर वह सब मिलाकर व्रज भाषा और बुँदेलखंडी का मिश्रण और बहुत ही प्रशंसनीय है। इनका बोलचाल बहुत ही स्वाभाविक तथा इबारतआराई बहुत ही उत्कृष्ट हैं। इन्होंने यमक तथा पद-मैत्री का बहुत प्रयोग किया है और शृङ्गार के कोमल वर्णन करने पर भी यह कविरत्न ज़ोरदार भाषा लिखने में भी समर्थ हुआ है। इन्होंने काव्य ढंग बड़े ही उत्कृष्ट कहे हैं और रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा आदि बड़े चमत्कारी लिखे हैं। बिहारी ने रंगों के मिलाप के वर्णन बड़े ही विशद किये हैं, तथा प्रकृतिनिरीक्षण का फल इनके बहुत से छंदो में देख पड़ता है। अंतिम गुण के साथ इनका काइयाँ-पन भी .खूब मिल जाता था और इन्होंने मानुषीय प्रकृति का वर्णन बड़ा ही उत्तम, सत्य और हृदय-ग्राही किया है। नागर वर्णनों में इन्होंने सुकुमारता की मात्रा बहुत रक्खी है, यहाँ तक कि ग्रामीण वर्णनों तक में वह प्रस्तुत है। बिहारी की कविता में चोज़ बहुत हैं और वह बढ़िया भी होते हैं। इनकी रचना में सुष्ठु छंदों की मात्रा बहुत अधिक है और उसमें बहुत से ऊँचे और ख़ास कर इनके ख़यालात बहुतायत से हैं। बिहारी ने बारीक ख़याल भी बहुत अच्छे कहे और दूर की कौड़ी भी यह .खूब ही लाये हैं। कलियुग के दानियों की इन्होंने बहुत निंदा की है और अपनी कविता में यत्र-तत्र मज़ाक भी अच्छा रक्खा है। हिन्दी में बिहारी-लाल ने उर्दू के ढंग की भी कविता की है और इसमें उन्हें कृतकार्यता भी हुई है।

———

महात्मा कबीरदास की स्मरणीय कहावतें

[संकलित]

कबीरदास जी ने विविध विषयों पर कविता लिखी हैं। उनका प्रतिपाद्य विषय अध्यात्म है। यदि हम कबीरदास जी की कविता की विशेषता को एक वाक्य में कहना चाहें तो इस प्रकार कह सकते हैं कि उन्होंने गूढ़ अज्ञेय तत्वों तथा सचाइयों का बोलचाल की भाषा में व्यवहारिक रूप में घर की बोली में इस ढंग से वर्णन किया है कि वह पद्यवाक्य जनता के लिये पथ दर्शक उद्बोधक मंत्र का काम दे रहे हैं। निम्न लिखित पद्य इनकी कविता की इस विशेषता को प्रकट करते हैं। स्वभावोक्ति सरलता तथा चोज पद पद पर झलकती हैं।

जिन ढूँढा तिन पाइयाँ, गहरे पानी पैठि।
मैं बपुरा बूड़न डरा, रहा किनारे बैठि।

संत नाम कडुवा लगै, मीठा लागै दाम;
दुविधा में दोऊ गए, माया मिली न राम।

साँच कहावन कठिन है, लंबा पेड़ खजूर;
चढ़ै तो चाखै प्रेम-रस, गिरै तो चकनाचूर।

आछे दिन पाछे गए, गुरु से किया-न-हेत;
अब पछतावा क्या करे, चिड़ियाँ चुग-गईं खेत।

कालिह करन सो आजुकर, आजुकरन सो अब;
पल में परलै- होएगी, बहुरि करेगा कब।

माटी कहै कुम्हार से, तू क्या रूँदै मोहिं,
यक दिन ऐसा होएगा, मैं रूँदूँगी तोहि।

आया है सो जाएगा, राजा, रंक, फकीर;
इकासिंहासन चढ़ि चला, इक बँधि जात जंजीर।

आसपास जोधा खड़े, सबै बजावैं गाल;
मंझ महल से लै चला, ऐसा काल कराल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माली आवत देखि कै, कलियाँ करैं पुकार;
फूली-फूली चुन लईं, कालिह हमारी बार।
दस द्वारे का पींजरा, तामें पंछी पौन;
राहिबे-को अचरज है, गए अचंभा कौन।
जो तोको कांटा बवै, ताहि बोय तू फूल;
तोहि फूल के फूल हैं, वाको हैं तिरसूल।
दुरबल को न सताइए, जाकी मोटी हाय;
बिना जीव की सांस से, सार भस्म है जाय।
पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय;
ढाई-अक्षर प्रेम-के पढ़ै, सो पंडित होय।
परनारी पैनी छुरी, मति कोउ लाओ अंग;
रावन के दस सिर गए, परनारी के संग।

छमा बड़ेन को चाहिए, छोटेन को उत्पात;
कहा बिष्णु को घट गयो, जो भृगु मारी लात?
मरि जाऊँ मांगू नहीं, अपने तन के काज;
परमारथ के कारनै, मोहि न आवै लाज।
बकरी पाती खात है, ताकी काढ़ी खाल;
जो नर बकरी खात है, तिनके कौन हवाल।
देह-धरे का दंड है, सब काहू को होय;
ज्ञानी भुगतै ज्ञान ते, मूरख भुगतैं रोय।
फुलवा भार न लै सकै, कहै सखिन सों रोय;
ज्यों-ज्यों भीजै कामरी, त्यों-त्यों भारी होय।
एकै-साधे सब-सधे, सब-साधे सब जाय;
जो तू सेवै मूल को, फूलै-फलै अघाय।

मृच्छकटिक तथा राजा रानी का संक्षिप्त परिचय

[स्फुट]

मृच्छकटिक नाटक का प्राचीन संस्कृत-नाटकों में विशेष स्थान है। प्राचीन उपलभ्यमान नाटक किसी न किसी राजवंश या दिव्यवंश के पुरुष विशेष को नायक बनाकर रचे गये थे; परन्तु मृच्छकटिक में साधारण जनता के, एक ब्राह्मण नागरिक को नायक बनाकर नाटक की रचना की गई है। वसन्तसेना नायिका भी सामान्य जनता की प्रतिनिधि है। संस्कृत के प्राचीन नाटकों में राज पुरुषों तथा राज दरबारियों की दिनचर्या का चित्रण किया जाता था। परन्तु इस नाटक में सामान्य जनता का विशेष वर्णन है।

इस नाटक के अध्ययन से पता लगता है कि उस समय भारत में श्रृंगारी जीवन का दौरदौरा था। क्या राजा लोग और क्या प्रजाजन सभी लोग वेश्यावृत्ति को नागरिक जीवन का आवश्यक अंग समझते थे और वेश्याओं से घृणा न करते थे। चारुदत्त अपने समय के श्रेष्ठ पुरुषों में गिना जाता था। परन्तु यह भी ऐसे व्यसनों से मुक्त न था। इस नाटक के अध्ययन से प्रतीत होता है कि साधारण नागरिक चारुदत्त अपने गुणों के कारण राजघराने के लोगों की अपेक्षा अधिक सम्मानित हुआ था। नाटक की नायिका का चरित्र-चित्रण भी उदारता तथा निर्लोभ आदि गुणों के कारण सराहनीय तथा अनुकरणीय है।

एक विशेषता इस नाटक की यह है कि इसमें नाटककालीन तात्कालिक राजवंशीय घटनाओं को नाटक का आधार न बनाकर साधारण जनता की सामान्य घटनाओं को नाटक का विषय बनाया है। साधारणतः प्राचीन काल में नाटककारों की यह प्रथा थी कि राजदरबार से सम्बन्ध रखनेवाली घटनाओं को ही महत्व दिया जाता था। इस दृष्टि से यह नाटक वर्तमान समय केनाटकों के अधिक समीप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। आजकल उपन्यास तथा नाटकों के आराध्य राजा लोग नहीं, अपितु साधारण जनता है।

यह नाटक शूद्रक नृपति का निर्मित किया हुआ कहा जाता है, परन्तु कई विद्वानों का यह खयाल है कि राजा के आश्रित कवि ने राजा के नाम से प्रकाशित किया है। प्रतिपाद्य विषय की अपूर्वता के कारण यह नाटक संस्कृत साहित्य में अपने ढंग की निराली चीज़ है। हिन्दी नाटकों के विकास में मृच्छकटिक के हिन्दी अनुवाद का भी विशेष स्थान है। इसके अनुवाद कर्ता लेखक स्वयं नाटक कार तथा कवि हैं। अनुवाद की भाषा सरल तथा भावों के अनुरूप है।

इस नाटक को सामान्यतः शृंगार रस प्रधान कहा जाता है। परन्तु हमारी सम्मति में मुद्राराक्षस नाटक की भांति इस नाटक में भी किसी विशेष रस का परिपाक नहीं हुआ। नाटककार का उद्देश्य किसी रस विशेष को परिपुष्ट अवस्था में जनता के सामने रखना मालूम नहीं होता; अपितु सामाजिक घटनाओं का मनोरंजक ढ़ंग वर्णन करना उद्देश्य ही मालूम होता है। कथानककी दृष्टि से इस नाटक को दुखान्त होना चाहिए था, परन्तु तात्कालिक प्रचलित प्रथा के अनुसार लेखकको इसे सुखान्त नाटक के रूप में समाप्त करना पड़ा है।

* * *

राजारानी नाटक

राजारानी नाटक श्रीयुत कवि सम्राट् रवीन्द्रके बंगला नाटक का हिन्दी अनुवाद है। प्रस्तुत पुस्तक के कथानक के सम्बन्ध में किसी भी नाटककार को कोई आपत्ति नहीं है। प्राचीन नाटक रचना प्रणाली के नियमों का इसमें अक्षरशः पालन नहीं किया गया। क्योंकि इसके लेखक श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर स्वयं मौलिक साहित्यकार हैं। उन्होंने इस नाटक की रचना करते हुए यह प्रकट किया है कि भाव प्रधान जीवितनाटक वाह्य कलेवर की रूढ़ियों की जंजीर में नहीं बंध सकते।

इस नाटकको हिन्दी साहित्य के छायावादी तथा रहस्यवादी अपने पक्ष का पोषक मानते हैं। वर्णन शैली में (Abstract) भाव प्रधान वाक्य रचनाओं का विशेष प्रयोग किया गया है। लेखक प्रतिभाशाली स्वतन्त्र मौलिक कवि हैं। Mysticism या रहस्यवाद की धारा प्रवाहित करने वाले नाटककार द्वारा रचित नाटक में रहस्यवाद की छाप का होना स्वाभाविक है? परन्तु रहस्यवाद की छाप के होते हुए भी नाटक का मुख्य उद्देश्य कहीं भी तिरोहित तथा अस्पष्ट नहीं होने पाया। नाटक का उद्देश्य विदेशी राज्य के बुरे प्रभाव को जनता के हृदय पर अङ्कित करना है। इस नाटक को पढ़कर पाठक के हृदय में विदेशी शासकों के अत्याचार आंखों के सामने चित्रित हो जाते हैं। वर्तमान भारत की जनता इस नाटक को तन्मयता के साथ पढ़ सकती है। प्राचीन गौरव का प्रदर्शन करने वाले चन्द्रगुप्त आदि नाटकों में प्राचीन गौरव को चित्रित कर, वर्तमान युग की सामाजिक आवश्यकताओं की दृष्टि से, प्राचीन घटनाओं के वर्णनों द्वारा जनता को जागृत करने का यत्न किया गया है। परन्तु राजा रानी नाटक में ऐसा नहीं किया गया। जनता को प्राचीन गौरव की ओर आकृष्ट करने के स्थान पर, उसे अपनी असली स्थिति का परिचय कराया है। पराधीन भारत की जनता के लिये आज इसी बात की आवश्यकता है कि वह विदेशी राज कार्य कर्ताओं के हानि कारक प्रभाव को अनुभव करे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वतन्त्र भारत के स्वतन्त्र वातावरण में लिखे गये नाटकों के प्रतिनिधि वेणीसंहार उत्तरराम चरित तथा महावीर-चरित आदि नाटक हैं। वर्तमान समय में नाटकों की विचार धारा कैसी होनी चाहिए इसका दिग्दर्शन रवीन्द्रनाथ ठाकुर जैसे मौलिक स्वतन्त्र प्रतिभाशाली कवि ही कर सकते हैं।

वर्तमान भारत में जो सामाजिक क्रान्तिकारी परिवर्तन हो रहे हैं उनका लिखित चित्र इस नाटक में खींचा गया है। राजारानी नाटक में वर्णित स्त्रियों की स्वाधीनता, पुराने पंडा पुरोहितों का रूढ़िवाद में जकड़े रहना और समय की दौड़ में पीछे रहने की निन्दा करना, तथा साहित्यिक संसार में अतुकान्त कविताओं का प्रयोग हमारे इस कथन को पुष्ट करते हैं। नाटक के नायक राजा विक्रमदेव भारत के वर्तमान देसी नरेशों के प्रतिनिधि हैं। भारत के वर्तमान देशी नरेश किस प्रकार विदेशी अभिभावकों के कारण प्रजाको पीड़ित कररहे हैं, इसका ज्वलन्त वर्णन इस नाटक में काश्मीरियों द्वारा किये गये अत्याचारों में स्पष्ट प्रतिबिम्बित दिखाई देता है। इस प्रभाव का वर्णन इससे अधिक आकर्षक ढङ्ग से करना कठिन है।

नाटक तथा साहित्य अपने समय के चित्र होते हैं, इस स्थापना की जीवित जागृत व्याख्या इस नाटक में पद पद पर दिखाई देती है।

हिन्दी-प्रभाकर परीक्षा के प्रश्नपत्रों के लिये निर्देश

[स्फुट]

(१) *साहित्यालंकार तथा छन्दःशास्त्र*—इस विषय को सरल तथा स्पष्ट करने के लिए श्री श्यामसुन्दरदास कृत साहित्यालोचन के साथ साथ श्रीकन्हैयालाल पोद्दार कृत 'काव्यकल्पद्रुम' का अध्ययन करना चाहिए। छन्दःप्रभाकर के विषय को सरल करने के लिए पं० ज्वालाप्रसाद मिश्र कृत 'बिहारी-सतसई' की भूमिका पढ़नी चाहिए।

(२) *'वीर-सतसई'*—श्रीयुत वियोगी हरिजी कृत की व्याख्या अभी तक प्रकाशित नहीं हुई। इसके कठिन शब्दों का संग्रह 'हिन्दी-संदेश' के रत्न तथा भूषण नाम के विशेषांकों में किया गया है।

बिहारी-सतसई के लिए पं० पद्मसिंहजी शर्मा कृत समालोचनात्मक ग्रन्थ के अतिरिक्त 'हिन्दी नवरत्न (मिश्रबन्धु कृत) तथा पं० ज्वालाप्रसाद कृत बिहारी-टीका के साथ-साथ ला० भगवानदीनजी की अर्थबोधिनी-टीका विशेष उपयोगी है। द्वितीय पत्र के पृथ्वीराज रासो का संक्षिप्त परिचय इसी अंक में अन्यत्र दिया गया है।

(३) *नाटक*—मृच्छकटिक, मुद्राराक्षस तथा चन्द्रगुप्त नाटकों का मर्म समझने के लिए परीक्षार्थी को चाहिए कि इन नाटकों को संक्षिप्त कथा के रूप में लिखकर उसे स्मरण कर ले तथा नायकों और प्रतिनायकों के चरित्रों की विशेष रूप से तुलनात्मक विवेचना करे।

चतुर्थ पत्र गद्य ग्रन्थ का है। इस प्रश्नपत्र के लिए हिन्दी-साहित्य के इतिहास को क्रम वार स्मरण करना चाहिए। 'गद्यं कवीनां निकषं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वदन्ति।' गद्य का लिखना लेखक की योग्यता की असली परख है।

इस विषय में वर्तमान पाठविधि में निर्दिष्ट पुस्तकों का कमसे कम तीन बार अध्ययन अवश्य करना चाहिए। जितनी बार इसका पारायण —बार-बार पाठ—किया जायगा, उतना ही यह विषय अधिक स्पष्ट होगा। इस प्रश्नपत्र के लिए निर्दिष्ट ग्रन्थों में जिन लेखकों की रचनाओं की चर्चा की गई है, उनके सम्बन्ध में परीक्षार्थी को प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। उन ग्रन्थों के विषय में थोड़ा-बहुत साक्षात्, परिचय प्राप्त करना आवश्यक है। इस अवस्था में इस प्रश्नपत्र में नियत प्रश्नों का उत्तर देने में बहुत सहूलियत होगी।

पंचम पत्र में निर्धारित पं० रामचन्द्र शुक्ल का 'हिन्दी-साहित्य का इतिहास' अपने विषय का उत्तम ग्रन्थ है। परन्तु इस विषय में और अधिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए 'मिश्रबंधु विनोद के द्वितीय तथा तृतीय भाग पढ़ने चाहिएँ।

छठा प्रश्न पत्र निवन्ध रत्नावली का है। इस पुस्तकमें कई त्रुटियां हैं। परीक्षार्थी को केवल इसी पुस्तक से सन्तुष्ट नहीं होना चाहिए। निबन्ध लिखने में प्रवीणता प्राप्त करने के लिये बङ्किम निवन्धावली, चिपलूणकर कृत निबन्धों का हिन्दी-अनुवाद तथा बालमुकुन्द कृत निबन्धावली के साथ साथ उच्च कोटि की सामयिक पत्रिकाओं का अध्ययन करना चाहिए। उदाहरणार्थ कहानी या गल्प पर निबन्ध लिखनेवाले को हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के विवरण में प्रकाशित व्याख्यानों के विवरण पढ़ने चाहिए। सम्मेलन की ओर से प्रकाशित होनेवाले निवन्ध-संग्रह भी पठनीय हैं। निबन्ध लिखने के सम्बन्ध में कुछ निर्देश विद्यार्थियों के लाभ के लिये लिखे जाते हैं :—

(१) प्रश्नपत्र में जिन विषयों पर निबन्ध लिखने को कहा गया हो, उनमें से यथाशक्ति उसी विषय को चुनो जो समसामयिक विषयों से सम्बद्ध हो। अर्थात् जिस विषय का वर्तमान समय की घटनाओं के साथ सम्बन्ध हो। इससे निबंध में सजीवता लाने तथा उदाहरण देने में कठिनता न होगी।

(२) जिस विषय पर निबन्ध लिखना हो उसके पक्ष-प्रतिपक्ष की युक्तियों का विवरण देते हुए निबन्ध की समाप्ति पक्ष-पोषक युक्ति के साथ करनी चाहिए।

(३) निबन्ध लिखते हुए जहाँ तक हो सके छोटे छोटे वाक्यों का प्रयोग करना चाहिए।

———

हिन्दी सन्देश में विज्ञापन प्रकाशित कर लाभ उठाइए।

मैनेजर, हिन्दी सन्देश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

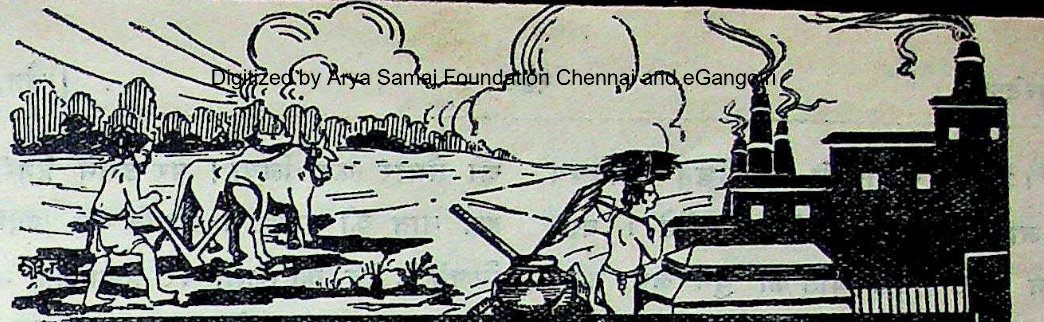

स्वाधीनता के पथ पर

किसान हेनरी फ़ोर्ड मोटरों का राजा कैसे बना ?

[संकलित]

प्रारम्भिक जीवन

हेनरी फ़ोर्ड के बाप-दादा साधारण श्रेणी के किसान थे। उनका जन्म भी सन् १८६३ ई० में किसी फार्म (खेत) पर ही हुआ था। आजकल यद्यपि उन का कारोबार दूसरा ही है किन्तु फिर भी उन्हें अपने 'आदर्श फार्म' पर गर्व है। कृषि के धन्धे को वह मोटर बनाने के व्यवसाय से आज भी अधिक महत्वपूर्ण समझते हैं। वास्तव में उन्हें खेती-बारी के पेशे से घृणा नहीं है, वह तो खेतों में किये जानेवाले उस घोर परिश्रम से घृणा करते हैं, जिससे चोटी का पसीना बह कर एड़ी तक पहुँचता है। उनका विचार है कि यदि यही व्यवसाय वैज्ञानिक आधार पर किया जाय, तो यह सब परिश्रम बच सकता है। उनके कथनानुसार इस परिश्रम का कारण खेती में पशुओं से काम लिया जाना है। वह क्या गाय और क्या घोड़ा सभी को कृषि के काम में अनावश्यक समझते हैं और उनके स्थान में मशीन से काम लेने के पक्षपाती हैं। उन का कहना है कि यदि उन्हें अवसर दिया जाय तो वह मशीनों द्वारा सूखी घास से दूध निकाल सकते हैं। उस समय दुहनेवाले को वह परिश्रम भी न करना पड़ेगा जो उसे किसी साधारण गाय को दुहते समय करना पड़ता है। केवल टोंटी खोल देने से ही दूध की धार बँध जायगी। इस प्रकार प्राप्त किये हुए दूध में और गाय के दूध में कुछ अन्तर न होगा। इसी प्रकार घोड़ों के सम्बन्ध में उन का कहना है कि २० घोड़ों के स्थान में उन्हीं के बराबर काम करनेवाला एक पहियेदार लोहे का घोड़ा चालू कर देंगे। यह लोहे का घोड़ा वह सब काम बड़ी अच्छी तरह से करेगा जो घोड़े करते हैं। किसान को थोड़ा सा तेल ख़रीद कर उस में डालने के अतिरिक्त और कुछ न करना पड़ेगा। अस्तु।

हाँ, तो उनके मस्तिष्क में मोटर बनाने का विचार कैसे उत्पन्न हुआ ? कहते हैं, जब उनकी अवस्था १२ वर्ष की थी तो वह एक दिन अपने पिता के साथ बग्घी में बैठे जा रहे थे। मार्ग में उन्होंने एक इंजन देखा। यह पहिली चीज़ थी, जो उन्होंने बिना घोड़ों की सहायता के चलती हुई देखी। जब गाड़ी रुकी तो वह धीरे से उतर कर ड्राइवर के पास पहुँचे और प्रश्नों की एक झड़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगा दी। ड्राइवर के पास से वह इञ्जिन के विषय में पूरी जानकारी प्राप्त करके ही लौटे। बस, उसी दिन से उन्हें इस बात की धुन लग गई। और उन्होंने घरेलू औज़ारों से कई प्रकार के नमूने तैयार किये। उनका दिमाग़ हर वक्त इन्हीं विचारों से भरा रहता था—रात-दिन वह सड़क पर चलने योग्य सवारी के निकालने की चिन्ता में मस्त रहते थे। कार्यशील मनुष्यों का यही हाल होता है अपने ध्येय की प्राप्ति का उन्हें नशा हो जाता है, और फिर इस नशे में वे सब कुछ भूल जाते हैं।

पहली मोटर बनी

कुछ भी हो मोटर बनाने का विचार उनके दिल में जगह पाता गया। अब विचारों को क्रियात्मक रूप देने की बारी आई। फोर्ड ने पहली मोटर तैयार की। इसमें बाइसिकल की तरह के पहिये थे और बैठने का स्थान था। आजकल की-सी मोटरों की सी कोई सुविधा न थी। चलते समय शोर भी बहुत होता था परन्तु चाल अच्छी थी। फिर भी जनता उनके इस उद्योग को मख़ौल और दिल्लगी का विषय समझती थी पर फ़ोर्ड पर इसका कुछ प्रभाव न पड़ा। वह अपने काम में पूर्ववत दत्तचित्त रहे। लोगों के मख़ौल और मज़ाक की उन्होंने पर्वाह न की।

जब फ़ोर्ड ने मोटर बनाने की फ़ैक्टरी स्थापित करने की सोची तो अनेक दिक्कतें पेश आईं। यह कोई साधारण काम न था। इतनी बड़ी रक़म कहां से आये? लोग उनके विचारों को सुनकर हंसते थे और उसे 'दीवाना' 'पागल' या 'सनकी' समझते थे। ऐसी दशा में कोई गाँठ का पूरा उन्हें सहायता देनेको तैयार न होता था। निदान उन्होंने एक दूसरे व्यवसायी को उन्हें कुछ रुपये ऋण देने को तैयार कर लिया। पर उसने हेनरी फ़ोर्ड से इस बात की शपथ ले ली कि वह अपने रुपया मिलने के भेद को किसी पर प्रकाशित न करेंगे। क्योंकि ऋणदाता को भय था कि भेद प्रगट हो जाने पर उसके मित्र लोग उसकी हँसी उड़ावेंगे।

फ़ोर्ड का व्यवसाय

फ़ोर्ड का कार्यालय पहले एक दूकान में था। उनका वर्तमान कार्यालय संयुक्त राष्ट्र के डिट्राइट नामक नगर में है। कार्यालय की इमारत सोलह मंज़िला है। आज से कई १० वर्ष पूर्व उनका वार्षिक लाभ १ करोड़ ६० लाख पौंड था और ५ करोड़ पौंड से भी अधिक धन उनके पास नक़द जमा था। फ़ैक्ट्री फ़ोर्ड तथा उनके कुटुम्बियों के अधिकार में है और उसका संचालन तथा नियंत्रण फ़ोर्ड स्वयं करते हैं। प्रधान फ़ैक्ट्री डिट्राइट में स्थित है और उसकी शाखाएँ लगभग सारे भूमंडल में फैली हुई हैं। फ़ोर्ड के पास अपने निज के जंगलात हैं। यही नहीं लोहे और कोयले की खानें तथा रेलें भी उनकी निजी हैं। उनकी फ़ैक्टरियों में काम करने का एक विशेष अपना 'सिस्टम' है। अधूरी मोटर आगे को चलती रहती है और कर्मचारियों की पंक्ति का प्रत्येक व्यक्ति अपनी जगह पर खड़ा खड़ा अपना काम कर देता है। उसे अपनी जगह से तनिक भी इधर-उधर नहीं हिलना पड़ता। अपना काम पूरा करने में प्रत्येक कर्मचारी को कुछ सैकण्ड ही लगते हैं। जब वह एक गाड़ी आगे को चली जाती है और उसकी जगह लेने के लिए दूसरी गाड़ी तुरन्त आ जाती है। यह सब काम इतनी फुर्ती और सावधानी से होता है कि प्रत्येक ... सेकिण्ड में एक मोटर फिट हो जाती है। वैसे एक मोटर को, जंगल से लकड़ी काटने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के समय से लेकर लोहे के आवश्यक कल-पुर्जों के बन कर तैयार होने में छः दिन से भी कम समय लगता है। मोटर बनाने का जितना लम्बा-चौड़ा व्यवसाय फ़ोर्ड का है उतना और किसी का नहीं। इसीलिये वह 'मोटर-कार किंग' (Motor Csr King) "मोटरों का राजा" कहलाता है।

आदर्श स्वामी

फ़ोर्ड के कारख़ाने में काम करने वाले व्यक्तियों को अमरीका के सब कारख़ानों से अधिक वेतन मिलता है। उनके काम करने के घंटे भी सब से कम होते हैं। फ़ोर्ड का कहना है कि प्रत्येक स्वामी का कर्तव्य है कि वह अपने कर्मचारियों के लिए तीन बातों का प्रबन्ध कर दे। प्रथम उनका वेतन काफ़ी हो और दूसरे उनके काम करने के घंटे कम। इनके साथ ही उनकी नौकरी भी स्थायी हो। उसने अपने कारख़ानों में उपरोक्त बातों में से तीनों ही का प्रबन्ध कर रक्खा है। अपने कर्मचारियों के लिए उन्होंने एक अस्पताल भी खुलवा रक्खा है जिसके बनवाने में उसके दस लाख से भी अधिक पौंड ख़र्च हुए थे। जब कोई कर्मचारी बीमार पड़ जाता है तो वह उसके शफ़ाख़ाने में इलाज के लिए चला जाता है और उसका वेतन पूर्ववत मिलता रहता है। फ़ोर्ड का विश्वास है कि इस प्रकार की सुविधाओं से स्वामी की समृद्धि का मार्ग खुल जाता है।

उपरोक्त गुणों के कारण हेनरी फ़ोर्ड की लोकप्रियता भी बहुत बढ़ा-चढ़ी है। अमेरिका जैसे इहि-लोक प्रेमी देश में भी ऐसे बहुत कम लोग मिलेंगे जो उसकी विपुल धन राशि के कारण फ़ोर्ड से ईर्ष्या रखते हों। उनकी लोकप्रियता का इससे बढ़ा और क्या प्रमाण मिलेगा कि सन १९२४ ई० में जब उन्हें संयुक्त राष्ट्र का राष्ट्रपति बनाने की चर्चा चली थी तो जनता ने एक स्वर से हर्षित होकर उनका स्वागत किया था? इस समय अमेरिका का कोई ही ऐसा अभागा पत्र होता होगा जो फ़ोर्ड के सम्बन्ध में अपने दो चार कालम न भरता हो।

हेनरी फ़ोर्ड का जीवन

फ़ोर्ड का घरेलू जीवन निहायत सादा है। न उन्हें शराब पीने का शौक है न तम्बाकूका व्यसन। वह थोड़ा खाते हैं। उन्हें भोजन के समय मित्रों से दिल्लगी करने में आनन्द आता है। उन्हें प्रायः अपने घर पर ही रहना पसन्द है और वहीं उनके कथनानुसार उन्हें विशेष सुख का अनुभव होता। छुट्टियों के दिनों में जब कभी उन्हें काम से अवकाश मिलता है तो वह जङ्गलों की सैर को चले जाते हैं क्योंकि वह बड़े प्रकृति प्रेमी हैं। वहाँ उन्हें पशु-पक्षियों के जीवन का अध्ययन करने में बड़ी प्रसन्नता होती है।

हेनरी फ़ोर्ड का कारोबार बड़ा है, इससे यह न समझ लेना चाहिये कि वह छोटी छोटी वस्तुओं की ओर ध्यान ही नहीं देते। कारखाने के फ़र्श की सफ़ाई से जो रद्दीमाल मिलता है उससे वह हज़ारों पौंडवार्षिक प्राप्त कर लेते हैं। इसी प्रकार कभी कभी काम आये हुये कोयले से भी उसे कोयले के मूल्य से अधिक मिल जाता है। यहीं तक नहीं, पेड़ों की शाखाएँ कट जाने पर उनकी टहनियों को भी इकट्ठा करके काम में लाया जाता है।

सफलता का मूलमंत्र

हेनरी फ़ोर्ड को यह सब सफलता कैसे मिली? इसका कारण ढूँढने के लिये अधिक दूर जाने की आवश्यकता नहीं है। फ़ोर्ड का इस सिद्धान्त में तनिक भी विश्वास नहीं है कि चालीस वर्ष की अवस्था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के बाद मनुष्य को बुढ़ापा आ घेरता है। जब उन्होंने सन् १९०३ ई० में अपना मोटरों का व्यवसाय शुरू किया था तब उनकी आयु भी ४० वर्ष ही की थी। एक बार उन्होंने कहा था कि जीवन में पहले ४० वर्ष तो मनुष्य की तैयारी का काल है। इस समय में उसे चाहिये कि वह अपने लिये कोई उचित धन्धा पसन्द करे और उसके लिये अपने आपको सब प्रकार से योग्य बनावे। ४० वर्ष की आयु के उपरान्त उसे फिर अपने व्यवसाय में चमत्कारपूर्ण सफलता प्राप्त करने के लिए परिश्रम करना चाहिये। फ़ोर्ड के कार्य करने का उद्देश्य उसी के शब्दों में सदैव "संसार को रहने के लिए अधिक से अधिक उपयुक्त स्थान बना देना" रहा है।

जर्मनी में युवकों को औद्योगिक और सैनिक-शिक्षण कैसे दिया जाता है ?

[प्रत्यक्षदर्शी]

बर्लिन शहर से २५ मील की दूरी पर एक शिविर (छावनी) है। स्कूल की शिक्षा समाप्त करने के बाद कॉलेज में प्रवेश करने से पूर्व, युवक इस शिविर व कैम्प में एक साल काम करते हैं। इस कैम्प में जो भी शैड्स् या निवास-स्थान खड़े किये गये हैं, वह सब विद्यार्थियों ने स्वयं तैयार किये हैं। जिस प्रकार सिपाही फ़ौजी छावनियों में रहते हैं, उसी ढंग पर यहाँ विद्यार्थियों को नियन्त्रण में रखा जाता है। २० नवयुवकों के लिए एक हाल (भवन) नियत किया जाता है। भोजन बनाने के लिए एक रसोईघर भी है। उसमें बड़े-बड़े बरतनों में भोजन तैयार होता है। निवास स्थान से आध मील की दूरी पर, सब विद्यार्थी मज़दूरों का वेश पहन कर काम करते हैं। वहाँ के जंगली झाड़-झंकाड़ को छाँटकर साफ़ मैदान तैयार कर, आने-जाने लायक मार्ग बनाते हैं। झाड़ियाँ काट कर साफ़ करना, मिट्टी खोदना, पत्थर डालकर रास्ता समतल करना, गाड़ियों में पत्थर-मिट्टी ढोने का काम आदि शारीरिक मेहनत के काम विद्यार्थी स्वयं करते हैं। इससे १० मील की दूरी पर, एक और कैम्प (शिविर) है। वहाँ विद्यार्थी सैनिक-वेश में रहते हैं। इन विद्यार्थियों के चलने-फिरने तथा नमस्ते करने के व्यवहार फ़ौजी ढंग के होते हैं। इन विद्यार्थियों से तरह २ की खुदाई और मलबा खोदने का काम कराया जाता है। आजकल जर्मनी में इस प्रकार के सैकड़ों कैम्पों में जर्मन-नवयुवक शारीरिकश्रम तथा सैनिक-शिक्षण के वातावरण में पल रहे हैं।

शारीरिकश्रम करना आवश्यक है

स्कूल की शिक्षा समाप्त करने के बाद १८-१९ साल के जर्मन-नवयुवकों को इन छावनियों में आवश्यकरूप से रखे जाने की योजना जर्मनी में इस साल से चालू होनेवाली है। इस ढंग से जर्मनी के नवयुवक शीघ्र ही सैनिक-ढंग से शिक्षित और श्रमशील बनेंगे। इन छावनियों को जर्मनी में Arbeitsloga (अर्बीटस्लौगा) किंवा (वर्कमंदिर) श्रम-मंदिर कहते हैं। भविष्य में इन छावनियों में शिक्षा प्राप्त किए बिना कोई जर्मन न तो कॉलेज में शिक्षा प्राप्त कर सकेगा और नाहीं सरकारी ओहदों पर नियत हो सकेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रम-मंदिर और सैनिक-शिविरों की दिनचर्या

प्रातःकाल ६ बजे सब विद्यार्थी जागते हैं। ७ बजे तक आवश्यक कार्यों से निवृत्त होकर, प्रातराश करके विद्यार्थी ड्रिल या कवायद करते हैं। इसके बाद ७ बजे से लेकर दो बजे तक निरन्तर शारीरिक श्रम का कार्य करते हैं। इस समय लोकोपयोगी निम्नलिखित काम विद्यार्थियों से कराए जाते हैं। सड़कें तैयार करना, जंगल साफ़ कर तैयार करना, खुदाई का काम करना, रेल की लाइन तैयार करना, मकान बनाना आदि। इसके बाद भोजन और आराम के लिए एक घण्टे का समय दिया जाता है। सायंकाल तीन बजे से ५ बजे तक खेल-कूद तथा फ़ौजीड्रिल आदि करायी जाती है। इसके बाद एक घण्टा व्यायाम और वार्तालाप होता है। इस समय स्वदेश राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति तथा वर्तमान राजनीति सम्बन्धी प्रश्नों की चर्चा की जाती है और विद्यार्थियों को शारीरिक श्रम के साथ मानसिक श्रम और ज्ञान की शिक्षा भी दी जाती है।

विद्यार्थियों के हृदयों पर जहाँ एक ओर इस नित्य के दैनिक कार्य-क्रम का असर होता है, वहां इन छावनियों के वातावरण का भी स्वाभाविक स्वतन्त्र असर होता है। सैनिक-शिक्षण, आज्ञा-पालन, गंभीरता और आदर्श-निष्ठा की छाप हरएक के चेहरे और चाल-ढाल में दिखाई देती है।

यह श्रम-मंदिर तथा सैन्य-शिविर शहर से दूर प्रकृति माता की विस्तृत गोदी में बनाये जाते हैं। इनके द्वारा शहर के शिक्षितों का देहाती किसानों तथा राष्ट्र के श्रमजीवी मज़दूरों के साथ सीधा सम्बन्ध स्थापित होता है। उनमें श्रेणीवाद के भाव पैदा नहीं होते, बहुत से विद्यार्थी उन स्थानों में एक साल रहने के बाद अपने जीवन के अनुकूल धंधा ढूँढ लेते हैं और शिक्षित वेकारों को जन्म देनेवाले, कोरे पुस्तकी ज्ञान से बच जाते हैं।

* * *

जो राष्ट्र स्वाधीन होना चाहते हैं, उन्हें अपने अपने राष्ट्र की अवस्थाओं के अनुसार देश के नवयुवकों में शारीरिक श्रम और सैनिक-शिक्षण की प्रथा जारी कर स्वावलम्बन तथा स्वतन्त्रता के भाव पैदा करने चाहिएँ।

भारत बीमा कम्पनी की विजय

भारत इंश्युरेंस कम्पनी लिमिटिड लाहौर ने मद्रास की जयभारत इंश्युरेंस कम्पनी के बखिलाफ़ अदालत में मुकदमा चलाया था। कारण यह था कि जयभारत बीमा कम्पनी भारतबीमा के ट्रेड नाम व्यापारी नाम का दुरुपयोग किया था। लाहौर के सीनियर सब ऑर्डिनेट जज ने भारत बीमा कम्पनी के पक्ष में निर्णय किया है। भारत बीमा कम्पनी की ओर से मि० के० एल० ग्वाबा अदालत में पेश हुए थे।

भारत बीमा कम्पनी का वक्तव्य इस प्रकार से है। भारत बीमा कम्पनी ३५ साल से कायम है। इस अरसे में कम्पनी ने भारत में तथा संसार के अन्य भागों में बड़ी मात्रा में व्यापार किया है। और 'भारत' शब्द 'भारत बीमा कम्पनी' के साथ विशेष रूप से सम्बद्ध हो गया है इस लिये 'जय भारत' शब्द का प्रयोग करना भारत बीमा कम्पनी के व्यापारी नाम को रद्द करना, या उसका भ्रमोत्पादक अनुकरण करना है।

इस लिये भारत बीमा कम्पनीने मद्रास की जयभारत कम्पनी को 'भारत' या जय भारत नाम से व्यापार या रुपयों का लेनदेन करने से मना करने की अदालत से आज्ञा मांगी। जय भारत बीमा कम्पनी ने भारत बीमा कम्पनी के दावे पर कई ऐतराज किये परन्तु अदालत ने उन्हें स्वीकार नहीं किया और भारत बीमा कम्पनी के पक्ष में फैसला कर दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महिला-संसार

वीर कन्या का साहस

[एक सच्ची घटना]

एक सिख लड़की की बहादुरी को ख़बर आई है, जिसने डाकुओं का मुक़ाबला होने पर दो मशहूर डाकुओं को मार डाला और गाँववालों पर आतंक फैला रखनेवाले एक डाकू को पकड़ लिया।

घटना इस प्रकार बतलाई जाती है कि एक मशहूर ज़ालिम डाकू ने जिसकी गिरफ़्तारी के लिये सरकार ये ३०००) नक़द और दो स्क्वेयर ज़मीन के इनाम की घोषणा कर रखी है, तीन अन्य डाकुओं के साथ ८ ता० को फ़िरोज़पुर ज़िले की मोगा तहसील के एक गाँव पर चढ़ाई की। उन्होंने गुरुमुखसिंह की १७ वर्षीय अविवाहित लड़की हरनामकौर पर हमला किया जो कि उस घर में अकेली थी—उसके बाप, भाई खेत पर काम कर रहे थे। तीन डाकू मकान की छत पर चढ़ गये और चौथा धुग्गीसिंह आँगन में रहा।

धुग्गीसिंह अपनी बन्दूक चलाने की तैयारी कर रहा था हरनामकौर ने झपटकर उससे बन्दूक़ छीन कर अपने भाई के सुपुर्द कर दी, जो इस बीच खेत से लौट कर आया था, और डाकू को मार डाला।

तब धुग्गासिंह के साथी जो छत पर थे, हरनामकौर पर अन्धाधुन्ध गोलियां चलाने लगे, जिससे हरनामकौर की जाँघ व छाती में चोट आई। मगर फिर भी वह निरुत्साह न हुई और लकड़ी के तख़्ते के पीछे ओट में हो गई।

थालसिंह तथा अन्य डाकू अपने चौथे साथी को छत पर छोड़ कर नीचे आये और बन्दूक़ के ज़ोर पर गाँववालों को मदद के लिये आने से रोकने लगे। परन्तु जैसे ही लालसिंह हरनामकौर की तरफ़ बढ़ा, हरनामकौर ने उसके कन्धे पर झपटा मार कर उसके गले में पड़े हुए हार से उसे कसकर पकड़ लिया और इतना कस कर खींचा कि डाकू का दम घुटने लगा। तब हरनामकौर के भाई ने ज़ोर का प्रहार कर उसे मार डाला।

तीसरे डाकू ने लड़की के पिता गुरुमुखसिंह पर आक्रकण किया और 'छवी' से उसकी टाँग काट डाली, जिससे वह मर गया। हरनामकौर का एक भाई भी बुरी तरह घायल हुआ, मगर उसने तीसरे डाकू को पकड़ लिया, किन्तु चौथा डाकू छत पर से भाग गया।

हरनामकौर और उसका भाई मोगा अस्पताल में है। वहाँ उनके शरीर से गोलियाँ निकाली गई हैं और उनकी हालत ठीक हो रही है। उनके पिता की लाश पोस्टमार्टम के लिये भेजी गई है। पिता की अन्त्येष्टि के लिपे फ़िरोज़पुर के पुलिस सुपरिन्टेन्डेण्ट ने, जो घायलों को देखने अस्पताल गयाथा, हरनामकौर को १००) इनाम प्रदान किए हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेकार ग्रेजूयेट का आत्म-सम्मान

[लेखिका—कुमारी सावित्री देवी, लाहौर]

—एक—

"खाँड के खिलौने पैसे के चार चार, खेल लो खिला लो, टूट जाय तो खा लो, पैसे के चार चार।" इस प्रकार एक फेरीवाला गली में आवाज़ देकर अपना सौदा बेच रहा था। पास ही एक नन्हीं सी बालिका खड़ी थी उसका दिल इन खिलौनों को देखकर ललचा गया। वह भाग कर घर आई और सुशीला से लिपट कर बोली "अम्मी, अच्छी अम्मी ! मुझे एक पैसा दे। मैं खिलौने लूँगी, देख तो कैसे सुन्दर खिलौने हैं। ऊँ मैं तो लूँगी ही। कल कहा था कि कल पैसे लेना" यह कहकर वह उसका पल्ला खींचने लगी।

सुशीला ने झट से बालिका को उठाकर चूम लिया और कहा—"मेरी लाड़ो, यह खिलौने तो अच्छे नहीं हैं। देख तो उस पर मक्खियाँ भिन भिना रही हैं। कल को जब दूसरा खिलौनेवाला आवेगा तो ले दूँगी। तुम्हारे बाबू जी तुम्हें स्वयं खरीद देंगे। कहने को तो सुशीला यह सब कह गई, परन्तु बाबू जी कैसे और कितने खिलौने ले देंगे, यह वह भली भाँति जानती थी।

बालिका पर इन शब्दों का कुछ असर न पड़ा। वह बिलख बिलख कर रोने लगी। सुशीला ने बहुतेरी कोशिश की। पर वह मचल मचल कर कहती ही रही। "तुम तो नित कल ही कल कहती हो। न जाने वह कल कभी आवेगा भी कि नहीं। भला मैं कल को क्या करूँ। सुशीला से बालिका का रोना न देखा गया, उसने मुंह फेर लिया और फलस्वरूप दो बड़े बड़े मोती टपक पड़े। अंत में जी कड़ा कर उसने बालिका के हाथ में एक पाई रख दी। पहरों का मुरझाया हुआ चेहरा क्षण-भर में खिल उठा। वह दौड़ कर "ओ खिलौनेवाले ! हमें भी देता जा"—कहती हुई गली में भाग गई।

सुशीला बैठे बैठे सोचने लगी कि हे भगवान् ! इन नन्हें खिलौनों के लिये लाखों तरसते हैं, और दिन-रात चिन्ता में लीन रहते हैं। लाखों की सम्पदा होते हुए भी सूना घर कहते हैं। परन्तु वही अनमोल रत्न कृपाकर आपने हमें दिया और अँधेरे घर में उजाला किया। तो भी हम उसकी कदर न कर सके ! आह ! मेरा कलेजा शायद वज्र से भी कठोर है जो प्यारी बच्ची का यों पाई पाई की चीज़ वा रोटी के टुकड़े के लिए बिलखना भी देखकर नहीं पिघलता। बस, अब नहीं सहा जाता, या तो चार पैसे का रोजगार दे, या मौत दे।

इसी प्रकार पहरों न जाने वह क्या सोचती रही कि यकायक पौड़ियों में जूते की आवाज़ सुन चौंक पड़ी। उसी क्षण एक २६ या २७ वर्ष का युवक—नाममात्र का युवक—मुरझाये हुए चेहरे को लिये उपस्थित हुआ। उसके शरीर पर मांस नाममात्र को भी न था। एक एक हड्डी गिन लो। आँखें बदन में धँसी हुई थीं। जूते में भी तलवा मिट्टी चाट रहा था। कोट में से कमीज़ झरोखों से झाँक रही थी। युवक ने आते ही टोपी दे मारी और चुपचाप टूटी सी खाट पर बैठ गया। सुशीला भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पास आ बैठी और पूछा—क्यों, क्या हुआ? क्या जवाब मिला?

युवक—क्या मिलना था वही मिला जिस की आशा थी। मैंने तो पहिले ही कहा था कि क्यों व्यर्थ में और दो रुपये उठवाती हो। यही दो रुपये कुल पूँजी थी। वह भी गई। चलो! अच्छा हुआ। अब पूरे दरिद्रनारायण के भक्त बन गये। टण्टा ही ख़तम हो गया।

सुशीला—फिर भी, क्या साफ़ इन्कार कर दिया?

रमेश—(युवक) और नहीं तो क्या अभी आशा ही बँधी हुई है। ५०० की ज़मानत देने पर २५ रु० की नौकरी मिल सकती है। यहाँ ५०० के नाम पर पाँच पैसे भी शेष न रहे। सच कहता हूँ यह तुम्हारा प्रेम व बच्ची का भोला चेहरा ही था जो इस समय तुम मुझे यहाँ पाती हो, वरना कभी का गाड़ी के नीचे दब कर जान दे चुका होता। आह! माँ-बाप ने किस आशा पर घर बार बेच कर मेरा पढ़ने का ख़र्च पूरा किया। अपना पेट काट काट कर बी० ए० पास कराया और फल यह हुआ कि चार पैसे भी प्राप्त नहीं हुए। न जाने इस बी० ए० के भूत के पीछे आज कितने ही घर बीरान हो रहे हैं। परन्तु न जाने इस में कैसा रस है जिस का चटखारा मनुष्यों की जीभ से जमाख़र्च करने पर भी नहीं जाता। मेरा बस चले तो सब कालिजों में आग दे दूं। पुस्तकों के ढेर को भाड़ में झोंक दूँ। न जाने अब भी हम लोगों के नेत्र क्यों नहीं खुलते। वही कालिजी (Education) तालीम की धुन। बताओ अब यह दइमारी डीग्री पेट क्यों नहीं भरती। वह इसी प्रकार प्रलाप कर रहा था कि पीछे से बच्ची उछलती-कूदती हुई आई और लिपट गई। इस लाड-प्यार की लिपटा-झपटी में खिलौना टूट गया। वह फिर रोने लगी। उसको रोती देख सुशीला वा रमेश दोनों अधीर हो उठे। घर में भूजी भाँग नहीं और सामने बच्ची एक पैसे के खिलौने को रो रही है। कौन माता-पिता ऐसे हैं जो धीर धर सकते हैं। उसे कैसे समझायें यह उन की शक्ति से बाहिर की बात थी।

—दो—

एक ऑफ़िस के सामने इश्तहार लगा है। उस पर मोटे मोटे अक्षरों में Wanted (वाण्टेड) लिखा है। उस पर नवयुवकों का दल ऐसे टूट पड़ता है जैसे मधु पर मक्खिएँ। इसी में हमारे रमेश भी शामिल हैं। वह कुछ नोट करना चाहते हैं पर उन के पास पेनसिल-काग़ज़ न था। काग़ज़ तो एक सिनेमा का इश्तहार मिल गया और पेनसिल पास खड़े एक गोरे से माँगी। माँगी तो नम्रता पूर्वक थी परन्तु वह तनक पड़ा "ओ यू काला मैन हमसे पेनसिल माँगता है। हम तुम्हें पेनसिल दे, सूअर।" रमेश अपना यह अपमान न सह सका, झट बोल उठा, "चुप रहिये, ज़बान सँभालिये, मैंने गाली नहीं दी; अपने शब्द वापिस लो, वरना पछताओगे!" गोरे ने झट से एक चाँटा जड़ दिया। अब क्या था रमेश ने उसका गला पकड़ ऐसा घूँसा मारा कि नाक से खून जाने लगा। वह दर्द से कराहने वा पुलिस पुलिस चिल्लाने लगा। लोग आन की आन में इकट्ठे हो गये। पुलिस भी आ पहुँची। रमेशजी हिरासत में ले लिये गये।

पुलिस सुपरिंटेण्डेंट ने कहा कि तुम्हारे घर ख़बर कर दें। कोई वकील करो। वह बोला, नहीं जनाब, मुझे ऐसे कोर्ट से न्याय की आशा नहीं, दूसरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठन ठन गोपाल या नकद नारायण के बिना कौन वकील बनेगा। जब सुशीला को पता लगा तो माथे पर हाथ मारकर रह गई। इधर बालिका को ज्वर, उधर पति जेल में और पल्ले पैसा नहीं। करे तो क्या करे। न कोई साथी न संगी। अकेली अबला नारी किधर जावे। अपने मुँह में तीन दिन से अन्न तो एक ओर, पानी का घूँट तक नहीं गया। वह रोती बिलखती रह गई।

—तीन—

अदालत में आज ख़ास भीड़ थी। क्या बात है? ओह! आज तो रमेशवाला मुक़द्दमा पेश होने वाला है। पेट से खाली होने पर भी आत्म-सन्मान को न छोड़नेवाले कितने नवयुवक हैं। देखते ही देखते इजलास भर गया। जज महोदय न्यायासन पर विराजमान हुए। मुक़द्दमा सुनने के पश्चात् ५०) जुर्माना वा तीन मास सादी कैद का हुकम हुआ। रमेश ने जेल जाना स्वीकार किया क्योंकि और कोई चारा ही न था। इधर कोने में अपनी फटी साड़ी से येन-केन-प्रकारेण लज्जा बचाये सुशीला बैठी थी। घर में बच्ची अर्ध मरणावस्था में पड़ी थी। अब बैठी हुई देर तक अपने को न सँभाल सकी धड़ाम से गिर पड़ी। सिर में हलकी चोट आई, इसी बीच एक दयालु नौजवान ने उसी समय ५० रु० जमा कर रमेश को मुक्ति प्रदान की। उसका चेहरा प्रसन्नता से दमक रहा था। उसको इस बात की प्रसन्नता थी कि चलो एक नवयुवक तो ऐसा निकला जो अपमान का बदला ले सकता हो। उसने रमेश से कहा कि आप Wanted (वाण्टिड) देखते हुए गिरफ़्तार हुए थे अतएव आप शायद नौकरी के इच्छुक हैं। यदि बुरा न मानो तो मेरे भतीजे को पढ़ा दिया करो। इसी बीच में और जगह कोशिश कर आप को जगह दिला दूँगा। रमेश ने धन्यवाद देते हुए कहा कि ईश्वर की सृष्टि में एक आपको ही ऐसा सहृदय पाया और क्या चाहिये आपका भतीजा मेरा ही है।

वह नवयुवक रमेश वा सुशीला को लिये उनके घर आया। पर हाय विधाता से इस दुःखी परिवार का क्षणिक सुख भी न देखा गया। वह अभी इन्हें कुछ और दिखाना चाहता था। बालिका अनंतलोक की यात्रा कर चुकी थी। वह बोलता सुआ जिस के हँसते मुख ने दुःख में धैर्य दिया था वा युवक को आत्महत्या के पाप से बचाया था, उड़ चुका था। रमेश वा सुशीला दोनों हाय कर बेहोश हो गये।

———

'हिन्दी-सन्देश' में प्रकाशित प्रश्नों के सर्वोत्तम उत्तर लिखनेवाले को पुरस्कार दिया जायगा। तीनों परीक्षाओं में से किसी एक के ही उत्तर देने चाहिएँ। उत्तर-पत्र ३० अप्रैल तक "सन्देश"-कार्यालय में भेज देने चाहिएँ।

व्यवस्थापक—"हिन्दी-सन्देश",
९, मोहनलाल रोड, लाहौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवीन साहित्य

संध्या के तीन अंग—लेखक, श्रीयुत उपाध्याय मुक्तिरामजी आचार्य गुरुकुल पोठोहार, रावलपिण्डी। मूल्य चार आने।

श्रीयुत पं. मुक्तिरामजी उपाध्याय दर्शनशास्त्र के प्रसिद्ध विद्वान् हैं। प्रस्तुत पुस्तिका में दर्शनों की सहायता से—विशेषतः योगदर्शन तथा उपनिषदों की सहायता से—संध्योपासना के तीन अंगों की व्याख्या की गयी है। इस व्याख्या में प्राणायाम की विधि की विशेष विस्तृत सचित्र व्याख्या की गई है। खासकर मनसा-परिक्रमा मन्त्रों की सचित्र व्याख्या विशेष रूप से पढ़ने योग्य है। व्याख्या में विद्वत्ता के साथ साथ स्वानुभव की भी झलक दिखाई देती है। आत्मचिन्तन तथा आध्यात्मिक शांति के अभिलाषियों को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। पुस्तक आर्यसमाज रावलपिंडी गुरुकुल-विभाग से मिल सकती है।

* * *

वैदिक-सिद्धान्त-दर्पण—लेखक, पं० यशपाल जी सिद्धान्तालंकार, आर्यसमाज केटा। मूल्य एक रुपया।

श्री पं० यशःपालजी सिद्धान्तालंकार गुरुकुल कांगड़ी के सुयोग्य स्नातक हैं। आपने अपना बहुत-सा समय आर्य-संस्कृति तथा वैदिक संस्कृति के प्रचार-कार्य में लगाया है। इस उद्देश्य को पूर्ण करने के लिए आपने संस्कृत तथा अँगरेज़ी के ग्रन्थों का विस्तृत अनुशीलन किया है। प्रस्तुत पुस्तक को हम इस विस्तृत अनुशीलन का सार कह सकते हैं। आर्य-संस्कृति के दार्शनिक तथा सामाजिक संगठन के मूलतत्त्वों की विशेषताओं को जाननेवालों के लिये यह ग्रन्थ अत्यन्त उपयोगी है। पुस्तक पं० यशःपालजी सिद्धान्तालंकार, आर्यसमाज केटा तथा भगत धनपति आर्यमिशन हुसैन गली मुलतान से मिल सकती है।

* * *

सुख-सम्पन्न-जीवन—लेखक, श्री पं० वेदव्रत जी वैद्य, अमृत फ़ार्मेसी, डेरागाज़ीखाँ। मूल्य ।।)

प्रस्तुत पुस्तक में गृहस्थ-जीवन को सुखी बनाने के उपायों का उत्तम संग्रह है। पुस्तक के लेखक वैद्य हैं, इसलिए वैद्यक-शास्त्र की दृष्टि से इसके लिये जो भी आवश्यक साधन हैं; उनका भी वर्णन किया गया है। लेखक महोदय ने यह पुस्तक आजकल के नारकी भोगमय गृहस्थ को स्वर्गीय तथा कर्मशील बनाने के उद्देश्य से लिखी है।

गृहस्थाश्रम में प्रवेश करनेवालों के लिए यह पुस्तक उपयोगी है। घरेलू दवाइयों का भी वर्णन किया गया है।

* * *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वामी श्रद्धानन्द—लेखक, श्रीयुत पंडित सत्यदेवजी विद्यालंकार। संपादक, श्री प्रो. इन्द्रजी विद्यावाचस्पति। मूल्य साढ़े तीन रुपये। पृष्ठ-संख्या ६००। दर्जन से अधिक आकर्षक चित्र।

स्वामी श्रद्धानन्द-जैसे क्रांतिकारी व्यक्ति के विस्तृत जीवन-चरित्र जनता के लिए पथ-प्रदर्शक का काम करते हैं। इस समय तक स्वामी श्रद्धानन्दजी के छोटे-मोटे कई जीवन-चरित लिखे जा चुके हैं; परन्तु कोई ऐसा जीवन-चरित्र नहीं था, जिसमें उनके जीवन के सब पहलुओं पर प्रकाश डाला गया हो। इस जीवन-चरित्र ने इस कमी को पूरा कर दिया है। स्वामी श्रद्धानन्दजी ने आर्यसमाज, गुरुकुल, राजनीति, समाज-सुधार तथा शिक्षा-सुधार के लिए जो महान् आन्दोलन संचालित किये थे, उनका इसमें मनोरंजक शैली से वर्णन किया गया है। सच्ची घटनाओं में उपन्यासों से भी बढ़कर आकर्षण होता है। इस जीवन-चरित्र में, यह वाक्य अक्षरशः चरितार्थ है। स्वामीजी ने किस प्रकार आत्मनिरीक्षण तथा आत्मावलम्ब के सिद्धांत-द्वारा अपने को उन्नत किया, इसका मनोरंजक वर्णन हरेक युवक के लिए प्रकाश-स्तम्भ का काम देता है। पुस्तक की भाषा में ओजस्विता तथा तन्मयता की झलक पन्ने-पन्ने पर दिखाई देती है। हमारी सम्मति में जो नवयुवक लोक-सेवा के व्रत में दीक्षित होना चाहते हैं, उन्हें इस जीवन-चरित्र का अध्ययन करना चाहिए। इसके अध्ययन से उन्हें पता लगेगा कि किस प्रकार सच्चे सुधारक आपत्तियों के आने पर अधिक उत्साह से अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते हैं। ख़ासकर आर्य-संस्कृति तथा वैदिक संस्कृति के प्रचारकों को इसका अध्ययन अवश्य करना चाहिए। स्वामी श्रद्धानन्द ने आर्य-संस्कृति के उदात्त सिद्धान्तों को अपने जीवन में चरितार्थ करके दिखाया था। इन सिद्धान्तों के कारण उनमें दिव्य आकर्षण तथा तेज पैदा हो गया था, जो यूरोपियनों तथा दूसी सभ्यता के अभिमानियों को सहसा अपनी ओर आकृष्ट करता था।

* * *

बालसंदेश—आज कल हिन्दी साहित्य में बाल साहित्य की विशेष उन्नति हो रही है। अभी दिल्ली से श्रीमती उमानेहरूजी के सम्पादकत्व में बालसंदेश नाम का सचित्र मासिक पत्र प्रकाशित होने लगा है। इसके दो अङ्क हमारे सामने हैं। बालसंदेश के लेख नामानुरूप हैं। मनुष्य जीवन के हरेक पहलू में बालकों के सामने क्या आदर्श होने चाहिए, उन्हें अपना बचपन किस तरह बिताना चाहिए आदि बातों का वर्णन करने वाले लेखों का उत्तम संग्रह है। साथ ही बालकों के मनोरञ्जन के लिये पहेलियाँ कहानियाँ तथा चित्रों का भी संग्रह है। हम सहयोगी का स्वागत करते हैं और आशा करते हैं वह भारत के शिशु संसार के सामने उच्च आदर्श रखने में सदा तत्पर रहेगा।

—पारखी

हिन्दी की उत्तमोत्तम पुस्तकों के लिए 'नवयुग-ग्रंथमाला' से पत्र व्यवहार कीजिए।

अध्यक्ष—नवयुग-ग्रंथमाला

२७, मोहनलाल रोड, लाहौर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादकीय

संदेश का प्रभाकर विशेषांक—

विशेषांक पाठकों के सामने है। हमने इसे यथा शक्तिउपयोगी बनाने का यत्न किया है। इस अवसर पर हिन्दी परीक्षार्थियों को सहर्ष सूचित करते हैं कि आगामी अङ्क में इस अङ्क में प्रकाशित प्रश्न पत्रों के संक्षिप्त निर्देशात्मक उत्तर भी छापे जायेंगे। यदि किसी विद्यार्थी तथा हिन्दीपरीक्षार्थी को किसी विशेष प्रश्न के उत्तर पूछने हों तो उनके लिये संदेश के कालम खुले हैं। ३१ अप्रैल १९३४ तक इस अङ्कमें प्रकाशित प्रश्न पत्रों के (एक एक परीक्षा के) सर्वोत्तम उत्तर देने वालों के लिये तीन पारितोषिक(पुरस्कार) नियत किये गये हैं। उत्तर लिखते हुए हरेक विद्यार्थी को इन तीनों परीक्षाओं में से, किसी एक परीक्षा के प्रश्नपत्रों के ही उत्तर देने चाहिए।

* * *

हिन्दी प्रेमियों का शुभागमन—

८, ९, १० अप्रेल को मद्रास का हिन्दी यात्री दल लाहौर में आया। लाजपतराय भवन में उनके उतारे का प्रबन्ध किया गया। रविवार प्रातःकाल आर्यसमाज मंदिर बच्छोवाली में, दलके नेता सत्यनारायण जी का प्रभावशाली व्याख्यान हुआ। सायंकाल पंजाब प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के प्रबन्ध में श्रीमती कुमारी लज्जावती जी के सभापतित्व में श्री पं० माखनलाल जी चतुर्वेदी जी का व्याख्यान हुआ। साथही मद्रास के हिन्दी यात्री दल के सदस्यों ने संक्षिप्त भाषणों द्वारा मद्रास में किये जारहे हिन्दी प्रचार के कार्य का संक्षिप्त परिचय जनता के सामने रखा। श्रीयुत प० माखनलाल जी चतुर्वेदी के प्रभावशाली व्याख्यान ने लाहौर के हिन्दी प्रेमियों में हिन्दी प्रचार के लिये राष्ट्रीयत्व की दृष्टि से विशेष स्फूर्ति पैदा की। इसी प्रकार मद्रासी भाइयों के क्रियात्मिक राष्ट्र-भाषा प्रेम ने भी पंजाबी जनता को हिन्दी भाषा अपनाने के लिये उत्साहित किया। विशेषतः दलकी महिलाओं के भाषण मार्मिक तथा हृदय स्पर्शी थे।

हम आशा करते हैं कि देश के अन्य प्रभावशाली हिन्दी तथा हिन्दी प्रचारक समय समय पर पंजाब में आकर हिन्दी प्रचार के आन्दोलन को प्रभावशाली तथा व्यापक बनाने में हमारा हाथ बटाएँगे।

* * *

उर्दू ही अदालत की भाषा होगी—

दिल्ली में अखिल-भारतीय हिन्दी-साहित्य-संमेलन का २३वां वार्षिक अधिवेशन सफलता के साथ समाप्त हो गया। इसका विस्तृत विवरण अन्य स्थान पर दिया गया है। प्रतिनिधियों की संख्या तथा प्रस्तावों और विविध परिषदों की दृष्टि से सम्मेलन का यह अधिवेशन, सम्मेलन के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी भी पहले अधिवेशन से कम नहीं था। हाँ, जनता की उपस्थिति तथा निर्वाचित सभापति के उपस्थित न होने के कारण हिन्दी प्रेमियों में असन्तोष तथा निराशा का भाव दिखाई देता था। इस कमी को दिल्ली के उर्दू-प्रेमी कट्टर मुसलमानों ने जामा मसजिद में दिल्ली के हिन्दी साहित्य सम्मेलन में स्वीकृत प्रस्तावों का विरोध कर पूर्ण कर दिया है। जामा मसजिद की सार्वजनिक सभा में दिल्ली के मुसलमानों ने हिन्दी को अदालती भाषा बनाने का विरोध किया है। स्थानीय मुसलमानों का यह विरोध दिल्ली में हुए अखिल भारतीय सम्मेलन का प्रभाव है। सम्मेलन के प्रस्ताव बहरे कानों पर नहीं पड़े। हम आशा करते हैं कि मुसलमानों का यह हिन्दी-विरोध हिन्दी-भाषा को अदालती भाषा बनाने के आन्दोलन में सहायक साबित होगा। जिन मुसलमानों ने हिन्दी भाषा का अदालती भाषा बनाने का विरोध किया है, उन्हें मालूम होना चाहिए कि यह कोई नई बात नहीं है। अकबर बादशाह के शासन-काल में हिन्दी ही अदालतों की भाषा थी। राजा टोडरमल ने बादशाह को ख़ुश करने के लिये अदालतों में उर्दू का चलन जारी किया था। आज भी पहाड़ी रियासतों तथा मराठा रियासतों में देवनागरी लिपि का अदालतों में प्रयोग होता है। ऐसे शब्दकोष भी तैयार हैं, जिनमें अदालतों से सम्बन्ध रखनेवाले शब्दों का संग्रह किया गया है। हिन्दी-भाषा-भाषी जनता को अपने कारोबार हिन्दी में करने चाहिए और अदालतों में हिन्दी को उचित स्थान दिलाने का यत्न करना चाहिए।

* * *

देवनागरी लिपि विस्तार आन्दोलन—

इस वर्ष अखिल-भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन ने ओझा-अभिनन्दन-ग्रन्थ प्रकाशित किया है। यह ग्रन्थ प्रसिद्ध ऐतिहासिक रा० ब० हीराचन्द गौरीशंकरजी ओझा की ७०वीं वर्षगांठ के उपलक्ष में प्रकाशित किया गया है। इस ग्रन्थ में भारत की भिन्न भिन्न भाषाओं के विद्वानों के लेख को देवनागरी लिपि में प्रकाशित किये गये हैं। इस सम्बन्ध में सम्मेलन के वार्षिक अधिवेशन में एक प्रस्ताव भी स्वीकार किया गया है। इस प्रस्ताव द्वारा ओझा-अभिनन्दन-ग्रन्थ से होने वाली आय को देवनागरी लिपि विस्तार आंदोलन में लगानेका निश्चय किया गया है। श्री ओझा जी ने अपने जीवन का बड़ा भाग देवनागरी लिपि के प्रचार में लगाया है। लिपिमाला नाम के ग्रन्थ ने संसार के भाषाशास्त्रियों को देवनागरी लिपि की श्रेष्ठता मानने पर बाधित किया है। सम्मेलन ने ओझा ग्रन्थ से होने वाली आय को इस विशेष कार्य के लिये नियत कर उचित कार्य ही किया है। हमारी सम्मति में इस समय देश में हिन्दी-साहित्य के प्रचार की अपेक्षा देवनागरी लिपि प्रचार की विशेष आवश्यकता है। विशेषकर पंजाब में इस समय देवनागरी लिपि-प्रचार की आवश्यकता बहुत अधिक है। पंजाब में देवनागरी लिपि के प्रचार होने पर हिन्दी-भाषा-सम्बन्धी समस्या स्वयं हल हो जायगी। हम आशा करते हैं कि पंजाब के हिन्दी-प्रेमी देवनागरी-लिपि-विस्तार के लिए विशेष यत्न करेंगे।

* * *

हिन्दी अध्यापकों पर अत्याचार—

[illegible] के मार्च मास के गत अङ्क में इण्डिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथा जँडियाला गुरु में हिन्दी पढ़नेवाली कन्याओं के साथ किये गये अन्यायपूर्ण व्यवहार का वर्णन किया गया था। अभी तक वह अन्याय दूर नहीं हुआ।

आज हमारे पास डिचकोट से निम्न लिखित पत्र प्राप्त हुआ है—

श्रीमान मान्यवर सम्पादक महोदय जी,

नमस्ते! डिस्ट्रिक्ट बोर्ड लायलपुर ने आज कल शिक्षा-विभाग में बड़ा ही अंधेर मचा रखा है। विशेषतः हिन्दू अध्यापकों पर ही कुठाराघात हुआ है। पुराने पुराने कर्मचारी (लेखनी के एक विन्दु से) पद च्युत कर दिये गये हैं। यहां पक्षपात और अन्याय की धारा बह रही है। डिचकोट डी. बी. मिडिल स्कूल में हिन्दी व संस्कृत आरम्भकाल ही से स्कूल के जन्म से चली आती थी। अब एक दम बन्द कर दी गई हैं और शास्त्री महोदय को खाली (कार्यमुक्त) कर दिया गया है। परन्तु शोक की बात है कि उर्दू, गुरमुखी, फारसी बराबर जारी हैं। हमने अधिकारियों की दृष्टि इस अत्याचार व अन्याय की ओर आकर्षित करने की प्रार्थना की है। कृपा करके आप बल पूर्वक आन्दोलन करें, ताकि हिन्दू व हिन्दी दुराग्रही लोगों से पादाक्रान्त होने से बच रहे और फिर हिन्दी व संस्कृत इस स्कूल में जारी हो जावे।

आपका शुभचिन्तक
गुलजारीलाल
तिथी २-४-३४ एम. बी. बी एस.
डिचकोट, लायलपुर

उक्त पत्र से पता लगता है कि गुरमुखी, फ़ारसी तथा उर्दू को अपना कर हिन्दी का बहिष्कार किया गया है। इस सम्बन्ध में डिचकोट की हिन्दी-भाषा-भाषी जनता को चाहिए कि शिक्षा विभाग के उच्च अधिकारियों के पास अपना आवेदन पत्र भेजें। लायलपुर शहर में हिन्दी प्रेमियों की पर्याप्त संख्या है। लायलपुर के हिन्दी प्रेमियों का विशेष कर्तव्य है कि लायलपुर ज़िले में हिन्दी अध्यापकों तथा हिन्दी विद्यार्थियों के हितों की रक्षा करें, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड में इसके सम्बन्ध में प्रश्न करें। यह सब कुछ करते हुए हमें याद रखना चाहिए कि हमारे यत्न तभी सफल होंगे यदि हम स्कूलों में हिन्दी पढ़ने वाले विद्यार्थियों की संख्या बढ़ा सकें। इसके लिये स्कूलों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों तथा उनके संरक्षकों के सामने हिन्दी भाषा के महत्व को विशेष रूप से रखने की आवश्यकता है।

* * *

साहित्यिक विजय पुरस्कार !

अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के २३ वें वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर श्रीयुत पण्डित जयचन्द्रजी विद्यालंकार को हिन्दी भाषा में "भारतीय इतिहास की रूप रेखा" नाम का ऐतिहासिक ग्रन्थ लिखने पर १२००) का मंगला प्रसाद पारितोषक भेंट किया गया है। इसी प्रकार श्रीमती चन्द्रावती जी एम. ए. धर्मपत्नी श्रीयुत प्रोफेसर सत्यव्रत जी विद्यालंकार को सेकसरिया पारितोषक स्त्री लेखकों में से सर्वोत्तम ग्रन्थ लिखने पर दिया गया है। हम दोनों विद्वानों को इस सफलता पर बधाई देते हैं।

* * *

मद्रास का हिन्दी-यात्री दल !

मद्रास के हिन्दी-प्रेमी-दल में संगठित हो कर राष्ट्रभाषा का अध्ययन करने के लिये भारत की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-यात्रा कर रहे हैं। दिल्ली-सम्मेलन में भी आप लोग सम्मिलित हुए थे। अब आप गुरुकुल तथा कन्या-महाविद्यालय-जैसी हिन्दी-प्रधान संस्थाओं में भ्रमण कर रहे हैं।

इस दल का इस सरस्वती-यात्रा करने का मुख्य उद्देश्य यह है कि वह हिन्दी-भाषा-भाषी प्रान्तों में भ्रमण करके, राष्ट्रभाषा के व्यवहारिक स्वरूप का साक्षात् अनुभव करें। किसी भी भाषा को जानने के लिये पुस्तकी अध्ययन की अपेक्षा व्यावहारिक संभाषण तथा उस भाषा का प्रयोग करनेवाले प्रान्तों में भ्रमण करना अधिक सहायक होता है।

मद्रासी भाइयों ने जिस उत्साह तथा लगन से हिन्दी-भाषा को अपनाया है वह प्रशंसनीय है। पंजाब के हिन्दी-प्रेमियों की ओर से हम मद्रासी भाइयों को स्वागत करते हैं।

* * *

कन्या-महाविद्यालय जालंधर का वार्षिकोत्सव—

ईस्टर के दिनों में कन्या महाविद्यालय जालंधर का वार्षिकोत्सव हुआ। यह विद्यालय हिन्दी-प्रचार तथा हिन्दी-साहित्य की दृष्टि से पंजाब में प्रतिष्ठित विद्यापीठ है। इसके वार्षिकोत्सव हिन्दी-साहित्य के जीवित जागृत मेले हैं। इस वर्ष से इस विद्यालय में अंग्रेज़ी का प्रभाव बढ़ने लगा है। हम इस उत्सव के अवसर विद्यालय के संचालकों तथा छात्राओं से कहना चाहते हैं कि उन्हें अपनी संस्कृति की रक्षा में विशेष रूप से कटिबद्ध होना चाहिए। उन्हें हिन्दी-साहित्य में विशेष स्थान प्राप्त करना चाहिए। इस वर्ष उत्सव के समय वहाँ की छात्राओं ने वीरता संचारी लाठी-संचालन आदि खेलों का प्रदर्शन कर, जहाँ भारत की मातृशक्ति की प्राचीन वीरतामयी महिमा को प्रकट किया है; वहाँ उन्हें विद्यालय में अंग्रेजी के बढ़ते हुए प्रभाव को रोककर, अपने विद्यापीठ को पंजाब की मातृ-संस्कृति तथा मातृ-भाषा का रक्षक प्रमाणित करना चाहिए। अंग्रेजी शिक्षा-दीक्षा, भारत में भोगवाद तथा अनुकरण शीलता की प्रवृत्ति को बढ़ा रही है। जालंधर-कन्या-महाविद्यालय-जैसे विद्यापीठ इस विष-संचारी लहर को रोक सकते हैं। आशा है विद्यालय के संचालक हमारे इस निवेदन पर ध्यान देकर वार्षिकोत्सव के बाद नये वर्ष का प्रारम्भ इन्हीं भावनाओं के साथ करेंगे।

* * *

हिन्दी, संस्कृत, अँगरेज़ी और गुरमुखी की शुद्ध बढ़िया छपाई के लिये नवयुग प्रेस मोहनलाल रोड लाहौर में पधारिए।

मैनेजर, नवयुग प्रेस।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"स्वामी-श्रद्धानन्द"

४० हज़ार पृष्ठों की छानबीन के बाद पूरी खोज, मेहनत, लगन और श्रद्धा के साथ लिखी गई

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्दजी की पूर्ण, प्रामाणिक, मौलिक और विस्तृत जीवनी

पृष्ठ संख्या ६५०   चित्र संख्या ३३   मूल्य सादी ३॥ रु०,   सजिल्द ४) रु० ।

पुस्तक के लेखक हैं :—

गुरुकुल-विश्वविद्यालय-कांगड़ी के सुयोग्य स्नातक, सुप्रसिद्ध सुविख्यात पत्र-सम्पादक

श्री० सत्यदेव विद्यालंकार

इस लिये पुस्तक की भाषा और लेखन-शैली के सम्बन्ध में कुछ कहने की आवश्यकता नहीं ।

पुस्तक के सम्पादक हैं :—

स्वामी जी के सुपुत्र, प्रसिद्ध राष्ट्रीय-पत्र 'अर्जुन' के सञ्चालक

प्रोफ़ेसर इन्द्र जी विद्यावाचस्पति ।

इस लिये उस की प्रामाणिकता के सम्बन्ध में सन्देह करने की गुञ्जायश नहीं ।

यह जीवनी आशावाद की एक मनोहर कहानी है । एक युगनिर्माता के पुरुषार्थ की मनोरञ्जक गाथा है । अमर-शहीद के महान बलिदान की सुन्दर आख्यायिका है ।

विजय-पुस्तक-भंडार ['अर्जुन' कार्यालय],
श्रद्धानन्द बाज़ार, देहली ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-परीक्षा-परिशिष्ट

हिन्दीरत्नपरीक्षा

नाटकपत्र

समय ३ घंटे पूर्णाङ्क १००

१. निम्नलिखित पात्रों का परिचय दो, तथा उन के चरित्र की समीक्षा करो:—
शैव्या, विश्वामित्र, अमरसिंह, मानसिंह, सैरन्ध्री। १५

२. निम्नलिखित पद्यों का सप्रसंग अर्थ करो:— २०

(क) चारहुं आश्रम वर्ण वसैं, मनि कंचन धाम अकास विभासिका।
शोभा नहिं कहि जाय, कछु विधि ने रचि मानो पुरीन की नासिका॥
आयु वसै गिरधारन जू तट देवनदी वर वारि विलासिका।
पुण्य प्रकासिका पाप विनासिका हीय हुलासिका सोहत कासिका॥

(ख) वा चकई को भयो चित चीतो चितौति चहुँदिसि चाप सों नीची।
ह्वै गई छीन कलाधर की कला जामिनि जोति मनो जम जाँची॥
बोलत वैरि विहँगम देव संयोगिन की भई संपति काँची।
लोहु पियो जो वियोगन को, सो कियो मुख लाल पिशाचन प्राची॥

(ग) फूल बोझहू जिन न सहारे। तिन पै बोझ काठ बहु डारे॥
सिर पीड़ा जिन की नहिं हेरी। करत कपाल क्रिया तिन केरी॥
छिनहुँ जे भए कहुँ न्यारे। तेहुँ बंधुन छोड़ सिधारे।
जो दृग कोर महीप निहारत। आज काक तेहिं भोज विचारत॥

(घ) खल गनन सो सज्जन दुखी मत होंई, हरिपद रति रहैं।
उपधर्म छुटैं सत्व निज भारत गहे, कर-दुख वहैं॥
बुध तजहिं मत्सर, नारि नर सम होंहि सब जग सुख लहैं।
तजि ग्राम कविता सुकविजन की अमृत सब कहैं॥

३. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के वारे में तुम क्या जानते हो। उस की कविता तथा शैली की समालोचना करो। ७

४. 'प्रताप प्रतिज्ञा' से प्रतापकालीन सामाजिक तथा राजनीतिक अवस्था पर क्या प्रकाश पड़ता है? क्या राणा प्रताप का पहले अधीनता स्वीकार करके पुनः शनैः २ हिन्दु शक्ति एकत्रित करना उचित न था? ८

५. इन वाक्यों के भावार्थ सरल हिन्दी में लिखो—प्रसंग भी बताओ। १५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(क) क्या अत्याचारियों के उन्मत्त मस्तक छिन्न करने की शक्ति भीरु राणा के कम्पित करों में है ?

(ख) कहां है ईश्वर ! वह तुम्हारा भ्रम है। जो है ही नहीं—वह निष्ठुर कैसा। यदि ईश्वर होता तो ये दिन न देखने पड़ते।

(ग) वज्रपात हो गया। भारतवर्ष के अन्धकारमय दुर्भाग्य में आप का स्वाभिमान एकमात्र तेजस्वी दीपक था। हमारा जीवनाधार प्रकाश था। क्या उसे इस दुर्दिन में क्षण भर को भी बुझना सोहता है।

(घ) उष्ण रक्त अगणित अरियों का—बार २ कर पान।
चमकी है कितने युद्धों में—तेरी तीक्ष्ण कृपाण ॥

(ङ) दीपशिखा देखो है सामन्त ! बुझने के पहले यह एक बार वेग से जल उठती है और फिर उसी क्षण सदा के लिये बुझ जाती हैं। वह अपने जीवन के बचे खुचे स्नेह का—सर्वस्व का बलिदान कर अन्तिम समय आत्मा को एक ही बार व्यक्त कर देती है। ५

६. पूवभारत में दुर्योधन तथा युधिष्ठिर का जैसा चरित्र चित्रण किया गया है, उसे अपने शब्दों में लिखो। राजनीतिक दृष्टि से दोनों में कौन अधिक बुद्धिमान तथा कुशल था ?

७. निम्नलिखित वाक्यों के सप्रसंग भावार्थ लिखोः— २०

(क) अब मैंने जाना आपने राजनीति के सिद्धान्तों पर पूर्ण ध्यान दिया। मैंने विश्वासपात्र पुरोचन के द्वारा वारणावत में एक लाक्षागृह—निर्माण का प्रबन्ध किया है।

(ख) नित उद्योग स्वकर्म रत परधन प्रीति न जौन।
सरनागत को पालियो वैभव लक्षण तौन ॥
दच्छ विपत्ति विथा सहै—धरै नित्य उत्साह ॥
होय अमत्त विनीत सो—पावै मोद अथाह ॥

(ग) बेटा तुम लोगों का यही संकट ज्ञान—चक्षु से देख कर मैं इधर अकस्मात् आया हूँ। और तू हे पुत्री चिन्ता मत कर। लोक रीतियां साधारण जन समुदाय के लिए हैं—नकि अलौकिक चरित्रों के लिये। इस लिये तेरी आज्ञा ही पुत्रों के लिये धर्म शास्त्र है।

(ङ) चलै वाण मेरे जबै प्राण हारी,
गदा-शक्ति त्यों भिंडपालौ निहारी।
सबै शत्रु छोड़ै तबै आस जी की,
कहा सव्य साची, कहा भीम हो की॥

८. 'शैव्याविलाप,' 'प्रताप मृत्यु,' तथा 'द्रोण की शिष्य परीक्षा'—इन में से किसी एक पर यथा शक्ति काव्य शैली के अनुसार सुन्दर रचना करो। १०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी रत्न परीक्षा

पद्यपत्र

समय ३ घण्टे पूर्णाङ्क १००

१. इन पद्यों के अर्थ लिखोः— २५

(१) नहिं कठिनाइयों में वीर लौं कायर ठहर पाते।
सुहागा आंच खाकर, कांच के ऐसा ढलेगा क्या॥

(२) वेगहि उठि सिंहासन कौं प्रनाम नृप कीन्हों।
रोहिताश्व बालकहिं महिषि शैव्यहिं संग लीन्हों॥
चले राज तजि हरष विषाद न कछु उर आन्यों।
भूलि भाव सब और एक ऋण भँजन ठान्यो॥

(३) धर्मवद्ध हो जननि! आज तुझको तजता हूं।
निश्चिन्तित हो दिव्य दीनता मैं भजता हूं॥
किन्तु मृत्यु पर्यन्त भी, माँ मेरे ये प्राण।
रखेंगे गौरव सहित, मातृ भूमि का ध्यान॥

(४) जिस पृथिवी में मिले हमारे पूर्वज प्यारे।
उससे हे भगवान् कभी हम रहें न न्यारे॥
लोट लोट कर वही हृदय को शान्त करेंगे।
उसमें मिलते समय मृत्यु से नहीं डरेंगे॥

(५) सत्संग सन्त सुर पूजन धेनुप्रेम
श्रीराम कृष्ण चरितामृत पान नेम।
सौजन्यभाव गुरु सेवन आदि प्यारे,
सम्पूर्ण शील शुभ पावहि देशवारे।

(६) उषा में तुम कलित कञ्ज हो तथा निशा में कुमुद ललाम।
आते दिन में तुम दिनकर बन, स्तब्ध निशा में शशि अभिराम॥
एक पुष्प में अतुलित उपवन, एक बिन्दु में अब्धि अपार।
एक छन्द में अखिल काव्य तुम, एक व्यक्ति में हो संसार॥

२. कबीर, सूर, तुलसी के बारे में तुम क्या जानती हो? संक्षिप्त चरित्र लिखो। प्रत्येक कवि का एक एक पद्य लिखो। २०

३. निम्न पद्यों का अर्थ करोः— २०

(१) जो तोको कांटा बुवै, ताहि बोव तू फूल।
तोहि फूल को फूल हैं, वाको है तिरसूल॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) सुपने में साँई मिले, सोवत लिया जगाय ।
आंखि न खोलूं डरपता, मन सुपना है जाय ॥

(३) मेरो मन अनत कहाँ सुख पावै ।
जैसे उडि जहाज़ को पंछी फिरि जहाज़ पै आवै ॥
कमल नयन को छाड़ि महातम, और देव को ध्यावै ।
परमगंग को छाड़ि पियासो, दुर्मति कूप खनावै ॥
जिन मधुकर अंबुज रस चाख्यो, क्यों करील फल खावै ।
सूरदास प्रभु कामधेनु तजि छेरी कौन दुहावै ॥

(४) मैया मेरी मैं नहिं माखन खायो ।
भोर भई गैयन के पीछे मधुवन मोहि पठायो ॥
चार पहर बंसीवन भटक्यो, सांझ परे घर आयो ।
मैं बालक बहियन को छोटो छीको किहि विधि पायो ॥

४. सुग्रीव—बालि कथा अपने शब्दों में लिखो । क्या श्रीरामचन्द्र जी का बालि को छिप कर मारना उचित था ? १०

५. निम्न लिखित पद्यों का सप्रसंग अर्थ करोः— ३०

(१) माया ईश न आपु कँह—जान कहिय सो जीव ।
बन्ध मोक्ष प्रद सर्व पर—माया प्रेरक सीव ॥

(२) कबहुं निकट पुनि दूरि पराई—कबहुंक प्रकट कबहुं दुरिजाई ।
प्रकटत दुरत करत छल भूरी—यहि विधि प्रभुहि गऊ लै दूरी ॥
तब तकि राम जटिल शर मारा—धरणि परेउ करि घोर चिकारा ।
लक्ष्मण कर प्रथमहिं लै नामा—पाछे सुमिरसि मन मँह रामा ॥

(३) जे न मित्र दुख होंई दुखारी—तिनहिं विलोकत पातक भारी ।
निज दुख गिरि सम रजके जाना—मित्र के दुख रज मेरु समानाः ॥
जिनके अस मति सहज न आई, ते शठ हठ कत करत मिताई ।
कुपथ निवारि सुपन्थ चलावा, गुण प्रगटै औगुणहिं दुरावा ॥

(४) चले सकलवन खोजत—सरिता सर गिरि खोह ।
राम काज लवलीन मन—बिसरा तनुकर छोह ॥

(५) प्रणत पाल रघुवंशमणि, करुणासिन्धु खरारि ।
गये शरण प्रभु राखि हैं, तव अपराध विसारि ॥

(६) सीता तैं मम कृत अपमाना । करिहौं तब शिर कठिन कृपाना ॥
नहिं तो सपदि मानु मम बानी । सुमुखि होत न तु जीवन हानि ॥
श्याम सरोज दाम सम सुन्दर । प्रभु भुज करि कर सम दशकन्धर ॥
सोई भुज कण्ठ कितव असिघोरा । सुनु शठ अस प्रमाण प्रण मोरा ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७. नाम पाहरु दिवस निशि—ध्यान तुम्हार कपाट।
लोचन निज पद पत्रिका—प्राण जांहि केहि बाट॥

(८) ताकह प्रभु कछु अगम नहीं—जापर तुम अनुकूल।
तव प्रताप बडवानलहिं—जारि सके खल तूल॥

६. लंका में सीता जी किस अवस्था में रहीं ? उन्होंने किस तरह पतिव्रत धर्म का पालन किया ? अपने शब्दों में उनका चरित्र चित्रित करो। ५

हिन्दी-रत्न परीक्षा

इतिहास पत्र

समय ३ घंटे पूर्णाङ्क १००

१. भारतवर्ष के प्राचीन साहित्य के सम्बन्ध में तुम क्या जानती हो। मनुस्मृति में किन २ मुख्य विषयों का प्रतिपादन है। १०

२. बौद्ध धर्म का उदय किस कारण से हुआ। इसके प्रचार के क्या हेतु थे ? भारत वर्ष में इस धर्म का ह्रास किन कारणों से हुआ ? १०

३. पोरस–मीनान्दर–पुष्पमित्र–पतञ्जलि–कनिष्क के सम्बन्ध में तुम क्या जानती हो ? १५

४. महमूद गज़नी के मुख्य हमलों का वर्णन करो। मुहम्मद गोरी तथा महमूद गज़नी के हमलों में क्या भेद है ? १०

५. अल्लाउद्दीन खिलजी अथवा मुहम्मद तुगलक के राज्य शासन का संक्षेप से उल्लेख करो। १०

६. अकबर ने कौन २ से विजय प्राप्त किये ? औरङ्गज़ेब की शासननीति से उसकी नीति में क्या अन्तर था ? मुगल साम्राज्य के ह्रास के क्या मुख्य कारण थे ? १०

७. इन पर नोट लिखोः—किन्हीं पांच पर— १५
हर्षवर्धन–कालिदास–तैमूर–पद्मिनि–चन्द्रगुप्त द्वितीय मेगस्थनीज–फाइहान–अल्तमश–रज़िया शंकराचार्य।

८. सम्राट् अशोक ने बौद्ध धर्म किस कारण ग्रहण किया। उसने धर्म प्रचार के लिए किन साधनों का प्रयोग किया। उसके शासन प्रबन्ध के बारे में तुम क्या जानती हो ? १०

९. शिवा जी ने मुगलों पर कौन २ से विजय प्राप्त किये ? उसकी शासन प्रणाली के बारे में तुम क्या जानती हो ?

अथवा

शिवाजी का बाल्यकाल किन अवस्थाओं में व्यतीत हुआ ? उनको किससे, कैसी शिक्षा प्राप्त हुई ? शिवाजी ने हिन्दु धर्म तथा जातीयता की रक्षा के लिए क्या २ कार्य किये। १०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-रत्न परीक्षा

गद्य पत्र

समय ३ घंटे पूर्णाङ्क १००

१. महाभारतान्तर्गत इन व्यक्तियों का परिचय दोः— १५
एकलव्य–भूरिश्रवा–शल्य–अश्वत्थामा–सञ्जय–बृहन्नला–जयद्रथ–सात्यकि।

२. महाभारत युद्ध के कारणों की समीक्षा करो? क्या इसे धर्मयुद्ध कहना उचित है या कूट युद्ध? इस युद्ध के क्या परिणाम हुए। १०

३. महाभारतकालीन सामाजिक अवस्था कैसी प्रतीत होती है? स्त्रियों की उस समय क्या स्थिति थी? अपने पक्ष को युक्तियों से पुष्ट करो। १०

४. पाण्डु की मृत्यु क्यों हुई? माद्री का सती होना क्या उचित था? द्रौपदी के क्यासचमुच पाँच पति थे? यदि थे–तो यह प्रथा क्या धर्म सम्मत है? १०

५. दुर्योधन तथा भीम के परस्पर विरोध की प्रारम्भ से अन्त तक पूर्ण विवेचना करो? क्या गदा से घुटना तोड़ना धर्मानुकूल था? १०

६. श्रीकृष्ण ने पाण्डवों का पक्ष क्यों लिया? क्या वे युद्ध के पक्ष मे थे या विपक्ष में? युद्ध में उन्होंने क्या २ कार्य किये? १०

७. 'ताई!' कथा संक्षेप से अपने शब्दों में लिखो। १०

८. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के बारे में तुम क्या जानते हो। उनका हिन्दी-साहित्य में कौन सा स्थान है? १०

९. निम्नलिखित वाक्यों का सप्रसंग अर्थ करोः— १५

(क) अभीतक तेज नहीं गया। विष का दाँत उखड़ गया, मगर फुफकार कम नहीं हुई।

(ख) दीनों को सता कर उनकी आह से कौन मूर्ख अपने स्वर्गीय जीवन को नारकीय बनाना चाहेगा? कौन ईश्वर विद्रोह करने का दुःसहास करेगा? गरीब की आह कभी निष्फल नहीं जाती।

(ग) कुसंग का ज्वर सब से भयानक होता है वह केवल सद्वृत्ति का ही नाश नहीं करता, बल्कि बुद्धि का भी क्षय करता है।

(घ) जीवन का अर्थ वाह नहीं, आह है, हँसी नहीं रोदन है।

(ङ) कर्म सातत्य का अवाधित नियम बतला कर श्रीकृष्ण फलत्याग पूर्वक कर्म करने का उपदेश देते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-रत्न परीक्षा

व्याकरण पत्र

समय ३ घंटे

पूर्णाङ्क १००

१. व्युत्पत्ति के विचार से शब्द कितने प्रकार के हैं ? उन्हें उदाहरण सहित स्पष्ट करो । अविकारी शब्द किसे कहते हैं और वे कौन कौन से हैं ? १०

२. भाववाचक संज्ञा के लक्षण लिखो। वह कितने प्रकार के शब्दों से बनती हैं ? उदाहरण देकर समझाओ। १०

३. पुलिंग से स्त्रीलिंग बनाने के नियम लिखो। इन शब्दों के स्त्री लिंग रूप बनाओः—स्वामी, विद्वान, बुद्धिमान्, आचार्य, गुरु, शूद्र । १०

४. सम्प्रदान तथा कर्म में एवं कारण तथा अपादान में क्या अन्तर है। कौन, कोई, मैं का उच्चारण सब कारकों में लिखो। १०

५. इन परिभाषाओं को लक्षण सहित स्पष्ट करोः— १५

१. पुरुषवाचक सर्वनाम
२. संख्या वाचक विशेषण
३. सार्वनामिक विशेषण
४. उत्तमावस्था
५. प्रेरणार्थक क्रिया
६. कृत-तद्धित प्रत्यय
७. परिमाणवाचक क्रिया विशेषण
८. योजक तथा सम्बन्धक में भेद

६. क्रिया के कितने भेद हैं ? काल कितने हैं ? भूतकाल के भेदों को उदाहरण सहित स्पष्ट करो। १०

७ बहुव्रीहि तथा कर्मधारय समास को समझाओ। इन समस्त शब्दों में समास पहचानोः—हथकड़ी, कन्या विद्यालय, घनश्याम, त्रिभुवन, प्रतिदिन, महात्मा, दिनरात, अपुत्र। १०

८. निम्नलिखित वाक्यों का पदपरिचय तथा वाक्य विग्रह करोः— १५

१. जो धैर्य से काम करते, वे अवश्य सफल होते हैं।
२. सीता ने कहा कि दारुण कष्ट सह कर भी बन जाऊँगी।

९. इन लोकोक्तियों का वाक्यों में प्रयोग करोः— ५

बाल की खाल उतारना, मन के लड्डू खाना, लोहा मानना, स्वाहा करना, हथियार डाल देना।

१०. निम्नलिखित शब्दों को शुद्ध करके लिखोः—

लक्ष्मन, रिगवेद, वैष, दुर्योधन, सरवत्तकुमार, रमायन, पुज्यनीय, आग्याकारनी, दुखी, महानता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-रत्न परीक्षा

निबन्ध-पत्र

समय ३ घंटे पूर्णांक १००

१. किसी एक पर निबन्ध लिखो :— ५०

(क) भूषण पहनने के लाभ तथा हानियाँ।

(ख) आदर्श कन्या।

(ग) विद्या।

(घ) छत्रपति शिवाजी।

(ङ) दीपमाला।

२. 'ग्राम्य-जीवन तथा नगर जीवन' में कौन उत्तम है ? अपने विचार युक्ति-सहित प्रकाशित करो। १५

३. 'हिन्दी-रत्न में तुमने क्या-क्या पढ़ा'—यह सूचना एक पत्र में अपने पिताजी को भेजो। क्या तुम हिन्दी-भूषण में भी पढ़ोगी ?—इस विषय में भी पिताजी से आज्ञा ग्रहण करो। १५

४. रिक्त स्थान पूरे करो :— ५

(क) ······अर्जुन के जिस गाण्डीव······से······राक्षसों का प्राणान्त हुआ···बेकाम हुआ।

(ख) हमारे······जनता······अभी पत्रों का उतना······नहीं है, जितना······चाहिए।

५. 'एक स्वप्न'—इस पर २० पंक्तियाँ लिखो। १५

हिन्दी-भूषण-परीक्षा

नाटकपत्र

समय ३ घण्टे पूर्णाङ्क १००

१. सुमति के पति का क्या नाम था ? पत्नी का प्रतिघात करना कहाँ तक उचित था ? सुमति ने दुर्गावती को क्या सहायता दी ? ५

२. दुर्गावती के पराजय के क्या कारण थे ? उस का चरित्र अपने शब्दों में चित्रित करो। अधारसिंह कौन था ? ५

३. इन का सप्रसंग अर्थ करो:— १०

(क) लोहा अकेला पेड़ को, कब काट सकता है भला।
जब तक कि लकड़ी का हथेला हो नहीं उस में सला॥

(ख) गिरा जो पेड़ से, फिर नहीं जुड़ सकता है फल।
भला कैसे हरा होगा, जो तरु पहले चुका है जल॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ग) अब तक जल को नहीं मारा, किसी ने आग से।
हम तो छल-बल से लड़ेंगे—इस विषैले नाग से ॥

(घ) अच्छा २, जैसे सीता और सावित्री ने पतिव्रत धर्म निबाहा था उस से भी बढ़ कर तुमने निवाहा।

(ङ) कर्म की रेख से या विधाता की इच्छा से पांसा उलटा पड़ गया। मन्त्री और सेनापति के साथ पुत्र ने भी वीर गति पाई।

४. गोपा ने संन्यास क्यों ग्रहण किया? बुद्ध चरित्र से स्त्रियों की धार्मिक स्थिति पर क्या प्रकाश पड़ता है? ८

५. "स्वामी, स्वार्थ, अर्थ, परमार्थ-सब कुछ मेरा तुम्हीं हो। मैं तुम्हारी अनुगामिनी दासी हूँ।" यह वाक्य किसने किस को कहा। इस के आशय की विवेचना करो। ७

६. सप्रसंग निम्न के भावार्थ लिखोः— १०

(क) देश देश में घूम घूम कर आओ करें प्रचार।
जरा मरण भव का न रहा भय सहज हुआ उद्धार॥
क्रान्ति शान्ति-मय, भ्रान्ति मिटा कर, सजग करे संसार।
करुणासिन्धु भक्त-वत्सल का है उपदेश उदार॥
निर्विकार, निर्लिप्त, निरञ्जन, धन्य बुद्ध अवतार॥

(ख) समझ गया यह शरीर जल बिम्ब के समान है।

(ग) नरेश! पुत्र की कामना से अगर जगदम्बा की आराधना करते हो, तो फिर उस में कोटि२ प्राणियों के बध की क्या आवश्यकता?

(घ) किन्तु देव पूजा में तो जीव हिंसा किये बिना काम नहीं चल सकता।

(ङ) पूज्य पितृदेव! पुत्र को अपनी संपत्ति दीजिए। मेरा जन्म सार्थक है, मेरे पिता भुवनपालक हैं।

७. 'अभिज्ञान शकुन्तला' नाम का अर्थ लिखो। शकुन्तला नाटक में जो अत्यन्त रोचक स्थल है, उस को अपने शब्द में चित्रित करो ८

८. कालिदास की सब कृतियों में शकुन्तला नाटक सर्वोत्तम है—इस कथन का समर्थन युक्ति सहित करो। कवि के भावगाम्भीर्य, भाषास्वारस्य तथा नाटक शैली का विवेचन करो। कालिदास के जीवन का भी संक्षिप्त परिचय दो। ५

९. इन के उक्ति प्रत्युक्ति प्रतिपादन पूर्वक अर्थ करोः— १५

(क) झुकि कन्ध रहे लिये गागरिया, भई लाल हथेली दुहु कर की।
उचके कुच जानि परें, अजहूँ बढ़िश्वास गई छतिया धर की॥
मुख छाप पसीनन बून्द रहीं—न हिले न झुलै फुलवातर की।
कर एक लिये बिथुरी अलकें [illegible] की [illegible] सर की॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ख) शुश्रूषा गुरुजन की कीजै। सखिभाव सौतन में लीजो।
भरता यदपि करे अपमाना। कुपित होई गहियो जिन माना॥
मितभाषिणि दासिन संग रहियो। बड़े भागि पै गर्व न लहियो।
या विधि गेहिनि पद पावैं। उलटी चलि कुल दोष कहावैं॥

(ग) ईंधन के टारे बिना, बढ़ति न पावक लोई।
फण न उठावत नागहू जो छेडयो नहि होय॥
नर न लेत अभिमान मन विना छोभ कछु पाय।
कहिय इन तीनोन के बहुधा यही सुभाय॥

(घ) हाँसी बिन हेत मांहि दीखत बतीसी कछु।
निकसी मनो हैं पाँति ओ छो कलिकान की।
बोलन चलत बात निकसी जाति टूटी सी॥
लागति अनूठी मीठी बानी तुतलान की॥

(ङ) पर घर को धन धीय, पठै ताहि घर पीवके।
आज विमल मम हीय, फेरि धरोहरि जिमि दई॥

१०. क्या धर्म तथा राजनीति की दृष्टि से जयद्रथ का वध उचित था? जयद्रथ की संक्षिप्त कथा अपने शब्दों में लिखो। ७

११. सप्रसंग भावार्थ लिखो:— ८

१. रिपुवध में मुझ से हुई—काल भ्रम से भूल।
विधि वञ्चित अब क्या करूँ—सहता हूँ दुःख शूल॥

२. आयुध अपने रोक लो—अब छिप गया पतंग।
हुई कौरवों की विजय—पार्थ प्रतिज्ञा भंग॥

१२. इन पर टिप्पणियां लिखो:—

१. अभिमन्यु, शंकुकर्ण—कण्व—पृथ्वीराज—राहुल। १०

हिन्दी भूषण परीक्षा

पद्यपत्र

समय ३ घण्टा पूर्णाङ्क १००

१. सूरदास की कविता में किस रस की प्रधानता है? उनकी भाषा में कौन से विशेष गुण हैं? उनकी कोई दो कवितायें उद्धृत करो। ८

२. सूर और तुलसी की तुलना करो। हिन्दी साहित्य में इन दोनों का कौन सा स्थान है? सूरदास के जीवन का संक्षिप्त परिचय भी दो। ७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

३. (१) (२) (३) (४) ४. ५. (१) (२)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३. इन पद्यों के अर्थ लिखो। इनमें अलंकार भी बताओ तथा रेखाङ्कित नामों की कथाएँ स्पष्ट करोः— १५

(१) जो पै तुमही विरद बिसारो।
तो कहो कहां जाऊँ करुनामय कृपन करम को मारो।
दीनदयालु पतित पावन जसु वेद बखानत चारो॥
सुनियत गाथा पुराननि गनिका, व्याध अजामिल तारो॥

(२) हरिदासन की सबै बड़ाई।
अम्बरीष द्विज दुरवासा चक्र छांड़ि के कूक पराई॥
दानव दुष्ट असुर को बालक, ता हित सब मरजादा ढाई।
भगत राज कुन्ती के सुत हित रथ चढ़ि आपुन लीने लड़ाई॥

(३) हरि को बाल रूप अनुरूप।
निरखि रहि ब्रजनारि इक टक अंग अंग प्रति रूप॥
विधुरि अलकै रहैं बदन पर, बिनहि पवन सुभाई॥
देखि खंजन चन्द के बस, करत मधुप सहाई॥

(४) विधातहिं चूक परी मैं जानी।
आजहुँ गोविन्दहि देखि २ हौं इहे समुझि पछितानि।
रचि पचि सोचि संवारि सकल अंग चतुर चतुरई ठानि॥
दीठि न दई रोम रोमनि प्रति इतनिहिं कला न सानी॥
कहा करों अति सुख, दुई नैना उमंगि चलत भरि पानी।
'सूर' सुमेर समाई कहाँ धौं बुधि बासनी पुरानी॥

४. शिवा बावनी से तत्कालीन भारत की कैसी राजनैतिक तथा सामाजिक अवस्था प्रतीत होती है? भूषण का काल तथा संक्षिप्त चरित्र लिखो। १०

५. अलंकार बतला कर अर्थ लिखो—छन्द भी बतलाओ १०

(१) उतै पातसाह जू के गजन के ठट्ट छूटे—उमडि उमडि मतवारे घन कारे हैं।
इतै सिवराज जू के छूटे सिंहराज औ—विद्दारे कुम्भ करिन के चिक्करत भारे हैं॥
फौजे सेख सैयद मुगल और पठानन की, मिलि इखलासखा हूं मीर न संभारे हैं।
हद्द हिन्दवान की विहद्द तरवारि राखि—कैयो बार दिल्ली के गुमान झारि डारे हैं॥

(२) मारि करि पातसाही खाकसाही कीन्हीं जिन,
जेर कीन्हों जोर सों लै हद्द सब मारे की।
खिसि गई सेखी फिसि गई सूरताई सब,
हिसि गई हिम्मत हजारी लोग सारे की॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बजत दमामें लाखों धौंसा आगे गहरात,
गरजत मेघ ज्यों बरात चढ़े भारे की ॥
दुलहो सिवा जो भयो दच्छिनी दमामे वारे
दिल्ली दुलहिन भई सहर सितारे की ॥

६. रामायणान्तर्गत सती की कथा अपने शब्दों में लिखो। रामचन्द्र जी का जन्म किन अवस्थाओं में हुआ और किस लिये हुआ? ५

७. इन पद्यों का सप्रसंग अर्थ लिखोः— २५

(१) राम नाम मणि दीप धरु—जीह देहरी द्वार।
तुलसी भीतर बाहिरो—जो चाहसि उजियार ॥

(२) सूख हाड़ ले भाग शठ—श्वान निरखि मृगराज।
छीन लेई जनि जान जड़—तिमि सुरपतिहिं न लाज ॥

(३) मांगेहु भूमि धेनु धन कोषा। सर्वस देऊँ आज तँजि रोषा ॥
देह प्राण ते प्रिय कछु नाहिं। सोउ मुनि देहुँ निमिष यक मांहि ॥
सब सुत प्रिय मोहि प्राणकि नाईं। राम देत नहिं बने गुसाईं ॥
कंह निसिचर अति घोर कठोरा। कहँ सुन्दर सुत परम किशोरा ॥

(४) गिरा मुखर तनु अर्ध भवानी। रति अति दुखित अतनु पति जानि ॥
विष वारुणी बन्धु प्रिय जेहि। कहिय रमा सम किमि वैदेही ॥
जो छबि सुधा पयोनिधि होई, परम रूप भये कच्छप सोई।
शोभा रजु मन्दर शृङ्गारु, मथै पाणिपङ्कज निज मारु ॥
यहि विधि उपजै लक्षि जब—सुन्दरता सुख मूल।
तदपि संकोच समेत कवि—कहहिं सीय सम तूल ॥

(५) देखि व्याधि असाध्य नृप—परेउ धरणि धुनि माथ।
कहत परम आरत बचन—राम राम रघुनाथ ॥

(६) नर अहार रजनिचर करहीं, कपट वेष विधि कोटिक धरहीं।
लागे अति पहाड़ कर पानी, विपिन विपति नहिं जानि वखानी।
व्याल कराल विहंग बन घोरा बन घोरा, निशिचर निकर नारि नर चोरा।
डरपहि धीर गहन सुधि आए, मृग लोचनि तुम भीरु सुभाए।

(७) नदी पनच शर शम दम दाना, सकल कलुष कलिसाउज नाना।
चित्रकूट जनु अचल अहेरी, चूक न घात मार मुठ मेरी।
अस कहि लषण ठांउ दिखरावा, बल बिलोकि रघुबर सुख पावा।

(८) राम दरश लगि लोग सब—करत नेम उपवास।
तजि तजि भूषण भोग सुख—जियत अवधि की आस।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८. कबीर जी का जीवन लिखो तथा उनकी बाणी भाषा, रस तथा गुण की दृष्टि से समालोचना करें। ५

९. अर्थ करोः— १०

(१) मारगि मोती बीथरे, अन्धा निकसियो आई।
जोति बिना जगदीश की, जगत उलंघे जाय॥

(२) जैसे मन्दर महि बलहर ना ठहरै, नाम बिना कैसे पार उतरै।
कुम्भ बिना जल न टिकावे, साधु बिना वैसे अवगतु जावै॥

(३) जननी जानत सुत बड़ा होत है, इतनाकु न जाने जि दिन २ अवधि घटत है।
मोर मोर करि अधिक लाड़ु धरि, पेखत ही जमराउ हँसै।
ऐसा जगु भरम लाइया, कैसे बुझै जब मोहिया है माइया॥

१०. तुलसी, सूर तथा कबीर सन्त कवि क्यों कहे जाते हैं ? इन्होंने हिन्दु धर्म की रक्षा तथा प्रचार में क्या भाग लिया ? ५

हिन्दी भूषण

व्याकरण पत्र

समय ३ घण्टे   पूर्णाङ्क १००

१. अनुस्वार, विसर्ग—स्वर है या व्यञ्जन ? अनुनासिक वर्ण कौन से हैं ? सन्धि स्वर किन्हें कहते हैं ? स्वराघात के दो उदाहरण दो।

२. (क) इनमें सन्धिच्छेद करो—भानूदय, सप्तर्षि, नयन, सन्तोष, सज्जन

(ख) इनमें सन्धि करो तथा नियम भी बतलाओः—
सदा+एव, सु+आगत, षट्+मास, गम्+गा निर्+रोग १०

३. सर्वनाम तथा विशेषण के सब भेदों के केवल नाम लिखो और विशेषण की तीन अवस्थाओं को उदाहरण सहित समझाओ। क्या कभी विशेषण शब्द सर्वनाम भी बनते हैं ? स्पष्ट करो। ७

४. प्रेरणार्थक क्रिया किसे कहते हैं ? प्रेरणार्थक तथा द्विप्रेरणार्थक क्रिया के बनाने के नियम लिखो। नामधातु से उपर्युक्त क्रियाओं का भेद स्पष्ट करो। ८

समुच्चय बोधक अथवा क्रिया विशेषण के सब प्रकारों का उदाहरण सहित उल्लेख करो। ७

६. उपसर्ग तथा प्रत्यय में क्या भेद है। इन शब्द युगलों का अन्तर स्पष्ट करोः—
उपकार—अपकार। अभिनय—विनय। उपयोग—अभियोग। आधि—व्याधि। उपहार—आहार। आदेश—सन्देश। ८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

७. समास तथा सन्धि में क्या भेद है ? द्विगु तथा कर्मधारय के भेद को समझाओ। अपादान

112372
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तत्पुरुष, समाहार द्वन्द, करण बहुव्रीहि का एक एक उदाहरण दो। इनमें समास पहिचानो:-
चन्द्रमौलि, गङ्गाजल, ठकुर सुहाती, आजन्म, पीताम्बर, चतुर्भुज पुरुषोत्तम १०

८. निम्न लिखित वाक्यों का विश्लेषण करो:— ७
(१) श्रीराम—जिनके चौदह वर्ष बन में व्यतीत हुए—अयोध्या में सुख पूर्वक वापिस आगये।
(२) जाको आयसु जग नृपति—सुनतहि धारत सीस।
तेहि द्विज वटु आज्ञा करत—सतत कठिन अति ईस॥

९. निम्न लिखित अलंकारों के भेद स्पष्ट करो:— १५
(१) उपमा—रूपक अतिशयोक्ति
(२) दीपक—तुल्ययोगिता
(३) अप्रस्तुत प्रशंसा—समासोक्ति
(४) भ्रान्तिमान्—सन्देह
(५) काव्य लिंग—अर्थान्तरन्यास

१०. निम्न अलंकारों के उदाहरण तथा लक्षण लिखो:— १०
प्रतीप, असंगति, तद्गुण, मीलित, प्रतिवस्तूपमा

११. इनमें अलंकार पहचान कर लिखो:— १०
(१) तुम बिन रघुकुल कुमुद विधु, सुर पुर नरक समान॥
(२) रनमध्य राम ऐसो कौतुक करत आज—
बाननि के संग छूटे प्राण दनुजन के॥
(३) पहिरे श्याम न पीत पट—घन में विज्जु विलास॥
(४) सहृदय जन ही काव्य का लेते हैं आनन्द॥
पीते हैं अलिवृन्द ही—अमल कमल मकरंद॥
(५) मुनि तापस जिनते दुःख लहहीं—ते नरेश बिनु पावक दहहीं॥
(६) तन मन निज अर्पण करे पावे भक्ति अनन्य
(७) चन्दन विष लागे नहीं—लिपटे रहत भुजङ्ग।
(८) जो सबको सुख देत है—आज मोहि दुःख देत।
(९) कहँ सुकुमार सुवन दशरथ के, कँह कठोर अति रुद्र चाप।
(१०) ले उछंग कबहुँ हलरावै—कबहुँ पालने घालि झुलावै॥

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-भूषण परीक्षा

गद्यपत्र

समय ३ घंटा पूर्णाङ्क १००

१. 'अन्धेरी दुनिया' में रजनी के चरित्र से हिन्दू ललनाओं का आचार कैसा प्रतीत होता है ? क्या उसके पति ने पत्नी व्रत धर्म का पालन किया ? क्या रजनी का नेत्र रहित होना उसका सौभाग्य न था ? १०

२. 'संन्यासी' गल्प में संन्यासी कौन है ? उसे अन्त में क्या शिक्षा प्राप्त हुई ? सच्चा वैराग्य क्या है ? ५

३. रानी सारन्धा का पति हत्या करना क्या उचित था ? शीतला को क्या राजपूतनी कहा जा सकता है ? दोनों के चरित्रों की तुलना करो। १०

४. गुणसुन्दरी ने अपनी बहिन की सेवा में कौन सा कटु अनुभव प्राप्त किया ? 'मुस्कान' शीर्षक का क्या भावाशय है ? सामाजिक दृष्टि से क्या विधवा-विवाह हो जाना उचित नहीं ? १०

५. 'ताई' कथा से किस सत्यता का प्रकाश होता है ? क्या यह सत्य है कि नारी हृदय कोमल होते हुए भी अत्यन्त निर्दय होता है। ५

६. इन पर नोट लिखो:—

चम्पतराय, भैरव, तोता मैना, विहारी, नवीनचन्द्र। १५

७. आदर्श आर्य महिला में किन २ गुणों का होना आवश्यक है? सीता तथा सावित्री के पतिव्रत धर्म की समीक्षा करो। १०

८. 'चिन्ता' का चरित्र अपने शब्दों में लिखो १०

९. शैव्या तथा दमयन्ती में किसने अधिक दुःख सहन किया। हरिश्चन्द्र का शैव्या को वेच देना तथा नल का दमयन्ती का त्याग करना उचित था ? राम के सीता परित्याग की भी विवेचना करो। १०

१०. इनका सप्रसंग भावार्थ लिखो:—

१. शान्ति के लिये सेवा मार्ग की आवश्यकता है। पर्वत छोड़ और नगर जा। वहीं दुःखी जन रहते हैं। उनके दुःख दूर कर।

२. जीवन एक दुःखदायी स्वप्न था। बस जीवन का आधार एक अभिलाषा थी। एक सुखद स्वप्न जो न जाने कब उसने देखा था। एक वार फिर वह उसी स्वप्न को देखना चाहता था।

३. पतिव्रता स्त्री की उपलब्धि जिस प्रकार पति के लिए परम सौभाग्य का विषय है, एकान्त अनुरक्त पति की प्राप्ति भी पत्नी के लिए पूर्व कृत पुण्यपुंज की उतनी ही मधुर भेंट है।

४. नाथ ! स्त्री के हृदय को पुरुष नहीं समझ सकते ? रमणी के हृदय में तो वासना की, ज्वाला नहीं है। स्त्री विश्वास से भरी पवित्रता है।

५. पतिर्हि देवता नार्याः, पतिर्बन्धुः पतिः गुरुः।
प्राणैरपि प्रियस्तस्मात् भर्तुः कार्यं विशेषतः॥ १५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-भूषण-परीक्षा

इतिहास-पत्र

समय ३ घण्टे पूर्णांक १००

१. मैसूर की दूसरी लड़ाई अथवा तृतीय मरहट्टा युद्ध के कारण तथा परिणामों की विवेचना करो। १०

२. लॉर्ड केनिंग के शासन-सुधारों तथा वैण्टिक कालीन मुख्य घटनाओं का वर्णन करो। १०

३. प्लासी के युद्ध तथा ग़दर के कारणों पर प्रकाश डालते हुए बताओ कि इनका भारतीय राजनीतिक अवस्था पर क्या प्रभाव पड़ा ? १०

४. लॉर्ड डलहौज़ी ने कौन-से विशेष कार्य किये। उसने ब्रिटिश-राज्य का विस्तार किन उपायों से किया ? १०

५. इनमें से किन्हीं ७ पर नोट लिखो :—
रेगुलेटिंग एक्ट, हैदर अली, लॉर्ड ऑकलैंड, राघोबा, बक्सर का युद्ध, अल्बुकर्क, दोहरा शासन, नाना फड़नवीस, कर्ज़न, सिक्खों की पहली लड़ाई। २०

५. दुर्भिक्ष क्यों पड़ते हैं ? उनके दूर करने के क्या उपाय हैं ? अँगरेज़ी शासन की दुर्भिक्ष-नीति क्या है ? १०

७. भारत में कौन-कौन-से प्रान्त हैं ? पंजाब का शासन किस तरह होता है ? वर्त्तमान वायसराय तथा पंजाब-गवर्नर का क्या नाम है ? गुजराँवाला-म्युनिसिपैलिटी के आधीन कौन-कौन-से काम हैं ? १०

८. गौतम ने गृहत्याग क्यों किया ? उन्होंने सच्चा मार्ग कौन सा पता लगाया ? कौन-से मुख्य शिष्य उनके बने ? उनकी मृत्यु कहाँ, किस अवस्था में, किस तरह हुई ? १०

९. आर्य-चतुष्टय, अष्टाङ्ग-साधना तथा निर्वाण शब्दों से तुम क्या समझती हो ? इनकी व्याख्या करो। १०

हिन्दी-भूषण-परीक्षा

निबन्ध-पत्र

समय ३ घण्टे पूर्णांक १००

१. "पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं"—इस पर एक संक्षिप्त प्रस्ताव लिखो और बतलाओ कि यदि भारतवर्ष स्वतन्त्र हो जाय, तो उसमें कौन-कौन-से परिवर्तन हो जायँगे। १५

२. "सुखी गृह कौन-सा है ?"—इस विषय पर केवल २० पंक्तियाँ लिखो। यह भी स्पष्ट करो कि गृह में पत्नी का क्या स्थान होना उचित है ? १५

३. अपनी माताजी को पत्र लिखो, जिसमें उनको बाल-विवाह के दोषों के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट करो। १०

४. किसी एक पर निबन्ध लिखो :—
(क) स्वयंवर-प्रथा अथवा परदा-प्रथा। (ख) स्वावलंबन। (ग) सन्तोष अथवा अहिंसा। (घ) महात्मा बुद्ध। (ङ) मेरे जीवन का उद्देश्य। ५०

५. इन शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करो :—
किं कर्त्तव्य विमूढ़, सहानुभूति, तीन-तेरह, आँख लगाना, अभ्यस्त, प्रार्थनीय, सामंजस्य, प्रारम्भिक, चिन्तनीय, अभिप्रेत। १०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रभाकर

प्रश्न नं० १

नीचे लिखे विषयों में से किसी एक पर शुद्ध सरल हिन्दी में निबन्ध लिखोः—

(क) ब्रजभाषा और खड़ीबोली। (ख) हिन्दी साहित्य में नाटक। (ग) काव्यकला और चित्रकला (घ) भारत की वर्तमान दशा और उसका परिणाम। (ङ) क्या वर्तमान शिक्षापद्धति से भारतीय नारी का आदर्श स्थिर रह सकता है ?पंजाब में हिन्दी प्रचार के मार्ग में क्या बाधाएँ हैं ?

प्रभाकर

प्रश्न नं० २

१. (क) अत्यनुप्रास किसे कहते हैं ? उदाहरण सहित लिखो।

(ख) अन्तर्लापिका अथवा वहिर्लापिका का एक उदाहरण लिखो और उत्तको स्पष्ट समझाओ।

(ग) दृष्टिकूटक क्या है ? उसका एक उदाहरण लिखो।

किस कवि ने इसका विशेष प्रयोग किया है ?

(घ) मुक्तापदग्राह्य यमक (सिंहावलोकन) का एक उदाहरण लिखो।

(ङ) काकु-वक्रोक्ति का सोदाहरण वर्णन करो। यह शब्दालङ्कार है वा अर्थालंकार ? स्पष्ट लिखो। १०

२. (क) वाचकलुप्ता और धर्मलुप्ता उपमाओं के लक्षण सोदाहरण लिखो।

(ख) सांग रूपक का क्या लक्षण है ? उसके कितने भेद हैं ? एक उदाहरण देकर समझाओ। ६

३. निम्नलिखित पद्यों में अलंकार बताओ और लक्षण भी लिखकर इनमें समन्वय करोः—

(क) निरखि रूप नँदलालको दृगन रुचै नहिं आन।
तज पीयूष कोऊ करत कटु औषध को पान॥

(ख) जन्म सिन्धु पुनि बन्धु विष दिन मलीन सकलंक।
सिय मुख समतापावकिमि चन्द्र वापुरो रंक॥

(ग) जाके लोचन करत हैं कुवलय कंज प्रकास।
सोभाऊ भूपाल के करत हिये में वास॥

(घ) अमी हलाहल मदभरे श्वेत श्याम रतनार।
जियत मरत झुकि झुकि परत जिहि चितवत इकवार॥

(ङ) नृपति रामके राज्य में है न शूल दुखमूल।
लखियत चित्रन में लिखो शंकर के करसूल॥ १५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

४. अतिशयोक्ति, प्रतिवस्तूपमा, विभावना, इनके लक्षण उदाहरण सहित लिखो। ६

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५. (क) अपह्नुति अथवा निदर्शना के समस्त भेद सोदाहरण लिखो।
(ख) अप्रस्तुत-प्रशंसा, समासोक्ति और पर्यायोक्ति में परस्पर क्या भेद हैं? ९

६. (क) किस प्रकार की मनोवृत्ति से प्रेरित होकर मनुष्य काव्यरचना करता है?
(ख) रूपक और उपरूपकों के भेद और नाम बताकर भाण और व्यायोग के लक्षण लिखो। ८

७. (क) काव्यके कितने और कौन कौन से तत्त्व हैं जो उसके प्राण हैं?
(ख) साहित्य की आलोचना का क्या उद्देश्य है? ६

८. (क) रस कैसे अभिव्यक्त होता है? रस में और स्थायिभाव में क्या भेद है? किस किस रस के कौन कौन स्थायिभाव हैं?
(ख) विभाव, अनुभाव और व्यभिचारीभावों का स्वरूप वर्णन करके यह बताओ कि इनका क्या प्रयोजन है? १०

९. (क) त्रिभङ्गी, तोटक, पंचचमार, शिखरिणी, इनमें से कोई से दो छन्दों के लक्षण सोदाहरण लिखो।
(ख) बरवै और अतिबरवै में क्या भेद हैं?
(ग) प्रत्यय किसे कहते हैं? उद्दिष्ट प्रत्ययका एक उदाहरण देकर उसका उपयोग समझाओ। १२

१०. निम्नलिखित पद्यखण्ड किन किन छन्दों के उदाहरण हैं?
(क) चित्त में सुन्दरी क्रोध ना आनिये। (ख) हरि छवि देखो किन वसु जामा। (ग) गा तू सदा माधव की गुणावली। यत्ने कृते यदि न सिध्यति कोऽत्र दोषः। (ङ) शुभपाय मानुष जन्म दुर्लभ राम सीता गाइये। ५

प्रभाकर

प्रश्न नं० ३

१. बिहारी का जन्म कब किस देश में और किस कुल में हुआ? सतसई उन्होंने कब और कहाँ बनाई? इनकी हिन्दी किस प्रकार की है? इनकी कविता में कुछ अन्यभाषाओं के काव्य का प्रभाव पड़ा या नहीं? क्या बिहारी की कविता और भाषा पर कुछ दोष भी लगाये जाते हैं? इन सब विषयों पर एक लेख लिखो। १५

२. निम्नलिखित दोहों में से किन्हीं चार का सरल हिन्दी में अनुवाद करो; और इनमें अलङ्कार भी बताओः—

(क) खौरि पचन भृकुटी धनुष बधिक समर तजि कानि।
हनत तरुन मृग तिलक सर सुरकि भाल भरि तानि॥

(ख) नव नागरि तन मुलक लहि जोबन आमिल जोर।
घटि बढ़ते बढ़ि घटि रकम करी और की और॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ग) हरि छवि जल जवतें परे तवतें छिन विछुरें न।
भरत, ढरत, बूड़त, तिरत रहट-घरो लौं नैन॥

(घ) लिखन बैठि जाकी गहि गहि गरब गरूर।
भये न केते जगत के चतुर चितेरे क्रूर॥

(ङ) सुनत पथिक मुँह माह, निस लुवें चलत वहि गाम।
विन बूझे विन ही कहे जियत विचारी वाम॥

(च) दूरि भजत प्रभु पीठदै गुन विस्तारन काल।
प्रगटत निर्गुव निकट ही चंग रंग गोपाल॥ १२

३. निम्नलिखित पद्यखण्डों की व्याख्या करोः—
(क) जगत तपोवन सों कियो दीरघ दाघ निदाघ।
(ख) घरहि जँवाई लों घट्यौ, खरौ पूस दिनमान।
(ग) ज्यों ज्यों माथे मारिये त्यों त्यों ऊँचो होत।
(घ) सो ताको सागर जहाँ जा कीः प्यास बुझाय।
(ङ) वाज पराये पानीपर तू पंछी हि न मार। ५

४. (क) निम्नलिखित शब्दों का अर्थ लिखोः—
लांकं, मरुक, वटपरा, गहिली, जोंन्ह।
(ख) बिहारी का एक दोहा कोई ऐसा लिखो जिसके दो या तीन अर्थ होतें हों और उसकी व्याख्या करो। १०

५. निम्नलिखित पद्यों का सरल हिन्दी में अनुवाद करोः—
(क) लोकन की रचना रचिवे को जहीं परिपूरण बुद्धि विचारी।
है गये केशव दास तहीं सब भूमि अकाश प्रकाशित भारी॥
मुद्ध सलाक समान लसी अति रोष मयी दृग दीठि तिहारी।
होत भये तव सूर सुधाधर पावक शुभ्र सुधा रँग धारी॥

(ख) वासों मृग अंक कहैं तोसों मृगनयनी सब,
वह सुधाधर तुहूँ सुधाधर मानिये॥
वह द्विजराज तेरे द्विजराजि राजैं,
वह कलानिधि तुहूँ कलाकलित बखानिये॥
रत्नाकर के हैं दोऊ केशव प्रकाश कर,
अँवर विलास कुवलय हित मानिये।
वाके अति शीतकर तुहूँ सीता शीतकर।
चन्द्रमासी चन्द्रमुखी सबजग जानिये॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

(ग) भव सागर की जनु सेतु उजागर,

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुन्दरता सिगरी बस की।
तिहुँ देवन की द्युति सी दरसै गति,
शोवै त्रिदोषन के रस की॥
कहि केशव वेदत्रयी मति सी,
परितापत्रयो तलको मसकी।
सब बंदैं त्रिकाल त्रिलोक त्रिवेणि,
हि केतु त्रिविक्रम के बस की॥

(घ) खेंचत लोभ दसौ दिसिको गहि,
मोह महा इत फाँसिहि डारे।
ऊँचेते गर्व गिरावत, क्रोधहु,
जीवहि लूहर लावत भारे॥
ऐसे में कोढ़ की खाज ज्यों केशव,
मारत पाँच करे पँचकूट हि,
कासों कहैं जगजीव विचारे॥

(ङ) यमनादि के अपवाद क्यों द्विज छोड़ि है कपिलाहि।
विरहीन को: दुख देत, क्यों हर डारि चन्द्रकलाहि ?
यह है असत्य जु, होहिगो अपवाद सत्य सुनाथ।
प्रभु छोड़ि शुद्ध सुधाहि पीवत विषय अपने हाथ॥ २५

६. निम्नलिखित पद्यों की व्याख्या करके उनमें अलङ्कार भी बताओः—

(क) कालकूटतें मोहन रीति। मणिगणतें अति निष्ठुर प्रीति॥
मदिरा ने मादकता लई। मंदर उदर भइ भ्रममई॥

(ख) वक हिये न प्रभासरसीसो। कर्दम काम कछू परसोसो॥
कामिनि काम कि डोर ग्रसीसी। मीन मनुष्यान को बनसीसी॥

(ग) कविकुल ही के श्रीफलन उर अभिलाष समाज।
तिथि ही को क्षय होत है रामचन्द्र के राज॥

(घ) गुण तजि अवगुण जाल गहत नित्य प्रति चालनी।
पुंश्चलीति तिहिकाल पैकै कीरति जानिये॥ १०

७. निम्नलिखित पद्यों का सरल हिन्दी में अर्थ करोः—

(क) सहसं किरन सुभाऊ, उगि आदित्य गमय अंधारं।
अप्पं उमान सारो, भोडलयं नैव झलकंति॥

(ख) धपी सेन सुर तान, मुट्ठी छुट्टी चावद्दिसि।
मनु कपाट उद्धारयो, कूह थुट्टि दिसि विद्दिसि॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखत के छोटे लगैं, घाव करें गम्भीर ॥
ब्रजभाषा बरनी कविन, बहु बिधि बुद्धि विलास ।
सबकी भूषण सतसई, करी बिहारी दास ॥

ऊपर लिखे दोहों की विशद व्याख्या लिखो और कविवर बिहारी के काव्य में कैसा चमत्कार है इसका उदाहरणपूर्वक निरूपण करो ।

३. 'वैष्णवों ही ने हिन्दी का उसके जन्म-काल से लालन पालन किया है। राम और कृष्ण कीर्तन करने में वैष्णव कवियों का एक ताँता सा बँध गया।'

उपर्युक्त मत के समर्थन में प्रमाण देकर उन मुख्य २ कवियों का उल्लेख करो जिनकी श्रीवृद्धि हुई ।

४. (क) पुरते निकसी रघुबीरबधू धरि धीर दये मग में डग द्वै ।
झलकी भरि भाल कनी जलकी पुट सूखि गए मधुराधर वै ।
फिर बूझति हैं चलनोऽब कितोंपिय पर्नकुटी करि हौ कितह्वै ।
तिय की लखि आतुरता पिय की अंखियां अति चारु चली जलह्वै ॥

(ख) अब लौं नसानी अब न नसै हौं ।
राम कृपा भवनिसा सिरानी जागे फिर न डसै हौं ।
पायो नाम चारु चिन्तामनि उर करते न खसै हौं ॥
स्याम रूप सुचि रुचिर कसौटी चित कंचनहिं कसै हौं ।
परबस जानि हँस्यो इन इन्द्रिन निज बस ह्वै न हसै हौं ।
मन मधुकर पन करि तुलसी रघुपति-पद-कमल बसै हौं ।

ऊपर लिखे पद्यों का मर्मानुवाद लिखो। तुलसीदास के काव्यों में से ऐसे दो उत्कृष्ट पद्य उद्धृत कर लिखो जिनमें पद-लालित्य और अर्थ-गौरव ये दोनों ही गुण हों ॥

५. महाराष्ट्र के साधु-महात्माओं के चरित्रों का परिचय देकर यह सिद्ध करो कि १५ वीं शताब्दी से १८ वीं शताब्दी पर्यन्त महाराष्ट्र का अभ्युदय करने में उनका बहुत बड़ा भाग था ।

६. ऐतिहासिक प्रमाणों सहित छत्रपति शिवाजी का चरित्र वर्णन करो ।

७. मराठों के इतिहास के महत्व पर एक निबन्ध लिखो और उनके उत्थान के संबन्ध में जो भ्रममुलक कल्पनाएँ प्रचलित हैं, उनका सप्रमाण खण्डन करो ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ग) नीचे के शब्दों का शुद्ध रूप बतलाइये और लिखिये वे तद्भव हैं, अथवा अर्द्ध तत्सम ?
दृग, कुदुम, चित, गांठ, मूंड, पीठ बेनो, वाय । ५
(घ) दूसरे दोहे की मार्मिकता का उद्घाटन और उसकी व्यंजनो को स्पष्ट कीजिये । ४
(ङ) पांचवें पद्य में किस तथ्यपर प्रकाश डाला गया है, उससे क्या शिक्षा मिलती है ? ४

४. निम्नलिखित वाक्य का अनुवाद प्रचलित हिन्दी भाषा में कीजिये:—
"जिधर देखिये तिधर सारे बन में आग हू हू कर जलती है, और धूआँ मंडलाय आकाश को गया। विसधुए को भेख इन्द्र ने मेघपति को बुलाय के कहा कि तुम जाव अति वर्षा कर अग्नि को बुझाय, बन और वहां के पशु पक्षी जीव जन्तु को बचाओ" । ५
(क) यह प्रसंग कहां का है ? इस कथानक का मर्म क्या है ? क्या इस में कोई ऐतिहासिक रहस्य छिपा है ? स्पष्टता के साथ लिखिये । ५

५. प्रेमसागर की भाषा के विषय में आप की क्या सम्मति है ? उसके दोष गुण की निवेचना कीजिये और उसकी बिशेषता बतलाइये । ५
(क) लल्लूलाल जी और सदल मिश्र की भाषा में क्या अन्तर है ? और इन दोनों में उत्कर्ष किस को है ? ५

६. निम्नलिखित पद्य किस भाषा में लिखा गया है ? उसमें कवित्व है या नहीं ? प्रमाण के साथ बतलाइले ।
भ्रमर तू कही न मानी बात । आद आद इनही फूलन पै बार बार मँडरात । भौंरी कही मानती मेरी तू तो है मतवारो । काननपारि न सुनत या हिते ने कौ वैनह मारो । अरे ढीठकारे मतवारे कहै क्यों न का पै है । आद आद मेरे फूलन को जो विगारि तू जै है ॥ ६
(क) इस पद्य से देववाला के हृदय के किस भाव का उद्घाटन होता है ? उसका उल्लेख मार्मिक भाषा में कोजिये । ५

७. (अ) रूपक और उप रूपक के कितने भेद हैं ? उनको बतलाइये, और रूपक के किन्हीं पांच भेदों का लक्षण उदाहरण के साथ लिखिये । ६
(क) नाटिका, त्रोटक में क्या अंतर है ? आप इसमें से किसे उत्तम समझते हैं और क्यों ? ५

प्रभाकर

प्रश्न पत्र ५

१. हिन्दी साहित्य के नीचे लिखे मुसलमान कवियों का परिचय देकर उनकी कृतियों पर समालोचनात्मक निबन्ध लिखो:—
(१) रहीम । रसखान ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

२. सतसैया के दोहरे, ज्यों नावक के तीर ।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखत के छोटे लगैं, घाव करें गम्भीर ॥
ब्रजभाषा बरनी कविन, बहु बिधि बुद्धि विलास।
सबकी भूषण सतसई, करी बिहारी दास ॥

ऊपर लिखे दोहों की विशद व्याख्या लिखो और कविवर बिहारी के काव्य में कैसा चमत्कार है इसका उदाहरणपूर्वक निरूपण करो।

३. 'वैष्णवों ही ने हिन्दी का उसके जन्म-काल से लालन पालन किया है। राम और कृष्ण कीर्तन करने में वैष्णव कवियों का एक ताँता सा बँध गया।'

उपर्युक्त मत के समर्थन में प्रमाण देकर उन मुख्य २ कवियों का उल्लेख करो जिनकी श्रीवृद्धि हुई।

४. (क) पुरते निकसी रघुबीरबधू धरि धीर दये मग में डग है।
झलकी भरि भाल कनी जलकी घुट सूखि गए मधुराधर वै।
फिर बूझति हैं चलनोऽब कितोपिय पर्नकुटी करि हौ कितह्वै।
तिय की लखि आतुरता पिय की अंखियां अति चारु चली जलह्वै॥

(ख) अब लौं नसानी अब न नसै हौं।
राम कृपा भवनिसा सिरानी जागे फिर न डसै हौं।
पायो नाम चारु चिन्तामनि उर करते न खसै हौं॥
स्याम रूप सुचि रुचिर कसौटी चित कंचनहिं कसै हौं।
परबस जानि हँस्यो इन इन्द्रिन निज बस ह्वै न हसै हौं।
मन मधुकर पन करि तुलसी रघुपति-पद-कमल बसै हौं।

ऊपर लिखे पद्यों का मर्मानुवाद लिखो। तुलसीदास के काव्यों में से ऐसे दो उत्कृष्ट पद्य उद्धृत कर लिखो जिनमें पद-लालित्य और अर्थ-गौरव ये दोनों ही गुण हों॥

५. महाराष्ट्र के साधु-महात्माओं के चरित्रों का परिचय देकर यह सिद्ध करो कि १५ वीं शताब्दी से १८ वीं शताब्दी पर्यन्त महाराष्ट्र का अभ्युदय करने में उनका बहुत बड़ा भाग था।

६. ऐतिहासिक प्रमाणों सहित छत्रपति शिवाजी का चरित्र वर्णन करो।

७. मराठों के इतिहास के महत्व पर एक निबन्ध लिखो और उनके उत्थान के संबन्ध में जो भ्रममुलक कल्पनाएँ प्रचलित हैं, उनका सप्रमाण खण्डन करो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ग) नीचे के शब्दों का शुद्ध रूप बतलाइये और लिखिये वे तद्भव हैं, अथवा अर्द्ध तत्सम ?
द्रग, कुदुम, चित, गांठ, मूंड, पीठ बेनों, वाय। ५
(घ) दूसरे दोहे की मार्मिकता का उद्घाटन और उसकी व्यंजनों को स्पष्ट कीजिये। ४
(ङ) पांचवें पद्य में किस तथ्यपर प्रकाश डाला गया है, उससे क्या शिक्षा मिलती है ? ४

४. निम्नलिखित वाक्य का अनुवाद प्रचलित हिन्दी भाषा में कीजियेः—
"जिधर देखिये तिधर सारे बन में आग हू हू कर जलती है, और धूआँ मंडलाय आकाश को गया। विसधुए को भेख इन्द्र ने मेघपति को बुलाय के कहा कि तुम जाव अति वर्षा कर अग्नि को बुझाय, बन और वहां के पशु पक्षी जीव जन्तु को बचाओ"। ५
(क) यह प्रसंग कहां का है ? इस कथानक का मर्म क्या है ? क्या इस में कोई ऐतिहासिक रहस्य छिपा है ? स्पष्टता के साथ लिखिये। ५

५. प्रेमसागर की भाषा के विषय में आप की क्या सम्मति है ? उसके दोष गुण की त्रिवेचना कीजिये और उसकी बिशेषता बतलाइये। ५
(क) लल्लूलाल जी और सदल मिश्र की भाषा में क्या अन्तर है ? और इन दोनों में उत्कर्ष किस को है ? ५

६. निम्नलिखित पद्य किस भाषा में लिखा गया है ? उसमें कवित्व है या नहीं ? प्रमाण के साथ बतलाइले।
भ्रमर तू कही न मानी बात। आद आद इनही फूलन पै बार बार मँडरात । भौंरी कही मानती मेरी तू तो है मतवारो। काननचारि न सुनत या हिते ने कौ वैनह मारो । अरे ढीठकारे मतवारे कहै क्यों न का पै है। आद आद मेरे फूलन को जो विगारि तू जै है॥ ६
(क) इस पद्य से देववाला के हृदय के किस भाव का उद्घाटन होता है ? उसका उल्लेख मार्मिक भाषा में कीजिये। ५

७. (अ) रूपक और उप रूपक के कितने भेद हैं ? उनको बतलाइये, और रूपक के किन्हीं पांच भेदों का लक्षण उदाहरण के साथ लिखिये। ६
(क) नाटिका, त्रोटक में क्या अंतर है ? आप इसमें से किसे उत्तम समझते हैं और क्यों ? ५

112332

प्रभाकर

प्रश्न पत्र ५

१. हिन्दी साहित्य के नीचे लिखे मुसलमान कवियों का परिचय देकर उनकी कृतियों पर समालोचनात्मक निबन्ध लिखोः—
(१) रहीम २ रसखान।

CC-0. In Public Domain, Gurukul Kangri Collection, Haridwar

२. सतसैया के दोहरे, ज्यों नावक के तीर।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बीमा कम्पनी

जीवन में बेफ़िकरी और शान्ति प्राप्त कराती है और सैकड़ों
लोगों तथा प्रिय सम्बन्धियों को ख़तरे
तथा नाश से बचाती है।

भारत

भारतवर्ष में मशहूर पहले नम्बर की जीवन
बीमा कंपनी है।

भारत-भर में इसकी शाखाएँ स्थापित हैं। यह कम्पनी
अमीर-ग़रीब, बाल वृद्ध सबके लिए, सब अवस्थाओं
में बीमा करने का अवसर देती है।

सन्तुष्ट और सुखी होने के लिए

: भारत बीमा कम्पनी :

में बीमा कराओ।

विशेष जानकारी के लिए निम्न पते पर पत्र-व्यवहार करो—

लिफोन ३९३०

तार का पता
ारत', लाहौर

एसिस्टैंट जनरल मैनेजर
भारत इंश्योरेंस कम्पनी लिमिटिड,
लाहौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Hindi Sandesh Regd. No. L. 3155

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की सुन्दरता आप को परेशान कर देगी।
ऐसे उम्दा शतप्रति स्वदेशी कपड़े पर
भारतवासी फ़ख़र कर सकते हैं।
बावासंस टैक्सटाईल ख़रीद
कर जहाँ आप अत्यन्त
सुन्दर, अत्यन्त पाएदार
और अत्यन्त उम्दा कपड़ा ख़रीद कर अपने
पैसे की पूरी क़ीमत प्राप्त कर सकते हैं,
ठीक वहाँ भारतमाता के ग़रीब मज़दूरों
का पालन-पोषण करते हैं।

बावा प्रदुम्नसिंह एण्ड संज़, अमृतसर

ब्रांचिज़ :— बाम्बे, कलकत्ता, देहली, लाहौर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

नवयुग प्रिण्टिङ्ग प्रेस, मोहनलाल रोड, लाहौर में भीमसेन वर्मा प्रिण्टर-पब्लिशर-द्वारा छप कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Serial	C.S.R.	Duty Sl	Buses No	From	To	Earnings	Dead	Relief	Deptt.	Total	ngle	D. O	Petro	Aver	Upper

ignature of D.V.E. Clerk ---------------   Signature of Stati

P.S.U.P. (Re) 180 Adeyia/1256-15-2-82-500 Books.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

	Passe.			By Passengers Earning		Kilometer Earning		K. meterage		Remarks
P.	Rs.	P.	ge	Rs.	P.	Rs.	P.	Rs.	P.	

Date of submission ----------

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar